॥ काठकम् ॥

KÂTHAKAM

DIE SAMHITÂ DER KAṬHA-ÇÂKHÂ

HERAUSGEGEBEN

VON

LEOPOLD VON SCHROEDER

PROFESSOR AN DER K. K. UNIVERSITÄT ZU WIEN

WIRKL. MITGLIED DER KAIS. AKADEMIE DER WISSENSCHAFTEN

DRITTES BUCH

GEDRUCKT AUF KOSTEN DER DEUTSCHEN MORGENLÄNDISCHEN GESELLSCHAFT



LEIPZIG

IN COMMISSION BEI F. A. BROCKHAUS

1910

VORWORT.

Auch die vorliegende Ausgabe des dritten Buches der Kaṭha Saṃhitā, welche den Abschluß des Textes bringt, beruht zum weitaus größten Theile bloß auf dem Berliner Codex Chambers 40 (Ch). An Ricaka-Mss konnten verglichen werden und wurden für die Constitution des Textes benutzt T_1 und Brl für die Capitel 31, 9 und 10, 36, 6, 37, 16, 38, 4, 39, 13, 40, 5, 40, 8 und 9, 40, 14, T_1 allein für 37, 11, 38, 13, 5, 11, 1—6, 5, 12, 1, Brl allein für 39, 12 (Fragment), 5, 1, 1, 5, 5, 20, 5, 10 5 und 6, T_7, T_1 und Brl für 35, 1 und 38, 2, T_4, W und W_1 für 35, 3—20, T_1, T_3, T_4, W_1, $W_{1}ζ$, G und Brl für 35, 7, T_1, Brl, W_2 für 37, 9, 39, 14, T_1, T_7, Brl und W_2 für 36, 15, T_1, Brl und W_1 für 38, 1, T_1, T_7, W_1 für 38, 5, T_1, T_7, Brl W_1 und W_2 für 38 12, W_2 allein für 39, 3 (Fragment), T_1, T_3, Brl für 39, 4, T_5, T_6, Brl für 40, 1, Brl, W_1 und G für 40, 11, T_6 allein für 5, 3, 2, $W_{1}ζ$ allein für 5, 4, 6—8, T_6 und Brl für 5, 5, 14. Selbstverständlich auch die Kapishṭhala Saṃhitā, wo der entsprechende Text in ihr vorliegt.

Herr Prof. W. CALAND in Utrecht hat auch bei diesem Bande die Freundlichkeit gehabt, eine Correctur zu lesen und seine werthvollen Bemerkungen dazu zu machen. Sie sind in derselben Weise berücksichtigt worden wie beim zweiten Bande der Ausgabe. Für diese ausdauernde thätige Mithülfe, die dem Werke wesentlichen Nutzen gebracht hat, sage ich Herrn Prof. W. CALAND meinen wärmsten, herzlichsten Dank.

Der Anhang bringt ein Verzeichniß der Vers- und Capitel-Anfänge des Kāṭhakam. Vergleichungen, wie ich sie s. Z. bei der Ausgabe der Maitr. Saṃhitā hinzufügte, durfte ich mir jetzt ersparen, wo die großartige Vedic Concordance von M. BLOOMFIELD sich in den Händen der Fachgenossen befindet. Ich bemerke nur, daß die fett gedruckten Zahlen die Capitel-Anfänge markiren. Einklammerung der Citate bedeutet, daß an den betreffenden Stellen nicht der ganze Vers, sondern bloß der Anfang desselben sich vorfindet.

Ein vollständiger Index Verborum des Kāṭhakam, zu dem ich schon vor Jahren die Zettel ausschrieb, befindet sich in der Arbeit. Herr Prof. RICHARD SIMON in München hat sich in aufopfernder Weise der Herstellung

dieses ebenso wichtigen wie mühevollen Werkes gewidmet. Da die Vollendung desselben aber noch geraume Zeit in Anspruch nehmen dürfte, soll dieser Index Verborum s. Z. als besondere Lieferung nachfolgen.

Zum Schluß sage ich gern und freudig meinen wärmsten Dank dem Vorstande der Deutschen Morgenländischen Gesellschaft, welcher den Druck der nunmehr vollendeten Ausgabe des Kāṭhakam ermöglicht hat — insbesondere den Herren Geh. Rath Prof. Dr. Ernst Windisch und Prof. Dr. August Fischer in Leipzig. Ich danke aber auch aufs Herzlichste der Buchdruckerei von W. Drugulin Baensch in Leipzig, die bei der Herstellung des Druckes die größte Umsicht und Sorgfalt bewiesen hat.

Wien, am 1. Mai 1910.

L. v. Schroeder.

ओम्[1]। प्रजापतिर्वा ओषधीः परुश्शो वेद प्राजापत्यो ऽश्वो यदश्वपर्श्वा बर्हिर्दात्योषधीनामहिंसायै[2] देवस्य त्वा सवितुः प्रसव इति सवितृप्रसूत एवैनां देवताभिरादत्ते गोषदसीति रयिमेव यजमाने दधाति प्रत्युष्टं रक्ष इति यज्ञमुखादेव रक्षांस्यपहन्ति प्रेयमगाद्धिषणा[3] बर्हिरच्छेति विद्या वै धिषणा विद्ययैवैनदच्छैति[4] मनुना कृता स्वधया वितष्टेति मनुना ह्येषा कृता स्वधया वितष्टैवन्तरिक्षं वीहीति समक्ष्या इन्द्रस्य परिपूतमसीति यद्वा इदं किंच तदिन्द्रस्य परिपूतं[5] यथा श्रेयसे प्रोच्य[6] कर्म करोत्येवमेवैतदिन्द्राय प्रोच्य बर्हिर्दाति[7] यावत्परिदिशति यज्ञस्सर्वं न[8] दाति यज्ञस्य तदतिरिच्यते यद्वै यज्ञस्यातिरिच्यते भ्रातृव्यं तेन वर्धयत्येकं स्तम्बं[9] परिदिशेत्[10] सर्वं दायाद्यज्ञस्यानतिरेकाय यत्सर्वं दायात्पशुभ्यो जीवनमुच्छिंषेदेकां[11] वा मुष्टिं द्वे वोच्छिंषेत्[12] यज्ञस्यातिरेचयत्युत्पशुभ्यो जीवनं शिंषति माधो मोपरि परुस्त[13] ऋध्यासमित्यृद्धा आच्छेत्ता ते मा रिषदिति यावद्यावद्वा अविद्वानध्वर्युर्बर्हिषो दाति तावदस्यात्मनो[14] मीयते नास्यात्मनो मीय-

---

[1] Ch ओं नमो प्रथमे ॥ ओं प्रजा° [2] So corr. Ch बर्हिर्दात्यौ° [3] So corr. Ch धिषणा°, aber cf. oben 1, 2 Kap. S. 47, 1 auch धिषणागाद्धिषणा [4] So corr. Ch विद्ययैवैनदच्छति, Kap. S. 47, 1 विद्ययैवैनदच्छैति [5] So corr. Ch परिपूतो; Kap. 47, 1 = Corr. [6] So corr. Ch प्रोच्य, aber vgl. das Folgende, Kap. S. 47, 1 und Maitr. S. 4, 1, 2 = Corr. [7] So corr. Ch बर्हिर्धाति; Kap. S. 47, 1 und Maitr. S. 4, 1, 2 = Corr. [8] So corr. mit Caland, Ch ohne न, Kap. S. 47, 1 wesentlich ebenso यावत्परिदिशेत् यज्ञस्सर्वं दाति यज्ञस्यैतदतिरिच्यते, dagegen Maitr. S. 4, 1, 2 यांवत्परिदिशति सर्वं दाति यत्सर्वं न दाति यज्ञस्य तदतिरेचयति [9] So corr. Ch स्तम्भ; Kap. S. 47, 1 स्तम्ब, Maitr. S. 4, 1, 2 स्तम्बं [10] So corr. Ch परिदेशेत् [11] So corr. Ch मुच्छिषे° [12] So corr. Ch वो° [13] So corr. Ch परोस्त°, vgl. aber oben 1, 2 [14] So corr. Ch नापस्या°; Kap. S. 47, 1 = Corr.

ते य एवं वेद देव बर्हिश्शतवल्शं[1] विरोहेत्योषधिष्वेव भूमानं दधाति सहस्रवल्शा[2] वि वयं रुहेमेत्याशिषमेवाशास्ते ऽदित्या रास्नासीतीयमदितिरस्या एवैनद्रास्नां[3] करोतीन्द्राण्यास्संनहनमितीन्द्राणी वा अग्रे देवतानां समनह्यत सार्ध्नोदृध्नै[4] बर्हिस्संनह्यति प्रजा वै बर्हिः प्रजानामपरावापाय तस्मात्स्नाव्ना[5] प्रजास्संतताः ॥[6] पूषा ते ग्रन्थिं ग्रथ्नात्विति पुष्टिर्वै पूषा पुष्टिमेव यजमाने दधाति स ते मास्थादित्यहिंसाया इन्द्रस्य त्वा बाहुभ्यामुद्यच्छ इतीन्द्रस्यैवैनद्बाहुभ्यामुद्यच्छते[7] बृहस्पतेस्त्वा मूर्ध्नाहरामीति ब्रह्म वै बृहस्पतिर्ब्रह्मणैवैनद्धरति देवंगममसीति बहु वा एतस्य पूर्वेद्युराह्रियमाणस्य स्कन्दत्यस्कन्नमेवैनद्देवेभ्यस्संप्रयच्छति तदाहरन्ति कवयः पुरस्तादिति ब्राह्मणा वै कवयो ब्राह्मणा ह्येतदाहरन्ति[8] देवेभ्यो जुष्टमिह बर्हिरासद इति देवेभ्य एवैनज्जुष्टं करोति ॥ १ ॥

cf oben 1,2 Kap S 47 1, Maitr S 4 1,2, TBr 3 2 2

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्रधारमिति वसूनां वा एतद्भागधेयं यत्पवित्रं तेभ्य एवैनं करोति प्रजापतिः प्रजा असृजत तस्योखे अस्रंसेतां स एते उखे अपश्यत्ताभ्यामादत्त यदेते उखे भवतः प्रजापतेरेवोखे प्रतिदधात्ययक्ष्मा वः प्रजया संसृजामीत्ययक्ष्मा एवैनाः करोति रायस्पोषेण बहुला भवन्तीरिति भूमानमेवैना गमयति मधुमद्घृतवत्पिन्वमाना इति मधुमदेव घृतवद्देवेभ्यो हव्यं करोति जीवा जीवन्तीरुप वस्सदेमेत्याशिषमेवाशास्ते ॥ मातरिश्वनो घर्मो ऽसीत्यन्तरिक्षं वै मातरिश्वनो घर्मो द्यौरसि पृथिव्यसीति दिवमेवैनां पृथिवीमकर्विश्वधाया: परेण धाम्नाहृतासि मा ह्वारिति दृंहत्येवैनां पवित्रमपिदधात्योषधीनां चैव पशूनां च पयस्संसृजति सा विश्वायु-

---

[1] Kap S 47, 1 शतवल्शं [2] Kap S 47, 1 सहस्रवल्शा [3] Kap S 47, 1 एवैना रास्नां [4] So corr Ch साध्नोदृध्नो [5] So corr Ch स्नाव्ना, Kap S 47, 1 स्नाम्ना [6] Ch schaltet hier in rother Farbe [illegible] ein [7] Kap S 47, 1 इन्द्रस्यैवैनद् बा° [8] Kap S 47, 1 ह्येव तदाहरन्ति

स्सा[1] विश्वव्यचास्सा विश्वधाया इत्यसौ[2] वै विश्वायुरन्तरिक्षं विश्वव्यचा इयं विश्वधाया इमानेव लोकान्यथापूर्वं प्रदापयतीमे[3] ऽस्मै लोका यथापूर्वं प्रत्ता दुह्रे[4] तिस्रो यजुषाभिमन्त्रयते त्रय इमे लोका एष्वेव लोकेषु रसं दधाति तस्मादिमांल्लोकान्प्रजा उपजीवन्त्युपजीवनीयो भवति य एवं वेद ॥ हुतस्स्तोको हुतो द्रप्स इत्यनुमन्त्रयते ऽस्कन्दायाग्नये बृहते नाकाय स्वाहेतीयं वा अग्निर्बृहन्नाको[5] बहु वा एतस्य दुह्यमानस्य स्कन्दत्यस्यामेवैनत्प्रतिष्ठापयत्यस्कन्दाय न दारुपात्रेण दुह्यादग्निमद्धि दारुपात्रं यातयाम्नेन हविषा यजेत तदु ह स्माहुर्दार्तेयाः[6] पुरोडाशमुखं वै हविर्न वा इत इतः पुरोडाशं[7] हविषो यामो ऽस्ति दोग्धव्यमेवेति न शूद्रो दुह्यादसतो वा एष संभूतो ऽसत्याद्यत्राव पवित्रमत्येति तद्धविरग्निहोत्रमेव शूद्रो न दुह्यात्तद्धि नोत्पुनन्ति संपृच्यध्वमृतावरीरिति प्रत्यानयति शृतत्वाय शृतकामा हि देवाः ॥ इन्द्रस्य त्वा भागं सोमेनातनच्मीति[8] सोममेवैनं[9] करोति सोमो वै देवानां परोक्षं सान्नाय्यं तस्य ह[10] त्वै सोमपीथस्संततो य एवं विद्वान्सान्नाय्येन यजते ऽदस्तमसि विष्णव इति यज्ञो वै विष्णुर्यज्ञायैवैनददस्तं करोति न मृत्पात्रेणापिदध्याद्यन्मृत्पात्रेणापिदध्यात्पितृदेवत्यं हविस्स्याद्दारुपात्रेणापिदधात्यग्निमद्धि दारुपात्रमग्निरेव हव्यं[11] रक्षति उदन्वत्कुर्याद्दापो रक्षोघ्नी[12] रक्षसामपहत्यै विष्णो हव्यं रक्षस्वेति विष्णुरेव हव्यं रक्षत्यापो जागृतेत्यापो वै यज्ञस्य गोप्त्रीस्ताभ्य एवैनत्परिददाति ॥ २ ॥

cf oben 1, 3, Kap S 47, 2, Maitr S 4 1 3 TBr 3 2 3

---

[1] So corr mit Caland, in Ch विश्वायुस्सा ausgefallen [2] So corr Ch इत्यमौ, Kap S 47 2 = Corr [3] So corr Ch इमे (erste Hand लोमो) [4] Kap S 47, 2 दुह्रे [5] So corr Ch अग्निर्यंत्रद्वाको Kap S 47, 2 अग्निबृहन्नाको [6] So Ch, Kap S 47, 2 दार्तेया, Maitr S 4, 1, 3 दार्तेया. [7] Kap S 47, 2 यत यत पुरोडाशो हविषो यामो स्ति, aber vgl Maitr S 4, 1, 3 (p 5, Zeile 5) [8] So corr Ch सोमेनतनच्मीति [9] So corr Ch सामामे॰, Kap S 47, 2 सोमामेवैतत्करोति [10] So corr Ch सान्नाय्यांतस्य ऊ त्वै, Kap S 47, 2 परोक्ष सान्नाय्य तस्य ह त्वै, vgl Maitr S 4, 1, 3 (p 5 Z 11) [11] Ch हव्यै [12] So corr Ch कुर्यादापोरोघ्नी, Kap S 47, 2 उदन्वत कुर्यादापो रक्षोघ्नी

अपः[1] प्रणयत्यापो वै यज्ञो यज्ञमेव तत्वा प्रचरत्यापो देवानां प्रियं धाम देवानामेव प्रियं धाम प्रणीय प्रचरत्यापो रक्षोघ्नी रक्षसामपहत्या आपो वज्रो[2] वज्रमेव भ्रातृव्याय प्रहरत्यापश्श्रद्धा श्रद्ध वा अस्मै देवाश्चमनुष्या[3] दधते यस्यैवं विदुषो यस्यैवं विद्वानपः प्रणयति कर्मणे वामिति हस्ता अवनेनिक्ते कर्म ह्येतत्क्रियते वानस्पत्यमसि प्रत्युष्टं रक्ष इति यज्ञमुखादेव रक्षांस्यपहन्त्युर्वन्तरिक्षं[4] वीहीति समष्ट्यै धूरसि ध्रुवं धूर्वन्तमिति धुर्यो वा एषो ऽग्निर्यदनालभ्यातीयाद्यजमानं शुचार्पयेद्द्वौ वै पुरुषस्य भ्रातृव्यौ यं च द्वेष्टि यश्चैनं द्वेष्टि तावेवास्य शुचार्पयति ॥ देवानामसि वह्नितममिति देवेभ्य एवैनद्वह्नि करोति विष्णोः क्रमो ऽस्यह्रुतमसि हविर्धानं दृंहस्व मा ह्वारिति[5] दृंहत्येवैनन्मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रेक्ष इति मित्रमेवैनत्कुरुत उरु त्वा वातायेति यद्वै किं च वातो नाभिवाति तद्वरुणस्यावरुण्यमेवैनत्करोति देवस्य त्वा सवितुः प्रसव इति सवितृप्रसूत एवैनद्देवताभ्यो निर्वपत्यमुष्मै जुष्टमिति यस्या एव देवतायै निर्वपति तस्या एनज्जुष्टं करोति यच्छन्तु त्वा पञ्चेति पञ्च वा ऋतव ऋतूनेव प्रीणाति ते ऽस्मै प्रीताः कल्पन्ते कल्पन्ते ऽस्मा ऋतवो य एवं वेद ॥ रक्षायै त्वा नारात्या[6] इति रक्षसामपहत्या इदं देवानामिदं नस्सहेति व्यावृत्त्यै स्वरभिव्यख्यमिति तम इव वा एष प्रपद्यते परीणहि स्वरेवाभिविपश्यतीमे वै लोका हविषो गृहीतादुदवेपन्त तान्देवा एतेन यजुषादृंहन्दृंहन्तां दुर्या इतीमानेव लोकान्दृंहत्युर्वन्तरिक्षं[7] वीहीति ब्रूयाज्ज्यायुको ऽध्वर्युस्स्यादुर्वन्तरिक्षं प्रेहीत्यज्यायुको ऽध्वर्युर्भवति य एवं वेदाथो हव्यं रक्षांस्यनुप्रसादयत्यग्निरेव हव्यं रक्षति ॥ ३ ॥

cf oben 1,4, Kap S 47,3, Maitr S 4,1,4 und 5, TBr. 3,2,4

[1] So corr Ch आप [2] वज्रो fehlt in Ch und ist von mir eingefügt, Kap S 47,3 = Corr, cf Maitr S. 4,1,1 (p 6, Z 4) [3] Ch श्रद्धा वा, Kap S 47,3 प्रहरत्याप श्रद्धा श्रद्धास्मै देवामनुष्या° [4] So corr Ch °स्युपहत्युर्वं°, Kap S 47,3 = Corr [5] So corr Ch ह्वारुरिति, vgl oben 1,4 [6] So corr. Ch नारात्य, cf 1,4, Kap S 47,3 नारात्यस्या [7] So corr Ch दृंहन्त्यु°, Kap S 47,3 दृंहत्यु°

विष्णोर्मनसा पूते स्थ[1] इति पुनात्येवैने देवो वस्सवितोत्पुनात्विति सवितृप्रसूत एवैना देवताभिरुत्पुनाति देवस्य त्वा सवितुः प्रसव इति सवितृप्रसूत एवैनद्देवताभ्यः प्रोक्षत्यमुष्मै जुष्टमिति यस्या एव देवतायै प्रोक्षति तस्या एनज्जुष्टं करोति शुन्धन्तां पात्राणि देवयज्याया इति देवेभ्य एवैनानि शुन्धत्यवधूतं रक्षो ऽवधूतारातिरिति रक्षसामपहत्या अदित्यास्त्वगसीतीयमदितिरस्या एवैनत्त्वचं करोत्यधिषवणमसि वानस्पत्यमित्यधिषवणमेवैनत्करोत्यग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनमित्यग्नेर्ह्येषा तनूर्वाचो विसर्जनं यदा हि पशव ओषधीरश्नन्त्यथ वाचं विसृजन्ते बृहद्ग्रावासि वानस्पत्य इति ग्रावाणमेव कृत्वा हविष्करोति हविष्कृदेहीति[2] य एव देवानां हविष्कृत्तं[3] ह्वयति त्रिर्ह्वयति त्रिसत्या हि देवा अद्रिरसि श्लोककृदपहतं रक्षो ऽपहतारातिरिति रक्षसामपहत्यै वर्षे संघाते संघातं जयेमेति संघाते संघातमेव भ्रातृव्यं जयति ॥ मनो वै यज्ञादेवस्य यजमानस्यासुर्यो[4] वाग्यज्ञायुधानि प्रविष्टासीत्तेषां[5] यावन्तो ऽसुरा उपास्पृशंस्ते पराभवन्त्य एवं विद्वान्भ्रातृव्याणां[6] मध्ये ऽवसाय यजेत यावन्तो ऽस्य भ्रातृव्या यज्ञायुधान्युपस्पृशन्ति तेषामिन्द्रियं वीर्यं वृङ्क्ते भवत्यात्मना परास्य भ्रातृव्यो भवति वर्षवृद्धमसि प्रति त्वा वर्षवृद्धं वेत्त्विति मिथुनमेव करोत्यग्ना[7] वै देवाः पशुभ्यो रक्षांसि निरवादयन्त तुषैरोषधिभ्यः[8] परापूतं रक्षः[9] परापूतारातिरित्येतावतैव यज्ञाद्रक्षांसि निरवदयते[10] निरस्तो ऽघशंस इति भ्रातृव्यो वा अघशंसो भ्रातृव्यमेव निरस्यति वायुर्व इय

---

[1] So corr. Ch स्था, Kap. S 17, 4 स्थ [2] So corr Ch हविष्कृदेहीति; Kap. S 47, 4 हविः कृदाद्रयेति [3] So corr. Ch हविष्कृत्ते, Kap. S 47, 4 हविः कृत्य [4] So corr. Ch यजमानस्य स्यासुरश्रो. Kap S. 17, 4 यजमानस्यासुरश्रो; Mâitr. S. 4, 1, 6 (p. 8, Z. 10) यजमानस्यासुरश्रो [5] So corr. Ch प्रतिष्ठासीत्तेषां, Kap. S. 47, 1 प्रविष्टा आसीत्तेषां; cf. Mâitr. S. 4, 1, 6 (p. 8, Z. 11). [6] So corr. Ch विद्वान्भ्रातृव्याणां, Kap. S. 47, 1 विद्वां भ्रा° [7] So corr. Ch erste Hand करोत्यत्यग्ना; dann etwa करोत्यत्यत्ना; Kap. S. 47, 4 करोत्यग्ना; cf. Mâitr. S. 4, 1, 7 a. A. [8] So corr. Ch तुषै°; cf. Mâitr. S. 4, 1, 7 (p. 8 unten) [9] So corr. mit Caland; in Ch fehlt परापूतं रक्षः [10] So corr. Ch यज्ञाद्रक्षां निरवादयते

ऊर्जे विविनक्तीति वायुर्वै देवानां पवित्रं पुनात्येवैनान्स्फलीकृतान्करोति मेध्यानेवैनान्यज्ञियान्करोति त्रिः फलीकरोति त्रिसत्या हि देवाः ॥ ४ ॥ cf oben 1, 5, Kap S 47, 4, Maitr S 4 1, 6—7, TBr 3 2 5

अवधूतं रक्षो ऽवधूता अरातिरिति रक्षसामपहत्या अदित्यास्त्वगसीतीयमदितिरस्या एवैनं त्वचं करोति धिषणासि पार्वती[1] प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु[2] पृथिवीं दृंहेति पृथिवीमेव दृंहति धिषणासि पार्वतेयी[3] प्रति त्वा पार्वती[4] वेत्तु दिवं दृंहेति दिवमेव दृंहति दिवस्स्कम्भन्यसीति[5] शम्यामुपदधातीमे वै सहास्तां[6] ते शम्यामात्रं शम्यामात्रं व्यैतां वज्रश्शम्या यच्छम्यामुपदधात्यनयोरेव विधृत्यै ॥ धान्यमसि धिनुहि[7] देवानित्येतस्य वै यजुषो वीर्येण यावदेका देवता कामयेत यावदेका तावदस्या आहुतेः प्रयते प्राणाय त्वा व्यानाय त्वापानाय[8] त्वेति प्राणं व्यानमपानं तानेव यजमाने दधाति दीर्घामनु प्रसृतिमायुषे[9] त्वेत्यायुरेवास्मिन्दधाति देवो वस्सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृह्णात्विति प्रेव वा एते स्कन्दन्ति प्रतिष्ठित्या अदब्धेन वश्चक्षुषावपश्यामीति चक्षुषो गोपीथाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वायेत्याशिषमेवाशास्ते[10] ॥ ५ ॥ cf oben 1 6 Kap S 47, 5, Maitr S 4 1 7

निर्दग्धं रक्षो निर्दग्धा अरातिरिति रक्षसामपहत्या अपाग्ने अग्निमामादं जहीति य आमात्क्रव्यात्तमपहत्य यज्ञिये देवयजन उपदधाति[11] यदधस्तादङ्गारमुपवर्तयत्यस्मिंस्तेन लोके ज्योतिर्धत्ते यदुपरिष्टादधि-

---

[1] So corr Ch पर्वती ebenso Kap S 47, 5 cf oben 1, 6, Maitr S 1, 1, 7 [2] So corr Ch वेत्तु, aber vgl unten वेत्त oben 1, 6, Kap S 47, 5 वेत्तु Maitr S 1 1 7 [3] Kap S 47 5 पार्वतेये vgl oben 1, 6 [4] Kap S 47, 5 पर्वती [5] Kap S 47, 5 दिवस्कम्भनसीति, oben 1 6 (p 3, Z 10) ist zu corrigiren दिवस्कम्भन्यसि धान्यमसि [6] So corr Ch सहास्ता [7] So corr Ch धेनुहि [8] So corr Ch त्वापानाय [9] So in Uebereinstimmung mit Maitr S 1, 1 7 und 4 1 7, Kap S 47, 5 प्रसितिमा Kap S 1, 6 प्रसितिमा॰ oben 1, 6 प्रसृतिमा॰ darnach wohl zu corrigiren [10] So corr Ch सुप्रजास्त्वाय [11] So corr Ch यज्ञिये देवयजनमुपदधाति aber vgl Kap S 47, 6 यज्ञिये देवयजन उप॰, Maitr S 4 1, 8 देवयजने यज्ञिया उप॰

वर्तमत्यन्तरिक्षे तेन ज्योतिर्धत्ते ऽसा एवास्यादित्यो ऽमुष्मिंल्लोके ज्योतिर्भवति सर्वे ऽस्मा इमे लोका ज्योतिष्मन्तो भवन्ति त्रीणि समीचीनान्युपदधाति त्रयः प्राणाः प्राणो व्यानो ऽपानस्तानेव यजमाने दधाति त्रय इमे लोका एष्वेव लोकेष्वृध्नोति ॥ ध्रुवमसि पृथिवीं दृंहेति पृथिवीमेव[1] दृंहत्यायुर्देहि प्राणं देहीत्याशिषमेवाशास्ते धरुणमस्यन्तरिक्षं दृंहेत्यन्तरिक्षमेव दृंहति चक्षुर्देहीत्याशिषमेवाशास्ते धर्त्रमसि दिवं दृंहेति दिवमेव दृंहत्योजो देहि बलं देहीत्याशिषमेवाशास्ते धर्मासि दिशो दृंहेति दिश एव दृंहति रयिं देहि पोषं देहीत्याशिषमेवाशास्ते यन्त्रमस्याशा दृंहेत्याशा एव[2] दृंहति रूपं देहि वर्णं देहीत्याशिषमेवाशास्ते ॥ प्रजापतिर्वै यदग्रे समभवत्स एतावच्छ[3] एव समभवदेकं वा अग्रे शीर्ष्णः कपालं संभवत्यथ द्वितीयमथ तृतीयमथ चतुर्थमथ पञ्चममथ षष्ठमथ सप्तममथाष्टमं यदष्टौ समीचीनान्युपदधात्यात्मानमेवैतद्यजमानः संस्कुरुते तं संस्कृतममुष्मिंल्लोके ऽनुपरैति यदष्टा उपदधाति गायत्रीं तच्छन्द आप्नोति ॥ यदेकादश त्रिष्टुभं तद्यद्द्वादश जगतीं तच्छन्दःसंमितान्येवोपदधाति चितस्थ परिचित इति सर्वाण्येव यजुष्मन्ति करोति भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वमित्येतासामेवैनानि देवतानां तपसा तपति यानि घर्मे कपालान्युपचिन्वन्ति वेधस[4] इत्यसौ वा आदित्यो घर्मस्तस्य दिशः कपालानि ता एवैतद्विमुञ्चति यथायतनं पूष्णस्तान्यपि व्रत इन्द्रवायू विमुञ्चतामितीन्द्रवायू एवैषां विमोक्तारौ करोति ॥ ६ ॥

cf oben 1, 7, Kap S 47, 6, Mâitr S 4 1, 8, TBr 3 2 6—7.

देवस्य त्वा सवितुः प्रसव इति सवितृप्रसूत एवैनद्देवताभ्यस्संवपत्यमुष्मै[5] जुष्टमिति यस्या एव देवतायै संवपति हविरेव करोत्यपि[6]

[1] So corr Ch वामेव [2] So corr दृंहेत्याशा एव fehlt in Ch und ist von mir ergänzt; vgl Kap S 47, 6 यन्त्रमस्याशा दृंहेत्याशा एव दृंहति [3] Kap S 47, 6 एतावदेव समभवदेव, cf Mâitr S 4, 1, 8 (p 10, Z 4) एतावानास, dasselbe ebenda 1, 9, 8 (p 139, Z 6) [4] So corr Ch वेदस, aber cf oben 1, 8; Mâitr S 4, 1, 8 [5] So corr Ch स्वपत्यमुष्मे [6] So corr. mit Caland Ch करोत्यप

तस्या एतज्जुष्टं करोति पवित्रवति संवपति हविरेव करोत्यप उपसृजत्यमृतं वा आपो ऽमृतमेव हव्यं करोति समाप ओषधीभिस्समोषधयो[1] रसेनेत्यन्या[2] वा एतासामन्या जिन्वन्त्योषधयो[3] यद्वो[4] रेवती रेवत्यं[5] यद्वो हविष्या हविष्यं यद्वो जगतीर्जगत्यमित्यापो वै रेवतीरोषधयो मधुमतीः पशवो जगतीरप ओषधीः पशूंस्तानेवास्मा एकधा संसृज्य मधुमतः करोति ॥ जनयत्यै[6] त्वेति संयौति मिथुनमेव करोति मखस्य शिरो ऽसीति यज्ञो वै मखो यज्ञस्यैव शिरः करोति घर्मो विश्वायुरुरु प्रथस्वोरु ते यज्ञपतिः प्रथतामिति प्रथयत्येव प्रत्युष्टं रक्ष इति यज्ञमुखादेव रक्षांस्यपहन्ति घर्मो वा एषो ऽर्धमासे ऽर्धमासे प्रवृज्यते[7] यत्पुरोडाशस्स ईश्वरो ऽशान्तो यजमानस्य पशून्निर्दहो यत्पर्यग्निं करोति पशुमेव करोति शान्त्या अनिर्दाहाय त्रिः परिहरति त्रय इमे लोका एभ्य एवैनल्लोकेभ्यश्शमयति पुरोडाशं वा अधिश्रितं[8] रक्षांस्यजिघांसन्स्नाको नाम दिवि रक्षोहाग्निस्सो ऽस्माद्रक्षांस्यपाहन्देवस्त्वा सविता श्रपयतु वर्षिष्ठे ऽधि नाक इति रक्षसामपहत्या अग्निस्ते तन्वं मा हिंसीदित्यहिंसायै त्वचं ग्राहयति ॥ तस्मान्मस्तिष्कः परिततो यानि वा इमानि शीर्ष्णः कपालानि तानि कपालानि यो[9] मस्तिष्कस्स पुरोडाशो यन्नाभिवासयेदाविर्मस्तिष्कस्स्याद्यदभिवासयति तस्माद्गुहा मस्तिष्को भस्मनाभिवासयति तस्मादस्थि[10] मांसेन छन्नं[11] वेदेनाभ्यूहति तस्माच्छिरः केशैश्छन्नं ते देवास्तन्नाविन्दन्त यस्मि-

[1] So corr समोष· [2] So corr Ch रसेनेत्येन्या [3] Ch schreibt जिन्वन्त्योषध [illegible] liegt aber wohl eine Lücke vor, die nach Analogie von Maitr S 4, 1, 9 (p 11, Z 3) etwa zu ergänzen wäre जिन्वन्त्योषधयो ऽयो जिन्वन्त्याप ओषधीर्य-, in Kap S 47, 7 fehlt der Anfang des Capitels ganz Vgl TBr 3, 2, 8, 1 [4] So corr Ch यद्वौ [5] So corr Ch रयत्य [6] So corr Ch जनयित्यै, cf aber oben 1, 5, Maitr S 4, 1, 9 (p 11, Z 7) [7] So corr Ch प्रवृज्येते, Maitr S 4, 1, 9 (p 11, Z 10) = Corr [8] So corr Ch श्रधिते, Maitr S 4, 1, 9 (p 11, Z 13) = Corr [9] So corr Ch सो, Kap S 47, 7 = Corr यो, Maitr S 4, 1, 9 यथा मस्तिष्क एव पुरोडाश [10] So corr Ch तस्मादस्ति, Kap S 47, 7 तस्मादस्थि मांसेन छन्न, cf Maitr S 4, 1, 9 (p 11, Z 20) [11] So corr Ch मांसेन स्वचच्छन्न, vgl Kap S in der vorigen Anmerkung

न्यङ्गस्य क्रूरं मार्क्ष्यामह[1] इति सो ऽग्निरब्रवीदहं वस्तं जनयिष्यामि यस्मिन्यज्ञस्य क्रूरं मार्क्ष्यध्व इति सो ऽपो ऽङ्गारेणाभ्यपातयत्तत[2] एकतो ऽजायत द्वितीयं ततो द्वितस्तृतीयं ततस्त्रितो यदात्मनो निरमिमीत तदात्मीयानामात्मीयत्वं[3] यदद्भ्यो निरमिमीत तदाप्यानामाप्यत्वमन्तर्वेदि[4] निनयति तदेवावरुन्द्ध उल्मुकेनाभिधारयति शृतत्वाय शृतकामा हि देवास्ते ऽतिमृज्जाना[5] आयन्सूर्याभ्युदिते ते ऽमृज्जत[6] सूर्याभ्युदितस्सूर्याभिनिम्रुक्ते सूर्याभिनिम्रुक्त[7] कुनखिनि कुनखी श्यावदति श्यावदन्परिवित्ते[8] परिवित्तः परिविविदाने[9] परिविविदानो ऽग्रेदिधिषौ अग्रेदिधिषुर्दिधिषूपतौ दिधिषूपतिर्वीरहणि[10] वीरहा ब्रह्महणि[11] ब्रह्महा[12] भ्रूणहनि भ्रूणहनमेनो नात्येति ॥ ७ ॥

cf oben 1, 8, Kap S 47, 7, Maitr S 4, 1, 9, TBr 3 2 8

देवस्य त्वा सवितुः प्रसव इति स्फ्यमादत्ते सवितृप्रसूत एवैनं देवताभिरादत्त इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणस्सहस्रभृष्टिश्शततेजा इति वज्रो वै स्फ्यो वज्रमेव संश्यति भ्रातृव्याय प्रहरिष्यन्पृथिवि देवयजन्योषध्यास्ते मूलं मा हिंसिषमित्योषधीनामहिंसायै व्रजं गच्छ गोस्थानमिति छन्दांसि वै व्रजो गोस्थानश्छन्दांस्येवास्मै व्रजं गोस्थानं करोति वर्षतु ते द्यौरिति वृष्टिमेव निनयति बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्यां शतेन पाशैरिति द्वौ वै पुरुषस्य भ्रातृव्यौ[13] यं च

---

[1] So corr Ch कृरमाक्ष्यामह cf das Folgende Kap S 47 7 क्रूरमक्ष्यामहा इति [2] So corr mit Caland, Ch माभ्यपतत Kap S 47 7 अङ्गारेणाभ्युपातयत्तत anders Maitr S 4 1 9 [3] Kap S 47 7 तदात्मेयानामात्मेयत्त्वं [4] Das तदाप्यो fehlt in Ch und ist von mir als nothwendig ergänzt Kap S 47 7 तदाप्येयानामप्येयत्व [5] So corr Ch तिमृजाना Kap S 47, 7 मिमृज्य चायु aber cf Maitr S 4 1, 9 (p 12 Z 8) [6] So corr Ch मृजत ebenso Kap S 47, 7, aber cf Maitr S 4, 1 9 (p 12 Z 9) [7] So corr Ch भिनमुक्ते मूर्याभिनमुक्त [8] So corr Ch श्यावदति श्यावदन Kap S 47, 7 श्यावदति श्यावद cf Maitr S 4 1, 9 [9] So corr Ch दाना Kap S 47, 7 nur ein Mal परिविविदानो Maitr S 4, 1, 9 a E — Corr [10] Ch वीरहनि, aber cf Maitr S 4, 1, 9 a E [11] So corr Ch ब्रह्मणि Kap S 47 7 ब्रह्मज्ये भ्रूणहनि भ्रूणहनमेनो नात्येति [12] Dies Wort fehlt sowohl Kap S 47, 7 als auch Maitr S 4, 1, 9 a E [13] So corr Ch भ्रातृव्या, cf oben 31, 3

इष्टि यथैनं इष्टि ता एवास्य बध्नाति परमस्यां पृथिव्यां शतेन पाशैर्द्रप्सस्ते द्यां मा स्कानिति यो वा अस्या रसस्स द्रप्सस्तमिमाः प्रजा उपजीवन्ति तमेवास्यां[1] यच्छति तस्यास्कन्दायारुद्धौ मा पप्तदिति भ्रातृव्यो वा अररुर्भ्रातृव्यमेव स्वर्गाल्लोकात्प्रतिनुदते ऽररुर्वै नामासुर आसीत्सो ऽबिभेद्यज्ञेन नो देवा अभिभविष्यन्तीति स पृथिवीं विपेणालिम्पदमेध्यां कुर्वन्निन्द्रो वै वृत्रमहंस्तस्येमां लोहितमनुव्यधावत्तदमेध्याभवद्यदुद्धन्ति यदेवास्या अमेध्यमयज्ञियं तदपहन्त्यररुर्वै नामासुर आसीत्सो ऽबिभेद्देवा मा पृथिव्या नोत्स्यन्त इति स पृथिवीमुपमुच्यायच्छत्तमिन्द्रो[2] ऽचायत्तमपाररुमदेवयजनं पृथिव्या देवयजनाज्जहीति पृथिव्या अपाहन्स दिवमपतदररुद्धौ मा पप्तदिति तं दिवः[3] प्रत्यनुदत ततो देवा अभवन्परासुरा अभवन्यस्यैवं विदुषस्तम्बयजुर्ह्रियते[4] यस्यैवं विद्वान्हरत्येभ्य एव लोकेभ्यो भ्रातृव्यं निर्भजति भवत्यात्मना परास्य भ्रातृव्यो भवत्यसुराणां वा इयं पृथिव्यासीत्ते देवा अब्रुवन्दत्त नो ऽस्या इति ते वै स्वयं वृध्यमित्यब्रुवन्सो ऽग्निरेव प्राचीं दिशमुदजयद्वसवो दक्षिणां रुद्राः प्रतीचीमादित्या उदीचीं ते देवा इमामसुराणामविन्दन्त ततो देवा अभवन्परासुरा अभवन्य एवं विद्वानेताभिर्देवताभिर्वेदिं परिगृह्णातीमामेव भ्रातृव्यस्य विन्दते भवत्यात्मना परास्य भ्रातृव्यो भवति ॥ पृथिव्या वै मेध्यं चामेध्यं च व्युदक्रामत्प्राचीनमुदीचीनं मेध्यमुदक्रामत्प्रतीचीनं दक्षिणामेध्यं प्राचीमुदीचीं वेदिं प्रवणां कुर्यान्मेध्यामेवैनां यज्ञियां करोत्यथो मेध्यस्य चामेध्यस्य च व्यावृत्त्यै प्राञ्चौ बाहू उन्नयत्याहवनीयमेव परिगृह्णाति प्रतीची श्रोणी गार्हपत्यमेव परिगृह्णाति मूलं वै रक्षांस्यनूत्पिबन्ति[5]

---

[1] So corr. Ch तमेवास्या; Kap. S. 47, 8 तमेवास्यां यच्छति; cf. Maitr. S. 4, 1, 10 (p. 13, Z. 7). [2] So corr. Ch चौमुपमथ्य°; Maitr. S. 4, 1, 10 (p. 13, Z. 8) — Corr.; Kap. S. 47, 8 पृथिवीमुपमंथायच्छतमिंद्रो आयत्तायाकम° [3] So corr. mit Caland; Ch तद्दिव· Kap. S. 47, 8 तं दिव; तम् auch Maitr. S. 4, 1, 10 (p. 13, Z. 10). [4] So corr. Ch स्तंभयजु°; Kap. S. 47, 8 स्तंभंयजुर्ह्रियते; cf. Maitr. S. 4, 1, 10. [5] So corr. Ch नुत्पिबति

न नखेन छिन्द्याद्यन्नखेन छिन्द्यात्कुनखी[1] स्यात्स्फ्येन छिनत्ति वज्रो वै स्फ्यो वज्रेणैव रक्षांसि हन्ति ॥ ८ ॥

cf. oben 1, 9; Kap S. 47, 8; Māitr. S. 4, 1, 10, TBr. 3, 2, 9.

घृतं[2] च वै मधु च प्रजापतिरासीद्यतो मध्वासीत्ततः प्रजा असृजत तस्मान्मधोः प्रजननमिवास्ति[3] तस्मान्मधुना न प्रचरन्ति यातयाम हि तद्घृतेन प्रचरन्त्ययातयाम ह्येतत्प्राजापत्यं यदाज्यमयातयामा[4] देवानां प्रजापतिर्गार्हपत्ये[5] ऽधिश्रयति पत्न्यवेक्षते पत्न्या एवैष यज्ञस्यान्वारम्भो ऽथो मिथुनमेव यज्ञमुखे दधाति[6] प्रजननाय यद्ध पत्नी यज्ञे करोति तन्मिथुनं यत्पत्न्यवेक्षते[7] मिथुनमेव करोत्यमेध्यं वा एतदयज्ञियं यत्पत्न्यवेक्षत[8] आहवनीये ऽधिश्रयति मेध्यमेवैनद्यज्ञियं करोति देवाश्च वा असुराश्च समावदेव यज्ञे ऽकुर्वत यदेव देवा अकुर्वत तदसुरा अकुर्वत स इन्द्र एतमवकाशमपश्यत्तेनावैक्षत तेनासुरानभ्यभवत्ततो[9] देवा अभवन्परासुरा अभवन्य एवं विद्वानेतेनाज्यमवेक्षते ऽभ्येव भ्रातृव्यं भवति भवत्यात्मना परास्य भ्रातृव्यो भवति प्रत्युष्टं रक्ष इति यज्ञमुखादेव रक्षांस्यपहन्त्यनिशितास्थ सपत्नक्षयणीरित्यनिशिता[10] एवैनाः करोति स्रुचः संमार्ष्टि पुनात्येवैनाः स्रुवमग्रे संमार्ष्टि पुमांसमेवासामग्रे संस्यत्यथ जुहूमथोपभृतमथ ध्रुवामसौ वै जुहूरन्तरिक्षमुपभृदियं ध्रुवैमानेव लोकान्यथापूर्वं संमार्ष्टि यजमानदेवत्या वै जुहू-

---

[1] In Ch fehlen in diesem Wortcomplex die Sylben द्यन्नखेन छिन्द्या, sie sind von mir ergänzt, nach Anleitung von Kap S 47, 8 न सुपेन छिन्द्याद्यं नखेन छिन्द्या कुनखी, die Lücke ist in Ch als solche durch einen freien Raum mit Strichelchen über der Linie angedeutet [2] Dies Capitel ist nach T1 und Brl 140 accentuirt. [3] So T1 und Brl 140; Ch प्रजननमेवास्ति, Kap S. 47, 9 प्रजननमिवास्ति [4] Kap. S. 47, 9 यदाज्यमयातयामा; cf Māitr. S. 4, 1, 12 (p 15, Z 6). [5] Ch पत्न्य, Kap S 47, 9 गार्हपत्ये [6] So Ch und Kap S 47, 9, T1 und Brl 140 दधाति [7] So Accent corrigirt; T1 und Brl 140 यत्पत्न्यवेक्षते, vgl aber gleich weiter unten. [8] Ch येक्षते [9] So accentuirt in Brl 140, resp नभ्यभवत्ततो; T1 नभ्यभवत्ततो [10] T1 und Brl शित स॰

भ्रातृव्यदेवत्योपभृच्चतुर्जुह्वां गृह्णन्भूय आज्यं गृह्णात्यष्टौ गृह्णन्नुपभृति कनीयो भ्रातृव्यमेवास्मा उपस्तिं करोति ॥ ९ ॥

cf oben 1, 10; Kap. S. 47, 9; Māitr. S. 4, 1, 12, TBr. 3, 3, 4.

देवीरापो[1] अग्रेगुव इति यज्ञमेव प्रणयति प्रेमं यज्ञं नयत प्र यज्ञपतिं तिरतेत्याशिषमेवाशास्ते ऽग्नेर्वै मेधो ऽपाक्रामत्कृष्णो भूत्वा स[2] वनस्पतीन्प्राविशत्प्रोक्षितास्थ कृष्णो ऽस्याखरेष्ठो ऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीति तमेव मेधमवरुन्द्धे ऽपो यस्या एवं देवतायै प्रोक्षति तस्या एनं[3] जुष्टं करोति वेदिरसि बर्हिषे त्वा जुष्टं[4] प्रोक्षामि बर्हिरसि स्रुग्भ्यस्त्वा[5] जुष्टं प्रोक्षामीति प्रजा वै बर्हिः पृथिवी वेदिः प्रजा एव पृथिव्यां प्रतिष्ठापयत्यूर्जो पृथिवीं गच्छतेति पृथिव्यामेवोर्जं दधाति तस्मात्पृथिवीं प्रजा उपजीवन्त्युपजीवनीयो भवति य एवं वेद ॥ बह्वीरासादयेद्यावतीर्वै प्रोक्षणीरासादयति तावतीरस्यामुष्मिँल्लोक आपस्तस्माद्बह्वीरासाद्याः पुरस्तात्प्रस्तरं गृह्णाति मुख्यमेव यजमानं करोति यावद्धस्तेन पर्याभुयात्तावन्तं गृह्णीयाद्रक्षोधुको[6] यजमानो भवत्यनपभावुको ऽध्वर्युर्न विधूनुयाद्यद्विधूनुयात्प्रजां चास्य पशूंश्च विधूनुयान्न प्रमृज्याद्यद्देवास्य स्वं यच्छिन्नं यद्धं तत्प्रमार्ष्टि न प्रमृज्याद्यदेवैनमागमिष्यद्भवति[7] तत्प्रतिनुदते ॥ दक्षिणतस्संनहनं स्तृणाति तस्माद्दक्षिणतो नीविः[8] प्रस्तरं[9] धारयन्परिधीन्परिदधाति यजमानो वै प्रस्तरस्स्वयमेवैतद्यजमान आत्मानं परिदधाति रक्षसामपहत्यै संहितान्परिधीन्परिदधाति[10] रक्षसामनन्ववायाय[11] न पुरस्ता-

---

[1] Dies Capitel ist nach T1 und Brl 141. 142 accentuirt. [2] In Ch fehlt das स; in Kap. S. 47, 10 ist es vorhanden; vgl. auch Māitr. S. 4, 1, 13 (p. 17, Z. 6). [3] Ch एनं; Kap. S. 47, 10 एनं (wie T1 und Brl). [4] So Brl 141; auch Ch जुष्टं; vgl auch Māitr. S. 4, 1, 13 (p 17, Z. 8); dagegen T1 जुष्टां und ebenso auch Kap. S. 47, 10. [5] So corr. Mss स्रु॰; aber cf. oben 1, 11 (p. 6, Z. 1); Kap. S 47, 10 स्रुग्भ्यस्त्वा [6] T1 und Brl 141 रक्षोदुको [7] Brl 141 न प्रतिमज्याद्य॰ was Caland vorzieht. [8] So T1 und Brl 141; Ch नेविः; Kap S. 47, 10 नीविः [9] Brl 141 प्रस्तरं [10] Die Worte रक्षसामपहत्यै संहितान्परिधीन्परिदधाति fehlen in Ch; sie sind nach T1 und Brl gegeben, finden sich auch Kap. S. 47, 10. [11] Hier

त्परिदधात्यसा एवासावादित्य उद्यन्पुरस्ताद्रक्षांस्यपहन्त्यूर्ध्वं समिधा आदधात्युपरिष्टादेव रक्षांसि हन्ति द्वे आदधाति मिथुनमेव करोति॥ सवितुर्बाहू स्थो देवजनानां विधरणिरिति[1] सवितुर्ह्येतौ बाहू देवजनानां विधरणिर्वसूना[2] रुद्राणामादित्यानां संदनमसीति या एव देवता अभ्यजयंस्ताभ्य[3] एनत्संदनं[4] करोति जुह्वेहि घृताचीत्येतद्वा आसां प्रियं धाम यद्घृतवत्प्रियेणैवैना[5] धाम्ना समर्धयति ध्रुवा असदन्नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहीति यथाहैवं ते भागस्तं गोपायस्वेत्येवमेवैतद्विष्णुमाहैतत्त आज्यं तन्नोपायस्वेति ॥ १० ॥

cf oben 1, 11, Kap S 47, 10, Mâitr S 4, 1, 13, TBr 3, 3, 6

भुवनमसि विप्रथस्वेति प्रथयत्येवाग्निर्यष्टेदं नम इति नमस्कृत्य हि श्रेयांसमुपचरन्ति जुह्वेह्यग्निस्त्वाह्वयति देवयज्याया इत्यग्निस्सर्वा देवतास्सर्वा एव देवता अवरुन्ध उपभृदेहि देवस्त्वा सविताह्वयति देवयज्याया[6] इति सवितृप्रसूत एव प्रचरति नान्तिमाहैत्यङ्घ्रिणा विष्णू मा वामवक्रमिषमिति[7] यथायजुः पाहि माग्ने दुश्चरितादा मा सुचरिते भजेति पाप्मानमेवापहते विजिहाथां मा मा संताप्तमित्यात्मनो ऽहिंसायै लोकं मे लोककृतौ कृणुतमित्याशिषमेवाशास्ते विष्णोस्स्थान[8] इति प्रतिष्ठित्या ऊर्ध्वो अध्वरो दिविस्पृगिति यज्ञो वा अध्वरो यज्ञस्योर्ध्वतायाहुतो यज्ञो यज्ञपतेरिति समृद्ध्या इन्द्रवान्बृहद्भास्स्वाहेत्यैन्द्रो वै यज्ञो मुखत एवेन्द्राय यज्ञं संप्रयच्छति सेन्द्रो ऽस्य

---

folgen in Ch die in T1 und Brl fehlenden Worte स पुरस्तात्परिदधाति रक्षसामनन्वयाय, sie fehlen auch in Kap S 47, 10 und beruhen offenbar auf einer Dittographie

[1] So T1 und Brl 141, Ch जनना विदरणि [2] Ch विदरणि° [3] So corr T1 und Brl अभ्यजयस्तांभ्य, ebenso Ch, ohne den Accent, Kap S 47, 10 भिजयस्ताभ्य [4] Ch एनत्सदन, aber T1 und Brl 142 एनात्सदनङ्कु°, Kap S 47, 10 एन सदनं, Mâitr S 4, 1, 13 (p 16, Z 5) एनेनत्सदः करोति [5] Ch त्प्रियेणैवैनं [6] So corr Ch देवस्यपयज्यायाः; Kap S 47, 11 = Corr. [7] So corr. Ch वामक्रमिष°, aber cf. oben 1, 12 (p 6 unten), Kap S 47, 11 त्वंवत्ता विष्णू मा वामयक्रमिषमिति [8] So corr. Ch स्थान, Kap S 47, 11 विष्णो स्थाथः प्रष्ठि स्ति स्थाथ प्रतिष्ठित्या

यज्ञो भवति सं ज्योतिषा ज्योतिरिति ज्योतिर्वै यज्ञो यज्ञ एव यज्ञमनुसंतनोति वाजस्याहं प्रसवेनाग्नीषोमाभ्यां देवतयोज्जयामीति य एवैनं पूर्वो ऽतिक्रान्तो भ्रातृव्यस्तं तेन प्रणुदते वाजस्याहं प्रसवेनाग्नीषोमाभ्यां देवतयामुं[1] प्रतिनुद इति य[2] एवास्य पश्चाद्भ्रातृव्यस्तं तेनापनुदते[3] प्र श्रेयांसं भ्रातृव्यं नुदते प्रति पापीयांसं नुदते ॥ पृथिव्यै त्वान्तरिक्षाय त्वा दिवे[4] त्वेतीमानेवैनं लोकान्गमयत्यक्तं[5] रिहाणा व्यन्तु वय इति स्वदयत्येव मरुतां पृषती वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छेति यजमानो वै प्रस्तरो हविर्भूतमेवैनं स्वर्गं लोकं गमयति ततो नो वृष्टिमेरयेति वृष्टिमेवावरुन्द्धे ऽहीनः[6] प्राण इति प्राणानेवैतदध्वर्युर्मुखतः कल्पयति चक्षुष्पा अग्ने ऽसि चक्षुर्मे पाहीति चक्षुषो गोपीथाय यं परिधिं पर्यधत्था अग्ने देव पणिभिरिध्यमान[7] इत्यग्निस्सर्वा देवतास्सर्वा एव देवता अवरुन्द्धे यजमानं प्रथतेति प्रथयत्येवाथो भूमानं गमयति संस्रावभागास्स्थेति परिधीनभिजुहोति स्वेनैवैनान्भागधेयेन[8] समर्धयति ॥ ११ ॥ cf 1, 12, Kap S 47, 11, Maitr S 4, 1, 14, TBr 3, 3, 7

अग्ने ऽदब्धायो ऽशीततन इति यद्देवान्तर्यन्ति यत्क्रूरं कुर्वन्ति तच्छमयत्यविषं नः पितुं कृधीत्यन्नमेवास्मै स्वदयति सुधीन्योनीन्सुषदां[9] पृथिवीमिति सुषदेवैनं सादयति वेदिर्वै देवेभ्यो ऽपाक्रामत्तां वेदेनान्वविन्दंस्तद्वेदस्य[10] वेदत्वं यद्वेदो भवति वेद्या अनुविन्दै[11] स्त्री वै वेदिः

---

[1] So corr Ch देवतयामुमप्रति°, ebenso ist auch oben 1, 12 (p 7, Z 4) zu corrigiren, Kap S 47, 11 देवतयाम प्रतिनुदामीति [2] Dies य fehlt in Ch und ist von mir ergänzt, Kap S 47, 11 य एवेन पश्चाद्भ्रातृव्यस्तं [3] So corr Ch तेनानु पनुदते, Kap S 47, 11 तेनापनुदते [4] So corr Ch दिवि [5] So Ch गमयत्यक्त, das क्त wird bestätigt durch Kap S 47, 11 गमयत्यक्ता रूपाणि व्यन्तु, ebenso Kap S 1, 12, darnach wohl oben 1, 12 (p 7, Z 10) das त्वार्यं zu corrigiren in त्यक्त, Maitr S 1, 1, 13 (p 9, Z 1) स्वक्तुभो विहाणा 4, 1, 14 (p 19, Z 17) यदन्त्यक्तुभी रिहाणा [6] Kap S 47, 11 कथं अहीना प्राण इति, cf oben 1, 12 [7] So corr Ch पणिभिरिध्यमान, aber cf oben 1, 12 (p 7, Z 14), Kap S 47, 11 पाणिभिरिध्यमान, aber Maitr S 4, 1, 14 (p 20, Z 5) पणिभिर्गोह्यमान [8] So corr Ch स्वेनवं° [9] Ch स्यधीन्यो°, aber oben 1, 12 (p 7 unten) सुधीन्यो° [10] So corr. Ch स्ताद्वेदस्य [11] So corr Ch विन्ये

पुमान्वेदो यद्वेदेन[1] वेदिं संमार्ष्टि मिथुनमेव करोति प्रजापतेर्वा एतानि श्मश्रूणि[2] यद्वेदो यां पत्नीं कामयेत पुत्रं विन्देतेति तस्या उपस्थ आस्येन्मिथुनमेव करोति वि वा एतद्यज्ञं[3] छिनत्ति यदर्धमासे संस्थां गमयति यद्वेदं संततमाहवनीयात्स्तृणाति तेनैव यज्ञं संतनोति तं संततमुत्तरे[4] ऽर्धमास आलभते ॥ एष वै वनस्पतीनां परिविष्टा यदुपवेषो य एवं वेदादव्या[5] अस्य वेशा भवन्ति पुरस्तात्प्रत्यञ्चमुपहन्ति तस्मात्प्रतीचीनावसिता वेशा[6] भवन्ति स्यविमत उपहन्त्यनतिवादना[7] एनं वेशा भवन्ति सर्पेभ्यो[8] वै यज्ञे क्रियते सर्प उपवेषो[9] वल्मीक उत्करो यदुपवेषमुत्कर[10] उपहन्ति तस्मात्सर्पाणां वल्मीको गृहाः ॥ १२ ॥
cf. oben 1, 12 a. E. TBr. 3, 3, 9, 9—11; 3, 3, 11, 1—2.

यो ह वै स्रुचां योगमविद्वानध्वर्युरध्वर्य इति हूतः प्रतिशृणोत्या देवताभ्यो वृश्च्यते ऽप्रजा अपशुर्भवत्यथ यस्स्रुचां योगं विद्वानध्वर्युरध्वर्य इति हूतः प्रतिशृणोति न देवताभ्य आवृश्च्यते प्रजावान्पशुमान्भवत्याश्रावयेति जुहूं तेन युनक्त्यस्तु श्रौषडित्युपभृतं तेन यजेति ध्रुवां तेन ये यजामह इत्याज्यधानीं तेन वषट्कारेण स्रुवमसौ वै जुहूरन्तरिक्षमुपभृदियं ध्रुवा दिश आज्यधान्यसा आदित्यस्स्रुवो ऽसौ वा अस्यै प्रयच्छतीयममुष्यै तस्माद्यज्जुह्वां तेन ध्रुवामाप्याययति यद्ध्रुवायां तेन जुहूमसौ ह्यस्यै प्रयच्छतीयममुष्यै संततमस्मा अविच्छिन्नं प्रदीयते य एवं वेद ॥ १३ ॥

स्योनो[11] मे सीद सुषदः पृथिव्यामुरुः पृथुः प्रथमानस्स्वर्गे ।
स्रुवो ऽसि घृतादनिशितस्सपत्नक्षयणो दिवि सीदान्तरिक्षे पृथिव्या-
मुत्तमो ऽहं भूयासमधरे मत्सपत्नाः ॥[12]

---

[1] So corr. Ch यद्वेदेन [2] So corr. Ch श्मश्रुणि [3] So corr. Ch एतद्यज्ञंश्छि° [4] So corr. mit Caland; Ch सतत उत्तरे; cf. TBr. [5] So corr. Ch वेदव्या [6] So corr. Ch वेश्मा [7] So corr. Ch वादन [8] So corr. Ch सर्वेभ्यो [9] So corr. Ch वेषी [10] So corr. Ch वेषमु° [11] So corr. Ch स्योना; TBr. 3, 7, 6, 10 a. A. = Corr. [12] Die Versabtheilungen sind bei diesem ersten unvollkommenen Verse von mir gesetzt; sie fehlen in Ch.

आरोह पथो जुहु देवयानान्यत्रर्षयो जग्मुः प्रथमाः पुराणाः ।
हिरण्यपक्षाजिरा संभृताङ्गा वहासि[1] सा सुकृतां यत्र लोक उत्त-
मो ऽहं भूयासमधरे मत्सपत्नाः ॥
अवाहं बाध उपभृता द्विषन्तं जातान्भ्रातृव्यान्ये च जनिष्यमाणाः ।
दुहे यज्ञे सुदुघामिव धेनुमुत्तमो ऽहं भूयासमधरे मत्सपत्नाः ॥
यो नो वाचा मनसा दुर्हणायुर्हृदारातीयन्नभिदासदग्ने ।
इदमस्य चित्तमधरं[2] ध्रुवाया उत्तमो ऽहं भूयासमधरे मत्सपत्नाः ॥
यन्मे अग्ने अस्य यज्ञस्य रिष्याद्यद्वा स्कन्दादाज्यस्योत विष्णो ।
तेन हन्मि सपत्नं दुर्हणायुमेनं दधामि निर्ऋत्या उपस्थे ॥
यो नः कनिष्ठमिह कामयाता अस्मिन्यज्ञे यजमानाय मह्यम् ।
अप तमिन्द्राग्नी भुवनान्नुदेतां प्रजां विदेय वाजवतीं[3] सुवीराम् ॥
अयं वेदः पृथिवीमन्वविन्दद्गुहा हितां गह्वरेषु ।
स मह्यं लोकं यजमानाय विन्दत्वच्छिद्रं यज्ञं भूरितोः कृणोतु ॥
स्तृणीत बर्हिः परिधत्त वेदिं जमि[1] मा हिंसीरमुया शयानाम् ।
दर्भैरस्तृणीत हरितैस्सुवर्णैर्निष्का एते यजमानस्य सन्तु ॥
अस्मिन्मे यज्ञ उप भूयो अस्त्वविह्रोधाय परिधीन्दधामि ।
धर्ता विधर्ता धरुणो धरीयान्विश्वा द्वेषांसि वीतो नुदन्ताम् ॥
चतुश्शिखण्डा युवतिस्सुपत्नी विनीयमाना महते सौभगाय ।
घृतं दुहानादितिर्जनाय सा मे धुक्ष्व सर्वान्भूतिकामान् ॥[4]
वेदेन वेदिं विविदुः पृथिव्यां[5] सा पप्रथे पृथिवी पार्थिवाय ।
गर्भं बिभर्ति भुवनेष्वन्तस्ततो यज्ञस्तायते विश्वदानीम् ॥
विशो यन्त्री नुदमाने अरातिं विश्वं जातमरणं दुर्हणायुम् ।
सीदन्ती देवी सुकृतस्य लोके विश्वा द्वेषांसि वीतो नुदेताम् ॥

---

[1] So in Ch [2] Ch चित्तमधरन्धु॰ [3] So Ch! [4] Dieser Vers findet sich auch in Brl fol 121. [5] So corr Ch पृथिव्यां

आप्यायतां ध्रुवा घृतेन यज्ञिया यज्ञं प्रति देवयद्भ्यः[1] ।
सूर्याया ऊधो अदितेरुपस्थ उरुधारेव[2] दोहतां[3] यज्ञे अस्मिन् ॥
पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ।
पयस्वतीः प्रदिशस्सन्तु मह्यम् ॥ ॥ १४ ॥

cf. TBr. 3, 7, 6, 9 flg.

समृतयज्ञो[4] वा एष यद्दर्शपूर्णमासौ कस्य वा ह देवता यज्ञमागच्छन्ति कस्य वा न बहूनां समानमहर्यजमानानां यो वै देवताः पूर्वेद्युर्गृह्णाति तस्य श्वो भूते यज्ञमागच्छन्ति ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्त्विति पूर्वमग्निं गृह्णात्यग्निस्सर्वा देवता देवता एव पूर्वेद्युर्गृह्णाति ताश्श्वो भूते ऽभियजते बर्हिषा वै पूर्णमासे व्रतमुपयन्ति वत्सैरमावास्यायां पुरा वत्सानामपाकर्तोर्दम्पती अश्नीतो हस्ता अवनिज्य दक्षिणतो ऽग्नेस्तिष्ठन्ब्रूयादग्ने व्रतपते व्रतमालभ इत्यग्निर्वै व्रतपतिर्ब्राह्मणो व्रतभृद्व्रतपतय एव प्रोच्य व्रतमालभते समस्मै व्रतमृध्यते यदि निम्रुक्ते सूर्ये व्रतमालभेताग्निमुपस्थायैतद्यजुर्वदेदग्नौ हि स तर्हि प्रविष्टो ऽग्निहोत्रोप तौ हुव इति पाचमभिमृशति येन हविर्निर्वप्स्यन्भवति दुर्यहा वै देवता दुर्यहो यज्ञो देवताश्चैवैतद्यज्ञं च गृह्णात्या देवा यन्तु सुमनस्यमाना इत्येता वै देवानां देवहूतयो यन्त्यस्य देवा देवहूतिं न[5] यज्ञाच्छिद्यते[6] य एवं वेद व्यन्तु देवा हविषो मे अस्येत्याशिषमेवाशास्ते ॥ युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येनेति परिधिषु परिधीयमानेषु वदत्येषो वा[7] एष यागो ब्रह्मणैवाग्निं युनक्ति युक्तो ऽस्य हव्यं देवेभ्यो वहत्यङ्गिरसो मास्य यज्ञस्य प्रथमानुवाकैरवन्त्विति सामिधेनीनामेवैष योगस्तासां युक्तानां यां[8] कामयत आशिषं तामवरुन्द्धे समिद्धो अग्निराहुत इति समिद्धिरेवैषा मनो ऽसि प्राजापत्यं[9] मनसा मा भूतेना-

---

[1] So Ch, TS 1, 6, 5, 1 देवयज्ञः [2] So corr. Ch उरुधारेव; cf. TS 1, 6, 5, 1 [3] So corr. Ch दोहतं [4] So corr. Ch समृत° [5] So corr. Ch देवहूतिनं [6] So corr. Ch यज्ञाच्छिद्यते [7] So corr. Ch ब्रिवाः, Maitr. S 1, 4, 5 (p. 53, Z. 1) = Corr. [8] So corr. Ch यं [9] So corr. Ch प्रत्याज°

विशेति मन इव वै प्रजापतिः प्राजापत्यो यज्ञो यज्ञमेव संतनोति वागस्यैन्द्री सपत्नक्षयणी वाचा मेन्द्रियेणाविशेतीन्द्रियं[1] वै वागिन्द्रियमेवावरुन्द्धे ॥ न वै तद्विदुर्यदि ब्राह्मणा वसन्ता[2] यजन्ति ब्राह्मणा वा यदि तस्य वर्षत्यस्य वा यस्य ब्रुवते यस्यैवर्षेब्रुवाणो यजते तं तदिष्टं गच्छति नेतरमुपनमति तत्प्रवरं प्रवृणाने ब्रूयाद्देवाः पितरो देवा यो ऽस्मि स सन्यज[3] इति य एव कश्च सन्यजते तं तदिष्टमागच्छति नेतरमुपनमति देवेभ्य एव पितृभ्यो यज्ञं परिददाति तमस्य[4] ते गोपयन्ति समिष्टापूर्तेन गच्छति स्वर्गे लोके तदस्याक्षय्यममपरिमितं भवति वसन्तामृतूनां प्रीणामीति पञ्च वा ऋतव ऋतूनेव प्रीणाति ते ऽस्मै प्रीताः कल्पन्ते ऽस्मा ऋतवो य एवं वेद ॥ १५ ॥
cf Maitr S 1 4 5, TS 1 6 7

इति श्रीमद्यजुर्वेदकाठके चरकशाखायां पुरोडाशब्राह्मणं नामैकत्रिंशं स्थानकं संपूर्णम् ॥[5]

अग्नीषोमाभ्यां यज्ञश्चक्षुष्मानित्यग्नीषोमौ वै यज्ञस्य चक्षुषी यज्ञस्यैव चक्षुषा चक्षुरात्मन्धत्ते चक्षुष्मान्भवति य एवं वेदाग्निरन्नस्यान्नपतिरित्यग्निर्वै देवानामन्नादस्स एनं मनुष्येष्वन्नाद्यं प्रापयत्यन्नादो भवति य एवं वेद दब्धिरस्यदब्धो भूयासममुं दभेयमित्येतया[6] वै दब्ध्या देवा असुरानदभ्नुवंस्तयैव भ्रातृव्यं दभ्नोति नैनं दिप्सन्दभ्नोति य

---

[1] So corr Ch विशतो॰ darnach auch Kath 4 14 (p [illegible] Z 5) zu corr [2] So corr Ch वसन्तो [3] So corr Ch यो स्मिन्न सन्यज, das न für स erklart sich aus Mißverstandniß der Çarada Schrift. [4] So corr Ch तमस्य [5] So die Unterschrift des Capitels in Ch [6] So corr Ch धमेय

एवं वेदाग्नीषोमौ वृत्रहणा इत्यग्नीषोमाभ्यां वै वीर्येणेन्द्रो वृत्रमहंस्ताभ्यामेव भ्रातृव्यं स्तृणुत इन्द्राग्न्योरहं देवयज्ययौजस्वान्वीर्यावान्भूयासमित्योजो वै वीर्यमिन्द्राग्नी ओज एव वीर्यमात्मन्धत्त इन्द्रस्याहं देवयज्ययेन्द्रियावान्भूयासमितीन्द्रियं वा इन्द्र इन्द्रियमेवात्मन्धत्ते ॥ महेन्द्रस्याहं देवयज्यया जेमानं[1] भूमानं गमेयमिति जेमानमेव भूमानमुपैतीन्द्रस्याहं विमृधस्य देवयज्ययासपत्नो भूयासमित्यसपत्न एव भवतीन्द्रस्याहमिन्द्रियावतो देवयज्यया पशुमान्भूयासमितीन्द्रियं वै पशवः पशूनेवात्मन्धत्ते सरस्वत्या ऽहं देवयज्यया वाचमन्नाद्यं पुषेयमिति वाग्वै सरस्वती वाचैवान्नाद्यमवरुन्द्धे पूष्णो ऽहं देवयज्यया पुष्टिमान्पशुमान्भूयासमिति पुष्टिर्वै पूषा पुष्टिमेवावरुन्द्धे ऽदित्या ऽहं देवयज्यया प्रतिष्ठां गमेयमितीयमदितिरस्यामेव प्रतितिष्ठति ॥ विश्वेषामहं देवानां देवयज्यया प्राणानां सायुज्यं गमेयमिति प्राणानामेव सायुज्यं गच्छति द्यावापृथिव्योरहं देवयज्यया प्रजनिषीय प्रजया पशुभिरिति प्रजापतिमेवोपैत्यग्नेरहं स्विष्टकृतो देवयज्ययायुः प्रतिष्ठां गमेयमित्यायुरेवात्मन्धत्ते प्रति यज्ञेन तिष्ठति यो देवताश्च यज्ञं च यज्ञे तर्पयितव्यान्वेद तृप्यति प्रजया पशुभिरुपैनं सोमपीथो नमत्येतर्हि वै सर्वा देवता यर्हि स्विष्टकृदेतर्हि ह्येनाः सर्वाः संयजत्येष खलु वाव प्रत्यक्षं यज्ञो यत्स्विष्टकृदतीतृपद्यज्ञं[2] यज्ञमिति देवताश्चैवैतद्यज्ञं च यज्ञे तर्पयति तृप्यति प्रजया पशुभिरुपैनं सोमपीथो नमत्ययाडग्नेरग्नेः प्रिया धामानीति ब्रह्मवर्चसं तेनावरुन्द्धे सोमस्यायाट् प्रिया धामानीति क्षत्रं तेनाग्नीषोमयोरयाट् प्रिया धामानीत्युपांश्वनिरुक्तं तेनावरुन्द्धे ऽग्नीषोमयोरयाट् प्रिया धामानीत्युच्चैर्निरुक्तं तेनानिरुक्तं[3] च वा इदं निरुक्तं च तस्यैवोभयस्यावरुद्ध्या अथो शुष्कहरिते एवावरुन्द्धे यद्धि शुष्कं तदाग्नेयं यद्धरितं तत्सौम्यं शुष्कं च वा इदं हरितं च तस्यै-

---

[1] Darnach oben 5, 1 (p 44, Z 9) zu corr [2] So corr. Ch यज्ञो, oben 5, 1 (p 45 p 1) zu corr [3] So corr. Ch मुच्चैर्निरुक्तेनानिरुक्त

वोभयस्यावरुद्ध्यै देवानामाज्यपानामयाट् प्रिया धामानीति प्रयाजानुयाजा वै देवा आज्यपास्तानेवोभयान्प्रीणाति ते ऽस्योभये प्रीता यज्ञे भवन्ति ॥ १ ॥ cf oben 5, 1, TS 1, 6, 11, 5 flg

बृहतो मा वाजेन वाजय वामदेव्यस्य मा वाजेन वाजयेति वामदेवो वा एतन्नोनामपश्यत्पशव[1] इडा पशुष्वेव पशून्दधाति जुष्टे जुष्टिं ते गमेयमुपहूत उपहवं ते ऽशीयेति[2] आशीर्वै यज्ञो यज्ञस्यैवैतामाशिषमाशास्ते सुहवा मेहीति सुहवामेवैनां[3] कुरुते सह रायस्पोषेणेति सहैवैवं रय्याभ्यैत्यस्मास्विन्द्र इन्द्रियं दधात्वितीडाया वा एष दोह इडामेवैतद्दुहे ऽस्मान्रायो मघवानस्सचन्तामिति पशवो वै रायो मघवानः पशूनेवात्मन्धत्ते ऽस्माकं सन्त्वाशिष इत्याशिषमेवाशास्ते संजयन्क्षेत्राणि सहसाहमिन्द्र कुर्वाणो अन्याँ अधरान्सपत्नानित्यधरमेव[4] भ्रातृव्यं कुरुते ॥ ब्रह्म तेजो मे पिन्वस्व क्षत्रमोजो मे पिन्वस्वेत्येतदेवासा[5] इडा सर्वं दुहे[6] सर्वं हास्यैतद्भवति य एवं वेद मयि त्यदिन्द्रियं महदितीन्द्रियं वा आप इन्द्रियमेवात्मन्धत्ते ब्रह्म पिन्वस्व कल्पन्तां दिश इत्यसौ वा आदित्यो ब्रह्म स यदोदेत्यथ दिशः कल्पन्ते य एवं वेद यामब्राह्मणः प्राश्नाति सा स्वाहुतिस्तस्या वै वसिष्ठ एव प्रायश्चित्तिं विदांचकार ब्रह्म पिन्वस्वेति पुरोडाशमभिमृशति दक्षिणीयेष्वेव यज्ञं प्रतिष्ठापयत्यस्कन्नमविक्षुब्धमपि ह वा अस्य यामब्राह्मणः प्राश्नाति सा हुतैव भवत्यथ ह स्माह कपिवनो भौवायनः किमु स यजेत यो गामिव[7] यज्ञं न[8] दुहे सुदोहतये वा एष गोरिति सं यज्ञपतिराशिषेति यजमानो यजमानभागं प्राश्नाति यजमानो वै यज्ञपतिर्यज्ञो यजमानभागो यद्यजमानो यजमानभागं प्राश्नाति यज्ञपता एव यज्ञं प्रतिष्ठापयति ॥ २ ॥ cf oben 5, 2

---

[1] Ch wohl ब्रह्मपश°   [2] So corr Ch शोयति   [3] So corr Ch स्वहवा मेहोति स्वह°, cf oben 5, 2 (p 45, Z 5)   [4] So corr Ch रामव   [5] So corr Ch त्यतदेवा ह्य   [6] So corr Ch सर्वन्दुहे सर्वेहा°   [7] So corr Ch मादिव, cf Maitr S 1, 4, 5 a E   [8] So corr Ch यज्ञं, vgl die vorige Anm

देवस्याहं बर्हिषो देवयज्यया प्रजावान्भूयासमिति[1] बर्हिषा वै प्रजापतिः प्रजा असृजत प्रजामेव सृजते देवस्याहं नराशंसस्य देवयज्यया पशुमान्भूयासमिति नराशंसेन वै प्रजापतिः पशूनसृजत पशूनेव सृजते देवस्याहमग्नेस्स्विष्टकृतो देवयज्ययायुः प्रतिष्ठां गमेयमित्यायुरेवात्मन्धत्ते प्रति यज्ञेन तिष्ठत्या माशिषो दोहकामा इत्याशिषो वै दोहकामा यजमानमुपतिष्ठन्ते ता यथा धेनवो ऽदुग्धा[2] अपक्रामन्त्येवं तस्माद्यजमानादपक्रामन्त्यथ य एवं वेदाशिष एवैष दुहे सा मे सत्याशीर्देवान्गम्यादिति सत्यामेवाशिषं देवान्गमयित्वा वरं वृणीते ॥ जुष्टाज्जुष्टतरेति जुष्टादेवैनां जुष्टतरां करोति पन्यात्पन्यतरेति पन्यादेवैनां पन्यतरां करोत्यरेडता[3] मनसा[4] देवान्गच्छेत्येवैतदाह यो देवयानः पन्थास्तेन देवान्गच्छेति य एव देवयानः पन्थास्तमेवैनमपिपादयति रोहितेन त्वाग्निर्देवतां गमयतु हरिभ्यां त्वेन्द्रो देवतां गमयत्विति यजमानो वै प्रस्तरो हविर्भूतमेवैनं स्वर्गं लोकं गमयति यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छेति स्वमेवैनं योनिं गमयति यो यज्ञस्यायुर्वेद सर्वमायुरेति यज्ञस्यायुरसि यज्ञो म आयुर्दधात्वित्येतद्वै यज्ञस्यायुर्य एवं वेद सर्वमायुरेति यद्वै मुक्तो विमुक्तश्श्यमरथं[5] वा करोति प्र वा क्षिणाति वि ते मुञ्चामि रशनां वि रश्मीनिति विमोक[6] एवास्यैष स्वर्गमेव लोकं देवता गमयित्वा प्रतिष्ठाप्य विमुञ्चति विष्णोश्शम्योर्यज्ञस्यान्त[7] इति विष्णुर्वै यज्ञो ऽन्तत एव यज्ञं प्रतिष्ठापयति ॥ ३ ॥

cf oben 5, 3, Maitr S 1 4 5, TS 1 7 4 und 1 6 4

इष्टो यज्ञो भृगुभिर्द्रविणोदा यतिभिरिति यज्ञस्य वा एष दोहो

---

[1] So corr Ch प्रजावान्भूयान्भूयास° aber vgl oben 5, [illegible] (p 45, Z 18) wodurch sich das doppelte न्भूया als Dittographie erweist [2] cf Maitr S 1, 4, 5 (p 53, Z 6) [3] Darnach auch oben 5 3 (p 46 [illegible] 3) so zu corrigiren cf auch TS 1 6 3, 2 Maitr S 1 4, 1 (p 48, [illegible] 1) [4] Hier folgen in Ch die Worte देवान्गच्छेत्यरेडता मनसा, was auf fehlerhafter Dittographie beruht cf oben 5, 3 [5] So Ch, vgl Drâhyây 5, 4, 11, Baudh Çr 16, 13, 17, 43 Caland [6] So corr Ch विमोचा, cf TS 1 7, 4, 4 [7] So corr Ch शंय्वायज्ञ°, cf TS 1, 7, 4, 4, 1, 6, 4 3

यज्ञमेवैतद्दुहे तस्य यज्ञस्येष्टस्य स्विष्टस्य द्रविणमागच्छत्वित्याशिषमेवाशास्ते[1] ऽङ्गिरसो मे ऽस्य यज्ञस्य प्रातरनुवाकैरहौषुरित्याशिषामेवैष[2] दोहो वसुर्यज्ञो वसुमान्यज्ञ इति वसुमन्तमेव यज्ञं कुरुते तस्य यज्ञस्य वसोर्वसुमतो वसु मागच्छत्वित्याशिषमेवाशास्ते सोमो रेतोधा इति सोमो वै देवानां रेतोधास्सोम एवास्मै रेतोधा रेतो दधाति त्वष्टा रूपाणां विकर्तेति त्वष्टा वै रूपाणां विकर्ता सो ऽस्मै रूपाणि विकरोति देवानां पत्नीरग्निर्गृहपतिर्मिथुनं यजमानस्येत्येतद्वै दर्शपूर्णमासयोर्मिथुनं दर्शपूर्णमासयोरेव मिथुनेन मिथुनमात्मन्धत्ते तयोरहं देवयज्यया मिथुनेन प्रजनिषीयेति प्र प्रजया प्र पशुभिर्जायते या वा एतस्य पत्नी सैति संप्रति[3] पश्चादासीताग्निरस्याः प्रजा निर्देहेद्यदाह पत्न्येष ते पत्नि लोक इति लोकमेवास्यै करोत्यनिर्दाहुको ऽस्या अग्निः प्रजा भवति सं पत्नी पत्या[4] सुकृतेषु गच्छतामिति पत्न्या एवैष यज्ञस्यान्वारम्भस्सह[5] स्वर्गे लोके भवतस्स्वाहा स्वाहेष्टेभ्यो वषडनिष्टेभ्य इति स्विष्टश्च वै दुरिष्टश्च यज्ञे संयतेते यस्य स्विष्टिर्यज्ञं युवते स वसीयान्भवति यस्य दुरिष्टिर्यज्ञं युवते[6] स पापीयान्भवति स्विष्टिमेवास्य यज्ञे समर्धयति वसीयान्भवत्ययाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिश्चेत्यया वै नामैवाग्नेस्तनूस्तया मयोधैर्यणोति[7] खलु वा आहुर्यां च विद्म यज्ञस्य प्रायश्चित्तिं यां च न विद्म यश्च यज्ञस्य क्रियते यश्च न क्रियते तस्यैषोभयस्य प्रायश्चित्तिस्सरस्वत्यै वेशभगिन्यै स्वाहेति वेशयमनं वा एतदपि ह वा एनमाजीवन्त[8] उपासते वाचमस्य ब्राह्मणस्य वा राजन्यस्य वोपास्मह इति य एवं वेद यज्ञस्य त्वा प्रमयाभिमयोन्मया प्रतिमया परिगृह्णामीति गायत्री वै यज्ञस्य प्रमा त्रिष्टुबभिमा जग-

---

[1] Ch दविशस्मा°, aber cf oben 5, 4 a A [2] So corr Ch होषु°, vgl oben 5, 4 (p 46, Z. 13) [3] So corr Ch सप्तती vgl Maitr S 1, 4, 8 (p 56 Z 12) [4] So corr Ch पत्या, cf oben 5 4 (p 46, Z. 19) [5] So corr Ch रम्भो सह, cf Maitr S 1, 4, 6 (p 56, Z 11) [6] So corr Ch यजते [7] Vgl dasselbe Maitr S 1, 4, 8 (p 56, Z 16) [8] So corr Ch अनमजीव°, cf Maitr S 1, 4, 8 (p 56, Z 15)

त्युन्मानुष्टुप्प्रतिमैतावन्ति वै छन्दांसि यज्ञं वहन्ति तैरेवैनं परिगृह्णाति तेष्वेनं[1] प्रतिष्ठापयति ॥ ४ ॥ cf. oben 5,4; Maitr. S 1,4,8.

पूर्णमसि पूर्णं मे भूया इति येभ्य एव कामेभ्य ऊनस्तानापूरयते ऽपिवै भूयांसं यजमानं प्रदहति संततिं स्नावयत्ययो[2] ऽतिमुच्यमाना अनु यजमानो ऽतिमुच्यते ऽथो अग्निरेवैतदग्नेरात्मानमन्तर्धत्ते ऽप्रदाहाय सर्वं वा एतस्य यज्ञो मृष्टम्युचाभिपीदति[3] यज्ञहा यत्पशवः प्राच्या दिशा देवा ऋत्विजो मार्जयन्तामित्येता वै यज्ञस्य मृष्टय एताभ्यान्तयो मृष्टो ऽस्य यज्ञो भवति शान्तो ऽघातुकः पशुपतिः पशून्पृथिवीं[4] विष्णुर्व्यक्रंस्त गायत्रेण छन्दसेति विष्णुमुखा वै देवाश्छन्दोभिरेभ्यो लोकेभ्यो ऽसुरान्प्राणुदन्त[5] विष्णुमुख एवैतद्यजमानश्छन्दोभिरेभ्यो लोकेभ्यो भ्रातृव्यं प्रणुदते ऽगन्म स्वरिति स्वरेव गच्छति सं ज्योतिषाभूमेति ज्योतिर्वै यज्ञो यज्ञ एव यज्ञमनुसंतनोति सूर्यस्यावृतमन्वावर्त इत्यमुष्यैवादित्यस्यावृतमन्वावर्तते ऽथो एवं हि यज्ञ आवर्ततेदमहं यो ऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तस्य प्राणं निवेष्टयामीति[6] यमेव द्वेष्टि तस्य प्राणं निवेष्टयति[7] तेजो ऽसि तेजो मयि धेहीति तेज एवात्मन्धत्ते[8] समहं प्रजया सं मया प्रजेति प्रजामेवात्मन्धत्ते समहं रायस्पोषेण सं मया रायस्पोष इति पशवो वै रायस्पोषः पशूनेवात्मन्धत्ते ऽग्नेस्तेजसा तेजस्वी भूयासमिति तेज एवात्मन्धत्ते वायोरायुषायुष्मान्भूयासमित्यायुरेवात्मन्धत्ते सूर्यस्य वर्चसा वर्चस्वी भूयासमिति वर्च एवात्मन्धत्ते इन्द्रस्येन्द्रियेणेन्द्रियावान्भूयासमितीन्द्रियं वा इन्द्र इन्द्रियमेवात्मन्धत्ते ॥ धाता मे धाम्ना सुधां दधात्विति धातैवास्मै[9] धाम्ना सुधां दधाति प्रजापतेः प्रजया प्रजावान्भूयासमिति प्रजामेवात्मन्धत्ते प्र वा एषो ऽस्माल्लोकाच्च्यवते[10] यः प्रक्रमान्प्रक्रामति च्छ-

[1] So corr. Ch तेस्वेन [2] So corr. Ch त्यमो [3] cf. oben 5, 5 (p. 47, Z. 15flg.) [4] So corr. Ch पशून्पृ° [5] So corr. Ch प्रणुदत [6] So corr. Ch निविष्टयामीति, cf. oben 5, 5 (p. 47, Z. 23) [7] So corr. Ch निविष्टयति [8] So corr. Ch त्सेधे [9] So corr. Ch धातोषा° [10] So corr. mit Caland Ch काव्ययावयते cf. TS 1, 7, 6, 1.

न्दोभिर्हि पराङ्गोहति स ईश्वरः प्रमेतोस्ये गृहपत इति गार्हपत्यमुपतिष्ठते ऽस्मिन्नेव लोके प्रतितिष्ठति ॥ ५ ॥

cf oben 5 5, Maitr S 1, 4 7

देवाञ्जनमगन्यज्ञ इति जनं वा एतद्यज्ञस्यैति यत्स्कन्दति जनादेव यज्ञस्याशिषमवरुन्द्धे पञ्चानां त्वा वातानां धर्त्राय गृह्णामीत्ययं वाव यः पवते स यज्ञः पाङ्क्तो यज्ञो यज्ञमेवास्मै गृह्णाति पञ्चानां त्वा सलिलानां धर्त्राय गृह्णामीति पशवो वै सलिलं पशूनेवास्मै गृह्णाति पञ्चानां त्वा पृष्ठानां धर्त्राय गृह्णामीति यज्ञो वै पृष्ठानि यज्ञमेवास्मै गृह्णात्येतेन वै दर्शपूर्णमासौ पृष्ठवन्तौ पञ्चानां त्वा दिशां धर्त्राय गृह्णामीति पञ्च वै दिशो[1] दिश एवास्मै गृह्णाति सर्वा दिशो ऽभिजयति सर्वा अस्य दिशो ऽभिजिता भवन्ति पञ्चानां त्वा पञ्चजनानां धर्त्राय गृह्णामीति ॥ छन्दांसि वै पञ्च पञ्चजना यज्ञश्छन्दांस्युपैनं यज्ञो नमति भूरस्माकं हव्यं देवानामाशिषो यजमानस्येति भूतिमेवात्मने गृह्णाति हव्यं देवेभ्य आशिषो यजमानस्य चरोस्त्वा पञ्चबिलस्य धर्त्राय गृह्णामीतीमे लोकाश्चरुः[2] पञ्चबिल इमानेवास्मै लोकान्गृह्णाति धामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमिति प्रज्ञात आज्यग्रहः पथागान्न यज्ञाद्धूर्छति नास्माद्यज्ञो ह्वर्छति य एवं वेद यज्ञो वै देवेभ्यो ऽपाक्रामत्तं वेदेनान्वविन्दंस्तद्वेदस्य[3] वेदत्वं यद्वेदो[4] भवति यज्ञस्यानुवित्त्यै स्त्री वै वेदिः पुमान्वेदो यद्वेदेन वेदिं संमार्ष्टि मिथुनमेव करोति प्रजापतेर्वा एतानि श्मश्रूणि यद्वेदो यां पत्नी कामयेत पुत्रं विन्देतेति तस्या उपस्थ आस्येन्मिथुनमेव करोति ॥ शिरो वा एतद्यज्ञस्य यत्पुरोडाशः[5] केशा वेदो यद्वेदेन पुरोडाशं समुन्मार्ष्टि यज्ञस्य सर्वत्वायौषधयो वै वेदः पशव ओषधय एष पशूनां गोष्ठो यदन्तराग्नी यद्वेदमन्तराग्नी स्तृणाति स्व[6] एव गोष्ठे भ्रातृव्यस्य पशून्वृङ्क्ते

[1] So corr Ch दिश [2] So corr Ch लोका चरु [3] So corr Ch पाक्रामत्तु वेदेनान्वविन्दंस्त [4] So corr Ch यद्वेदा [5] Die erste Hand in Ch शाश, dann corr in शाशः cf Maitr S 1, 4 8 (p 55, Z 18) [6] So corr Ch स्वा

दुरनुवेदो[1] वा अमुत्र यज्ञो यद्वेदो भवति यज्ञस्यानुविस्यै वि वा एतद्यज्ञश्छिद्यते यदर्धमासे ऽर्धमासे संस्थां गच्छति यत्संततमाहवनीयास्तृणाति यज्ञमेव संतनोति तं संततमुत्तरे ऽर्धमास आलभते ॥ यज्ञहनो वै देवा यज्ञमुषस्सन्ति त एषु लोकेष्वासत आददाना विमथ्नाना यो ददाति यो यजते तस्य ये देवा यज्ञहनो यज्ञमुषः पृथिव्यामध्यासत इति य एव पृथिव्यां यज्ञहनश्च यज्ञमुषश्च देवास्तानतीत्यान्तरिक्षं गच्छति गच्छेम सुकृतो वयमित्याशिषमेवाशास्ते ये देवा यज्ञहनो यज्ञमुषो ऽन्तरिक्षे ऽध्यासत इति[2] य एवान्तरिक्षे यज्ञहनश्च[3] यज्ञमुषश्च देवास्तानतीत्य दिवं गच्छति गच्छेम सुकृतो वयमित्याशिषमेवाशास्ते ये देवा यज्ञहनो यज्ञमुषो दिव्यध्यासत इति य एव दिवि यज्ञहनश्च यज्ञमुषश्च देवास्तानतीत्य स्वर्गं लोकं गच्छति गच्छेम सुकृतो वयमित्याशिषमेवाशास्ते ॥ गोमाँ अग्ने ऽविमाँ अश्वी यज्ञ इति गोमन्तमेवाविमन्तमश्विनं यज्ञं कुरुते नृवत्सखा सदमिदप्रमृष्य इति नृवत्सखा ह्येष सदमिदप्रमृष्य इडावाँ एषो असुर प्रजावानित्याशिषमेवाशास्ते दीर्घो रयिः पृथुबुध्नस्सभावानिति प्रथयत्येवास्य व्रतमचारिषमित्यग्निर्वै देवानां व्रतपतिर्व्रतपतय एव व्रतं संप्रयच्छति ॥ ६ ॥

cf oben 5 6, Maitr S 1 4, 9 und 8

देवतानां वा एतदायतनं यदाहवनीयो यदन्तराग्नी तत्पशूनां मनुष्याणां गार्हपत्यो ऽन्वाहार्यपचनः पितॄणां पूर्वं चाग्निमपरं च परिस्तरित्वा आह मनुष्याणामिन्न्वै नवावसानं प्रियं नवावसानमेवा[illegible]त्वाय सर्वा ह वा अस्य यक्ष्यमाणस्य देवता यज्ञमागच्छन्ति य एवं वेदाग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनमिति पुरोडाशीयानावपति देवतानां वा एष महो देवता एवैतदग्रहीदथ ह स्माहारुण औपवेशिरहुतासु वा अहमाहुतिषु देवता हव्यं गमयामि संस्थितेन यज्ञेन

---

[1] So corr Ch दुरनुवेदो [2] So corr mit Caland, Ch अध्यासते ohne (इति)
[3] Dies यज्ञहनश्च fehlt in Ch und ist von mir ergänzt

सैस्थां गच्छानीति य एवं वेदाहुतास्त्वेवास्याहुतिषु देवता हव्यं गच्छन्ति सैस्थितेन यज्ञेन सैस्थां गच्छत्यपः प्रणेष्यन्वाचं यच्छेदौलूखलेन वै दृषदा देवा यज्ञमुखाद्रक्षाँस्यपाघ्नन्मनसा वै प्रजापतिर्यज्ञमतनुतौलूखलस्योद्वदितोरध्वर्युश्च[1] यजमानश्च वाचं यच्छेतां प्रजापतिरेव भूत्वा मनसा यज्ञं तत्वा तेन सर्वाणि सह यज्ञायुधानि प्रहृत्यानि मानुषं तत्क्रियते नैकमेकं[2] पितृदेवत्यं तद्द्वे द्वे प्रहृत्ये याज्यानुवाक्ययो रूपमुपवसत्युभयाँस्तत्पशूनवरुन्द्धे ग्राम्याँश्चारण्याँश्च यद्ग्राम्यस्य नाश्नाति तेन ग्राम्यान्पशूनवरुन्द्धे यदारण्यस्याश्नाति तेनारण्यानयो[3] इन्द्रियं वा एतद्यदारण्यमिन्द्रियमेवावरुन्द्धे ॥ न माषाणामश्नीयादमेध्या वै माषा न तस्य सायमश्नीयाद्येन प्रातर्यक्ष्यमाणस्स्यादप्रतिजग्धेन वै हव्येन देवा वसीयोभूयमगच्छन्प्रतिजग्धेनासुराः[4] पराभवन्नप्रतिजग्धेन वै तद्धव्येन यजमानो वसीयोभूयं गच्छति यो वै श्रद्धामनारभ्य यजते पापीयान्भवत्यापश्श्रद्धा न वाचा गृह्णाति[5] न यजुषाति वा एता वाचं[6] नेदन्त्यति वर्षं[7] मनस्तु नातिनेदन्ति तद्यर्ह्यपो यहीयन्स्यादिमां तर्हि मनसा ध्यायेदियं वा एतासां पात्रमनयैवैना गृह्णाति श्रद्धामेवारभ्य यजते वसीयान्भवति ॥ ७ ॥ cf Maitr S 1,4 10, TS 1,6 8

इति श्रीयजुषि काठके चरकशाखायामोरिमिकायां यजमानब्राह्मणं नाम द्वात्रिंशं स्थानकं संपूर्णम् ॥°[8]

---

[1] So corr Ch स्वमस्योदिता॰, Maitr S 1, 4, 10 (p 58, Z 13) = Corr [2] So corr Ch नैकक Maitr S 1, 4 10 (p 59, Z 15) = Corr [3] So corr Ch स्ययानायो Maitr S 1, 1 10 (p 58 Z 18) = Corr [4] So corr Ch घस्तेषेष पमाग॰ [5] Ch eigentlich etwa गृह्णाति [6] So corr Ch यच [7] So corr Ch यर्तं, Maitr S 1, 4 10 (p 59, Z 4) = Corr ebenso TS 1, 6, 8 1 [8] So die Unterschrift des Capitels in Ch

गावो वै सत्रमासत शृङ्गाणि सिषासन्तीस्तासां[1] दशमे मासि शृङ्गाण्यजायन्त ता अब्रुवन्नराल्स्मोत्तिष्ठामाव[2] तं काममरुत्स्महि[3] यस्मै कामाय न्यसदामेति तासामु त्वा अब्रुवन्नर्धा वा यावतीर्वा-[4]सामहा एव द्वादशौ मासौ संवत्सरं संपाद्योत्तिष्ठामेत्युत्तिष्ठन्तीरु त्वा अब्रुवन्नेवासामु यद्धाभूदिति तासां या द्वादशौ मासा[5] आसत तासां शृङ्गाणि[6] प्रावर्तन्त श्रद्धया वाश्रद्धया वा ता इमा यास्तूपरास्तास्ताद्वादश मासास्तूपराः प्रेत्वरीष्वरन्ति दश शृङ्गिणीरुभयीर्वाव[7] ता आर्ध्नुवन्याश्शृङ्गाण्यसन्वन्याश्चोर्जमवारुन्धतर्ध्नुवन्ति[8] दशसु मास्सूत्तिष्ठन्त ऋध्नुवन्ति द्वादशसु य एवं विदुस्तदेतद्गवामयनं तस्मादेतेन यन्ति पदेन वा एतद्यन्ति विन्दति[9] ह खलु वै पदेन यँस्तस्मादेतन्नोसन्ति[10] ॥ १ ॥ cf TS 7, 5, 2 und 1

अतिरात्रः परमो यज्ञक्रतूनामित्याहुर्ब्रह्मवादिनः कस्मात्तं प्रथममुपयन्तीति यद्वा अतिरात्रमुपयन्त्यग्निष्टोमं प्रथममुपयन्त्यथोक्थ्यमथ[11] षोडशिनमथातिरात्रं यथापूर्वमेव यज्ञक्रतूनुपेत्यैतानालभ्य परिगृह्य सोमं पिबन्त आसते ज्योतिष्टोमं प्रथममुपयन्ति ज्योतिष्टोमो वै स्तोमानां मुखं मुखत एव तत्स्तोमान्प्रयुञ्जते विराजं ज्योतिष्टोमोऽभिसंपन्न एकया गौरतिरिक्त एकयायुरूनस्ते[12] संस्तुता विराजमभिसंपद्यन्ते द्वे चर्चौ अतिरिच्येते स्वर्गो वै लोको विराड् द्विपादो यजमानास्स्वर्ग एव तल्लोके विराजि द्विपादो यजमानाः प्रतितिष्ठन्ति ॥ रथन्तरं पृष्ठं भवतीयं वै पृथिवी रथन्तरमिमामेव तदालभ्यासते रथ-

---

[1] So corr Ch शृङ्गानि सिषा॰, cf TS 7, 5, 2, 1 — Corr. [2] So corr Ch ष्टमाय, TS 7, 5, 2, 1 — Corr [3] So corr Ch मरुत्स्महि oder मरुत्सहि. TS 7, 5, 2, 1 — Corr [4] So corr Ch यावतीं वा, TS 7, 5, 2, 1 — Corr. [5] मासा fehlt in Ch und ist von mir ergänzt [6] So corr Ch शृङ्गानि [7] So corr Ch शृङ्गिणीरुभयीर्वावा [8] So corr Ch शृङ्गाण्यसन्वन्याश्चोर्जमवारुन्धतुर्धुवन्ति [9] So corr Ch विन्दति, TS 7, 5, 2, 2 — Corr [10] Vgl TS 7, 5, 2, 2 पदेन यँन् [11] So corr Ch षोडश्यमथ [12] So corr mit Caland, Ch एकयायुक्तनस्ते, vgl unten 33, 3 und TS 7, 4, 10, 2

न्तरं दिवा भवति रथन्तरं नक्तमित्याहुर्ब्रह्मवादिनः केन तदजामीति सौभरं तृतीयसवने ब्रह्मसाम बृहद्भवति तन्मध्यतो दधाति रथन्तरस्य विधृत्यै तेनाजाम्यतिरात्राच्चतुर्विंशमहरुपयन्ति[1] चतुर्विंशतिस्संवत्सरस्यार्धमासा अर्धमासशस्संवत्सर आप्यते ऽर्धमासश एव तत्संवत्सरमाप्नुवन्ति तस्य षष्टिश्च त्रीणि च शतानि स्तोत्रीयाष्षष्टिश्च वै त्रीणि च शतानि संवत्सरस्याहान्यहश्शस्संवत्सर आप्यते ऽहश्श एव तत्संवत्सरमाप्नुवन्त्युक्थ्यो[2] भवति पशवो वा उक्थानि[3] पशूनेवावरुन्धते बृहत्पृष्ठं भवति स्वर्गो वै लोको बृहत्स्वर्गमेव तेन लोकमाप्नुवन्ति त्रयस्त्रिंशो नाम साम माध्यन्दिने पवमाने भवति त्रयस्त्रिंशद्देवास्तद्देवा नाप्नुवन्त्येतस्मै वै संवत्सरमुपयन्त्यापन्देवानापन्स्वर्गं[3] लोकमव पशूनरुन्धताप्संवत्सरमर्धमासश[4] आपन्नहश्शस्तच्चतुर्विंशे ऽहन्त्सर्वा देवताः परिगृह्य सोमं पिबन्त आसते ये वा इतः पराञ्चं संवत्सरमुपयन्ति नैनं ते स्वस्ति समश्नुवते ऽथो ये ऽमुतो ऽर्वाञ्चमुपयन्ति ते हैनं स्वस्ति संतरन्त्येतद्वा अमुतो ऽर्वाञ्चमुपयन्ति यदेवम् ॥ २ ॥

cf TS 7 4 10 und 7 5]

ज्योतिष्टोमं प्रथममुपयन्त्यस्मिंस्तेन लोके प्रतितिष्ठन्ति गोष्टोमं द्वितीयमुपयन्त्यन्तरिक्षे तेन प्रतितिष्ठन्त्यायुष्टोममुत्तममुपयन्त्यस्मिंस्तेन लोके प्रतितिष्ठन्त्ययं वै लोको ज्योतिरन्तरिक्षं गौरसा एवायुर्यदेतान्स्तोमानुपयन्त्येष्वेव तल्लोकेषु सत्त्रिणः प्रतितिष्ठन्तो यन्ति विराजं ज्योतिष्टोमो ऽभिसंपन्न एकया गौरतिरिक्त एकयायुरूनस्ते[5] सैस्तुता विराजमभिसंपद्यन्त ऊर्ग्वै विराड् यदेतैस्स्तोमैर्यन्त्यूर्जमेवैतत्सत्त्रिणो ऽवरुन्धाना यन्ति ते न क्षुधार्तिमार्छन्त्यक्षोधुका भवन्ति क्षुत्संबाधमाना[6] इव हि सत्त्रिणो ऽग्निष्टोमा अभितः प्रधी ता उक्थ्या[7] मध्ये नभ्यं

---

[1] So corr mit Caland, Ch तदटामीति (Z 1) und तेनाटाम्यतिरात्राच्चतु॰ [2] So corr Ch न्युक्तो [3] So corr Ch उक्तानि [3] Ch पत्स्वर्गे [4] So corr Ch कन्मता॰ [5] So corr mit Caland, Ch गौरितिरिक्त एकयायुरुने cf 33, 2 [6] So corr Ch क्षुत्संबाधमाना, TS 7, 4, 11, 2 क्षुत्संबाधा [7] So corr Ch उक्था, cf TS 7, 4, 11, 2

तदेतद्वै परियद्देवचक्रं यदेतेन षडहेन यन्ति देवचक्रमेव तत्समारोहन्त्यरिष्ट्यै ते स्वस्ति समश्नुवत उभयतोज्योतिषा[1] यन्ति स्वर्गो वै लोको ज्योतिरुभयत्र एव तत्स्वर्गे लोके सत्त्रिणः प्रतितिष्ठन्तो यन्ति षडहेन यन्ति षड्वा ऋतव ऋतुष्वेव तत्प्रतितिष्ठन्तो यन्ति द्वौ षडहौ भवतस्तानि द्वादशाहानि संपद्यन्ते दश वै पुरुषे प्राणास्स्तनौ द्वादशौ तत्पुरुषमनुपर्यावर्तन्ते त्रयष्षडहा भवन्ति तान्यष्टादशाहानि संपद्यन्ते नवान्यानि नव प्राणास्तत्प्राणाननुपर्यावर्तन्ते चत्वारष्षडहा भवन्ति तानि चतुर्विंशतिरहानि संपद्यन्ते चतुर्विंशतिस्संवत्सरस्यार्धमासा अर्धमासशस्संवत्सर आप्यते तत्संवत्सरमनुपर्यावर्तन्ते पञ्च षडहा भवन्ति तानि त्रिंशदहानि संपद्यन्ते दश हस्त्या अङ्गुलयो दश पद्या दश प्राणास्तत्त्रिंशत्त्रिंशदक्षरा विराड्वैराजः पुरुषस्तत्पुरुषमनुपर्यावर्तन्तेऽप्रतिष्ठितस्संवत्सर इति खलु वा आहुर्वर्षीयान्प्रतिष्ठाया इत्येतावद्वै संवत्सरस्य ब्राह्मणं यावन्मासो मासि मास्येव प्रतितिष्ठन्तो यन्ति य एवं विदुः ॥ ३ ॥ cf. TS 7, 4, 11

नवैतान्यहानि नव वै स्वर्गा लोकाश्चतस्रो दिशश्चत्वारोऽन्तर्देशा ऊर्ध्वा नवमी यदेतान्यहान्युपयन्ति नवस्वेव तत्स्वर्गेषु[2] लोकेषु सत्त्रिणः प्रतितिष्ठन्तो यन्त्यग्निष्टोमाः परसामानः कर्तव्या इत्याहुरग्निष्टोमसंमितो[4] वै स्वर्गो लोक इति द्वादशाग्निष्टोमस्तोत्राणि[5] द्वादश मासास्संवत्सरस्संवत्सरस्स्वर्गो लोकस्तस्मात्तदाहुस्तन्न सूक्ष्मेमुक्थ्या[6] एव परसामानः कर्तव्या इति पशवो वा उक्थानि[7] पशूनामवरुद्ध्यै विश्वजिदभिजिता अग्निष्टोमा उक्थ्यास्सप्तदशाः परसामान एकविंशं दिवाकीर्त्यं ते संस्तुता विराजमभिसंपद्यन्ते द्वे चर्चा अतिरिच्येते स्वर्गो वै लोको विराड् द्विपादो यजमानास्स्वर्ग एव तल्लोके विराजि

---

[1] Vgl. TS 7, 4, 11, 3. [2] So corr. Ch तत्स्व° [3] TBr 1, 2, 2, 1 पंरः सामानः und so auch im Folgenden. [4] So corr. Ch ह्यसमितो [5] So corr. Ch म° स्तो°; TBr. 1, 2, 2, 1 अग्निष्टोमस्य स्तोत्राणि [6] So corr Ch सुक्था, TBr 1, 2, 2, 1 = Corr. [7] So corr. Ch उक्तानि, TBr. 1, 2, 2, 2 = Corr.

द्विपादो यजमानाः प्रतितिष्ठन्ति ॥ यत्परो रथन्तरं तत्प्रथमे ऽहन्कर्तव्यं बृहद्द्वितीये वैरूपं तृतीये वैराजं चतुर्थे शाक्वरं पञ्चमे रैवतं षष्ठे तदु पृष्ठेभ्यो[1] न यन्ति संततय एते ग्रहा गृह्यन्ते ऽतिग्राह्याः[2] परसाम्सु यदेते गृह्यन्त इमानेवैतल्लोकान्संतत्य स्वर्गं लोकं यजमाना आरोहन्ति मिथुना एते ग्रहा गृह्यन्ते ऽतिग्राह्याः परसाम्सु यदेते गृह्यन्ते मिथुनमेवैतैरवरुन्धते सौर्य एष ग्रहो गृह्यते ऽतिग्राह्य[3] एकविंशे ऽहंस्तस्य प्रत्यक्षं नाम न ग्रहीतवै तेजस्वितर इव वाग्मितरः प्रदाहाद्वा भय्यं किलासंभावाद्वाया[4] विष्ठा जनयन्कर्वराणीत्येष प्राजापत्यो ऽनिरुक्तो ग्रहो गृह्यते ऽतिग्राह्य एकविंशे ऽहन्समन्त आयुषः पशव्यो यो ह खलु वाव प्रजापतिस्स एवेन्द्रस्तदु देवेभ्यो न यन्ति ॥ ४ ॥

cf TBr 1 2 2

प्रथमे मासि पृष्ठान्युपयन्ति मध्यम उपयन्त्युत्तम उपयन्ति यत्प्रथमे मासि पृष्ठान्युपयन्त्यस्मिंस्तेन लोके प्रतितिष्ठन्ति यन्मध्यम उपयन्त्यन्तरिक्षे तेन प्रतितिष्ठन्ति यदुत्तम उपयन्त्यमुष्मिंस्तेन[5] लोके प्रतितिष्ठन्ति मासि मासि पृष्ठान्युपेत्यानीत्याहुः पृष्ठानि वै यज्ञस्य दोह इति तदाहुरेकं वा एतद्देवानामहर्यत्संवत्सरो यां वै त्रिरेकस्याह्न उपसीदन्ति[6] दृहे सापराभ्यां दोहाभ्यां दुहे तत्कुतस्सा[7] धोक्ष्यति यां द्वादश कृत्व उपसीदेयुरिति सकृत्पृष्ठान्युपेयुरुत्तमे मासि समुद्रं खलु वा एते ऽनवारमपारं प्रस्नान्ति ये संवत्सरमुपयन्ति बृहद्रथन्तराभ्यामेतव्यं बृहद्रथन्तरे वै देवानां प्लवस्तद्देवाना प्लवेन समुद्रमर्णवं तरन्ति यथा मध्ये समुद्रस्य प्लवमन्ववर्जेयुरेवं तद्यत्पुरा संवत्सराद्बृहद्रथन्तरे ऽवसृजेयु-

[1] So corr Ch पृष्ठेभ्यो TBr 1 2 2 3 = Corr [2] So corr Ch गृह्यन्ते ग्राह्या cf TBr 1 2 2 4 [3] So corr Ch तिग्राह्य [4] So corr nach Caland Ch कि लासमयाद्वाया, vgl Panini 8 1, 53 das Citat beim Scholiasten मध्य किलासीन् geht vielleicht, wie andere Citate desselben auf das Kāthakam und zwar auf diese Stelle zurück doch ist das sehr fraglich da in diesem Falle eine noch stärkere Modification des Citats vorläge als dies auch in anderen Fällen sich beobachten läßt infolge des Citirens aus dem Gedächtniß [5] So corr Ch यदुत्तममुपयन्त्यमुष्मिंस्तेन [6] So corr Ch तय [7] So corr Ch तत्कुतस्सा cf TB 2 5 3 1

ऋतुत्सर्गं[1] बृहद्रथन्तराभ्यां गत्वा प्रतिष्ठां गत्वा सकृत्पृष्ठान्युपेयुरुत्तमे मासि सर्वेभ्यो वै कामेभ्यस्संधिर्दुहे[2] तत्सर्वान्कामान्यज्ञं पृष्ठानि संवत्सराद्दुहे[3] ॥ ५ ॥ cf. TS 7, 5, 3.

एकविंश एष एतेन वै देवा एकविंशेनादित्यमितस्स्वर्गं लोकमारोहयन्स एष इत एकविंशस्तस्य दशावस्तादहानि दश परस्तात्स एष उभयतो विराजि प्रतिष्ठित उभयतो हि वा एष विराजि प्रतिष्ठितस्तस्मादन्तरेमौ लोकौ यन्सर्वेषु स्वर्गेषु लोकेषु प्रतितिष्ठन्नेति देवा वा आदित्यस्य स्वर्गाल्लोकादवपादादबिभयुस्तं त्रिषु स्वर्गेषु लोकेष्वादधुस्तस्य पराचो[4]ऽतिपादादबिभयुस्तं परस्तात्त्रिभिस्स्वर्गैर्लोकैः प्रत्यस्तभ्नुवन्स एष उभयतष्षट्सु स्वर्गेषु लोकेषु प्रतिष्ठितो धृत्यै प्रतिष्ठाया अनवपादायानतिपादाय ॥ देवा वै सप्तदशानां प्रह्वयादबिभयुस्तान्सर्वैस्स्तोमैरवस्तात्पर्यायन्सर्वैस्स्तोमैः परस्तात्तस्मादभिजित्सर्वस्तोमो[5]ऽवस्तात्सप्तदशानां विश्वजित्सर्वस्तोमः परस्तात्सप्तदशानां धृत्या अप्रह्वयाय देवा वा आदित्यस्य स्वर्गाल्लोकादवपादादबिभयुस्तं ये वर्ष्म स्वर्गाणां लोकानामधिपतयस्तेष्वादधुश्चतुस्त्रिंशा वै स्तोमा वर्ष्म स्वर्गाणां लोकानामधिपतयस्तस्मादेकविंशस्याह्नस्त्रयोऽवस्तात्सप्तदशास्त्रयः परस्तात्ते षयश्चतुस्त्रिंशा द्वौ द्वौ तेषु वा एष आहितो धृत्यै प्रतिष्ठाया अनवपादायानतिपादाय ॥ वर्ष्मन्हि वा एष स्वर्गाणां लोकानामाहितस्तस्माद्भूतेभ्यो भूतेभ्य[6] उत्तरो वर्ष्म स्वानामाधिपत्यं पर्येति य एवं वेद देवा वा आदित्यस्य स्वर्गाल्लोकादवपादादबिभयुस्तं पञ्चभी रश्मिभिरुदवयन्रश्मयो दिवाकीर्त्यानि तस्मादेकविंशेऽहन्पञ्च दिवाकीर्त्यानि क्रियन्ते ये गायत्रे ते गायत्रीषूत्तरयोः पवमानयोर्महादिवाकीर्त्यं होतुः[7] पृष्ठं विकर्णं ब्रह्मसामं

[1] So corr. Ch ऋत्सर्गे [2] So corr. Ch संधिमुदे; TS 7, 5, 3, 1 = Corr.
[3] So corr. Ch राद्दुह [4] So corr. Ch दधस्तस्य पराचे; cf. TBr. 1, 2, 4, 2.
[5] So corr. Ch पुर [6] So corr. Ch भूतेत्य [7] So corr. Ch होतु

भासमग्निष्टोमस्तद्यदेकविंशे ऽहन्पञ्च दिवाकीर्त्यानि क्रियन्त आदित्यमेव तत्पञ्चभी रश्मिभिरुद्यन्ति धृत्यै प्रतिष्ठाया अनवपादायानतिपादाय ॥ अथैतानि[1] स्पराणि स्परैर्वै देवा आदित्याय स्वर्गं लोकमस्पृण्वन्यदस्पृण्वंस्तत्स्पराणां स्परत्वं स्पृण्वन्त्यस्मै स्पराणि स्वर्गं लोकं य एवं विद्वानेतैस्स्तुते ऽथैतानि पराणि परैर्वै देवा आदित्यं स्वर्गं लोकमपारयन्यदपारयंस्तत्पराणां परत्वं पारयन्त्येनं[2] पराणि स्वर्गं लोकं य एवं विद्वानेतैस्स्तुते ऽनुष्टुभो वै यदयातयामरूपं तानि पराणि तस्मादनुष्टुप्सु पराणि क्रियन्ते यदनुष्टुप्सु पराणि क्रियन्ते ऽनुष्टुभमेव तत्सवीर्यां कुर्वन्ति स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥ ६ ॥ cf TBr 1, 2 4

उत्सृज्या३न्नोत्सृज्या३मिति मीमांसन्ते तदाहुरुत्सृज्यमेव प्राणापाना वा एते संवत्सरस्य यत्पूर्णमासा यन्नोत्सृजेयुस्संवत्सरमपिनह्येयुरमेहेन सत्त्रिणो म्रियेरन्पौर्णमास्यां चामावास्यायां चोत्सृज्यमित्याहुरेते हि यज्ञं वहत इति तदाहुरेतयोस्त्वाव नोत्सृज्यं ये अवान्तरा यज्ञं भेजाते इति या प्रथमा व्यष्टका तस्यामुत्सृज्यमित्याहुरेष[3] हि मासो विशर इति नादिष्टमुत्सृजेयुर्यदादिष्टमुत्सृजेयुर्यांहशे पुनः पर्याप्लावे मध्ये षडहस्य संपद्यत इति षडहैर्मासैं[4] संपाद्य यत्सप्तममहस्तदुत्सृजेयुस्सी षडहं[5] तन्वन्त्युत्संवत्सरं व्यासयन्ति यदहस्तूत्सृजेयुस्तदग्नये वसुमते ऽष्टाकपालं पुरोडाशं प्रातर्निर्वपेयुरैन्द्रं दधीन्द्राय मरुत्वत एकादशकपालं मध्यन्दिने विश्वेभ्यो देवेभ्य[6] ऋतुमद्भ्यो द्वादशकपालमपराह्णे[7] प्राजापत्यः पशुस्स्यादग्नेर्वै वसुमतः प्रातस्सवनं यदग्नये वसुमते ऽष्टाकपालं पुरोडाशं प्रातर्निर्वपन्ति देवतामेव तद्भागिनीं कुर्वन्त्यननुसर्गाय सोमो वा एष ओषधीषु प्रविष्टो यदैन्द्रं दधि भवतीन्द्रमेव तद्भागधेयान्न च्यावयन्ति सवनमष्टाभिरुपयन्ति ये खलु वाव प्रातः

---

[1] So corr Ch ॥ चैतानि [2] So corr Ch त्येनस्पराणि [3] So corr Ch रेषा, TS 7 5 7, 1 = Corr [4] So corr Ch मांसै TS 7, 5, 7 2 मासान [5] So corr Ch षडहं [6] So corr Ch देवेभ्यो [7] So corr Ch पराह्णे

पशव उपाक्रियन्ते ते वसव इन्द्रस्य वै मरुत्वतो माध्यन्दिनं सवनं यदिन्द्राय मरुत्वत एकादशकपालं पुरोडाशं मध्यन्दिने निर्वपन्ति देवतामेव तद्भागिनीं कुर्वन्त्यननुसर्गाय ॥ सवनमेकादशभिरुपयन्ति विश्वेषां वै देवानामृतुमत्तां तृतीयसवनं यद्विश्वेभ्यो देवेभ्य ऋतुमद्भ्यो द्वादशकपालं पुरोडाशमपराह्णे[1] निर्वपन्ति देवतामेव तद्भागिनीं कुर्वन्त्यननुसर्गाय सवनं द्वादशभिरुपयन्ति प्राजापत्यः पशुर्भवति यज्ञो वै प्रजापतिर्यज्ञस्यानुसर्गायाभीवर्तं इतष्षण्मासो ब्रह्मसामं भवति ब्रह्म वा अभीवर्तो ब्रह्मणैव तत्स्वर्गं लोकमभिवर्तयन्तो यन्ति ॥ प्रतिकूलमिव हीतस्स्वर्गो[2] लोकस्समानाः[3] प्रगाथा भवन्त्यन्यान्यन्यानि सामानि लोका वै सामानि स्वर्गो ऋचो लोकैरेव तत्स्वर्गांल्लोकानभ्यारोहन्तो[4] यन्ति समानं साम भवत्यन्या अन्या ऋचस्स्वर्गो वै सामानि लोका ऋचो लोकैरेव तत्स्वर्गांल्लोकानभ्यारोहन्त आयन्ति ॥

इन्द्र क्रतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥

इत्यमुत आयतो[5] षण्मासो ब्रह्मसामं भवत्ययं वै लोको ज्योतिः प्रजा ज्योतिरिममेव तल्लोकं पश्यन्तो ऽभिवदन्त आयन्त्ययं हि लोको लोकानां प्रतिष्ठा ॥ ७ ॥ cf TS 7, 5, 7.

अपैते परसामानस्तेषां परसाम्नां यत्प्रथमं तदुत्तमं यदुत्तमं तत्प्रथमं यन्मध्ये मध्य एव तत्स्थेनैवैते यन्ति तेनामुतः पुनरायन्त्येषां लोकानां संतत्यै प्रतिज्ञात्यै ते विश्वजित उपरिष्टात्प्रत्यवरोहिणस्स्तोमानुपयन्ति तदाहुर्जितं वा एते पराजयन्तो निर्वृत्तान्प्रत्यवरोहिणस्स्तोमानुपयन्ति निवर्तन्ते स्वर्गाल्लोकात्प्रत्यञ्चमु यज्ञं तन्वत इति ते तथा

---

[1] So corr. Ch पराहृे   [2] So corr. Ch मिव वातीतस्स्व॰; TS 7, 5, 7, 4 = Corr.
[3] So corr. Ch समानः   [4] So corr. Ch स्वर्गांल्लोका॰   [5] So corr. Ch भायातो, erste Hand भायतो, TS 7, 5, 7, 4 = Corr

पञ्च मासो यन्ति षष्ठस्य च मासस्त्रीनभिप्रवान्द्वे[1] चाहनी गोआयुषी ते पृष्ठान्युपयन्ति पृष्ठानि वै यज्ञस्य दोहो यज्ञं दोहामहै पशूँश्चामृतं[2] च प्राश्नवमु यज्ञं तनवामहा इत्यृतवो[3] वै पृष्ठान्यृतुष्वेव तत्प्रतितिष्ठन्तो यन्ति स्वर्गो वै लोकः पृष्ठानि स्वर्ग एव तल्लोके प्रतितिष्ठन्तो यन्ति ॥ देवक्षत्रं वा आयुषस्तोमा[4] देवक्षत्रमेव तदभ्यारोहन्तो यन्ति ते छन्दोमानुपयन्ति पशवो[5] वै छन्दोमाः पशूनेवावरुन्धते ते दशममहरुपयन्ति प्रजननं प्राजापत्यं प्रतिष्ठां प्रजननमेव तत्प्रजां प्रतिष्ठामवरुन्धते ते महाव्रतीयमहरुपयन्ति तदाहुर्विषुवान्वा एतदहर्यन्महाव्रतीयं विषुवत्युपेत्यमित्यथाहुः प्राजापत्यं वा एतदहर्यन्महाव्रतीयं तदुत्तमार्धे[6] संवत्सरस्योपेत्यमिति यो वै षण्मास्यो जायते यस्सप्तमास्यः प्र वै स मीयते न तेन भोगमश्नुते॥ संवत्सरे खलु वाव रेतो हितं प्रजायते तद्यदुत्तमार्धे संवत्सरस्य महाव्रतीयमहरुपयन्ति संवत्सर एतद्रेतो हितं प्रजनयन्ति यथर्त्वेवर्तूंकल्पयन्ति यथापूर्वं प्रजां प्रजनयन्ति ते पञ्चविंशं स्तोममुपयन्ति पुरुषस्तोमं दश हस्त्या अङ्गुलयो दश पद्या द्वौ बाहू द्वे सक्थ्या[7] आत्मा पञ्चविंशो यदेतं[8] स्तोममुपयन्ति स्वादेव तत्स्तोमात्सन्विश आत्मानं प्रजनयन्ति भूत्यै तदाहुः प्राजापत्यं वा एतदहर्यन्महाव्रतीयं तस्मिन्सर्वे ग्रहा ग्रहीतव्यास्सर्वमिव हि प्रजापतिर्विव्याचेत्येको ग्रहीतव्य[9] एको हि प्रजापतिस्त्रयो ग्रहीतव्यास्त्रय इमे लोका एष्वेव लोकेष्वृध्नुवन्ति ॥ पञ्च ग्रहीतव्याः पाङ्क्तो[10] यज्ञो यज्ञमेवावरुन्धते सप्त ग्रहीतव्यास्सप्त ग्राम्याः पशवस्तानेवावरुन्धते नव ग्रहीतव्या नव[11] प्राणाः प्राणेष्वेव प्रतितिष्ठन्ति पञ्चदश ग्रहीतव्याः पञ्चदशार्धमासस्य रात्रयो ऽर्धमासशस्संवत्सर आप्यते

---

[1] Ch नभिप्रवां द्वे; cf. Böhtlingk, Sanskrit-Wörterbuch in kürzerer Fassung s. v. अभिप्रव [2] So corr. Ch पशुंश्चा° [3] So corr. Ch इत्यृतो [4] So corr. Ch आयुष° [5] So corr. Ch पशवे [6] So corr. Ch तदुत्तेमार्धे [7] So corr. Ch सक्था [8] So corr. Ch यदेत [9] So corr. Ch व्या [10] So corr. Ch पाते [11] So corr. Ch नव धंप्राणाः

ऽर्धमासश एव तत्संवत्सरमाप्नुवन्ति सप्तदश ग्रहीतव्याः प्रजापतिस्सप्तदशः प्रजापतिमेवाप्नुवन्त्येकविंशतिर्ग्रहीतव्या असा आदित्य एकविंशो ऽमुमेवादित्यमाप्नुवन्ति सप्तविंशतिर्ग्रहीतव्यास्त्रिणवा[1] इमे लोका एष्वेव लोकेष्वाप्नुवन्ति त्रयस्त्रिंशद्ग्रहीतव्यास्त्रयस्त्रिंशद्देवता देवतास्वेव प्रतितिष्ठन्ति ॥ ८ ॥

इति श्रीमद्यजुषि काठके चरकशाखायामोरिमिकायां सत्त्राणि नाम त्रयस्त्रिंशं स्थानकं संपूर्णम् ॥

एकादशिनीभिर्यन्ति प्राणा वा एकादशिनीः प्राणेष्वेव तत्प्रतितिष्ठन्तो यन्ति तदाहुर्यदेकादशिनीभिरियुरहानि वातिरिच्येरन्पशवो वा नोत्तमेनाह्नोत्तमः पशुस्संपद्येतेति[2] तद्यदेकादशिनीकामास्स्युः प्रथमे मास्येकादशिनीमुपेयुरुत्तमे च प्राणा वा एकादशिनी प्राणानेव मुखतः प्रतिपद्यन्ते प्राणेष्वन्ततः प्रतितिष्ठन्त्यैन्द्राग्नः[3] खल्वेवाच्युतः पशुस्स्यात्प्राणापानौ वा इन्द्राग्नी प्राणापानयोरेव तत्प्रतितिष्ठन्तो यन्ति तेजो वा इन्द्राग्नी तेजस्येव तत्प्रतितिष्ठन्तो यन्त्योजो वै वीर्यमिन्द्राग्नी तेजस्येव तद्वीर्ये प्रतितिष्ठन्तो यन्तीन्द्राग्नी सर्वा देवता यदैन्द्राग्नः पशुर्भवति सर्वा एव तद्देवताः प्रीणन्तो यन्ति ॥ यदहो रथंतरं[4] साम स्यादाग्नेयं तदहः पशुमालभेरन्यदहर्बृहदैन्द्रं तदहस्तद्धैन्द्राग्न

[1] So corr Ch णव [2] So corr mit Caland, Ch पशुसमपद्यतेति [3] So corr Ch प्रतिस्थ° [4] Vgl Böhtlingk, Sanskr WB in kürzerer Fassung s. v. अह्नोरथंतर, mit dem Sternchen als unbelegt bezeichnet, unter Hinweis auf Värtt zu Pâ 8, 2, 68 Mit Recht druckt Kielhorn getrennt, Mahâbh III, p 111 (letzte Zeile) अह्नो । रथंतर । साम ।

एव यदहो रथंतरं साम स्यादाग्नेन्द्रं तदहः पशुमालभेरन्यदहर्बृहदैन्द्राग्नं तदहस्तदनुपूर्वं देवते कल्पयन्ति यथापूर्वं पशूनालभन्त इन्द्राग्निभ्यामेव यन्ति बार्हस्पत्यं शितिपृष्ठं षष्ठे ऽहन्नालभेरन्ब्रह्म वै बृहस्पतिर्ब्रह्मण्येव तद्यज्ञस्यान्ततः प्रतितिष्ठन्ति बार्हस्पत्यः खलु वाव शितिपृष्ठो देवतया द्यावापृथिव्यां धेनुं सप्तमे ऽहन्नालभेरन्प्रथमे छन्दोमे द्यावापृथिवी वै यज्ञस्य प्रतिष्ठा द्यावापृथिव्योरेव तद्यज्ञस्यान्ततः प्रतितिष्ठन्ति द्यावापृथिव्या खलु वाव धेनुर्देवतया वायव्यं वत्समष्टमे ऽहन्नालभेरन्मध्यमे छन्दोमे प्राणो वै वायुः प्राण एव तद्यज्ञस्यान्ततः प्रतितिष्ठन्ति ॥ वायव्यः खलु वाव वत्सो देवतया वाचे पृश्निं नवमे[1] ऽहन्नालभेरन्नुत्तमे छन्दोमे वाग्वै पृश्निः प्रतिष्ठा वाच्येव तद्यज्ञस्यान्ततः प्रतितिष्ठन्ति वाग्देवत्या[2] खलु वाव पृश्निर्देवतयादित्यां वशां दशमे ऽहन्नालभेरन्नियं वा अदितिरियं प्रतिष्ठास्यामेव तद्यज्ञस्यान्ततः प्रतितिष्ठन्त्यादित्या खलु वाव वशा देवतया वैश्वकर्मणमृषभं महाव्रतीये ऽहन्नालभेरन्निन्द्रो वै वृत्रं हत्वा विश्वकर्माभवत्प्रजापतिः प्रजास्सृष्ट्वा विश्वकर्माभवत्संवत्सरो विश्वकर्मेत्याहुर्यमिमाः प्रजा अनुप्रजायन्त इति त्रिरूपस्स्यादुभयतएतो यत्प्रथमं रूपं तेनैन्द्रो यद्द्वितीयं तेन प्राजापत्यो यत्तृतीयं तत्संवत्सरस्य रूपमिन्द्रो वृषा प्रजापतिर्वृषा संवत्सरो ऽस्य वृषेत्याहुर्यमिमाः प्रजा अनुप्रजायन्त इति तस्मादृषभस्स्यात् ॥ १ ॥

असुर्यं वा एतस्माद्वर्णं कृत्वा तेज इन्द्रियं वीर्यं प्रजा पशवो ऽपक्रामन्ति यस्य यूपो विरोहति स ईश्वर ईजानः पापीयान्भवति त्वाष्ट्रं[3] बहुरूपमालभेत त्वष्टा वै रूपाणां विकर्ता तमेव भागधेयेनोपधावति सो ऽस्मै तेज इन्द्रियं वीर्यं प्रजां पशून्पुनरुपावर्तयत्यार्तिं वा एते

---

[1] So corr Ch पृश्निनवमे [2] So corr. Ch वत्य [3] So corr Ch स्वाद्रा, TBr. 1, 4, 7, 1 = Corr

नियन्ति[1] येषां[2] दीक्षितानां प्रमीयते तं यदववृजेयुः क्रूरकृतामिवैषां लोकस्स्यादाहर दहेति ब्रूयुस्तं दक्षिणार्धे वेद्यां निधाय सर्पराज्ञ्या ऋग्भिस्स्तुयुरियं[3] वै सर्पराज्ञ्यस्या एवैनमधिसमीरयन्ति तदाहुर्यद्वै वा एतद्यत्स्तुतमननुशस्तमिति होता प्रथमो दीक्षितानां प्राचीनावीतं कृत्वा मार्जालीयं परीयाद्धामीरनुब्रुवन्सर्पराज्ञ्या ऋचां कीर्तयन्नियं वै सर्पतो राज्ञ्यस्या एवैनमधिसमीरयन्ति धुवन्त्येवैनमेतदथो न्येवास्मै ह्नुवते तम इव[4] वा एते नियन्ति येषां दीक्षितानां प्रमीयते ॥[5] अग्न आयूंषि पवस इत्येतौ[6] सोमस्य प्रतिपदं कुर्वीरन्पुनत एवात्मानमायुरेवात्मन्दधते ऽथो ज्योतिष्मन्त एव यन्त्यप्रतिष्ठिता वा[7] एते येषां दीक्षितानां प्रमीयते रथंतरसाम्नैषां सोमस्स्यादियं वै पृथिवी रथंतरमस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति ॥ २ ॥

cf. TBr 1, 4, 7, 1; 1, 4, 6, 5—7.

यद्यक्रीतमपहरेयुरन्यः क्रीतव्यो यदि क्रीतं यो नेदिष्ठं स्यात्स आहृत्याभिषुत्यो राजाहाराय तु[8] किंचिद्दीयते[9] नास्य स परिक्रीतो भवति यदि सोमं न विन्देयुः पूतीकानभिषुणुयुर्यदि न पूतीकानार्जुनानि गायत्री वै सोममपाहरच्छ्येनो[10] भूत्वा तस्य सोमरक्षिरनुविसृज्य नखमच्छिनत्ततो[11] यो ऽंशुरमुच्यत स पूतीको ऽभवत्पूतीका वै नामैते यत्पूतीकानभिषुण्वन्त्यूतिमेव यज्ञाय कुर्वन्तीन्द्रो वै वृत्रमहंस्तस्य यल्लोहितमासीत्तान्यार्जुनानि लोहिततूलान्यभवन्नथ यो ग्रीवाभ्यः प्रवृद्धाभ्यो रसस्समस्रवत्तान्यार्जुनानि बभ्रुतूलान्यभवन्सोमो[12] वा एषो ऽसुर्य[13] इव तु तस्मान्नाभिषुत्यः प्रतिधुक्प्रातः पूतीकाश्च दधि मध्यन्दिने पूतीकाश्च शृतं चापराह्णे[14] पूतीकाश्चेन्द्रियेण वा एष सोमपी-

---

[1] So corr. Ch निर्यन्ति; TBr 1, 4, 6, 5 = Corr. [2] So corr. Ch येषा, TBr. 1, 4, 6, 5 = Corr [3] So corr. Ch स्तुयुः; cf TBr. 1, 4, 6, 6. [4] Erste Hand in Ch तम एव, dann corrigirt [5] Dies Zeichen von mir gesetzt, wegen des ते [6] So corr Ch इत्येता [7] So corr. Ch वा वा [8] So corr. mit Caland; Ch राजाहारायतु [9] Ch यंते [10] So corr. Ch मपरच्छ्येनो [11] So corr. Ch नतुतो [12] So corr. Ch बभ्रु बभ्रुतूला॰ [13] So corr. Ch सुर्ये [14] So corr. Ch पराह्ने

येन वृध्यते यस्य सोममपाहरन्ति स ओषधीश्च पशूंश्च[1] प्रविशति यदेतदुभयमभिपुरवन्त्योषधिभ्यश्चैव पशुभ्यश्चाधि सोमपीथं पुनरवरुन्द्धे ॥ ३ ॥ TBr 1, 4 7, 5—7

यदि सोमौ संसुतौ[2] स्यातां महति रात्र्याः प्रातरनुवाकमुपाकुर्यात्पूर्व एव यज्ञं पूर्वो देवताः[3] पूर्वश्छन्दांसि वृङ्क्ते वृषण्वतीं प्रतिपदं कुर्यादिन्द्रो वै वृषा प्रातस्सवनादेवैषामिन्द्रं वृङ्क्ते तदाहुस्सवनमुखे सवनमुखे कर्तव्येति सवनमुखात्सवनमुखादेवैषामिन्द्रं वृङ्क्ते संवेशायोपवेशाय गायत्र्यै छन्दसे ऽभिभुवे स्वाहा संवेशायोपवेशाय त्रिष्टुभे जगत्या अनुष्टुभे छन्दसे ऽभिभुवे स्वाहेत्येतावन्ति वै छन्दांसि छन्दोभिर्देवा असुराणां छन्दांस्यवृञ्जत छन्दोभिरेवैषां छन्दांसि वृङ्क्ते ॥ सजन्यं शस्यं विहव्यं शस्यमगस्त्यस्य कयाशुभीयं शस्यमेतावद्वावास्ति यावदेवास्त्यन्तरिक्षाद्दिवः पृथिव्या अहोरात्राभ्यां तेभ्य एनान्सर्वेभ्यो निर्भजति यदि प्रातस्सवने कलशो दीर्येत वैष्णवीषु शिपिविष्टवतीषु माध्यन्दिने पवमाने स्तुयुर्यद्वै यज्ञस्यातिरिच्यते विष्णुं तच्छिपिविष्टमभ्यतिरिच्यते ऽतिरिक्तं वा एतदतिरिक्तं शिपिविष्टमतिरिक्तेनैवातिरिक्तमाप्नोति यदि मध्यन्दिन आर्भवस्य पवमानस्य पुरस्ताद्वषट्कारनिधनं साम कुर्युर्यदि तृतीयसवन एतदेव वषट्कारो वै यज्ञस्य प्रतिष्ठा प्रतिष्ठामेवैनं गमयन्ति ॥ ४ ॥ cf TS 7, 5, 5, Panc Br 9, 4

आसन्दीमारुह्योद्गाता महाव्रतेनोद्गायति प्रेङ्खमारुह्य होता महदुक्थमनुशंसत्यधिष्ठाने[4] ऽधिष्ठायाध्वर्यू प्रतिगृणीतः कूर्चेष्वितर आसते[5] ऽन्तरिक्षं वा अन्नममुतो वै प्रदीयते ऽस्यां प्रजायते तदन्तरिक्षाय जायते यदन्तरिक्ष आसीना महाव्रतेन चरन्त्यन्नाद्यस्योपाप्त्या अथो देवसाक्ष्य एवो परिषद्य याजयन्ति[6] स्वर्गमु लोकमाक्रममाणा

---

[1] So corr Ch पशुश्च [2] So corr mit Caland, Ch संस्तुतौ vgl unten 34 19, aber TS 7, 3, [illegible] 1 प्रसुतौ [3] So corr Ch देवता [4] So corr Ch महदुक्थाम॰ [5] So corr Ch चासते [6] So corr Ch दज्ञयंति, Caland vermuthet एवोपनिषद्य

यन्त्यभिगरापगरौ भवतः[1] प्र वा अन्यस्सत्त्रिणश्शंसति निन्दत्यन्यो यः प्रशंसति यदेवैषां सुष्टुतं सुशस्तं तत्स प्रशंसत्यथ यो निन्दति यदेवैषां सुष्टुतं सुशस्तं[2] तत्सो ऽपहन्ति शूद्रार्यौ चर्मन्व्यायच्छेते ॥ देवाश्च वा असुराश्चादित्ये व्यायच्छन्त तं देवा अभ्यजयन्नार्यं वर्णमुज्ज्ञापयत्यात्मानमेवोज्ज्ञापयत्यन्तर्वेद्यार्यस्स्याद्बहिर्वेदि[3] शूद्रश्श्वेतं चर्म परिमण्डलं स्यादादित्यस्य रूपं सर्वासु स्रक्तिषु दुन्दुभयो वदन्ति या दिक्षु वाक्तां तेनावरुन्धते भूमिदुन्दुभिर्भवति यास्यां[4] वाक्तां तेनावरुन्धते वीणा वदन्ति या पशुषु वाक्तां तेनावरुन्धते काण्डवीणा वदन्ति यौषधिषु वाक्तां तेनावरुन्धते नाडीतूणवा वदन्ति या वनस्पतिषु वाक्तां तेनावरुन्धते वाणश्शततन्तुर्भवति शतायुर्वै पुरुषश्शतवीर्य आयुरेव वीर्यमवरुन्धे ॥ ब्रह्मचारी च पुंश्चली चर्तीयेते सर्वा हि भूते वाचो वदन्ति मिथुनं चरन्ति संवत्सरं वा एते प्रजायमानास्सत्त्रमासते तेषां संवत्सरेणैव प्रजननमन्तर्धीयते यन्मिथुनं चरन्ति संवत्सरस्यैव प्रजननस्योपाप्त्यै कुम्भिनीरुपाचरन्ति समृद्ध्या इदंमधुरं गायन्तीस्संनद्धकवचाः परियन्ति महायतमेव महयन्त्यथो सेन्द्रतायामेव ब्रह्मणो वा अन्या त्विषिः क्षत्रस्यान्या यद्दीक्षितो ऽधिकृष्णाजिनस्सा ब्रह्मणस्त्विषिर्यत्संनद्धकवचो ऽधिज्यधनुस्सा क्षत्रस्य त्विषिस्तदुभयं भवत्युभयोस्त्विष्योरवरुद्ध्यै ॥ ५ ॥ cf TS 7, 5, 8—10, TBr 1, 2, 6, 6—7

प्रजापतिर्वा आत्मनो ऽधि द्वादशाहं निरमिमीत संवत्सरः प्रजापतिस्स चतुर्णां मासां तिस्रस्तिस्रो रात्रीरादत्त सा दीक्षाभवत्स उत्तरेषां चतुर्णां तिस्रस्तिस्रो रात्रीरादत्त[5] ता उपसदो ऽभवन्स उत्तरेषां चतुर्णां तिस्रस्तिस्रो रात्रीरादत्त सा सुत्याभवत्तस्मादाहुर्यावान्संवत्सरस्तावान्द्वादशाह इति सर्वस्माद्ध्येष संवत्सरादधि निर्मितस्स प्रथमं चाहरसृजतेहेदं[6] च सामेमं लोकमग्निं ज्योतिर्द्वितीयं[7] चाहरसृजतो-

[1] So corr Ch भवत [2] Ch येवान्सुष्टुतन्सुशस्त [3] So corr Ch र्वेदि. [4] So corr Ch यस्य [5] So corr Ch रात्रेरा॰ [6] So corr. Ch हाहर॰ [7] So corr Ch लोकमग्निज्योतिर्द्वितीयमग्निं

ध्वैडं[1] च सामान्तरिक्षं लोकं वायुं ज्योतिस्तृतीयं चाहरसृजतेडाभिरैडं[2] च सामामुं लोकं सूर्यं ज्योतिश्चतुर्थं चाहरसृजत परिस्तुब्धैडं च साम यस्मिंश्च लोके तेजो ज्योतिः पञ्चमं चाहरसृजताध्यर्धेडं च साम यस्मिंल्लोके सत्यं ज्योतिष्षष्ठं चाहरसृजत होइडं च साम यस्मिंल्लोके ब्रह्म ज्योतिस्सप्तमं चाहरसृजत पुनर्नितुन्नं चेडां यस्मिंश्च लोके तपो ज्योतिरष्टमं चाहरसृजत विष्वगैडं च साम यस्मिंश्च लोक ऋतं ज्योतिर्नवमं चाहरसृजत होइडं च साम यस्मिंश्च लोके ब्रह्म ज्योतिर्दशमं चाहरसृजत ह्वोडं[3] च साम यस्मिंल्लोकेऽमृतं ज्योतिः प्राण एव प्रायणीयोऽपान उदयनीयस्तस्माद्यावदेव प्रायणीये क्रियते तावदुदयनीये क्रियते यावान्हि प्राणस्तावानपान एतांल्लोकानेतानि सामान्येतानि ज्योतींष्येतानि तेजांस्यवरुन्द्धे य एवं विद्वान्द्वादशाहेन यजते ॥ ६ ॥

प्रजापतिरकामयत प्रजास्सृजेयेति स एतमात्मन्द्वादशाहमपश्यत्तमात्मनो[4] निरमिमीत तेन प्रजा असृजत तं गायत्री छन्दोऽन्वसृज्यत साकामयताहमिमं सर्वत परिभवेयमिति तं तेजसा मुखतः पर्यभवदोजसा मध्यतश्छन्दसोपरिष्टात्सर्वतो वै सा तं व्यत्यशयत्सर्वतो भ्रातृव्य व्यतिशये य एवं वेद द्वे रूपे संवत्सरस्य मासा अन्यद्दतवो ऽन्यद्यत्षड्तवस्तेनाप्नो यद्द्वादश मासास्तेनाप्न उभाभ्यामेव रूपाभ्यां संवत्सरमाप्नोति ब्रह्म वै गायत्री क्षत्रं द्वादशाहोऽन्वेनं क्षत्रं[5] बुध्यते प्र पुरोधामाप्नोति य एवं वेद ॥ यज्ञं वा अन्यानि छन्दांस्यभ्यसृज्यन्त स्वाराज्यमेव बृहत्यभ्यसृज्यत तस्माद्बृहत्या न वषट्कुर्वन्ति यद्वषट्कुर्युः पशूनग्नौ प्रदध्युर्वचसाप्त्वा पशूनवरुन्धते वाचि वा एते चत्वारः पशवो गौरश्वोऽजाविस्तस्माद्वाचा हूताः पशव उदायन्ति वाचा सिद्धा आवर्तन्ते बृहतीं वा एत आप्नुवन्ति य एता रात्रीरासते षट्त्रिंशदेता

[1] So corr Ch ध्वातार [2] So corr Ch ध्वातार॰ [3] So corr Ch ह्वोसु
[4] So corr Ch त्मनो [5] So corr Ch स्वेन क्षत्रि

रात्रयष्षट्त्रिंशदक्षरा बृहती बृहती स्वर्गं लोकं प्रवेद स्वर्गं लोकमाप्नुवन्ति य एता रात्रीरासते देवलोकान्वा एत आप्नुवन्ति य एता रात्रीरासते षट्त्रिंशदेता रात्रयष्षट्त्रिंशद्देवलोका अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्या वषट्कारश्च प्रजापतिश्च त्रय इमे लोकास्तान्सर्वान्देवलोकानाप्नुवन्ति य एता रात्रीरासत उभये वै देवाश्च मनुष्याश्चाप्वावृत्ता आसंस्ते देवा एतं द्वादशाहमुपायंस्ते दीक्षयैवात्मानमपुनतोपसद्भिर्यज्ञं[1] समभरन्त हित्वा शरीरं सुत्यया स्वर्गं लोकमायन्य एवं विद्वान्द्वादशाहमुपैति दीक्षयैवात्मानं[2] पुनीत उपसद्भिर्यज्ञं संभरते हित्वा शरीरं सुत्यया स्वर्गं लोकमेति प्रजापतिर्वा एतं स्वर्गकाम आहरत्स न प्राभवदेकादशाहो[3] वा एष स एतमतिरात्रमुपरिष्टादुभयतः पर्यहरत्समानो वा एष उभयतः परिह्रियते स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥ ७ ॥

प्रजापतिरकामयत प्रजायेयेति[4] स द्वादशाहेनायजत तेन प्राजायत[5] प्रैव[6] जायते य एवं वेदापो वै यज्ञिया मेध्या असृज्यन्त तदेका अपि नासृज्यन्तासृग्वाव तन्नासृज्यत तदस्रो ऽसृक्[7] तस्माद्यदेवासृक्छिद्यते[8] ऽथ यज्ञियो मेध्यो भवति पुरुषसंमितो वा एष यस्त्रियं[9] प्रतिगृह्णाति पुरुषं वै सो ऽत्ति[10] यं खलु वै पुरुषमत्ति न तस्यास्मिंल्लोके नामुष्मिन्नपिभवति प्राणो वै पूर्वो ऽतिरात्रो ऽपान उत्तर इयं वै पूर्वो ऽतिरात्रो ऽसा उत्तरो ऽग्निर्वै[11] पूर्वो ऽग्निष्टोमस्सूर्य उत्तरो ऽन्तरौ[12] वा एता अनयोस्तस्मादन्तरौ प्रयुज्येते तदाहुर्यदग्निष्टोमप्रायणो यज्ञः कस्मादतिरात्रौ पूर्वौ प्रयुज्येते इत्यथाहुश्चक्षुषी वा एते यज्ञस्य यदतिरात्रौ कनीनिके अग्निष्टोमा इति यदग्निष्टोमौ पूर्वौ

---

[1] So corr. Ch दीक्षायै॰ यज्ञो [2] So corr. Ch दीक्षायै॰ [3] So corr. Ch मा न प्रभवदे॰ [4] So corr. Ch यजेति [5] So corr. Ch प्रजायत [6] So corr. Ch प्रेय [7] So corr. Ch तदस्रो सृज्यन्त यदस्रो सृज्यत तदस्रो सृक्कं; cf. Maitr. S. 1, 2, 9 (p. 32, Z. 7). [8] So corr. Ch यासृक्छिद्यते [9] So corr. Ch य स्त्रियं [10] Ch etwa सो त्ति [11] So corr. Ch ग्निये [12] So corr. Ch उत्तरं तरो तरो

प्रयुञ्जीरन्वहिष्कनीनिके निरादध्युरन्धाः प्रजायेरन्यदतिरात्रौ पूर्वौ प्रयुज्येते चक्षुषी एव यज्ञस्य प्रतिधाय मध्यतः कनीनिके प्रतिदधाति भूतं वै पूर्वो ऽतिरात्रो भव्यमुत्तरस्तदिमानि दशाहानि मध्ये सद्भवति य एवं वेद यो ह वै गायत्रीं ज्योतिष्पक्षां वेद ज्योतिष्मता भासा स्वर्गं लोकमेति या अतिरात्रौ तौ पक्षौ या अग्निष्टोमौ ते ज्योतिषी ये ऽष्टा अन्तर[1] उक्थ्यास्स[2] आत्मैषा वै गायत्री ज्योतिष्पक्षा य एवं गायत्रीं ज्योतिष्पक्षां वेद ज्योतिष्मता भासा स्वर्गं लोकमेति ॥ पक्षिणो वा एते भवन्ति पक्षिणा भूत्वा यत्र कामयन्ति तत्परापातमासत एष वै प्रजापतिर्द्वादशधा विनिहितो यद्द्वादशाहो या अतिरात्रौ तौ पक्षौ या अग्निष्टोमौ ते चक्षुषी ये ऽष्टा अन्तर उक्थ्यास्स[3] आत्मा स एष प्रजापतिरेव सत्त्रे सत्त्रिणस्स्पृण्वन्ति तत्तत्सत्त्रस्य सत्त्रत्वं प्राणा वै सत्प्राणानेव तास्पृण्वन्ति सर्वासां वा एते प्रजानां प्राणैरासते ये सत्त्रमासते तस्मात्पृच्छन्ति किमेते सत्त्रिण इति प्रियः प्रजानामुत्थितो भवति य एवं वेद ॥ ८ ॥ cf TS 7, 2, 9

प्रजापतिरकामयत स्यामिति[4] स द्वादशाहेनायजत तेनाभवत्तस्मादाहुर्बुभूषतो यज्ञ इति तं मासा दीक्षितमदीक्षिता अयाजयंस्तस्माद्दीक्षितमदीक्षिता[5] याजयन्ति तेभ्य इयमूर्जमददात्सेयं[6] मासेष्वार्ध्नोत्प्रजापतिदत्तार्ध्नुवन्मासाः[7] प्रतिगृह्यार्ध्नोति[8] य एवं विद्वान्ददात्यृध्नोति यः प्रतिगृह्णाति पीवा दीक्षेत यदस्याङ्गानामीयते जुहोत्येव तत्स यथा वसन्तो नवदाव्यश्शोभमान उत्तिष्ठत्येवमेव नवदाव्यश्शोभमान[9] उत्तिष्ठति तपो वै यज्ञस्य श्लेष्म यथा वै रथस्य श्लेष्मैवं यज्ञस्य तपो यो ऽतपस्वी भवत्यसंश्लिष्टो ऽस्य यज्ञस्तपस्वी स्याद्यज्ञमेव[10] संश्लेषयते

[1] So corr Ch अन्तरा, aber cf unten und TS 7, 2, 9, 2 [2] So corr Ch उक्थ्य , cf unten und TS 7, 2, 9 2 [3] So corr Ch उक्थ्यास्, cf oben und TS 7, 2, 9, 3 [4] So corr Ch कामयत स्यामिति [5] So corr Ch अयाजयन्त [6] So corr Ch स्यमूर्ज॰ [7] So corr Ch मासेष्वार्ध्नोत्प्रजापतिर्दत्तार्ध्नुव॰ [8] So corr Ch ह्यर्ध्नोति [9] So corr Ch नवदाव्यश्शो॰, aber vgl das Folgende [10] So corr Ch स्या यज्ञमेव

ऽर्धमासा[1] वावासंस्ते ऽकामयन्त मासास्स्यामेति ते द्वादशाहमुपायंस्त्रयोदशं प्रलाणं कृत्वा तस्मिन्दृष्टोदतिष्ठंस्तस्मात्सो ऽनायतन[2] इतरानुपजीवति तस्माद्द्वादशाहस्य त्रयोदशेन न प्रलग्णा भवितव्यं द्वादश दीक्षेरन्संवत्सरायतना द्वादश मासास्संवत्सरस्संवत्सरायतना एवभुवन्ति[3] त्रयोदश दीक्षेरन्संवत्सरायतनास्त्रयोदश मासास्संवत्सरस्संवत्सरायतना एवभुवन्ति[3] पञ्चदश दीक्षेरन्नर्धमासायतनाः पञ्चदशार्धमासस्य रात्रयो ऽर्धमासायतना एवभुवन्ति[4] सप्तदश दीक्षेरन्प्राजापत्यायतनाः प्रजापतिस्सप्तदशः प्राजापत्यायतना एवभुवन्त्येकविंशतिदीक्षेरन्रुक्कामा असा आदित्य एकविंश एष रुचः प्रदाता स एभ्यो रुचं प्रयच्छति चतुर्विंशतिदीक्षेरन्ब्रह्मवर्चसकामाश्चतुर्विंशत्यक्षरा[5] गायत्री तेजो गायत्री ब्रह्मवर्चसं तेज एव ब्रह्मवर्चसमवरुन्धते[6] सप्तविंशतिदीक्षेरंस्त्रिणवायतनास्त्रिणवा इमे लोकास्त्रिणवायतना एवभुवन्ति[7] त्रिंशद्दीक्षेरन्मासायतनास्त्रिंशन्मासो रात्रयो मासायतना एवभुवन्ति[8] त्रयस्त्रिंशद्दीक्षेरन्देवतायतनास्त्रयस्त्रिंशद्देवता देवतायतना[9] एवभुवन्ति[10] चतुश्चत्वारिंशद्दीक्षेरन्नोजस्कामा वीर्यकामाश्चतुश्चत्वारिंशदक्षरा त्रिष्टुबोजो वीर्यं त्रिष्टुबोज एव वीर्यमवरुन्धते ऽष्टाचत्वारिंशद्दीक्षेरन्पशुकामा अष्टाचत्वारिंशदक्षरा जगती जागताः पशवः पशूनेवावरुन्धते ऽपरिमिता दीक्षेरन्नपरिमितस्यावरुद्ध्या अपरिमितः प्रजापतिः प्रजापतिमेवाभुवन्त्यृतवो वावासन्ननुयावरा[11] मासास्ते मासा अकामयन्तर्तूनाप्नुयामेति ते द्वादशाहमुपायंस्त्रयोदशं प्रलाणं[12] कृत्वा त ऋतूञ्छिशिरेण[13] निभाय्य वसन्तमूर्जमेयामभ्युदतिष्ठन्य[14] एवं विद्वाञ्छिशिरे[15] दीक्षते तपसैव भ्रातृव्यं निभाय्येषमूर्जमस्याभ्युत्तिष्ठति

---

[1] So corr. Ch र्धमासा सा [2] So corr. Ch सानायतन [3] So corr. Ch भ्नुवंति [4] So corr. Ch ब्नुवंति [5] Ch चातु° [6] So corr. Ch रुंधंते [7] So corr. Ch भ्नुवंति [8] So corr. Ch भ्नुवंति [9] So corr. Ch देवतायतनायतना [10] So corr. Ch भ्नुवंति [11] So corr. Ch यावसन्नु° [12] So corr. Ch प्रलाणे [13] Ch ऋतैलि° [14] Erste Hand in Ch मूलमे° [15] Ch विद्वां शि°

शिशिरं वा एतस्य प्रयाणं वसन्तो ऽवसानमृध्नोति[1] य एवं विद्वाञ्छिशिरे[2] दीक्षते ॥ ९ ॥

ब्रह्मवादिनो वदन्ति किं प्रथमेनाह्ना द्वादशाहस्यावरुन्ध इति तेजो ब्रह्मवर्चसं किं द्वितीयेनेति वाचमन्नाद्यं किं तृतीयेनेति त्रीनिमांल्लोकान्किं चतुर्थेनेति चतुष्पदः पशून्किं पञ्चमेनेति चतस्रो दिश ऊर्ध्वां पञ्चमीं किं षष्ठेनेति षडृतून्किं सप्तमेनेति सप्तपदीं शक्वरीं किमष्टमेनेत्यष्टाक्षरां गायत्रीं[3] किं नवमेनेति नव प्राणान्किं दशमेनेति दशाक्षरां विराजं किमेकादशेनेत्येकादशाक्षरां त्रिष्टुभं किं द्वादशेनेति द्वादशाक्षरां जगतीमेतावद्वावास्ति यावदेवास्ति तत्सर्वमाप्त्वावरुन्ध ऋध्नोति वसीयान्भवति य एवं विद्वान्द्वादशाहेन यजते ॥ १० ॥
cf TS 7 3 2

चतुर्वै तास्तिस्रस्तिस्रस्तासां याः प्रथमा आत्मानं ताभिः पुनीते या द्वितीया मेध्यस्ताभिर्यज्ञियो[4] भवति यास्तृतीया गाचाणि ताभिर्निर्णेनिक्ते ऽथ याश्चतुर्थीर्यदेवास्यान्तरतो यद्बहिष्टाच्छमलं[5] तत्ताभिर्धूनुते पुरुषं[6] खलु वा एते ऽदन्ति यद्द्वादशाहेन[7] याजयन्ति यः पायवमत्ति मांसं सो ऽत्ति यो वाजिनं लोहितं स यो धाना अस्थि स य आज्यं मज्जानं स यः परिवापं केशान्स यः पुरोडाशं मस्तिष्कं स यो राजानं भक्षयति स्वेदं स यः करम्भं निष्पदं स एष ह खलु वै सत्रियमत्ति यो ऽनृतं वदति स्वदितमस्य सत्रियं भवति नास्य सत्रियं जग्धं भवति य एवं वेद ॥ ११ ॥ cf. TS 7, 2 10, 3 und 4

द्वादश दीक्षितो भवति जायत एव तत्तद्धि जातं यत्तपसो ऽधि जायते न यत्स्त्रिया द्वादश दीक्षितो भवति द्वादश वै पुरुषे ऽमेध्यानि लोम च तनूश्चासृक्च मांसं चास्थि च मज्जा च स्नेहश्च प्लीहा[8] चाग्नु[9]

---

[1] So corr Ch ध्नोति [2] Ch विद्वा च्छि॰ [3] So corr Ch ष्टाक्षरागा गायत्री, TS 7, 3 2 1 — Corr [4] So corr Ch मेध्यास्ता॰ [5] So corr Ch ष्टाछमल [6] So corr Ch धुनते पुरु [7] So corr Ch यद्वाद॰ [8] So corr Ch प्लीहा [9] So corr Ch चाग्न

च दूषीका च स्वेदश्च यच्च[1] प्रस्रावयत एतानि वै पुरुषे द्वादशामेध्यानि यद्द्वादश दीक्षितो भवति तान्येवापहते द्वादश दीक्षितो भवति द्वादशोपसदो द्वादश प्रसुतस्तान्षट्त्रिंशत्संपद्यन्ते षट्त्रिंशदक्षरा बृहती बार्हताः पशवो बृहत्यामेवैतत्पशूनाप्नोति बृहत्यामेवैतत्पशूनाप्त्वावरुन्द्धे ततो यानि चत्वार्यक्षराण्युत्क्रामन्ति सा चतुष्पदानुष्टुब्वागनुष्टुब्वाच्येवैतत्पशूनाप्नोति वाच्येवैतत्पशूनाप्त्वावरुन्द्धे तस्माद्वाचा[2] पशवो नाम जानते वाचा सिद्धानि वर्तन्ते ॥ १२ ॥ cf. TS 7, 2, 10, 3.

प्रजापतिरकामयत भूयान्स्यां श्रेयान्स्यामृध्नुयामिति स द्वादशाहेनादीक्षत[3] तेनायजत स आर्ध्नोत्तस्मादेको[4] द्वादशाहेन यजतेको हि स आर्ध्नोत्प्रजापतिरेव[5] प्रजापतेरेवर्द्धमन्वृध्नोति[6] य एवं विद्वानेको द्वादशाहेन यजते तेन तिस्रो देवता रोचना अदीक्षन्त तेनायजन्त ता आर्ध्नुवंस्तस्मात्त्रयो[7] द्वादशाहेन यजेरंस्त्रयो[8] हि त आर्ध्नुवन्निम[9] एव लोका एषामेव लोकानामृद्धमन्वृध्नुवन्ति य एवं विद्वांसस्त्रयो द्वादशाहेन यजन्ते तेन षड् देवता अदीक्षन्त तेनायजन्त ता आर्ध्नुवंस्तस्मात्षड् द्वादशाहेन यजेरन्षड्ढि त आर्ध्नुवन्नृतव[10] एवर्तूनामेवर्द्धमन्वृध्नुवन्ति[11] य एवं विद्वांसष्षड् द्वादशाहेन यजन्ते तेन द्वादश देवता अदीक्षन्त तेनायजन्त ता आर्ध्नुवंस्ते[12] पूर्वपक्षेष्वार्ध्नुवन्नपरपक्षाननूपाहूयन्त[13] तस्माद्द्वादश द्वादशाहेन यजेरन्द्वादश हि त आर्ध्नुवन्मासा[14] एव मासानामेवर्द्धमन्वृध्नुवन्ति[15] य एवं विद्वांसो द्वादश द्वादशाहेन यजन्त उपसत्सु त्रयोदशो दीक्षेतोत हि तं विदुरुत न विदुरुत वै[16] त्रयोदशं मासं विदुरुत न विदुः ॥ १३ ॥

---

[1] So corr. Ch यश्च° [2] So corr. Ch तस्माद्वायाचा [3] So corr. Ch नादीक्षित [4] So corr. Ch धाप्नो° [5] So corr. Ch धाप्नो° [6] So corr. Ch द्धर्म°; vgl. das Folgende. [7] So corr. Ch धाप्नुयं° [8] So corr. Ch स्त्रियो [9] So corr. Ch धाप्नुवं° [10] So corr. mit Caland; Ch धाप्नुयन् ॥ वृतय [11] So corr. Ch मैवधमन्वृ° [12] So corr. Ch धाप्नुवि° [13] So corr. Ch हृयत° [14] So corr. mit Caland; Ch द्वादश हि स धाप्नुयं मासा [15] So corr. Ch मासाप्रेवर्धम° [16] So corr. Ch चे

प्रजापतिर्मनसि सारस्वतो वाचि विसृष्टायां धाता दीक्षायां ब्रह्म घर्ते सविता भृत्यामन्धो[1] ऽच्छेतो[2] दिव्यस्सुपर्णः प्रतिख्यातो ऽदितिः प्रायणीये पणुष्टा[3] न्युप्तो रुद्रो विचीयमानश्छन्दांसि मीयमानो वरुण उपनद्धः पूषा सोमक्रयण्यां भगः पण्यमानो ऽसुरः क्रीतश्शिपिविष्ट ऊरा[4] आसाद्यमानो बृहस्पतिरुत्थितो वायुरधिह्रियमाणो ऽधिपतिः प्रोह्यमाणो[5] ऽग्नीषोमीयः पशा[6] अतिथिर्दुरोणसदातिथ्ये वरुणस्सम्राडासन्द्यामासाद्यमान[7] ऐन्द्राग्नो अग्नौ मथ्यमान ऐन्द्राग्नो[8] ऽग्नौ प्रहूयमाणे[9] साम तानूनप्त्रे तपो ऽवान्तरदीक्षायां पृथिव्युपसद्यन्तरिक्षमुपसदि द्यौरुपसदि[10] यज्ञस्य प्रमाभिमोन्मा प्रतिमा वेद्यां क्रियमाणायां पशव उत्तरवेद्यां द्यौर्हविर्धाने ऽन्तरिक्षमाग्नीध्रे पृथिवी सदसि ॥ १४ ॥ *cf Ath Pray Sūtra 3 1 TS 4 4 9*

प्राण उपरवेषु भ्रातृव्या धिष्ण्येषु पशवा बर्हिषि वेद्यां स्तीर्यमाणायामनुर्वसर्जने प्रजापतिः प्रणीयमानो ऽग्निराग्नीध्रे वैष्णव आसन्नकर्मणि हस्तो विसृष्टो[11] वैष्णवो यूप ओषधयो रशनायां मेध आप्रीषु हविः पर्यग्निकृतः पितृदेवत्यस्संज्ञप्यमाने यज्ञस्य मिथुनं पत्नेजनीषु रक्षसां भागधेयं वपायामुद्धृह्यमानायां[12] यज्ञस्य संततिर्वसतीवरीषु परिह्रियमाणास्विन्द्राग्न्योर्धेनुर्दक्षिणायामुत्तरवेद्याश्श्रोण्यामासन्ना[13] मित्रावरुणयोर्धेनुरुत्तरस्यामुत्तरवेद्याश्श्रोण्यामासन्ना[14] विश्वेषां देवानामाग्नीध्रे छन्दांस्युपवसथे हविरुपावहृतस्सारस्वतः प्रातरनुवाके ऽप

---

[1] So corr mit Caland Ch घर्त्यत्ते स° मन्यामधो cf TS 4 4 9 a A [2] So corr Ch अच्छेतो, cf TS 4 4 9 a A [3] So corr mit Caland, Ch प्रायणीयो पशुष्टा (ष्ट sehr oft für ष्ठ geschrieben) [4] So corr Ch तुरा [5] So corr Ch प्रह्यमाणो TS 4, 4 9 — Corr [6] So corr Ch पशा [7] So corr Ch डासध्यामा° [8] So corr Ch ऐन्द्राग्नो [9] So corr Ch अग्नौ प्रहिय° [10] So corr Ch पृथिव्यपस°, द्यौरुपसदि mit Caland vom Ende des Cap hierher gesetzt [11] So corr mit Caland, nach Ath P S Ch ग्निराग्नीध्रे वैष्णव आसन्न कर्मणे हस्तौ विसृष्टौ [12] So corr Ch वपामु° [13] So corr Ch श्रोण्या° [14] So corr Ch श्रोण्या°

वा न्युप्तः प्रजापतिर्विभज्यमाना देवता विभक्त इन्द्रो वृत्रहेन्द्रो ऽभिमातिहेन्द्रो वृत्रतूरुन्नीयमान[1] आयुरुपांश्वन्तर्यामयोर्यमो ऽभिषुतः ॥ १५ ॥ cf. Ath. Prāy Sūtra 3, 2; TS 4, 4, 9.

निभूयपूराधवनीये सुपूतपूः[2] पूतभृति शुक्रश्रीः क्षीरश्रीः ककुहस्सक्तुश्रीः पात्रेषु वायुर्बहिष्पवमाने होत्राः प्रवरे वसवः प्रयाजेषु यद्देवत्यस्सोमस्तद्देवत्यः पशुर्वैश्वदेव[3] उन्नीयमान ऐन्द्राग्न उन्नीतो रुद्रो हूयमानो वाग्घुतो मारुतो गणो ऽभ्यावृत्तो मित्रः प्रतिख्यात इन्द्र आसन्नो भक्षो भक्ष्यमाणस्सखा भक्षितः[4] पितरो नाराशंस आग्नेयं प्रातस्सवनमैन्द्रं माध्यन्दिनं सवनं यज्ञो दक्षिणायामैन्द्राणि पृष्ठानि वैश्वदेवं तृतीयसवनं वैश्वानरो ऽग्निष्टोम ऐन्द्रावारुणं मैत्रावरुणस्य स्तोत्रमैन्द्राबार्हस्पत्यं ब्राह्मणाच्छंसिन ऐन्द्रावैष्णवमच्छावाकस्येन्द्रघ्नो हणी राघी पान्यापेयो रथंतरस्संधिस्सौर्यमाश्विनमहर्यज्ञ आदित्या अनुयाजेषु यदन्तरा क्रियते समुद्रो वरुणो ऽवभृथे समुद्र ऋजीषे यदर्वारे तीर्थं तत्प्रायणीयं यत्पारे तीर्थं तदुदयनीयं वैष्णवो वशायां ब्रह्मा समिष्टयाम् ॥ १६ ॥ cf Ath Prāy Sūtra 3, 3, TS 4, 4 9

यथा वै रथ एकैकमरमभिप्रतितिष्ठन्वर्तेत[5] एवं यज्ञ एकैकां तन्वमभिप्रतितिष्ठन्नेति पुरा प्रचरितोराग्नीध्रे होतव्या एतद्ध वा उवाच वासिष्ठस्सात्यहव्यो ऽस्कान्सोम इत्युक्ते मा सूर्क्षत प्रचरत प्रातर्वावाह्याहं सोमं समस्थापयमिति नास्य सोमस्स्कन्दति य एवं वेद स ह स्म[6] वै स आसन्द्यामासीनस्सक्तुभिरुपमथ्य सोमं पिबत्यह[7] वाच सर्वतो यज्ञं वेद य एतां वेद न मामेष हिंसिष्यतीति नैनं सोमः पीतो न पेयो हिनस्ति य एवं विद्वान्सोमं पिबति तं ह स्म यदाहुः कस्मात्त्व-

---

[1] So corr. mit Caland, Ch रुन्नीयमाना [2] So corr Ch सुपूतः पूः [3] So corr. mit Caland, Ch यत्य- पशो वै॰ [4] So corr. mit Caland, Ch भक्षमानसु स्याभक्षितः [5] So corr mit Caland nach Gop Br, Ch मकैकमभिप्रति॰ [6] So corr Ch एवं वै ह [7] So corr mit Caland; Ch सपिबत्यह

मिदमासीनस्सक्तुभिरुपमथ्य सोमं पिबसीति देवतास्वेव यज्ञं प्रतिष्ठापयामीत्यब्रवीत्तस्यैवं विदुषो यस्यैवं विद्वान्यज्ञार्त्या यज्ञप्रायश्चित्तिं जुहोति देवतास्वेव यज्ञं प्रतिष्ठापयति ॥ यज्ञार्तिं प्रतिजुहुयात्तयोनित्वाय त्रयस्त्रिंशद्वै यज्ञस्य तन्व एकान्नत्रिंशत्स्तोमभागास्त्रीणि सवनानि यज्ञश्चतुर्थस्स्तोमभागैरेवैतत्स्तोमभागान्प्रतियुङ्क्ते सवनैस्सवनानि यज्ञेन यज्ञे[1] सर्वा ह वा अस्य यज्ञस्य तन्वः प्रयुक्ता भवन्ति सर्वा आप्तास्सर्वा अवरुद्धा देवस्य सवितुः प्रसवे बृहस्पतये स्तुतेति यद्वै सविता देवेभ्यः प्रासुवत्तेनार्ध्नुवन्सवितृप्रसूता[2] एव स्तुवन्त्यृध्नुवन्त्यृध्यन्ते ह वा अस्य स्तोमा[3] ऋध्यते[4] यज्ञ ऋध्यते यजमानायर्ध्यते[5] प्रजाया ऋध्यते पशुभ्य ऋध्यते ब्रह्मणे यस्यैवं विदुषो यस्यैवं विद्वान्ब्रह्मा भवति ॥ १७ ॥ cf Gop Br 2 2 10

यो वै स्तोमभागानामायतांश्च[6] प्रतिहितांश्च विद्यात्स समृतसोमस्य ब्रह्मा स्याद्बहिष्पवमाने प्रस्तुते ब्रूयात्स्तुतेपे स्तुतोर्जे स्तुत[7] देवस्य सवितुः प्रसवे बृहस्पतिप्रसूता इत्येता वै स्तोमभागानामायतप्रतिहिता य एवं विद्यात्स समृतसोमस्य[8] ब्रह्मा स्याद्यां दिशं सोमौ सिस्तुतौ स्यातां तां दिशं परीक्षेतेदमहममुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रं शुचा विध्यामीत्यृत्विजामेकं ब्रूयाच्छुचैवैनाम्विध्यति यो वै स्तोमभागानामायतांश्च[9] प्रतिहितांश्चाविद्वान्ब्रह्मा भवति स विष्वग्वीर्येण[10] व्यृध्यते बहिष्पवमाने प्रस्तुते स्तुतेपे स्तुतोर्जे स्तुत देवस्य सवितुः प्रसवे बृहस्पतिप्रसूता इत्युपर्युपरि ब्रह्माणमतीक्षेताधरमेव[11] द्विषन्तं कुरुते ब्रह्मन्सोमो ऽस्कानिति यज्ञो ऽस्कानित्येवैतदाह यत्र स्कन्देत्तदपो निनीय ॥

---

[1] So corr Ch यज्ञे यज्ञा [2] So corr Ch नाध्नुवत्स॰ [3] So corr Ch स्तोमा [4] Ch ऋध्यते und so auch weiterhin [5] So corr Ch मानायध्यते [6] So corr Ch भागना॰ [7] So corr Ch स्तुतो vgl aber weiter unten [8] So corr Ch स समृत॰ [9] So corr Ch श्चा [10] So corr Ch विष्वग्वी॰ [11] So corr mit Caland, Ch मतीक्षेता॰

अभूद्देवस्सविता वन्द्यो[1] नु न इदानीमह्न[2] उपवाच्यो नृभिः।
वि यो रत्ना भजति मानवेभ्यश्श्रेष्ठं नो अत्र द्रविणं यथा दधत्॥
इत्यभिमन्त्रयेतापो वै सर्वा देवता देवतास्वेव यज्ञं प्रतिष्ठापयति यत्र वै ब्रह्मान्यस्मै भूयो दीयमानं पश्यति सो ऽधराचीनप्रवणस्सोमो भवति यदि ब्रह्मान्यस्मै भूयो दीयमानं पश्येदिदमहममुष्यामुष्यायणस्येन्द्रियं[3] वीर्यं वृञ्ज इति यजमानं ब्रूयादिन्द्रियमेवास्य वीर्यं वृङ्क्ते॥ १८॥
अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम्।
दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम्॥
अग्निनाग्निस्समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा।
हव्यवाड् जुह्वास्यः॥
सप्त ते अग्ने समिधस्सप्त जिह्वास्सप्तर्षयस्सप्त धाम प्रियाणि।
सप्त होत्रा अनु विद्वान्सप्त योनीरापृणस्वा घृतेन॥
मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यस्यारिष्टं यज्ञं समिमं तनोतु।
इमं यज्ञं सप्ततन्तुं ततं न[4] आ देवा[5] यन्तु सुमनस्यमानाः[6]॥
चयस्त्रिंशत्तन्तवो यान्वितन्वत इमं यज्ञं स्वधया ये ददन्ते।
तेषां छिद्रं प्रतिदध्मो यदत्र स्वाहायं यज्ञो अप्येतु देवान्॥
यन्मे मनसश्छिद्रं यद्वाचो यत्र[7] मे हृदः।
अयं देवो बृहस्पतिस्सं तत्सिञ्चतु राधसा॥
विश्वकर्मा हविरिदं जुषाणस्संततानियज्ञं समिमं तनोतु।
या व्युष्टा उषसो याश्च निम्रुचस्तास्संदधातु हविषा घृतेन॥
अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिश्च सत्यमित्त्वमया असि।
अयास्सन्मनसा[8] कृतो ऽयास्सन्हव्यमूहिषे[9] ऽया नो धेहि भेषजम्॥

---

[1] So corr. Ch वन्यो [2] So corr. Ch इदटानी° [3] So corr. Ch ममुष्या-मुष्यामुष्यायण° [4] So corr. Ch तंतुं तत [5] So corr. Ch देव [6] So corr. Ch मानः [7] So corr. Ch यन्त्र [8] So corr. Ch अयासा म° [9] So corr. Ch मुहि

त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽवयासिसीष्ठाः ।
यजिष्ठो वह्नितमश्शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्[1] ॥
स त्वं नो अग्ने ऽवमो भवोती[2] नेदिष्ठो अस्या उषसो[3] व्युष्टौ ।
अवयक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं[4] सुहवो न एधि ॥ ॥ १९ ॥
cf Kap 8 46 1 (enthält meist nur die Versanfänge).

इति श्रीमद्यजुषि काठके चरकशाखायामोरिमिकायामेकादशिनी नाम चतुस्त्रिंशं स्थानकं संपूर्णम् ॥[5]

भद्रं[6] कर्णेभिश्शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः[7] ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवास्स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिस्स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरश्शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवस्सूरचक्षसो विश्वे मा[8] देवा अवसागमन्निह[9] ॥
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा[10] जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥

---

[1] So T7 fol 14b, Ch स्मात् [2] So corr Ch भवतो auch T7 fol 14b भवतो, cf RV 4, 1, 5 [3] So corr Ch उषस [4] Ch मडीको [5] So die Unterschrift des Capitels in Ch [6] Der Anfang des Capitels auch in T7 fol 32 und 33, T1 und Brl fol 11 vorhanden, nach diesen Mss accentuirt [7] RV 1, 89, 8 माक्षभि॰ [8] RV 1, 89 7 नो [9] Ch विहि [10] So T1, T7 und Brl, in Uebereinstimmung mit RV 1 89 9 Ch liest नश्चक्र

प्रेष्ठो अग्ने[1] दीदिहि पुरो नो ऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ ।
त्वां शश्वन्त उपयन्ति वाजाः ॥
श्रुत्कर्णाय कवये वेद्याय वचोभिर्नाकमुपयामि[2] शंसन् ।
यतो भयमभयत्वं नो अस्त्वये देवानामव हेड इत्स्व[3] ॥
अग्निं वो देवमग्निभिस्सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम् ।
यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥
घृतप्रतीको घृतपृष्ठो अग्निर्घृताहवनो घृतमस्य धाम ।
घृतप्रुषो हरितस्त्वावहन्तु घृतं पिबन्यजताद्देव देवान् ॥ ॥ १ ॥
cf Kap ■ 48, ■ (meist nur die Versanfange)
इमो अग्ने वीततमानि हव्याजस्रा वक्षि देवतातिमच्छ ।
प्रति न ईं सुरभीणि[4] व्यन्तु ॥

सप्त ते अग्ने त्रयस्त्रिंशद्धन्मे मनसो विश्वकर्माणं युनज्मीन्धाना-
स्त्वाग्निर्न ईडित ईडितव्यैर्देवैः पार्थिवैः पातु वायुर्न ईडित ईडितव्यै-
र्देवैरन्तरिक्ष्यैः पातु सूर्यो न ईडित ईडितव्यैर्देवैर्दिव्यैः पातु विष्णुर्न
ईडित ईडितव्यैर्देवैर्दिश्यैः पात्वग्निर्यजुर्भिः पूषा स्वगाकारैस्त इमं य-
ज्ञमवन्तु ते मामवन्त्वनु व आरभे ऽनु मारभध्वम् ॥ २ ॥
cf Kap S 48 3

पृथिवि[6] विभूवरि[7] सिनीवाल्युरंध[8] आचित्ते मनस्ते भुवो वि-
वस्ते[9] य ऊर्मिर्हविष[9] इन्द्रियावांस्तं व[10] आध्यासं[11] सोमस्याज्यमसि
हविषो हविर्ज्योतिषो ज्योतिर्विश्वेषां देवानां भागधेयीस्स्थ देववी-
तये वो गृह्णामि ॥

---

[1] Ch अग्न aber cf RV 7 1 3 [2] Kap S 48, 2 वचोभिर्नाकमुपयामि [3] So Ch AV 19 3, 4 यथ देवाना यज्ञ हेडो अग्ने ॥ Kap S 48 2 यतो भयमभय ते नो स्त्वग्ने देवानामहे ईळा ॥ [4] So corr Ch सुरभीणि desgl W1 cf RV 7 1 18 [5] Dies Capitel auch in W und W1, der großte Theil auch in T4 vorhanden [6] So W, W1 und Kap S 48, 4, Ch पिथुवरि [7] So Ch W1 रन्ध W2 रन्धा, Kap S 48, 4 सनीवाल्युरध [8] Offenbar verdorben Bohtlingk vermuthet विभयस्ते (Brief vom 10 Sept 1895) Kap S 48, 4 आचित्ये भुवो नमस्ते । य ऊर्मिं [9] So W, Ch हविषो Kap S 48 4 हविषः [10] Ch स य [11] W1 आध्या धास, Kap S 48 4 ■ वायुरध्यास सोमस्याज्यमसि

सं वसिञ्चन्तु मरुतस्सं पूषा सं धाता समिन्द्रस्सं बृहस्पतिः ।
सं वो ऽयमग्निस्सिञ्चतु प्रजया च धनेन च ।
आयुष्मन्तं कृणोत मा[1] ॥
मान्दा वशाः ॥
आपो देवीर्घृतमिदाप आसन्नग्नीषोमौ बिभ्रत्याप[2] इत्ताः ।
तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम[3] आ मा[4] प्राणेन सह वर्चसागन् ॥
आदित्पश्याम्युत[5] वा शृणोम्या मा[6] घोषो गच्छति वाङ्न आसाम् ।
मेने[7] भेजानो अमृतस्य तर्हि हिरण्यवर्णा अतृपं यदा वः ॥
समन्या[8] यन्त्युप[9] यन्त्यन्यास्समानमूर्वं नद्यः पृणन्ति ।
तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसमपां नपातं परितस्थुरापः ॥
आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन ।
महे रणाय चक्षसे ॥[10]
यो वश्शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
उशतीरिव मातरः ॥[11]
तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च नः ॥
स ईं वृषा जनयत्तासु[12] गर्भं स ईं शिशुर्धयति तं रिहन्ति ।
सो अपां नपादूर्जयन्नप्स्वन्तर्वसुधेयाय[13] विधते विभाति[14] ॥

---

[1] Kap S 48, 4 शुष्म कृणोतु मा, weiter in Kap S großentheils nur die Anfänge der Verse [2] Hier beginnt das Fragment in T4 (b), darnach habe ich accentuirt [3] Accent corrigirt, T4 मधुपृचा, Maitr S 2, 13, 1 = Corr [4] So T4, Ch मा [5] Accent corrigirt, T4 पश्याम्युत cf Maitr S 2, 13, 1 [6] Dies मा fehlt in Ch [7] Maitr S 2, 13, 1 मन्ये [8] So T4, Ch समना [9] Accent corr, T4 यन्त्युप, cf RV 2, 35, 3 [10] Dieser Vers in W 1β nur abgekürzt gegeben, cf RV 10, 9, 1 [11] Dieser und der folgende Vers fehlen in W 1β ganz, cf RV 10 9, 2 und 3 [12] Kap S 48, 4 स ईं शिशुर्जनयत्सु गर्भं [13] So T4, Ch सुधेयाय [14] Kap S 48, 4 सोऽपां नपादनभिम्लातवर्णो ऽन्यस्येवेह तन्वा विवेष stimmt also, von den Fehlern abgesehen, zu RV 2, 35, 13, am Schluß des Capitels findet sich dafür dieser Halbvers des Kâthaka, cf RV 2, 35, 7, vgl Schluß des Capitels

इह गावः प्रजायध्वमिहाश्वा इह पूरुषाः ।[1]
इहो सहस्रदक्षिणो रायस्पोषः प्रजायताम् ॥
अयं यज्ञो वर्धतां गोभिरश्वैरियं वेदिस्स्वपत्या सुवीरा[2] ।
इदं बर्हिरति बर्हींष्यन्येमं यज्ञं विश्वे अवन्तु देवाः ॥
स[3] आ दमे सुदुघा यस्य[4] धेनुस्स्वधां पीपाय सुभ्वन्नमत्ति[5] ।
सो अपां नपादनभिम्लातवर्णो[6] ऽन्यस्येवेह तन्वा विवेष[7] ॥ ॥ ३ ॥
cf. Kap. S. 48, 4.

स्कन्ना द्यौस्स्कन्ना पृथिवी स्कन्नं विश्वमिदं हविः ।
स्कन्नादो[8] विश्वा भूतानि प्र स्कन्नं[9] जायतां हविः ॥
इह गावो ऽयं यज्ञः[10] ॥
पयस्वतीराप ओषधयः पयस्वन्मामकं[11] वचः ।
अपां पयस्वद्यत्पयस्तेन नस्सह वर्धताम्[12] ॥
यद्वामृक्षश्शकुनिर्मुखेन निरृते तव ।
अग्निष्टत्सर्वं शुन्धतु हव्यवाड् घृतसूदनः ॥
यद्वामृक्षश्श्वापान्मुखेन[13] निरृते तव ।
अग्निष्टत्सर्वं[14] शुन्धतु हव्यवाड् घृतसूदनः ॥
भूतिर्दधो घृतेन वर्धतां यज्ञं यज्ञाय मुञ्चतु स्वाहा घृतेन वर्धतां भूतिमुञ्चेमं यज्ञं मुञ्च यज्ञपतिमंहसस्स्वाहा ॥

---

[1] So corr. Ch und T4 पूरुषाः; T7 fol. 13 पुरुषाः; Kap. S. 48, 4 पूरुषाः [2] Ch सुवीरा; T4 सुवीरः; Kap. S. 48, 4 सुवीरा [3] So die Mss.; besser Kap. S. 48, 4 स्य आ दमे wie RV 2, 35, 7. [4] So W1, Ch यास्य; T4 यास्य, cf RV 2, 35, 7. [5] W1 स्वधा°; Kap. S. 48, 4 सुभ्वन्नमत्ति [6] Accent corrigirt; T4 दनभिम्लातवर्णो, cf RV 2, 35, 13. [7] Kap. S. 48, 4 सो अपां नपादूर्जयन्नप्स्वन्तर्वसुदेयाय विधते विभाति । W1 विवेश [8] Kap. S. 48, 5 स्कन्नादो [9] T4 प्र स्कन्नंज्जा°, vielleicht aber auch प्र स्कन्नंज्जा° [10] Diese Worte in T4 abgebrochen; der Accent ergänzt. [11] So W1, ohne Acc.; T4 पयस्वान्मामकं; Ch पयस्वान्मामकं [12] RV 10, 17, 14 Schluß anders; Kap. S. 48, 5 अपां पयसो यत्पयस्तेन ते सह वर्धतां [13] So T4 und W1; Ch मृक्षश्श्वापान्मु°; Kap. S. 48, 5 यद्वामृक्षश्श्वापां मुखेन [14] Kap. S. 48, 5 वायुष्टत्सर्वं

यास्ते अग्ने समिधो अप्स्वन्तर्यमन्पृथिव्यां[1] उप सूर्ये याः ।
तास्ते गच्छन्त्वाहुतीघृतस्य[2] देवाय्ये यजमानाय शर्म ॥ ॥ ४ ॥
cf Kap S 48, 5
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा[3] इन्द्राग्नी कल्पना युवम् ।
हुताहुतस्य[4] तृम्पतमहुतस्य[5] हुतस्य च ॥[6]
हुतस्य चाहुतस्य चाहुतस्य हुतस्य च ।
पीतापीतस्य सोमस्यास्य हव्यस्येन्द्राग्नी वीतं पिबतमागतम् ॥
मेमं[7] यज्ञं तमो विदन्मर्त्विजो मो इमाः प्रजाः ।
मा[8] यस्सोमं पिबादिमं सस्पृष्टमुभयं कृतम् ॥
मा नो ध्वारिषुः[9] पितरो मोत देवा मा नस्सबन्धुरुत वान्यबन्धुः ।
मा[10] नो दुश्शंसो अघशंस ईश्वताहुतो ऽयं यज्ञो अप्येतु देवान् ॥
सप्तर्त्विजस्सप्त संदीस्येषां दश क्षिपो अश्विना पञ्चवाजा[11] ।
प्राणो व्यानो ऽपानो मन आकूतमग्निस्स्वाहा देवा हविरिदं जुषन्ताम्[12] ॥ ॥ ५ ॥ cf Kap S 48 6
आत्मा यज्ञस्य रंह्या सुष्वाणः पवते सुतः ।
प्रत्नानि पाति काव्यः[13] ॥
गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत ।
आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः[14] ॥

---

[1] Kap S 48, 5 अप्स्वन्तर्यमि पृथिव्या [2] Kap S 48, 5 तास्ते यन्त्वाहुतो घृतस्य देवाय्य यजमानाय शर्म । [3] So corr Mss ऋत्विजा resp ohne Acc, Kap S 48, 6 यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा विद्वाग्नी कल्पना युव ।, cf RV 3, 38, 1, in TBr 3, 7, 8, 3 ऋत्विया । [4] So der Accent in T4, ebenso TBr 3, 7, 8, 3 [5] W1 माहुतस्य [6] Kap S 48, 6 हुताहुतस्य तृम्पतमहुतस्य हुतस्य चाहुतस्य चाहुतस्य च पीतापीतस्य etc [7] So Ch, ohne Acc, T4 मम, W मम aber Kap S 48, 6 मेम [8] Kap S 48, 6 मो च सोमं पिबादिम सस्पिष्टमुभय कृत । [9] So corr Ch ह्वारिषु T4 ध्वार्षो W1 etwa ध्वरिषुं, Kap S 48, 6 मो ना ह्वारिषु [10] Kap S 48 6 मो नो दु॰ अघशं etc [11] So T4, vielleicht वाज W1 वाजा oder वजा, Ch वाज, Kap S 48, 6 सप्तर्त्विज सप्त संदास्येषा दश क्षिपो अश्विना पञ्च वाजा । [12] Kap S 48, 6 प्राणो व्यानापानो मन आकूतमग्नि स्वाहा देवा हविरिदमिदं जुषन्ता ॥ [13] Besser Kap S 48, 7 प्रत्न निपाति काव्य also wie RV 9, 6, 8 [14] T4 पूर्व्यं, cf RV 9, 2, 10

आत्मन्वन्नभो दुह्यते घृतं पय ऋतस्य योनिरमृतं विजायते ।
समीचीनास्सुदानवः प्रीणन्ति तन्वरो[1] हितमवमेहन्ति पेरवः ॥

देवा देवेषु श्रयन्तां प्रथमा द्वितीयेषु श्रयन्तां द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयन्तां ये स्थ[2] त्रय एकादशास्त्रयश्च त्रिंशच्च त्रयश्च त्री च शता च त्रयश्च त्री च[3] सहस्रा तं इमं यज्ञमवन्तु ते मामवन्त्वनु व आरभे ऽनु मारभध्वम् ॥ ६ ॥ cf Kap. S 48, 7.

वसवस्त्वोदीरयन्तु[4] रुद्रास्त्वोदीपयन्त्वादित्यास्त्वोच्छ्रयन्तु[5] विश्वे त्वा देवा दृंहन्तु ॥

ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ।
देवा ह धर्मणा ध्रुवा यजमानः पशुभिर्ध्रुवः ॥

दिवि दिव्यान्दृंहान्तरिक्षे ऽन्तरिक्ष्यान्दृंह[6] पृथिव्यां पार्थिवान्दृंह ॥

आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलत्[7] ।
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु[8] मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् ॥[9]
ध्रुवं ध्रुवेण हविषा हविरिव[10] सोमं नयामसि ।
यथा न इन्द्रः केवलीर्विशो[11] बलिहृतस्करत्[12] ॥

स्वाहा दिवं आप्यायस्व स्वाहान्तरिक्षादाप्यायस्व स्वाहा पृथिव्यां आप्यायस्वायुर्धा असि ध्रुवायुर्मे धेहि वयोधा असि ध्रुव वयो[13]

---

[1] So T4, desgl W1, ohne Accent, Ch तन्वरो, aber RV 9, 74, 4 त नरो
[2] T4 wohl स्थ
[3] Die Worte शता च त्रयश्च त्री च
[4] Dies Capitel nicht nur in T4 sondern auch T1 und T3 vorhanden, nicht nur in W1 sondern auch in W1ζ, der Schluß auch in G und Brl
[5] Zu त्वोदीपयन्त्वा° habe ich keine Variante notirt, Kap S 48, 9 रुद्रास्त्वोदीरयन्तु
[6] T3 न्तरिक्ष्यान्दृंह
[7] So T4 त्वाहार्ष°, aber T1, T3, Ch, W1ζ हार्षं°, W1 undeutlich, Kap S 48, 9 आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलत्
[8] Kap. S 48, 9 सर्वास्सन्तु
[9] Der ganze Vers in Brl fol 69 genau übereinstimmend mit RV 10, 173, 1 gegeben, also von dieser Version wesentlich abweichend
[10] Kap S 48, 9 हविरव
[11] So betont T1, T3 hat केवलीर्विशो, T4 केवली°, W1ζ केवलीर्विशो
[12] So betont T1, in T3 und T4 करत् ohne Accent, vgl RV 10, 173, 6
[13] Ch वयो

मे धेहि तनूपा असि ध्रुव तन्वं मे पाहि चक्षुष्पा असि ध्रुव चक्षुर्मे पाहि वर्चोधा असि ध्रुव वर्चो मे धेहि ॥
अध्वर्यो[1] ऽयं यज्ञो अस्तु देवा ओषधीभ्यः पशुभ्यो मे धनाय ।
विश्वस्मै भूताय ध्रुवो अस्तु देवासं पिन्वस्व घृतवद्देव[2] यज्ञ ॥
इहैवैधि मापच्योष्ठाः[3] पर्वत इवाविचाचलत्[4] ।
इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह यज्ञमु धारय[5] ॥
इममिन्द्रो अदीधरद् ध्रुवं ध्रुवेण हविषा हविः ।
तस्मै सोमो अधिब्रुवत्तस्मा[6] उ ब्रह्मणस्पतिः ॥
ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे ।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामसि[7] ॥ ॥ ७ ॥
cf. Kap. S. 48, 9.

अंसवे[8] स्वाहा वसवे स्वाहा वसुधेयाय स्वाहा भूपतये[9] स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानां पतये स्वाहा भूताय[10] स्वाहा ॥
द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त[11] होत्राः ॥

---

[1] Von hier ab bis zum Schluß des Capitels der Text auch in T 6 fol. 12, G, Brl fol. 10, die Form अध्वर्यो, welche alle Mss. bieten, offenbar von einem noch nicht in den Wörterb. verzeichneten Adjectiv अध्वर्यु von अध्वर; auch Kap. S. 48, 9 liest अध्वर्यो यं यज्ञो अस्तु, vgl. TS 3, 1, 9, 3 अध्वरो यज्ञो ऽयमस्तु [2] Kap. S. 48, 9 घृतवदेव; aber vgl. TS 3, 1, 9, 3 घृतवद्देव सोम [3] T 6 मापच्युष्ठाः; cf. RV 10, 173, 2. [4] Brl fol. 69 इवाविचाचलिः; ebenso Kap. S. 48, 9, ohne Accent; cf. RV 10, 173, 2. [5] Brl fol. 69 राष्ट्रमु धारय, wie RV 10, 173, 2. [6] So T 4 und Brl fol. 10, desgl. W 1, ohne Accent; Ch अधिब्रुव; Kap. S. 48, 9 अधिब्रुवत; *dagegen T 1, T 3 und Brl fol. 69 अधिब्रवत्तस्मा, desgl. W 1 [illegible], ohne Acc.;* also wie RV 10, 173, 3. [7] So der Halbvers in T 6, W 1, G, Brl an beiden Stellen, und Kap. S. 48, 9; dagegen fehlt der erste Pâda ध्रुवं विश्वमिदं जगद् auffallenderweise in T 1, T 3, T 4 und Ch; in W 1[illegible] ist derselbe nachträglich eingeschoben. [8] Von hier wieder allein nach T 4 accentuirt. [9] भूपति hier ganz richtig, gemäß Pâ. 6, 2, 19 oxytonirt, was noch nicht belegt zu sein scheint; dem gegenüber भुवनपति gemäß Pâ 6, 2, 20. [10] Kap. S. 48, 9 भूतये; von dem folgenden Verse in Kap. S. nur die Anfänge gegeben. [11] So corr. T 4 सप्त; cf. RV 10, 17, 11; Mâitr. S. 2, 5, 10.

यस्ते द्रप्सस्स्कन्दति[1] यस्ते अंशुर्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थे ।
अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात्तन्ते जुहोमि मनसा वषट्कृतम् ॥
यो द्रप्सो अंशुः[2] पतितः पृथिव्यां परिवापात्पुरोडाशात्करम्भात् ।
धानासोमान्मन्थिन[3] इन्द्र शुक्रात्स्वाहाकृतमिन्द्राय तं जुहोमि ॥
यस्ते द्रप्सो मधुमाँ[4] इन्द्रियावान्स्वाहाकृतः पुनरप्येति देवान् ।
अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात्तन्ते जुहोमि मनसा वषट्कृतम् ॥
यस्ते द्रप्सस्स्कन्दति[5] यस्ते अंशुरवश्च यः परो दिवः ।
अयं देवो बृहस्पतिस्सं तत्सिञ्चतु राधसा ॥ ॥ ८ ॥

cf. Kap. S. 48, 9 u. A.

विसृष्टधेनास्सलिला[6] घृतश्चुतो[7] वसन्तो ग्रीष्मो मधुमन्ति वर्षाः[8] ।
शरद्धेमन्त ऋतवो मयाभुव उदप्रुतो नभसी[9] संवसन्ताम्[10] ॥
आ नः प्रजामा देवानां त्वमग्ने व्रतपा असि ॥
यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।
अग्निष्टद्विश्वमापृणाति विद्वान्येभिर्देवाँ ऋतुभिः कल्पयाति ॥

मधुश्च माधवश्च वासन्तिका[11] ऋतू शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मा ऋतू नभश्च नभस्यश्च वार्षिका ऋतू इषश्चोर्जश्च शारदा ऋतू सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिका ऋतू तपश्च तपस्यश्च शैशिरा ऋतू त इमं यज्ञमवन्तु ते मामवन्त्वनु व आरभे ऽनु मारभध्वम् ॥ ९ ॥ cf. Kap. S. 48, 10.

अंसवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभवे[12] स्वाहा विवस्वते स्वाहा भूषाय स्वाहा संसर्पाय स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा गणश्रिये[13] स्वाहा

[1] Kap. S. 48, 9 स्कन्ति für स्कन्दति, cf. RV 10, 17, 12. [2] Kap. S. 48, ■ यो अंशुद्रप्सः पतितः पृथिव्यामिति; aber cf. TS 3, 1, 10, 1. [3] So W 1, ohne Accent; T 4 धानासोमंन्मन्थिन; Ch धानासोमा मंथित; cf. TS 3, 1, 10, 1 [4] Kap. S 48, 9 मधुमं; cf. TS 3, 1, 10, 2. [5] Kap. S. 48, 9 यस्ते द्रप्सः स्कन्न स्कंदि; also wie RV 10, 17, 13. [6] Kap. S. 48, 10 सरिरा [7] T 4 wohl घृतश्चुतो; Kap. S. 48, 10 घृतश्रुतो [8] Dies Wort in T 4 abgebrochen, Accent ergänzt. [9] Accent corr.; T 4 नंभसी [10] Accent ergänzt; in T 4 dies Wort ohne Accent. [11] So T 4; Ch वसा°; Kap. S. 48, 10 वासंतिकावृत [12] Auch Kap. S. 48, 8 विभवे; aber Maitr. S. 3, 12, 11 विभ्वे; TBr. 3, 10, 7 विभुवे [13] T 4 गणश्रिये; Kap. 48, 8 गणाश्रिये

चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहाभिभवे[1] स्वाहाधिपतये स्वाहा दिवापतये[2] स्वाहेन्द्रस्य यहो ऽस्यगृहीतो[3] याह्यो[4] देवानां पूरसि तां त्वा प्रविशामि तां त्वा प्रपद्ये सह गृहैस्सह[5] प्रजया सह पशुभिस्सहर्त्विग्भिस्सह सदस्यैस्सह सोम्यैस्सह दक्षिणीयैस्सह यज्ञेन सह यज्ञपतिना ॥ इन्द्राग्नी परिधी मम वाता देव पुरा कृता[6] तंस्वेन्द्रप्रह[7] प्रपद्ये संगुप्तस्संगुप्तस्सपूरुषस्सह यन्मे ऽस्ति तेन ॥ अरिष्ट्या[8] अव्यथ्यै संवेशायोपवेशाय[9] गायत्र्यै छन्दसे ऽभिभुवे[10] स्वाहारिष्ट्या अव्यथ्यै संवेशायोपवेशाय[11] त्रिष्टुभे जगत्या अनुष्टुभे छन्दसे ऽभिभुवे[12] स्वाहा ॥ १० ॥
cf Kap S 48 8 (nur der Anfang) und 48 12, Maitr S 3 12, 11, TBr 3 10, 7

द्यौश्च त्वा पृथिवी च श्रीणीतामहश्च त्वा रात्री च श्रीणीतां वाक्[13] च त्वा मनश्च श्रीणीतामापश्च त्वौषधयश्च श्रीणन्त्वृक् च त्वा साम च श्रीणीतां स्तोमश्च त्वा यजुश्च श्रीणीतां बृहच्च[14] त्वा रथंतरं[15] च श्रीणीतां यज्ञश्च त्वा दक्षिणा च श्रीणीतां सूर्यश्च त्वा चन्द्रमाश्च श्रीणीतां दर्शश्च त्वा पूर्णमासश्च[16] श्रीणीतां ब्रह्म च त्वा क्षत्रं च श्रीणीतामर्कश्च त्वाश्वमेधश्च श्रीणीतां श्रीतस्त्वं श्रीतो ऽहमिन्दुरिन्दुनं वागीत्तस्य[17] त इन्द्र इन्द्रियावत इन्द्रपीतस्य सर्वगणस्सर्वगणस्योपहूत उपहूतस्य भक्षयामि ॥ ११ ॥ cf Kap S 48 11

---

[1] Diese beiden Worte fehlen in T4, daher der Accent von mir ergänzt cf oben त्विषे Kap S 48 8 स्वाहा अभिभवे Maitr 3 12, 11 स्वाहाभिभ्वे TBr 3, 10, 7 अभिभुवे [2] So der Accent in T4 Kap S 48 8 दिवापतये, TBr 3, 10 7 दिवां पतये [3] Accent corrigirt T4 स्यगृहीता, ebenso Ch, ohne Acc, W1 स्यगृहीतो Kap S 48 12 स्यगृहीत [4] So corr Ch याह्यो, Accent ergänzt da das Wort in T4 fehlt Kap S 48 12 याह्यो [5] Kap S 48, 12 पुरि [6] Auch Kap S 48 12 इन्द्राग्नी परिधी मम वाता देव पुरा कृता [7] Kap S 48 12 तपेंद्रप्र [8] अरिष्ट्या in T4 ohne Accent [9] Accent ergänzt, da संवेशायोपवेशाय in T4 fehlt. [10] Auch Kap S 48 12 भिभुवे [11] Von सवे॰ an bis zum Ende des Capitels in T4 weggebrochen daher der Accent ergänzt [12] Auch Kap S 48, 12 भिभुवे [13] Kap S 48 11 liest वाक् च त्वा मनश्च श्रीणीतां चक्षुश्च त्वा श्रोत्रं च श्रीणीतां प्राणश्च त्वा अन्नं च श्रीणीतां दक्षश्च त्वा बलं च श्रीणीतामाजश्च त्वा सहश्च श्रीणीतामृक् च त्वा सामश्च श्रीणीतां स्तोमश्च त्वा यजुश्च श्रीं etc [14] Ch बृहच्च [15] Accent corrigirt, T4 रथंतर [16] W1 मासश्च, Kap S 48, 11 पौर्णमासश्च [17] Kap

विश्वा अग्ने त्वया वयं धारा उदन्या[1] इव ।
अतिगाहेमहि द्विषः ॥[2]
यां देव्यष्टकास्यपसामपस्तमा[3] स्वपा असि ।
तस्यै त एना हविषा विधेम त्वं यज्ञे वरुणस्यावया असि ॥[4]
पुंल्कर्णाय[5] ॥
अनुमतेऽनुमन्यस्व[6] न इदं[7] यज्ञेपजं कृणुमहे तनूषु[8] ।
मह्यो तोकेषु तनुषु प्रजासु यज्ञोष्वोषधीष्वप्सु[9] ॥ ॥ १२ ॥
cf. Kap. S. 48, 12 (am Ende).

हिरण्यगर्भः ॥
तदित्पदं न विचिकेत विद्वान्यन्मृतः[10] पुनरप्येति जीवान् ।
त्रिवृद्भुवनं यद्रथवृज्जीवो गर्भो न मृतस्स्वाहा[11] ॥
आप्यायस्व सं ते पयांसि[12] ॥
आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरंशुभिः ।
भवा नस्सुश्रवस्तमस्सखा वृधे ॥[13] ॥ १३ ॥
cf. Kap. S. 48, 13.

S. 48, 11 liest मृतस्ये मतो यमिंदुरिदुमयागादुभे सोमाः समस्त्यितस्त तस्य त यंद्रविंद्रपीतस्य चेदिपायतः सर्वगणस्य सर्वगण उपहूतस्य सक्षयामि ॥

[1] So T4, desgl. W und Kap. S. 48, 12, ohne Accent, Ch उदन्यी [2] Der ganze Vers ist in Kap. S. 48, 12, ohne Accent. Vgl. RV 2, 7, 3. [3] W1 द्विष्यष्टकामदप॰ [4] Der Vers lautet Kap. S. 48, 12 या देव्यष्टका स्वपसामपस्तमा सप्रश्यसि । तस्यं तेन हविषा विधेम त्व यज्ञे वरुणस्यावयासि ॥ [5] Kap. S. 48, 12 पुत्कर्णाय कर्णयित्वाय । [6] Kap S. 48, 12 अनुमते अनुमन्यस्व [7] Accent corrigirt, T4 न इदं; W1 न इदं, Ch त इदं [8] Kap. S. 48, 12 कृणुम हि तनुषु [9] Kap. S. 48, 12 यज्ञोष्वन्वेष्टोषधीष्वप्सु । daraus ergiebt sich die metrisch bessere Lesung यज्ञोष्वन्येष्वोषधीष्वप्सु । [10] So corr. T4 यन्दृतः; ebenso Ch, ohne Accent, W1 यन्दृतः, über dem न्दृ ist aber न्दृ darüber geschrieben, offenbar als Correctur, W यहृतः; aber Kap. S. 48, 13 यं मतः, vgl. TBr. 3, 7, 10, [illegible] यन्मतः [11] So T4; desgl. W1, ohne Accent; Ch यद्रथरंज्जीवो गर्भो न मतस्स्वाहा; Kap. S. 48, 13 sehr verdorben तदद्भुवनं यद्रथरुज्जीवो गर्भो न मृतस्वाहा [12] Accent ergänzt, da die letzten 3 Worte in T4 abgebrochen sind. [13] Kap. S. 48, 11 आप्यायस्व सं ते पयांस्याप्यायस्व मदिंतम । स्वर्गं सधिस्थ्य । तपां त्वम्बे u. s. w. Damit sind wir schon in dem Text des folgenden Kāṭhaka-Capitels, das ebenfalls noch in Kap. S. 48, 13 enthalten ist.

अप्स्वृपे ॥
तंपो ऽप्स्वृपे अंन्तरौं[1] अमिंत्रान्तंपा शंसमंररुषः[2] पंरस्य ।
तंपो वसो चिकितानों अचित्तान्विं ते तिष्ठन्तामजंरा अयांसः[3] ॥
यों नस्संनुत्यो अभिदांसदग्ने यों अंन्तरो मित्रमहो अनुष्यांत्[4] ।
तंमजंरेभिर्वृषभिस्तंव स्वैस्तंपा[5] तपिष्ठ तंपसा[6] तंपस्वान् ॥
सं स्मा[7] कृणोतु केतुंमा नंक्तं[8] चिदूरं आं सतें[9] ।
पावकों यंद्वनस्पंतीन्प्रं स्मा मिनात्यजंरः[10] ॥
नहिं ते अग्ने तन्वः क्रूंरमानांश मंर्तः[11] ।
कपिंर्बभस्ति[12] तेंजनं स्वं जरांयु गौंरिव ॥
मेषं इव यंदुप च विं च चंर्वति[13] यंदप्सरदूरुंपरस्य[14] खांदति ।
शीर्ष्णा शिंरो वंक्षसा वंक्ष एजंयन्त्रैप्सुं बभस्ति[15] हंरितेभिरासंभिः[16] ॥
सुपर्णा वांचमक्रतोप द्यंव्याखरें कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः[17] ।
न्यूङ् नियन्त्युंपरस्य निष्कृतं पुरू रेंतो दधिरे सूर्यश्वितः[18] ॥　　॥ १४ ॥
cf. Kap. S. 48, 13.

---

[1] Accent corrigirt nach RV 3, 18, 2; T 4 स्वाने अन्तरौं　[2] Accent zum Theil ergänzt nach RV 3, 18, 2; in T 4 तपा शंस abgebrochen; Ch शंसाम॰　[3] अयासः in T 4 abgebrochen; Accent ergänzt nach RV 3, 18, 2.　[4] So T 4; desgl. Ch, ohne Accent; W 1 आनु॰, Kap. S. 48, 13 अनुस्या । scheint mehr zu RV 6, 5, 4 अनुष्यात् zu stimmen　[5] W भिस्तपस्वैस्तप; Kap. S. 48, 13 भिस्तपिस्वैस्तपा　[6] तपसा fehlt in Ch.　[7] Ch स्मा, aber T 4 स्मा; desgl. W 1, ohne Accent.　[8] So T 4, desgl. W 1; Ch नक्तं, Kap. S. 48, 13 नक्तं　[9] So der Vers auch in Kap. S. 48, 13, nur ohne Accent　[10] So corr.; Mss. मिना॰ Kap. S. 48, 13 प्र स्मा मिनात्यजरः ।; cf. RV 5, 7, 4; Âp. 14, 29, 3.　[11] Kap. S. 48, 13 तन्वः क्रूरमानश मर्त्यः ।; TÂr 6, 10, 1 तनुवे क्रूरं चकार मर्त्यः ।　[12] So T 4; desgl. W 1, ohne Accent; Ch कपि अभस्ति, Kap. S. 48, 13 कपिर्बभस्ति तेजनं पुनर्जरायु गौरिव　[13] Accent corrigirt; T 4 चर्वंति　[14] So T 4, desgl. Ch und W 1, ohne Accent, Böhtlingk (Brief vom 10. Sept. 1895) vermuthet स्तोकप॰ und möchte in अप्सरदू den Namen einer sonst unbekannten Pflanze sehen. Wegen der Unsicherheit der Sache habe ich den Text trotz des ansprechenden Gedankens nicht geändert. Kap. S. 48, 13 मेष इव वेगं च यदुप च वि चर्वयि यदप्सरदे: उपरस्य खदसि cf. AV 6, 49, 2; Âp. 14, 29, 3.　[15] So T 4 und W 1; Ch बभस्ति; Kap. S. 48, 13 बिभस्ति; cf. folgende Anm.　[16] Ch हरितेभि॰; Kap. S. 48, 13 शीर्ष्णा शिरो वक्षसा वक्ष एजयन्नेप्सु बिभस्ति हरितेभिरासभिः ।　[17] Ch द्यावाखरे कृष्णा इषिता अनर्तिषु; cf. übrigens RV 10, 94, 5　[18] W 1 सूर्यश्वितः; Kap. S. 48, 13 सूर्यभृतः

अग्निना तपो ऽन्वाभवत्सूर्येण[1] तेजो वायुना प्राणा इन्द्रेण देवा यमेन पितरस्सरस्वत्या मनुष्यास्सप्तदशेन स्तोमा वामदेव्येन सामानि गायत्र्या छन्दांसि मण्या[2] रूपाणि हिरण्येन वर्चांसि तिरश्चिराजिना सर्पा अजगरेणाप्स्व्याप्ययेनैन पतत्रिणो व्याघ्रेणारण्याः पशवस्सुपर्णेन वयांस्यश्वत्थेन वनस्पतय ओदनेनान्नानि यवेनौषधयो ऽश्वतृपरेणैकशफाः पशवो वृषभेण गावो वृष्णिनावयो[3] बस्तेनाजाश्चन्द्रमसा नक्षत्राणि ब्राह्मणेन वाचो[4] वाचा देवतास्स्त्रियां विराड् मांऽण्या पर्वतास्समुद्रेणापो ऽद्भिस्सत्यं सत्येनर्तमृतेन तपस्तपसा परमेष्ठी परमेष्ठिना मृत्युर्मृत्युना प्रजाः प्रजाभिस्संगरस्तनूभिः प्रजापतिस्तैर्देवैरन्वाभूतिरनु च भूयासमति च भूयासं ब्राह्मणानां श्रैष्ठ्यञ्च भूयासम् ॥ १५ ॥

cf TS 7, 3, 14

यस्य द्रोणकलशं उपदस्यति कलशमेव तस्योपवायन्तं प्राणो ऽनूपदस्यति[5] प्राणो हि सोमस्तदाहुः पयो ऽवनयेदित्यथो खल्वाहुरन्तर्हितमिव[6] वा एतद्यत्पयो[7] हिरण्यमेवापो ऽभ्यवनयेद्धिरण्यमभ्युन्नयेदमृतं वा आप आयुर्हिरण्यममृतादेवाध्यायुरात्मन्धत्ते[8] चत्वारो वरा देया ब्रह्मण उद्गात्रे होत्रे ऽध्वर्यव एते वै यज्ञस्येन्द्रास्तानेव[9] प्रीणाति सैव तत्र प्रायश्चित्तिर्यस्य चमसं उपदस्यति चमसमेव तस्योपवायन्तं प्राणो ऽनूपदस्यति[10] प्राणो हि सोमो यमध्वर्युरन्तमं ग्रहं गृह्णीयात्तस्य संपातमवनयेत्प्रायश्चित्त्यै[11] वै सोमो गृह्यते प्रायश्चि-

---

[1] पो ऽन्वाभवत् in T4 weggebrochen, daher der Accent ergaenzt, TS 7, 3, 14 तपो ऽन्वाभवत् Kap S 48 13 a E अग्निना तपसा न्वाभव सूर्येण तेजो वायुना प्राणा ॥ Mit diesen Worten schließt 48, 13 und weiter findet sich dort nichts was Kāth 35, 15 entspräche [2] W 1 मरया [3] Von वृष्णिना bis नक्षत्राणि in T4 weg gebrochen, daher Accent ergaenzt [4] Accent corrigirt, T4 वाचो [5] Kap S 48, 14 प्राणोनोपदस्यति vgl weiter unten [6] T4 तमिव doch ohne Accent, was einen Fehler noch wahrscheinlicher macht, Kap S 48, 14 तमिव [7] पयो in T4 ohne Accent, dieser daher ergaenzt [8] So corr in Anlehnung an Kap S 48, 14 Mss ध्यायुरात्म°, in T4 fehlt auch das ध्या, Kap S 48, 14 ममृतादेवाध्यायुरात्मन् धत्ते [9] Ch इन्द्रा° [10] Kap S 48, 14 प्राणोनोपदस्यति vgl oben [11] T4 सम्पातम°, Kap S 48, 14 सपातम°

त्यैवास्मै प्रायश्चित्तिं करोति सर्वमायुरेति[1] सैवं तत्र प्रायश्चित्तिर्यस्य[2] ग्रावापिशीर्येत[3] पशुभिर्व्यृध्यते पशवो हि ग्रावाणो द्युतानस्य[4] मारुतस्य ब्रह्मसाम्नेन स्तुवीरन्पशवो वै द्युतानो मारुतस्स्वेनैवैनं साम्ना संदधाति पशुमान्भवति सैवं तत्र प्रायश्चित्तिः प्रजापतये स्वाहेत्यभ्रष्टणीयानुपरवैष्वंवनयेत्प्राजापत्यो[5] वै सोमः प्रतिष्ठामेवैनं[6] गमयति सैवं तत्र प्रायश्चित्तिर्यस्य सोममभिदहेद्ब्रह्मानध्वर्युस्स्पाशयेत[7] स्तोत्राण्युन्नातानि शस्त्राणि होत्राय यथापूर्वं यज्ञेन चरेयुः पञ्च वरा देयाः पाङ्क्तो यज्ञो यज्ञमेवावरुन्द्धे ऽवभृथं[8] गत्वा पुनरुदेत्य पुरा[9] द्वादश्याः पुनर्दीक्षेत यद्द्वादशीमतिनयेदन्तर्धीयेत[10] तत्र तां दक्षिणां दद्याद्याः[11] पूर्वस्मिन्दास्यन्भवति सैवं तत्र प्रायश्चित्तिः ॥ १६ ॥ cf Kap S 48, 14

सर्वान्वा एषो ऽग्नौ कामान्प्रवेशयते यो ऽग्निमन्वाधाय व्रतमुपैति[12] स यदनिष्ट्वा प्रयायादकामप्रीता एनं कामा नानु प्रयायुरतेजा[13] अवीर्यस्स्यात्स प्रयास्यञ्जुहुयात् ॥

तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम[14] विश्वास्सुक्षितयः पृथक् ।
अग्ने कामाय येमिरे ॥

इति कामानेवास्मिन्दधाति कामप्रीता एनं कामा अनु प्रयान्ति तेजस्वी वीर्यावान्भवति संततिर्वा एषा यज्ञस्य यो ऽग्निमन्वाधाय व्रतमुपैति स यदनिष्ट उद्वायाद्विच्छित्तिरेवास्य[15] सा[16] प्राञ्चमुद्धृत्य[17] म-

---

[1] Kap S 48, 14 fugt hier ein पशुमान्भवति [2] W 1 त्ति ॥ यस्य ebenso auch Kap S 48, 14 [3] Kap S 48, 14 ग्रावावशीर्येत [4] W 1 द्युतान मा॰ Kap S 48, 14 द्युतानस्य मा॰ [5] त्यभ्रष्टणीयानुपरवे fehlt in T4, der Accent daher ergänzt [6] Ch प्रतिष्ठा प्रतिष्ठामे॰ [7] T4 ब्रह्मान, Kap S 48, 14 द्वाह्मानध्वर्युं पायेयेत [8] Accent in ऽवभृथं ergänzt Kap. S 48, 14 ऽवभृथ [9] W 1 पुरा [10] दन्तर्धीयेत fehlt in T4, Accent daher ergänzt [11] So T4 desgl W 1, ohne Accent, Ch ता दक्षिणा दक्षिणाद्या, Kap S 48, 14 ता दक्षिणा दद्या द्यो पु॰ [12] न्वाधाय व्रतमुपैति in T4 abgebrochen daher Accent ergänzt. [13] W 1 कामानुप्र॰ Kap S 48, 15 कामानुप्रयानु॰ aber cf TBr 3, 7, 1, 1 [14] Ch ऽङ्गिरस्तम, cf RV 8, 43 18 [15] Ch पैति स्य यदनिष्ट उद्वायाद्विच्छित्तिरयास्य, Kap S 48, 15 स यद ऽ्रो ध्यायाद्विच्छित्तिरे॰ यास्य cf TBr 3, 7, 1 2 स यदुद्वायति [16] Ch स, Kap S 48, 15 सा [17] मुद्धृत्य in T4 abgebrochen, Accent ergänzt

नसोपतिष्ठेत मन इव वै प्रजापतिः प्राजापत्यो यज्ञो यज्ञमेव संतनोति[1] भूरिति व्याहरेद्भूतो वै प्रजापतिर्भूतिमेवोपैत्यायुषा[2] वा एष वीर्येण व्यृध्यते यस्याहिताग्नेरग्निरपक्षायति[3] स[4] यावच्छम्यया[5] पराविध्येद्यदि[6] तावदपक्षायेत्[7] संभरेत् ॥

इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन[8] ज्योतिषा संविशस्व ।
संवेशनस्तन्वे[9] चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे ॥

इति ब्रह्मणैवैनं संभरति[10] सैव तत्र प्रायश्चित्तिर्यदि परस्तरामपक्षायेदनुप्रयाय[11] वसेत्सैव तत्र प्रायश्चित्तिरोषधीर्वा एतस्य पयः पशून्प्रविशति यस्य हविषे ऽपाकृता वत्सा धयन्ति[12] वायव्यां यवागूं[13] निर्वपेद्वायुर्वै पयसः प्रदाता तमेव भागधेयेनोपधावति सो ऽस्मै पयः प्रयच्छत्यथोत्तरस्मै हविषे वत्सानपावर्तयेत्सैव[14] तत्र प्रायश्चित्तिः ॥ १७ ॥ cf Kap S 48, 15, TBr 3, 7, 1, 1—6

अर्धं[15] वा एतस्य यज्ञस्य मीयते यस्य सायं दुग्धं हविरार्तिमार्छेत्[16] इन्द्राय व्रीहीन्निरुप्योपवसेत्पयो[16] वा ओषधयः पय एवारभ्योपव-

---

[1] यज्ञमेव संतनोति in T4 abgebrochen, Accent ergänzt [2] Von मेवोपैत्या° bis स याव (incl) in T4 weggebrochen daher Accent ergänzt [3] Kap S 48, 15 पक्षायति° [4] स fehlt in Ch, dafür scheint nachträglich च eingeschaltet [5] Ch यावच्छम्यया [6] Ch विध्यद्यदि T4 विध्यद्यदेताव° Kap S 48 15 विध्येद्यदि [7] Ch पक्षायेते W1 पक्षायत [8] Der Vers bis hierher in T4 abgebrochen Accent ergänzt nach RV 10 56 1 [9] Am nächsten stimmt TBr 3 7, 1 4 संवेशनस्तनुवे, Kap S 48 15 संवेशन्यन्ने त चारुरेधि stimmt eher zu RV 10 56 1 संवेशने तन्वश्चारुरेधि [10] Kap 48 15 संहरति statt संभरति [11] W1 क्षायेदनुप्रयाय [12] Kap S 48 15 धयन्ति TBr 3, 7, 1, 4 धयन्ति [13] Von यवागू bis पे in T4 abgebrochen, daher Accent ergänzt [14] So corr mit Caland, T4 वत्सानुपावर्तयेत् desgl Ch, ohne Accent, ebenso Kap S 48, 15, W1 नुपावर्तयेत्°, TBr 3, 7, 1, 6 वत्सानपाकुर्यात्, vgl das folgende Capitel an mehreren Stellen obwohl die Lesart नुपावर्तयेत् in der Kap S consequent durchgeführt ist, in Kāth stets zum mindesten auch vorliegt, und obwohl man eher von ihr zu नपावर्तयेत् gelangt, als umgekehrt, habe ich doch aus sachlichen Gründen Calands Besserung durchgeführt [15] Der Anfang des Capitels bis यज्ञ fehlt in T4 daher Accent ergänzt, übrigens cf das Ende des Capitels [16] निरुप्योपवसेत् fehlt in T4, Accent ergänzt

सति यन्मातस्स्याश्च्छातं कुर्युरैन्द्रं इतरः पुरोडाशस्स्यात्पयो वा ओषधयः पयसैवास्मै[1] पयः[2] प्रदापयत्यथोत्तरस्मै हविषे वत्सानपावर्तयेत्सैव[3] तत्र प्रायश्चित्तिरुभयान्वा एषः देवान्भागधेयेन व्यर्धयति यो यजमानस्य सायं च प्रातश्च गृहमागच्छन्ति यस्य सायं प्रातर्दुग्धं[4] हविरार्तिमार्छत्योदनं पञ्चशरावं निर्वपेदग्निं देवतानां[5] प्रथमं[6] यजेदग्निमुखा एव देवताः प्रीणात्यग्निं वा अम्बन्या देवता इन्द्रमन्यास्ता[7] एवोभयीः प्रीणात्यथोत्तरस्मै हविषे वत्सानपावर्तयेत्सैव[8] तत्र प्रायश्चित्तिर्यत्कीटावपन्नेन[9] जुहुयादप्रजा[10] अपशुर्यजमानस्स्याद्यदनायतने[11] निनयेदनायतनस्स्यान्मध्यमेन पर्णेन द्यावापृथिव्ययर्वान्तःपरिधि निनयेद् द्यावापृथिवी वै यज्ञस्य प्रतिष्ठा प्रतिष्ठामेवैनं गमयति सैव तत्र प्रायश्चित्तिर्यत्प्रयाजेष्वनिष्टेषु प्राङ्ङङ्गारस्स्कन्देदध्वर्यवे च यजमानाय चार्तिस्स्याद्यद्दक्षिणा ब्रह्मणे च यजमानाय चार्तिस्स्याद्यत्प्रत्यङ् होत्रे च पत्न्यै चार्तिस्स्याद्यदुदङ्ङग्नीधे च यजमानस्य च पशुभ्यो ऽर्ति स्यात्तं प्रहरेत् ॥

सहस्रशृङ्गो वृषभो जातवेदास्स्तोमपृष्ठो घृतवान्सुप्रतीकः ।
मा मा हासीन्नाथितो नेत्त्वा[12] जहानि सहस्रपोषस्सं गोपोषं च यच्छ ॥

इति ब्रह्मणैवैनं प्रहरति सैव तत्र प्रायश्चित्तिरेषे वा एतस्य यज्ञस्य

---

[1] Ch पय पयसैवास्मै (Dittographie) [2] Dies पयः fehlt in W 1 [3] So T 4 वत्सानपावर्तयेत्, desgl W 1 ohne Accent, TBr 3 7, 1, 7 वत्सानपाकुर्यात् Ch वत्सानुपाº, desgl Kap S 48 16, vgl weiter unten, sowie das Ende des vorigen Capitels [4] Ch प्रातर्मुग्धं in T 4 प्रातर्दु abgebrochen, W 1 प्रातर्दुग्ध, desgl Kap S 48, 16 [5] So corr Mss निर्देवतानां, Kap S 48 16 निर्वपेदग्नि देवताना प्रथमं निर्वपेदº, TBr 3 7 1, 8 अग्नि देवताना प्रथम यजेत् [6] Von प्रथमं bis एव in T 4 abgebrochen, Accent ergänzt [7] Von अम्बन्या bis उत्तरस्मै in T 4 abgebrochen Accent ergänzt [8] So corr mit Caland, Ch und Kap S 48 16 वत्सानुपावर्तयेत्, T 4 वत्सानुपावर्तº oder नपावर्तº W 1 नुपावर्तº [9] W 1 ति ॥ यत्कीटावपन्नेन [10] So T 4 und W 1 ohne Accent, Ch जुहुयादप्रजा दप्रजा in T 4 ohne Accent, der Accent nach dem folgendem Capitel ergänzt [11] T 4 दनायतने [12] So Ch, ohne Acc T 4 नेत्त्व, W 1 नेत्वा, Kap S 48 16 नेत्त्वा जहामि vgl AV 13, 1 12, TBr 3 7, 2, 7

मीयते[1] यस्य पत्न्यै ऽहन्पत्न्यनालम्भुका[2] भवति तामपरुध्य यजेत संवेशेनैव यज्ञेन यजते[3] तामिष्ट्वोपह्वयेत[4] ॥
सा त्वमस्यमो ऽहममो ऽहमस्मि सा त्वम्[5] ।
तां एहि संभावहै पुंसे पुत्राय कर्तवे[6] ।
रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥
इत्यर्ध एवैनामाभजति[7] सैव तत्र प्रायश्चित्तिः ॥ १८ ॥
cf Kap S. 48, 16, TBr. 3, 7, 1, 6—9, 3, 7, 2, 6 und 7.

यदववृष्टेन[8] जुहुयादपरूपमस्यात्मञ्जायेत[9] यत्प्रत्येयात्पापीयान्स्याद्यन्न[10] जुहुयादार्तिमार्छेत् ॥
मित्रो जनान्यातयति प्रजानन्मित्रो दाधार[11] पृथिवीमुत द्याम् ।
मित्रः कृष्टीरनिमिषाभिचष्टे मित्राय[12] हव्यं घृतवद्विधेम[13] ॥
इति मैत्र्यर्चा समिधमाधाय होतव्यं मित्रो वै यज्ञस्य शान्तिर्मित्रेणैवैनच्छमयति[14] तद्धुत्वापान्यां[15] दुग्ध्वा पुनर्होतव्यं सैव तत्र प्रायश्चित्तिर्यत्कीटावपन्नेन जुहुयादप्रजा[16] अपशुर्यजमानस्स्याद्यन्न जुहुया-

---

[1] Accent corrigirt, T4 मीयते [2] Kap S 48, 16 यस्य पत्न्ये ऽहं पत्न्यनालम्भुका भवति, TBr 3, 7, 1, 9 यस्य पत्न्ये ऽहन् पत्न्यनालम्भुका भवति [3] So T4 und W1, Ch यजते, Kap S 48, 16 यजते, cf TBr 3, 7 1, 9 [4] So corr mit Caland; Ch पपूपेत Kap S 48, 16 ष्ट्वोपह्वयते, TBr 3, 7, 1, 9 ष्ट्वोपह्वयते [5] Kap S 48, 16 द्यावा पृथिवी त्व मगुमामाऽममो ऽहमस्मि सा त्व सा त्वमसि मोह, TBr 3, 7 1, 9 अमूहमस्मि सा त्वम्, cf AV 14 2 71 [6] Kap S 48, 16 तावेहि संरभावहै पुंसे पुत्राय कर्तवे इत्यर्ध etc (der dritte Halbvers, resp die Worte रायस्पोषाय u s w fehlen in Kap S) [7] So corr Mss र्धमेनाम॰, aber Kap S 48, 16 इत्यर्धं एवैना तदाभजति, TBr 3, 7, 1, 9 ऊर्ध्वं एवैनामुपह्वयते [8] So T4, desgl Ch, ohne Accent, ebenso TBr 3, 7, 2, 3, Kap S 48, 17 यदवपृष्टेन; W1 यदेवपृष्टेन [9] Ch स्यात्मजायेत [10] Ch यत्प्रत्य यात्पापीयस्स्या॰, T4 यत्प्रत्ययात्पापीया॰, W1 यत्येयात्पापीयात्स्या॰ Kap S 48, 17 यत्प्रत्येया स्यापीयास्स्या॰ [11] Ch प्रजानमित्रो दधार, Kap S 48, 17 = RV 3, 59, 1 [12] Von मित्राय bis मायाय हो in T4 abgebrochen, daher Accent ergänzt [13] Kap S. 48, 17 घृतवज्जुहोत = RV 3, 59, 1 [14] Ch मित्रेनैवनच्छमयति, W1 मित्रेणैवेनच्छमायति, besser Kap S 48, 17 मित्रेणैवैन शमयति, aber TBr 3, 7, 2, 4 मित्रेणैवैनत्कल्पयति [15] So corr. Mss तद्धुत्वापान्यांन्दुग्ध्वा, resp ohne Accent, aber Kap 48, 17 तद्धुत्वा- पान्य दुग्ध्वा, TBr 3, 7, 2, 4 तद्धुत्वा । अन्यां दुग्ध्वा पुनर्होतव्यम् । [16] Von प्रजा bis zum folgenden स्या in T4 abgebrochen, Accent ergänzt.

दात्तिमांछंप्राजापत्ययर्चा वल्मीकवपायामवनयेत्प्राजापत्यो[1] वै वल्मीको यज्ञः प्रजापतिर्यज्ञ एवं यज्ञं प्रतिष्ठापयति[2] तद्धुत्वायान्यां दुग्ध्वा[3] पुनर्होतव्यं सैव तत्र प्रायश्चित्तिः ॥ यदि पूर्वस्यामाहुत्यां हुतायामुत्तराहुतिस्स्कन्देद् द्विपाद्भिः पशुभिर्यजमानो व्यृध्येत[4] यदभिजुहुयाच्चतुष्पाद्भिः पशुभिर्यजमानो व्यृध्यते[5] ॥

यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि ।
तत्र हव्यानि गामय[6] ॥

इति वानस्पत्ययर्चा समिधमाधाय होतव्यं वनस्पतिनैवास्यातां चानातां चाहुती[7] विदाधार तद्धुत्वायान्यां दुग्ध्वा[8] पुनर्होतव्यं सैव तत्र प्रायश्चित्तिः ॥ १९ ॥ cf. Kap. S. 48, 17; TBr. 3, 7, 2.

देवाश्च वा असुराश्चास्मिंल्लोक आसन्[9] प्रजापतिरकामयत परासुराननुद्य प्रजास्सृजेयेति स एतानि चातुर्मास्यान्यपश्यत्[10] चातुर्मास्यैरेवासुरान्प्राणुदत[11] चातुर्मास्यैः[12] प्रजा असृजत य एवं विद्वांश्चातुर्मास्यैर्यजते[13] परा भ्रातृव्यं नुदते प्र प्रजया प्र पशुभिर्जायते ऽग्निष्टोमाद्वैश्वदेवं[14] यज्ञक्रतुं निर्माय प्रजापतिः प्रजा असृजतोक्थ्याद्वरुणप्र-

---

[1] Von प्राजापत्य bis zum folgenden प्रजापति in T4 abgebrochen; Accent ergänzt. [2] Von यति bis तत्र in T4 abgebrochen; Accent ergänzt. [3] So corr. Mss. तद्धुत्वायान्यान्दुग्ध्वा, resp. ohne Accent; vgl. oben und unten das Gleiche; Kap. S. 48, 17 तद्धुत्वा ह्यान्यां दुग्ध्वा; TBr. 3, 7, 2, 2 und 3 तद्धुत्वा । अन्यां दुग्ध्वा पुन° [4] T4 व्यृध्येत, desgl. Ch, ohne Acc.; W1 व्यृध्येत, Kap. S. 48, 17 विऋध्येत; TBr. 3, 7, 2, 4 व्यृध्येत [5] W1 व्यृध्येत, Kap. S. 48, 17 विऋध्येत; TBr 3, 7, 2, 5 व्यृध्येत [6] So Ch; T4 und W1 गमय; cf. RV 5, 5, 10; ebenso Kap. S. 48, 17 गामय [7] So T4; Ch चानाताश्चाहुती वि°; W1 चानातांश्चाहुतीर्वि°; Kap. S. 48, 17 स्याता चानाता चाहुती विदधार; TBr. 3, 7, 2, 5 यदस्यांता चानाता चाहुती विदाधार [8] So corrigirt; Mss. तद्धुत्वायान्यां न्दुग्ध्वा; resp. ohne Accent; in Ch fehlt noch die Sylbe या; aber Kap. S. 48, 17 तद्धुत्वायान्यां दुग्ध्वा; TBr. 3, 7, 2, 5 — Corr. [9] Von स bis नुदेय in T4 abgebrochen; Accent ergänzt [10] W1 चातुर्मास्यान्यपश्य°; Ch चतुर्मास्यान्यपश्य°; Kap. S. 48, 17 चातुर्मास्यान्यपश्यत्तैर्वा°; cf. Maitr. S. 1, 10, 5 चातुर्मास्यान्यपश्यच्चा° [11] Ch चतु° प्रणुदत [12] Ch चतु° [13] Ch चतु° [14] ग्निष्टोमा bis क्रतु in T4 abgebrochen; Accent ergänzt.

घासान्यज्ञक्रतुं[1] निर्माय प्रजा वरुणेनाग्राहयदतिरात्रांत्साकमेधान्यज्ञक्रतुं निर्मायेन्द्रो वृत्रमहन्वैश्वदेवेन वै सो[2] ऽसुरान्प्राणुदत वैश्वदेवेन प्रजा असृजत ॥ सृष्टा वा अन्याः प्रजा आसन्नसृष्टा अन्या अथ प्रजापतिरकामयत प्रजास्सृजेयेति[3] संवत्सरो वै यज्ञो यज्ञः[4] प्रजापतिस्स एते आत्मनो ऽधि पयसी निरमिमीतोधन्यं च वत्सं[5] चाथैताभ्यो[6] देवताभ्य एतानि हवींषि भागं[7] निरवपत्ताः[8] प्रजा असृजत ताभ्यो वै ताः प्रजाः प्राजायन्ततैव एतानि पञ्च हवींषि पञ्च[9] ह्यृतवस्तत[10] एवं प्रजायते ऽग्निरेव प्रावापयत्सोमो रेतो ऽदधान्मिथुनं वा अग्निश्च सोमश्च सविता प्रासुवत्संवत्सरो[11] वै सविता[12] द्वादश मासास्संवत्सरस्तस्माद् द्वादशकपालो ऽग्नो[13] वैश्वदेवत्वायैवं द्वादशकपाल उपांशु यजत्यनिरुक्तो हि संवत्सरस्सरस्वत्येवं सृष्टासु[14] वाचमदधात्पूषणं प्रतिष्ठामभ्यसृजत[15] ॥ वाग्वै सरस्वती पशवः पूषा मिथुनं वाक् च पशवश्च मध्यतो वै प्रजा विसृज्यन्ते ऽन्ततो मिथुनाद्विषूचीः[16] प्रजायन्ते तदेतत्प्रजापतेरेवाधि मध्यतः प्रजा विसृज्यन्ते ऽथादो ऽन्ततो[17] मिथुनादुभयतो विषूचीः[18] प्रजायन्ते वार्त्रघ्नानि वा एतानि हवींष्यग्निना

---

[1] W 1 wohl यज्ञ° Ch क्रतुनि° [2] von सो bis प्रजा in T 4 abgebrochen, Accent ergänzt [3] Von प्रजा bis यज्ञ in W 1 nicht vorhanden [4] Von यज्ञ bis एते in T 4 abgebrochen, Accent ergänzt [5] So wohl in T 4, W 1 वत्सश्चा°, Ch वत्स, Kap S 48, 16 वत्स, vgl Maitr S 1, 10 5 वत्स u Anm, die Conjectur वत्सं hat nach Obigem nur eine sehr schwache Stütze an Ch in Kath, gar keine in Kap S und Maitr S [6] ताभ्यो bis एतानि in T 4 abgebrochen, Accent ergänzt [7] W 1 भागंनि° [8] Ch यमत्ते [9] Ch पञ्चा [10] So T 4, desgl W 1, ohne Accent, Ch स्तुता [11] Von प्रासुवत् bis सविता in W zwei Mal [12] वै सविता in T 4 abgebrochen, Accent ergänzt [13] यो bis द्वादश in T 4 abgebrochen, Accent ergänzt, für यो hat Kap S 18, 18 ज्योति(?), W 1 liest कपाला उपांशु यजत्य°, hat also eine Lücke im Text [14] Maitr S 1, 10, 5 सृष्टासु, auch Kap S 48 16 सृष्टासु [15] W 1 पूषणमतिस्ठामभ्यसृज्यन्त [16] Kap S 48 16 द्विष्टरो [17] W 1 यो दो त्ततो [18] Kap S 48 18 विष्टरो

वां ऽनीकेनेन्द्रो वृत्रमहन्त्सोमेन[1] राज्ञा सवित्रा प्रसूतस्सरस्वत्या[2] चैष्यां[3] पूषा वीर्यमन्वतिष्ठत विजितिरेवैतानि हवींषि ॥ २० ॥
cf. Kap. S. 48, 18, Maitr. S. 1, 10, 5

इति श्रीमद्यजुषि[4] काठके चरकशाखायामोरिमिकायां प्रायश्चित्तिर्नाम पञ्चत्रिंशं[5] स्थानकं संपूर्णम्[6] ॥

इन्द्रस्य[7] वै वृत्रं जघ्नुष इन्द्रियं वीर्यमपाक्रामत्तदिदं सर्वमनुप्राविशदप ओषधीर्वनस्पतींस्तेन देवा अश्राम्यंस्त इदं समनयन्यत्सान्नाय्यं मिथुनं वै दधि च पयश्च यत्संसृष्टं मण्डमिव[8] मस्त्विव परीव दृश्ये गर्भ एव स तपसो वै प्रजाः प्रजायन्ते तपस्त्वमेतद्गच्छति यच्छृतत्वं[9] गच्छति तत एव प्रजायते यद्वैश्वदेव्यामिक्षया[10] प्रजा असृजत तस्मादिमा वैश्वदेवीः प्रजास्तोका वै विश्वे देवास्तानेवैतद्यजत्यमुतःप्रदानाद्धि प्रजा उपजीवन्ति ॥ योनिर्वा एष प्रजानां तं मरुतो ऽभ्यकामयन्त ते ऽँहोगृहीता[11] असृज्यन्त यत्स्वतवद्भ्यस्स्वतवायैव निष्कृत्यै

---

[1] W.: महान्त्सो॰ [2] Von सरस्वत्या bis चैष्यां in T4 abgebrochen, daher Accent ergänzt. [3] Vgl. Maitr. S. 1, 10, 5 चेत्र्या (var. चैत्र्या) Kap. S. 48, 16 सरस्वत्या धाता पूषा वी॰ [4] So corr. gemäß den andern Unterschriften, Ch श्रीयजुर्वि [5] So corr., Ch पञ्चत्रिंशति [6] So die Unterschrift des Capitels in Ch. [7] Dieses und die folgenden Capitel wieder nur in Ch vorhanden. [8] So corr. Ch मण्डमाइ, cf. Maitr. 1, 10, 6 a. A., wo zu corrigiren ist. [9] So corr. Ch यच्छृतस्वं Maitr. S. 1, 10, 6 यच्छृतस्य [10] So corr. Ch ईश्यामिक्षया [11] Ch setzt eigentlich das ˜ über den e-Strich des ते; das ist correct, wenn kein Zeichen für die Elision des a gesetzt wird, wie das in Ch vorliegt; setzt man dieses aber, so scheint es mir unmöglich, das ˜ dem vorausgehen zu lassen.

पशवो वै मरुतः प्रजननायैव पशूनां सप्तकपालो भवति सप्त हि मरुतो निरवत्त्या एव मारुतो ऽथो ग्राम्यमेवैतेनान्नाद्यमवरुन्द्धे ता वैश्वदेवेन सृष्टा विषूचीर्व्युदायंस्ता[1] द्यावापृथिव्येन पर्यगृह्णात्प्रजानामेवैष सृष्टानां परिगृहीत्यै यदेककपालस्तेन प्राजापत्यः प्रजापतिमेवैतद्देवता अभि प्रतितिष्ठति यजमानो वा एककपाल आहवनीयस्स्वर्गो लोकस्सर्वहुतं जुहोति हविर्भूतमेवैनं स्वर्गं लोकं गमयत्यात्मा वा एककपालः पशवो घृतं यद्घृतेनाभिपूरयति पशुभिरेवैनं समर्धयति यदाभिपूरयेद्भुञ्जन्त एनं पशव उपतिष्ठेरन्नधरं ह्येनं पशुभ्यः करोत्याविःपृष्ठः[2] कार्य उत्तरमेवैनं पशुभ्यः करोति भुञ्जन्त एनं पशव उपतिष्ठन्ते तस्मान्न सूक्ष्ममभ्येव पूरयेन्न हि पशवो न भुञ्जन्ति बर्हिषदं करोति प्रतिष्ठित्यै यजमानं वै हूर्छन्तं प्रजा अनुहूर्छन्ति यजमानं प्रतितिष्ठन्तमनु प्रतितिष्ठन्त्यृजुः प्रतिष्ठितो होतव्यो यजमानस्य प्रतिष्ठित्यै ॥ १ ॥ cf. Mâitr. S 1, 10, 5 am Ende bis 1, 10, 7 in der Mitte.

त्रेधासंनद्धस्तर्हि भवति त्रेधासंनद्ध[3] इध्मस्त्रेधाविहितानि हि संवत्सरेण चातुर्मास्यानि वसन्ता यजेत प्रजननाय प्रवणे यजेत प्रजननाय प्रस्वो भवन्ति प्र मा जनयानीति[4] नोत्तरवेदिमुपवपन्ति प्रजननायाग्निं मन्थन्त्यग्निं वै पशवो ऽनुप्रजायन्ते प्रजननायाथो वृषाणमेवैतं यजमानाय जनयति पशवो वै पृषदाज्यं नानारूपाः[5] पशवस्तस्मान्नानारूपमाग्नेयं घृतमैन्द्रं दध्यैन्द्राग्नं[6] पृषदाज्यं देवतया प्राणापानौ वा इन्द्राग्नी मिथुनं प्राणापानौ मिथुनयोनयः प्रजास्तस्मादेव मिथुनात्प्रजायते ॥ यदि वसन्ता यजेत हिरण्यस्तृणीयात्सकृदभिघारयेदोषधीरेव प्रतिष्ठापयति यदि प्रावृषि यजेत सकृदुपस्तृणी-

---

[1] So corr. Ch व्यदा°; cf. Mâitr. S 1, 10, 7 a. A. [2] So corr. im Anschluß an Mâitr. S 1, 10, 7 (p 147, Z 4), Ch विःमृष्टः [3] So corr. Ch स्त्रेधासद्ध [4] So corr. Ch जनमायानिति; Mâitr. S. 1, 10, 7 (p. 147, Z. 15) = Corr. [5] So corr. Ch स्पत्रानारूपः [6] So corr. Ch दध्यैंद्राद्गृग°, Mâitr. S. 1, 10, 7 (p. 147, Z. 16) = Corr.

याहुरभिघारयेद्दृष्ट्यैव[1] पशूनभिजिघर्ति[2] प्राणेभ्यो वै प्रजाः प्रजायन्ते प्राणा एतानि नव हवींषि नव प्राणा आत्मा देवता तत एव प्रजायते नव प्रयाजा नवानुयाजा द्वा आज्यभागा अष्टौ हवींष्यग्नये समवद्यति वाजिनो यजति तत्त्रिंशत्त्रिंशदक्षरा विराडन्नं विराड् विराज्येवान्नाद्ये प्रतितिष्ठति त्रिंशदक्षरा वै विराड् विराजो[3] योनेः प्रजाः प्रजायन्ते विराज एवैना योनेः[4] प्रजनयति ॥ त्रिंशत्त्रिंशद्वै रात्रयो मासो यो वै मासस्स संवत्सरस्संवत्सरः प्रजापतिस्तदेतत्प्रजापतेश्चैव विराजश्चाधि मिथुनात्प्रजायत एकैकया वा आहुत्या द्वादश द्वादश रात्रीरयुवन्त ता यावतीस्संवत्सरस्य रात्रयस्तावतीस्संख्याने संवत्सरमेव भ्रातृव्याद्युवते वैश्वदेवेन वै ते चतुरो मासो ऽयुवन्त वरुणप्रघासैः परांश्चतुरस्साकमेधैः[5] परांश्चतुरस्तानेव[6] भ्रातृव्याद्युवते यच्चतुरश्चतुरो[7] मासो ऽयुवन्त तच्चातुर्मास्यानां चातुर्मास्यत्वम् ॥ २ ॥

cf. Maitr S 1, 10, 7 in der Mitte bis 1, 10, [illegible] in der Mitte.

वैश्वदेवेन यजते प्रजाकामो वा पशुकामो वा न वरुणप्रघासैर्न साकमेधैस्सर्वो वै पुरुषस्साहस्रो[8] जायते यावत्तरसं[9] तं गच्छति प्रजननमेतद्धविर्यद्वैश्वदेवं प्रजननमेव यजते स्वां मात्रां गच्छानीति यदा सहस्रं पशूंगच्छेदथ वरुणप्रघासैर्यजेत यदेव तत्सहस्रमगंस्तस्यांहो ऽवयजत[10] ऋतुयाजी वा अन्यश्चातुर्मास्ययाज्यन्यो यो वसन्तो ऽभूत्प्रावृडभूच्छरदभूदिति यजते स ऋतुयाजी यस्त्रयोदशं मासं संपादयति स त्रयोदशं मासमभियजते स चातुर्मास्ययाजी त्रीनृतूनिष्ट्वा चतुर्थमुत्सृजेद्द्वौ मता ऋतू इष्ट्वा तृतीयमुत्सृजेद्द्वे[11] वै त्रयस्संवत्सरास्तेषां प-

[1] So corr. Ch घारये दृष्टैव [2] So corr Ch जिघंति [3] Co corr. Ch विराजा [4] So corr. Ch योनिः; cf Mâitr S 1, 10, 8 (p. 149, Z 7) [5] So corr. Ch परां च°; cf. Mâitr S. 1, 10, 8 (p. 148, Z. 12 und 13) [6] So corr. Ch परां च [7] So corr Ch यच्च [8] So corr Ch सहस्रो, Mâitr. S. 1, 10, 8 (p 148, Z. 21) — Corr. [9] So corr Ch यावत्सरसं; vgl. Mâitr. S. 1, 10, 8 (p 148, Z. 21) [10] So corr Ch यजेत [11] So corr Ch द्वो, Mâitr. S. 1, 10, 8 (p 148, Z 17) — Oorr

ट्टिंशत्पूर्णमासा यौ द्वौ तयोश्चतुर्विंशतिर्ये षड्विंशत्यधि ते चतुर्विंशतिमुपयन्त्येष वाव स त्रयोदशो मासस्तमेवैतत्संपादयति तमभियजते ॥ यद्बर्हिः प्रयाजेषु यजत्योषधीस्तद्यजति[1] यद्बर्हिरनुयाजेषु फलं तद्यजति यद्बर्हिर्वारितीनां यदेव फलादधि प्रजायते तत्तद्यजति यद्दुरो यजत्युपस्थं तद्यजति यदुषासानक्ता व्युष्टिं चैव[2] निम्रुक्तिं च तद्यजति यज्जोष्ट्री यदेव जातं यज्जनिष्यमाणं तद्यजति यदूर्जाहुती यदेवाश्नि[3] च पिबति च तत्तद्यजति[4] यद्दैव्या होतारेमे वै दैव्या होतारेम एव तद्यजति यत्तिस्रो देवीर्वाग्वै तिस्रो देवीर्वाचमेव तद्यजति छन्दांसि वै वाक्छन्दांस्येव तद्यजति नराशँसं यजति तनूनपाद्वै यज्ञः प्रसृतो नराशँसोऽप्रसृतः प्रसृतो वा एतर्हि यज्ञस्तस्मान्नराशँसमनुयाजेषु यजति त्वष्टारं यजति स हि रूपाणि विकरोति वनस्पतिं यजत्यूर्ग्वै सोमो वनस्पतिस्सौमीरिमाः प्रजाः प्रजास्वेवोर्जं दधाति ॥ ३ ॥

cf. Mâitr. S 1, 10, 8 in der Mitte bis 1, 10, 9 in der Mitte.

वाजिनो यजति पशवो वै वाजिनस्तानेव तद्यजति न वा एष[5] सुयज्ञ इव सँस्थिते हि यज्ञे[6] प्रहृतेषु परिधिषु जुहोति यदनवानं[7] होता यजति तेन यज्ञः क्रियतेऽनुयजत्यग्निस्समिद्धिरग्निः प्रतिष्ठितिस्समिद्ध्या एव प्रतिष्ठित्यै पशवो वै वाजिनो यत्सँस्थापयेत्तान्सँस्थापयेदसँस्थिता ह्येते सदादि प्रजायन्ते बर्हिरनुनिषिञ्चन्गृह्णात्यृषभेष्वेव रेतो दधाति प्रजा वै बर्ही रेतो वाजिनं प्रजास्वेव रेतो दधात्यूर्ध्वज्ञुरासीनो यजत्यूर्ध्वज्ञुर्हि पशुः पशौ रेतो दधाति समुपहूय भक्षयन्ति सोमपीथ इव ह्येष सर्वे ऋत्विजः प्राश्नन्ति वाजिनो मे यज्ञं वहानित्यात्मना प्राश्नीयादात्मन्नेव वाजं धत्ते ॥ ४ ॥

cf Mâitr. S 1, 10, 9 (zweite Hälfte)

---

[1] So corr. Ch यत्योष° [2] So corr. Ch व्युष्टि श्चेवय oder श्चेवय (undeutlich) [3] So corr. Ch यार्ति [4] Erste Hand nur तद्यजति [5] So corr. Ch एव, cf Mâitr. S. 1, 10, 9 (p 149, Z 16) [6] So corr. Ch यज्ञो; cf. Mâitr. S. 1, 10, 9 (p. 149, Z 16) [7] So corr Ch यदनवा°

ता वैश्वदेवेन सृष्टास्तासँ स्तृणिमन्वरुणो ऽगृह्णाद्यो आहुरति वै तास्तमचरँस्ता अतिचरन्तीर्वरुणेनाग्राहयदिति तस्मात्पिता नातिचरितवै वैश्वदेवेन वै प्रजापतिः प्रजा असृजत तस्य मरुतो हव्यं घ्यमप्सत ततो ऽँहोगृहीता[1] असृज्यन्त[2] ताभ्यो भेषजमैच्छत्तदात्मन्नेवैच्छत्स एतदात्मनो ऽधि पयो[3] निरमिमीत तेनाभ्यो ऽँहो ऽवायजदंहसो[4] वा एषावेष्टिर्यद्वरुणप्रघासा जग्धाद्वै वरुणो गृह्णाति तस्माद्वरुणप्रघासा यावद्वै कुमारे ऽन्नो[5] जात एनस्तावदेतस्मिन्नेनो भवति यो वरुणप्रघासैर्यजते ऽथैतानि पञ्च हवींषि संतत्यै ॥ सावित्रो ऽष्टाकपालो गायत्रो हि देवानां सवितैन्द्राग्नो द्वादशकपालो वैश्वदेवत्वाय यद्वै तत्प्रजा वरुणगृहीता अवेक्लीयन्तेव[6] तदास्विन्द्राग्नी बलमधत्तां न वै ताः प्राणंस्ता अप्राणन्तीर्वरुणो ऽगृह्णात्प्राणापानौ वा इन्द्राग्नी प्राणापाना एवैतन्मध्यतो धीयेते शिथिला वै ताः प्रजा वरुणो ऽगृह्णादोजो वीर्यमिन्द्राग्नी ओज एवैतद्वीर्यं मध्यतो धीयते निरवत्त्या एव मारुती निर्वरुणत्वाय वारुणी कन्त्वाय कायो यद्वा आभ्यस्तद्वरुणगृहीताभ्यः कमभवत्तस्मात्कायः प्रजापतिर्वै ताः प्रजा वरुणेनाग्राहयत्प्रजापतिः क आत्मनैवैना वरुणान्मुञ्चत्यृतं[7] वै सत्यं यज्ञो ऽनृतं स्त्र्यनृतमेषा करोति या पत्युः क्रीता सत्यथान्यैश्चरत्यनृतमेव[8] निरवदायर्तं सत्यमुपैति यद्वाचयति मेध्यामेवैनां यज्ञियां करोति न[9] मिथु ब्रूयाद्यन्मिथु ब्रूयात्प्रियतमेन यातयेत्[10] ॥ ५ ॥

cf Maitr S 1, 10, 10 und 1, 10, 11 a A

---

[1] Im Ms (Ch) das ^ über dem ह्री gesetzt, da kein Avagraha geschrieben ist. [2] So corr Ch असृजन्त cf Maitr S 1, 10, 10 — Corr [3] So corr Ch पयो, cf Maitr S 1, 10, 10 (p 150 Z 9) [4] So corr Ch यात्रयदं॑, Maitr S 1, 10, 10 (p 150, Z 10) — Corr [5] So corr Ch कुमारो न्नो, cf Maitr S 1, 10, 10 (p 150, Z 12) [6] Ch ग्रवेत्ला॑ [7] So corr Ch चत्दृत [8] So corr Ch सत्यथा, थ्य für थ doch nur dem metrischen Veda eigenthümlich vgl Maitr S 1, 10, 11 a A — Corr [9] Das न mit Caland eingefügt, fehlt in Ch, cf TBr 1, 6 5, 2 [10] So corr In Ch von der ersten Hand nur येत् geschrieben dann oben यत eingefügt, Maitr S 1, 10, 11 a A (p 151, Z. 5) hat याजयेत् (vielleicht यातयेत् zu lesen)

आमपेषा[1] भवन्ति सर्वस्याहसो ऽवेष्ट्यै यद्गृज्ज्येयुर्विश्वकर्माहो[2] ऽवेष्टै स्यात्पात्रेभ्यो वै ताः प्रजा वरुणो ऽगृह्णाद्यत्पात्राणि पात्रेभ्य एवैना वरुणान्मुञ्चति[3] प्रतिपुरुषं भवन्ति प्रतिपुरुषमेवाहो ऽवयजत एकमधि भवति[4] गर्भेभ्य एव तेनाहो ऽवयजते ऽन्नाद्धि ताः प्रजा वरुणो ऽगृह्णाच्छूर्पेणान्नं बिभ्रति तस्माच्छूर्पेण हूयते स्त्रीपुंसौ जुहुतो मिथुना एव प्रजा वरुणान्मुञ्चतः पुरस्तात्प्रत्यञ्चौ तिष्ठन्तौ जुहुतः पुरस्तादेवायै[5] ऽहो ऽवयजतो यत्पात्राणि य एव द्विपादः पशवो मिथुनास्तेषां तेन पुरस्तादहो ऽवयजतो यन्मेषश्च मेषी च य एव चतुष्पादः पशवो मिथुनास्तेषां तेनोपरिष्टादहो ऽवयजत उभयत एवाहो ऽवयजतः[6] पुरस्ताच्चोपरिष्टाच्च ॥ पात्राणि[7] हुत्वाग्निं[8] समार्ष्टि यत्रीहो[9] ऽवायाश्चुस्तस्मिन्नुपूते[10] देवता यजानिति यद्धि प्रजा वरुणो[11] गृह्णाति शमी च यवं च न गृह्णाति हेमन्तो हि वरुणस्तस्मादेता हेमन्ते शुष्यतो या एवावरुणगृहीतौ ताभ्यामेना वरुणान्मुञ्चति वरुण्यो[12] वै यवो वरुणदेवत्यस्स्वेनैव[13] भागधेयेन वरुणं निरवदयते ऽथैता अनृतपशू अनृताद्धि ताः प्रजा वरुणो ऽगृह्णाद्यदेता अनृतपशू अनृतादेवैना वरुणान्मुञ्चति स्त्रीपुंसौ भवतो मिथुना एव प्रजा वरुणान्मुञ्चति लोमशौ भवतो मेध्यत्वाय यावन्तो हि पशवो लोम जगृहुस्ते मेधं प्रापुश्शमीपर्णानि[14] भवन्ति शन्त्वाय भूर्जो[15] वै नामैष वृक्षः कार्यो[16] वा एतस्य स्रुचः प्रजापतिर्वा अन्नाद्यं नावारुन्ध तच्छ-

[1] Dieses Capitel findet sich auch in T1 und Brl fol 142 143 und ist nach diesen Handschriften accentuirt, Ch आमपेषा [2] So T1 und Brl fol. 142; ebenso Ch, ohne Accent [3] वरुणान्मु° in T1 und Brl fol. 143 ohne Accent. [4] So Ch, ohne Accent, in Uebereinstimmung mit Maitr. S. 1, 10, 11 (Z. 8. 9), T1 und Brl fol 143 wohl एकमधिभवति [5] Brl fol. 143 वायै ऽहो ऽव° [6] Ch वायजतः [7] Brl fol. 143 पात्राणि [8] Accent corrigirt, T1 हुत्वाग्निं, Brl fol. 143 हुत्वाग्निं [9] Ch यत्रीहो [10] Brl वायश्च [11] Accent ergänzt, वरुणो in T1 und Brl fol 143 ohne Accent. [12] Brl fol 143 वारुण्यो; Maitr. S. 1, 10, 12 (p. 151, Z. 18) वरुणो, was offenbar zu corrigiren ist. [13] Brl fol. 143 वारुणदैवत्यस्स्वे° [14] Brl fol. 143 मेधमापुश्शमी [15] Brl भूर्जो [16] Brl कार्यो वा

त्तैध्मेनांचारुन्द्ध[1] परश्शतानि कार्याण्यन्तांश्चस्यांवरुद्धै सहसेध्मो[2] ह त्वां स्त्रीहसो[3] ऽवेष्टिं विव्याच परस्सहस्राणि[4] कार्याण्यहसो ऽवेष्ट्यै ॥ ६॥
cf Maitr S 1 10, 11 und 12

यतीन्वै[5] सालावृकेया आदंस्तेषामेतानि शीर्षाणि यत्खर्जूरास्तोमपीथ एष उदीषति यत्करीराणि यत्करीराणि भवन्ति सोममीथमेवावरुन्द्धे प्रजापतेर्वा एतज्ज्येष्ठं तोकं यत्पर्वतास्ते पक्षिण आसंस्ते यत्र यथाकामयन्त तत्परापातमासताथ वा इयं तर्हि शिथिलासीत्तेषामिन्द्रः पक्षानच्छिनत्तैरिमामदृंहद्ये पक्षा आसंस्ते जीमूता अभवंस्तस्मात्ते गिरिमुपप्लवन्ते योनिर्ह्येषामेष तस्माद्गिरौ भूयिष्ठं वर्षति यत्माक्षरन्तानि करीराणि तदेतत्मावृष्युज्जीमूताः प्लवन्ते यजन्ते वरुणप्रघासैर्वृष्टिमेव संतनोति तस्मात्तर्हि भूयिष्ठं वर्षति वृष्टिं हि संतनोति न वैश्वदेव उत्तरवेदिमुपवपन्त्युपाथ वपन्ति प्रज्ञाता एव प्रजाः परिगृह्णाति योत्तरा वेदिर्या अन्नीः प्रजास्तासां सा योनिस्तास्तामनुप्रजायन्ते या दक्षिणा वेदिर्या आद्याः प्रजास्तासां सा योनिस्तास्तामनुप्रजायन्त[6] उभयीरेवैतदन्नीश्चाद्याश्च प्रजाः प्रजनयत्ययं वाव हस्त आसीन्नायं यैषा द्वितीया वेदिस्तयेमं द्वितीयं हस्तमविन्दंस्तस्मादेष[7] एतस्य परिवेष्टाप्रजो हि तस्मात्कनीयाञ्ज्यायांसं परिवेवेष्टि समे कार्ये समौ हीमौ हस्ता असंभिन्ने भवतो ऽहसो ऽवेष्ट्यै यत्संभिन्द्युरनवेष्टिर्हस्यादेकस्यामनु[8] संभिन्दन्त्यनुसंतत्या उपोत्तरां[9] वपन्ति न दक्षिणामनभ्यारोहाय ॥ क्षत्रं वै वरुणो विण्मरुतो नाना यजन्ति

---

[1] Ch तद्धलधैनाधाश्थ Brl ताद्धलैधैनाधारुन्धु [2] So corr Ch सहसेध्मे T1 und Brl fol 143 सहसेध्द, cf Maitr S 1, 10, 12 (p 152 Z 4) — Corr [3] So T1 und Brl fol 143, in Ch ह त्वा स्त्रैहसा vgl Maitr S 1, 10, 12 (p 152 Z 4) [4] So Brl fol 143 in Uebereinstimmung mit Maitr S 1, 10, 12 (p 152, Z 5) in T1 und Ch fehlt परः, T1 सहस्राणि desgl Ch ohne Accent [5] Dieses und die folgenden Capitel beruhen wieder nur auf Ch [6] So corr Ch यन्ते [7] So corr Ch विदोस्त cf Maitr S 1, 10, 13 (p 153 Z 3) — Corr [8] So Ch, Maitr S 1, 10 13 (p 153, Z 6) irrig cf Ap 13, 5 20 एकस्यामवेद्यां अनुसंभिन्दन्ति ‖ Caland [9] So corr Ch सरा

पापवसीयसस्य व्यावृत्त्यै यदध्वर्युः करोति तत्प्रतिप्रस्थाता करोति तस्माद्यद्राजा करोति तद्विट्करोति न वैश्वदेवे त्रिंशदाहुतयस्सन्ति [illegible] साकमेधेषु वरुणप्रघासेषु वाव त्रिंशदाहुतयो वैराजः पुरुषो दश हस्त्या अङ्गुलयो दश पद्या दश प्राणास्त्रिंशत्त्रिंशदक्षरा विराड्वैराजः[1] पुरुषो यदेतद्वभृथमवैत्यात्मानमेवांहो ऽवयजति यद्वै यज्ञस्य स्वगाकृतिं न प्राप्नोति वरुणस्तद्गृह्णाति यन्निष्कापेणावभृथमवैति यदेव वरुणगृहीतं तेन वरुणं निरवदयते ऽथो यदेवाच वरुणस्य न्यक्तं तस्य निरवत्त्या अनपेक्षमाणा आयान्ति वरुणस्यानन्ववायायैधो ऽस्येधिषीमहीति[2] वरुणमेव निरवदायैधतुमुपयन्ति[3] समिदसि समेधिषीमहीत्याशिषमेवाशास्ते तेजो ऽसि तेजो मयि धेहीति तेज एवात्मन्धत्ते ॥ ७ ॥ cf Maitr S 1,10 12 u E und 1 10,13

प्रजास्सृष्ट्वांहो ऽवेज्य सो ऽकामयत वृत्रं हन्यामिति स एताभिर्देवताभिस्सयुग्भूत्वोपप्लायत[4] मरुद्भिर्विशाग्निनानीकेन[5] स वृत्रमभीत्य[6] वृत्रं हष्ट्वोरुस्तम्भगृहीतो ऽतिष्ठदनभिधृष्णुवैस्तं[7] मरुत ऐषीकैर्वांतरधेरध्येयन्त[8] ते ऽत्यैपंस्ते ऽस्य[9] यत्र मर्माणगच्छंस्तदचेष्टंस्तं वा एनं तदतपंस्तस्मात्सांतपना वार्त्रघ्ना[10] वै साकमेधा अग्निना वा अनीकेनेन्द्रो[11] वृत्रमहन्ननीकवायैवैषो ऽग्निर्देवानां सेनानीस्सेनोत्थापनीयमेवैतदिन्द्रो वै वृत्राय वज्रमुद्यमं नाशक्नोत्स एतं मरुद्भ्यो भागं निरवपत्तं मरुतो वीर्याय समतपन्स्[12] तेन वीर्येण वज्रमुदयच्छंस्तं[13] वा एनं तदतपंस्तस्मात्सांतपना मध्यंदिने निरुप्यन्ते हि सुभा अग्नौ तपन्ति चरुर्भवति तं हि सर्वतस्तपन्ति देवा वै वृत्रस्य मर्म[14]

---

[1] So corr Ch विराड्विराज [2] So corr Ch धोमहीति [3] So corr Ch येधतमुप॰ cf unten 36 14 a E auch Maitr S 1, 10, 13 a. E [4] So corr Ch भूतोपप्लायत cf Maitr S 1, 10, 14 a A (p 153, [illegible] 19) und Pa 8, 2, 19 [5] Ch नेकेन [6] So corr Ch रत्नमभीत्य [7] So corr Ch घृष्णुवै॰ [8] So corr Ch ध्यन्त, cf Maitr S 1, 10, 14 (p 153. [illegible] 20) [9] So corr Ch ॰स्ये स्य [illegible] So corr Ch वार्त्रघ्ना [11] So corr Ch ग्नेकेने॰ [12] So corr Ch मा [13] So corr mit Caland, Ch यच्छत [illegible] [14] So corr Ch मन्म

नाविन्दंस्तं मरुतः क्षुरपविना व्ययुस्तं वा एनं तदतपंस्तस्मात्सांतपनाः ॥ [illegible] ॥ cf Maitr [illegible] 1 10 14

ते श्वो वृत्रं हनिष्यन्त उपावसंस्ते ऽब्रुवन्कस्य वाहेदं श्वो भविता कस्य वा पचतेति त एतमोदनमपचन्त ते पशूनचिकयुर्यतरान्वा इमे श्वः कमितारस्ते जेतार इति तेभ्य एतेन प्रातिष्ठंस्तानेतेनायच्छन्पशूनामेवैषा यतिस्ते[1] श्वोविजयिनो ऽवसंस्ते ऽब्रुवन्कस्य वाहेदं श्वो भविता कस्य वा पचतेति त एतमोदनमपचन्त ते ऽब्रुवन्माहुतमशिष्मेति[2] ते मरुद्भ्यो गृहमेधेभ्यो ऽजुहवुः पशवो वै मरुतो गृहमेधास्तेभ्य एव तदजुहवुस्ते संयत्ता आसंस्ते ऽसुरा देवेभ्यः क्षुधं प्राहिण्वंस्तां देवाः प्रतिश्रुत्यैतमोदनमपचन्त सा देवेषु लोकमवित्त्वा[3] पुनरसुरान्प्राविशत्सैनाञ्चिरदहदपि प्रतिवेश ओदनं पचेत भ्रातृव्यायैव क्षुधं प्रहिणोति सैनं निर्दहति ॥ यद्वै चातुर्मास्यानां पाकयज्ञस्यैव तदेषां पशव्यं गृहमेध्यो वै पाकयज्ञो न[4] प्रयाजा इज्यन्ते नानुयाजा न सामिधेनीरन्वाहाज्यभागौ यजति तेन यज्ञः क्रियते ऽग्रे समवद्यत्यपि स्तमिष्टिरपि[5] प्रतिष्ठितिस्तमिष्ट्या एव प्रतिष्ठित्यै पशवो वै गृहमेधाः पशव इडा तस्मादिडामुपह्वयन्ते निष्कायो निधीयते संतत्यै तेषां वा उभयेषामिन्द्रः प्रावसत्ते देवा एतमिन्द्राय भागं न्यदधुरस्माऽच्छो[6] निहितभागो वृणाता इति रुवथो वषट्कारो ऽयो असुराणामेव तदृषभमत्याह्वयवस्मान्प्रजनयादित्यृषभमाह्वयतीन्द्रमेव तन्निह्वयते ऽयो पुष्टिमेव भ्रातृव्यस्य वृङ्क्ते ॥ ९ ॥
cf Maitr [illegible] 1 10 15 und 1 10 16 a A

सवत्सा गावो वसन्ति साकमेधत्वाय यत्पत्नी नाश्नीयादसाकमेधास्स्युर्यत्पन्यश्नाति[7] साकमेधत्वाय निर्ऋतिर्वा एतद्यज्ञस्य गृह्णाति

[1] So corr Ch यति से cf Maitr [illegible] 1, 10 15 (p 154 Z 12) — Corr [2] cf TBr 1 6 6 4 [3] So corr Ch विद्वा cf TBr 1, 6 7, 2 — Corr [4] So corr Ch न्न, cf Mâitr [illegible] 1, [illegible] 15 (p 155 Z 3) [5] So corr Ch स्तमिष्टर [6] Ch स्मा च्छो oder doppeltes च (undeutlich), cf Mâitr [illegible] 1, 10 16 a A [7] So corr Ch पन्त्यश्नाति

यत्स्त्र्याघारति निर्ऋतिर्वै स्त्री स्त्रिया एष हस्तो यद्दर्विर्यद्दर्व्या जुहोति निर्ऋत्यैव निर्ऋतिं निरवदयते यद्वै यज्ञस्य स्वगाकृतिं न प्राप्नोति निर्ऋतिस्तद्गृह्णाति निर्ऋतिगृहीता वै दर्विस्तर्हि ह्येषावचरति यद्दर्व्या जुहोति निर्ऋतिगृहीतयैव निर्ऋतिं निरवदयते स इन्द्रो वृत्रं हन्तुमुपप्रायत[1] तं मरुतः परिक्रीडन्त आयंस्ते ऽस्यापच्चा[2] व्यनयंस्त एनमभ्यधर्षयंस्तस्मात्क्रीडयस्ते संयत्ता आसंस्ते देवा असुराणां परमन्तं न परापश्यंस्ते मरुतः क्रीडीन्क्रीडतो[3] ऽपश्यंस्ते ऽविदुर्जितमनसो वा इम इति तेभ्य एतं भागं निरवपंस्ततो[4] ऽजयन्विजित्या एवैषो ऽसौ वा आदित्य इन्द्रो रश्मयः क्रीडयस्साकं रश्मिभिः प्रचरन्ति विजित्यै ॥ देवा वै वृत्रं हतं न व्यजानंस्तं मरुतो ऽध्यक्रीडंस्तस्मात्क्रीडयो[5] ऽथैतानि पञ्च हवींषि संतत्या अथैन्द्राग्न[6] इन्द्राग्नी वै तं वज्रेणाभ्यौहतामथो[7] आहुरिन्द्राग्नी अस्मै वज्रमनुविभृतामित्यथैन्द्र[8] एतेन वा इन्द्रो वृत्रमहन्स एतमुद्धारमुदहरतोद्धार एवास्यैष भाग एवाथ वैश्वकर्मणो विश्वा मे कर्म कृतानीति विश्वकर्मा[9] ह्यभवद्वृत्रं हत्वाग्ने वेहोत्रं वेदूत्यमित्याघारमाघारयत्याहुतीनां[10] संपत्त्यै[11] धिगत्त्वाय ॥ १० ॥

cf Maitr S 1, 10, 16

प्रजास्सृष्ट्वींहो ऽवेज्य वृत्रं हत्वा ते ऽमृतत्वमकामयन्त स्वर्गो वै लोको ऽमृतत्वं द्वादश मासास्संवत्सरस्स्वर्गो लोको यद्द्वादशाहुतयो ऽमृतत्वमेव तेन स्पृणोति सं वा एतत्संवत्सरमवृश्चदापद्वा एतत्संवत्सरं यत्पद् पट् संपादयति षड्वा ऋतव ऋतूनेवैतत्पुनरपिपादयति

---

[1] So corr im Anschluß an Maitr S 1 10, 16 (p 155 Z 15) Ch मुपप्नायपत, vgl oben 36, 8 a A [2] So zweifelnd corrigirt im Anschluß an Maitr S 1, 10, 6 (p 155 [illegible] 16) Ch liest स्यापत्वा womit ich nichts anzufangen weiß [3] So corr Ch क्रीडी क्रीडितो, Maitr S 1, 10, 16 (p 155 Z 19) = Corr [4] So corr Ch वपंस्त [5] So corr Ch ध्यक्रीडिंस्त cf Maitr S 1, 10, 16 (p 156, Z 1) = Corr [6] So corr Ch द्राग्ना, cf Maitr S 1, 10, 16 (p 156, Z 2) [7] So corr Ch भ्योहता [8] So corr Ch त्रिभृता [9] So corr Ch कर्म [10] So corr Ch वेर्द्वत्यमि, cf aber oben kâth 9, a a [illegible] = Corr, desgl cf Maitr S 1, 10, 1 a A [11] Maitr S 1, 10, [illegible] a E सतत्यै

तानपिपद्यमानानन्वपिपद्यते ततः प्रजायते ऽति वा एतत्संवत्सरमगाद्यद्द्वादशाहुतयस्संवत्सरमेवाभिपर्यावर्तन्त आपद्वा एतत्संवत्सरं पितर ऋतवस्तमेव प्रजनयति तं प्रजायमानमनुप्रजायत[1] एतद्वा अस्य संवत्सरो ऽभीष्टो ऽभूदभीष्टा ऋतवो ऽथास्य पितरो ऽनभीष्टा यदेष पितृयज्ञस्तेनास्य पितरो ऽभीष्टाः प्रीता भवन्ति ॥ दक्षिणतो निरुप्यं दक्षिणा हि पितृणामुभयतो निरुप्यमुभये हीज्यन्ते तसन्न सूक्ष्मे दक्षिणत एव निरुप्य दक्षिणा हि पितृणां षट्कपालः पुरोडाशो भवति षड्वा ऋतव ऋतव एवास्य तेनाभीष्टाः प्रीता भवन्ति न वै धानाभिर्न मन्थेन यज्ञो यदेष पुरोडाशस्तेन यज्ञः क्रियते ऽथैता धानास्सुधा वा एता अमुष्मिंल्लोके ऽपरिमितास्संवत्सरस्य रात्रयस्ता एवास्यैताभिरभीष्टाः प्रीता भवन्ति न वै धानाभिर्न पुरोडाशेन पितृयज्ञो यदेष मन्थस्तेन पितृयज्ञो ऽभिवान्यवत्साया[2] दुग्धे भवति सा हि पितृणां नेदिष्ठमेकयोपमन्थत्येकलोका हि पितरो दक्षिणोपमन्थति दक्षिणा हि पितृणामनारभ्योपमन्थति तद्धि पितॄन्गच्छति ॥ ११ ॥

cf Maitr S 1 10 17

न प्राच्युदन्त्या पितृयज्ञो हि न दक्षिणा यज्ञो ह्युभे दिशा अन्तरोदन्नुभये[3] हीज्यन्त उभयानेव व्याप्नोति देवांश्च पितॄंश्च चतुस्स्रक्तिर्वेदिर्भवति सर्वासु हि दिक्षु पितरः परिश्रिते याजयन्त्यन्तर्हिता ह्यमुष्मादादित्यात्पितरो ऽथो अन्तर्हिता हि देवेभ्यश्च मनुष्येभ्यश्च पितर उपमूलं बर्हिर्ददाति तेन पितृणां यहतेमूलं तेन देवानामुभये हीज्यन्ते समन्तं बर्हिस्स्तृणन्पर्येति समन्तं हीम ऋतवः परिविष्टा एति वा एषो ऽस्माल्लोकाद्यः पितृयज्ञं पर्येति यदस्तृणन्पुनः पर्येतीममेव लोकमुपावर्तते ऽमुष्मिन्वै पूर्वस्मिन्देवता यजन्ति यत्तच यजेदाहुतीस्संसृजेत्समदं कुर्याद्गार्हपत्ये शृतं कुर्वन्ति तेन यज्ञः क्रियत ओदनपच-

---

[1] So corr Ch मानुप्र° [2] So corr Ch भिधान्य [3] So corr Ch द्वन्नु cf Maitr S 1 10 17 (p 157 / 9)

नादग्निमाहरन्ति तद्व् स्विन्नान्यत आह्रियत उशन्तस्त्वा हवामह इत्यन्वाहोशन्तो हि पितरो ऽनुष्टुभमन्वाहान्तो[1] वा अनुष्टुबन्तः पितरो ऽथो अनुष्टुब्भि सर्वाणि छन्दांस्येकामन्वाहैकलोका हि पितरस्तिरन्वाह तृतीये हि लोके पितरो यदेकामन्वाह तेन पितॄणां यत्तिरन्वाह तेन देवानामुभये ह्येज्यन्ते नार्षेयं वृणीते न होतारं मृत्योरेवैना उत्सृजत्यपबर्हिषः प्रयाजान्यजति प्रजा वै बर्हिः प्रजा एव मृत्योरुत्सृजति संव्ययते वै मनुष्येभ्यः करिष्यन्दक्षिणतो देवेभ्य उपव्ययते ऽपाच प्राचीनावीतेन भव्यं व्यावृत्त्यै दक्षिणतो ऽवदायोदङ्ङतिक्रम्य दक्षिणावृत्य जुहोति दक्षिणा हि पितॄणाम् ॥ १२ ॥
cf Maitr. S 1, 10, 17 a D und 1, 10 [illegible] bis in die Mitte

सोममग्ने यजति सोमो वै पितॄणां देवता पितृदेवत्यो हि सोमो यत्सोमं पितृमन्तं यजति सोमपास्तत्पितॄन्यजति यद्बर्हिषदो यज्वनस्तद्यदग्निष्वात्तान्गृहमेधिनस्तद्यदर्भि[2] कव्यवाहनं द्वे वा अग्नेस्तन्वौ हव्यवाहन्या देवेभ्यो हव्यं वहति कव्यवाहन्या पितृभ्यो ऽग्निस्समिष्टिरभिः प्रतिष्ठितिस्समिष्ट्या एव प्रतिष्ठित्यै पञ्च पञ्च कृत्वो ऽवद्यति पञ्च ह्यृतवस्स्वधा नम इति वषट्करोति स्वधा हि पितॄणां नमस्कारो देवानां द्वे वै देवानां याज्यानुवाक्ये प्रान्यया यच्छति गमयत्यन्ययाथ तिस्रः कार्या व्यावृत्त्यै द्वे अनुवाक्ये एका याज्या परे वै देवेभ्यः पितरो यैषा तृतीयाभ्येवैतया प्रयच्छति ॥ देवान्वै पितॄन्मनुष्याः पितरो ऽनुप्रपियन्तो[3] देवानेवैतत्पितॄनयाङ्गत्सक्तिषु निदधाति तेन मनुष्यान्पितॄन्यजति त्रिर्निदधाति त्रीन्हीदं पुरुषानभिसस्तोऽन्परानन्वाचष्टे त्रयो वै पिता पुत्रः पौत्रो[4] ऽनुसंतत्यै सर्वासु सक्तिषु निदधाति सर्वा एव दिशो गमयति सर्वासु हि दिक्षु पितरो नास्यां निदध्याद्यदस्यां

---

[1] So corr Ch वान्तो cf Maitr S 1, 10, 18 a A [2] So corr Ch दर्भि, cf Maitr S 1, 10, 15 (p 155, Z 10) — Corr [3] So corr Ch पियन्ते, cf Maitr S 1, 10, 18 (p 155, Z 16 17) [4] So corr Ch पौत्रा, cf Maitr S 1, 10, 18 (p. 158, Z 18)

निदध्यान्मृत्युनैनान्परिगृह्णीयात्तामेवानूद्यन्ति यत्तस्यां निमार्ष्टि तेनैव तान्प्रीणात्यत्र पितरो मादयध्वमिति निष्क्रामन्ति त आहवनीयमुपायन्ति सुसंदृशं त्वा वयमिति त आ तमितोऽस्तिष्ठन्त्यन्तं वा एते प्राणस्य गच्छन्ति ये पितृयज्ञमुपयन्त्यग्निमेवोपद्रष्टारं कृत्वान्तं प्राणस्य गच्छन्ति परेत[1] पितरस्सोम्यास इति पुनरायन्त्यनुषक्ता वा एतान्पितरो व्यावृत्त्या अमीमदन्त पितर इति प्रपद्यन्ते त ऊर्णां वा दशां वा न्यस्यन्ति यदेव तत्र निगच्छन्ति तस्य निरवत्त्या अपः परिषिञ्चति मार्जयन्त्येव पुनरपरिषिञ्चन्पर्येत्यमुं वा एते लोकं निगच्छन्ति ये पितृयज्ञमुपयन्ति प्रजापतिस्त्वा एनानत उन्नेतुमर्हति[2] यदेतामनिरुक्तां प्राजापत्यामन्वाहाया विधा जनयन्कवेराणीति प्रजापतिरेवैनांस्तत उन्नयति पितॄन्वा एतद्यज्ञो ऽगन्यद्भ्या पुनरायन्ति पाङ्क्तो यज्ञस्सहैव यज्ञेनायान्ति[3] पितॄन्वा एतस्य मनो गच्छति मनो न्वाहुवामह[4] इति तदेव पुनरुपह्वयते[5] ॥ १३ ॥

cf Maitr S 1, 10, 18 (zweite Hälfte) und 1 10, 19

एतद्वा अस्य संवत्सरो ऽभीष्टो ऽभूदभीष्टाः पितरो ऽथास्य[6] रुद्रा अनभीष्टा रुद्रास्त्र्यम्बका यदेते त्र्यम्बकास्तेनास्य रुद्रा अभीष्टाः प्रीता भवन्ति प्रतिपुरुषं भवन्ति प्रतिपुरुषमेव रुद्रं निरवदयत एको ऽधि भवति गर्भेभ्य एव तेन रुद्रं निरवदयत एककपाला भवन्ति न वै पुरुषं कपालैराप्तुमर्हत्येकधैवैनमाप्नोत्यभिघार्या३ नाभिघार्या३ इति मीमांसन्ते अभिघार्या एव न हि हविरनभिघृतं यदभिघारयेद्रुद्रं पशूनन्ववनयेत्तस्मान्नाभिघार्या एकोल्मुकं हरन्त्येकोल्मुकं हि रुद्राणां धूपायद्धरन्ति धूपायद्धि रुद्राणां पराचीनं हरन्ति पराञ्चमेव रुद्रं हरन्तीमां दिशं हरन्त्येतस्यां वै दिशि रुद्राणां गृहा गृहेष्वेव रुद्रं निरव-

[1] Vgl oben Kath 9, 6 u A [2] So corr mit Caland, Ch मनानत सन्नेतुम, cf Maitr S 1 10, 18 (p 159, Z. 10) — Corr [3] Ch यन्ति [4] So corr Ch न्वामह cf aber oben Kath 9, 6 [5] So corr Ch यत्ये, cf Maitr S 1, 10, 20 u A

यजते ॥ रुद्राखुं ते पशुं करोमीत्याखुकिरा एकमुपवपति पशुभ्य एव रुद्रं निरवदयते तस्मात्तान्पशुपतिर्घातुकश्चतुष्पथे याजयन्ति चतुष्पथे वै रुद्राणां गृहा गृहेष्वेव रुद्रं निरवयजत एष ते रुद्र भागस्सह स्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहेति शरद्वै रुद्रस्य स्वसाम्बिका तामेषो ऽन्ववचरति तस्मादेष शरदि भूयिष्ठं हन्ति तयैवैनं सह निरवदयते मध्यमेन पर्णेन जुहोति तद्ध्यरक्षोहतं यद्ग्राम्येण[1] जुहुयाद्रुद्रः पशूनन्ववनयेत्तस्मादारण्येन हूयते ऽवाम्ब रुद्रमदिमहीत्यनृणा एवाभूवन्भेषजं गवे ऽश्वाय पुरुषाय चेत्यनृणा एव[2] भूत्वा भेषजमक्रत ॥ त्र्यम्बकं यजामह इति परियन्ति या पतिकामा स्यात्सापि परीयात्पतिवेदनमेवास्यै कुर्वन्ति तानुदस्य प्रतिलभन्ते ऽनृणा एव भूत्वा भगं[3] प्रतिलभन्ते तान्यजमानाय समावपन्ति भगमेवास्मै[4] समावपन्ति या पतिकामा स्यात्तस्यै समावपेयुर्भगमेवास्यै[5] समावपन्ति तान्मूते[6] कृत्वा वृक्ष आसजन्त्येष ते रुद्र भागस्तेनावसेन परो मूजवतो ऽतीहीति गिरिर्वै रुद्रस्य योनिस्तत्र एषो ऽभ्यवचरति स्वेनैवैनं भागधेयेन स्वं योनिं गमयत्यनपेक्षमाणा आयान्ति रुद्रस्यानन्ववायायैधो ऽस्येधिषीमहीति रुद्रमेव निरवदायैधतुमुपयन्ति[7] समिदसि समेधिषीमहीत्याशिषमेवाशास्ते तेजो ऽसि तेजो मयि धेहीति तेज एवात्मन्धत्ते ऽश्वी वै स्त्री भगानाम्नी[8] तस्मात् त्र्यम्बका अप्रतिष्ठितो वा एष यस्यामतिष्ठितं हविरप्रतिष्ठितास्त्र्यम्बका न प्रयाजा इज्यन्ते नानुयाजा न सामिधेनीरन्वाहादित्यै चरुं[9] निर्वपतीयं वा अदितिरियं प्रतिष्ठास्यामेव प्रतितिष्ठति ॥ १४ ॥ cf Mâitr. S. 1, 10, 20.

---

[1] So corr mit Caland, Ch -म्यान [2] So corr Ch एवा [3] So corr. Ch भगं; aber vgl. weiter unten und Mâitr S. 1, 10, 20 (p 160, Z. 13) [4] So corr. Ch भागसे°, aber vgl weiter unten und Mâitr. S 1, 10, 20 (p 160, Z. 13). [5] So Ch und auch Mâitr S 1, 10, 20 (p 160, Z. 14) [6] So corr. Ch तान्मूते; aber cf. Mâitr. S. 1, 10, 20 (p. 160, Z 15) = Corr; cf. auch TBr. 1, 6, 10, 5. [7] So corr. Ch °धतुमु°; vgl oben 36, 7 a E. (ganz ebenso!) [8] So Ch; Mâitr. S. 1, 10, 20 (p. 161, Z. 3) भगनाम्नी; darnach zu corrigiren. [9] So corr. Ch चरुनि°

अपां[1] यो द्रवणे रसस्तमहमस्मा अमुष्मा आमुष्यायणाय तेजसे वर्चसे गृह्णाम्यपां य ऊर्मौ रसस्तमहमस्मा अमुष्मा आमुष्यायणायौजसे क्षत्राय[2] गृह्णाम्यपां यो मध्ये[3] रसस्तमहमस्मा अमुष्मा आमुष्यायणाय प्रजायै पुष्ट्यै गृह्णाम्यपां या यज्ञिया तनूस्तामहमस्मा[4] अमुष्मा आमुष्यायणायायुषे दीर्घायुत्वाय गृह्णामि ॥

रथे[5] अक्षेषु वृषभस्य वाजे वाते पर्जन्ये वरुणस्य शुष्मे ।
इन्द्रं या देवी[6] सुभगा जजान सेयमागाद्वर्चसा संविदाना ॥
या हस्तिनि द्वीपिनि[7] या हिरण्ये गोष्वश्वेषु[8] पुरुषेष्वन्तः ।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमागाद्वर्चसा संविदाना ॥
सिंहे व्याघ्र उत या पृदाकौ त्विषिरग्नौ[9] ब्राह्मणे सूर्ये या ।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमागाद्वर्चसा संविदाना ॥
या राजन्ये दुन्दुभावायतायामश्वस्य क्रन्दे[10] पुरुषस्य मायौ ।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमागाद्वर्चसा संविदाना ॥[11]

राडसि[12] विराडसि सम्राडसि[13] स्वराडसीन्द्राय त्वा मधुमते मधुमन्तं श्रीणामीन्द्राय त्वौजस्वत ओजस्वन्तं श्रीणामीन्द्राय त्वा पयस्वते पयस्वन्तं श्रीणामीन्द्राय त्वायुष्मत[14] आयुष्मन्तं श्रीणामि वर्चो ऽसि तन्मे नियच्छ तत्ते नियच्छाम्योजो ऽसि तन्मे नियच्छ तत्ते

---

[1] Dies Capitel findet sich außer in Ch auch in den accentuirten Handschriften T 1 und Brl fol 119 120, der größte Theil desselben auch in W 2, ferner ein Stück davon in Brl fol 92 und T 7, zum Anfang vgl TBr 2, 7, 7, 1 [2] Ch यौजसे चत्राय [3] W 2 मध्ये cf Schluß des Capitels [4] W 2 तमह°, desgl Ch, ohne Acc, W 2 vorher auch दे for या [5] Von hier ab, bis zum Ende der Verse, auch in Brl fol [illegible] vorhanden, desgl in T 7 [6] W 2 दिवी, ebenso hat W 2 auch in den drei folgenden Versen दिवी für देवी cf TBr 2 7, 7, 2 [7] W 2 हस्तिने द्वीपिने, T 7 हस्तिने द्वीपिनि, cf auch TBr 2, 7, 7, 1 2 [8] T 1 und Brl fol 119 गोष्वश्वेषु W 2 गोष्वश्वेषु TBr 2, 7, 7, 1 त्विषिरश्वेषु [9] Ch त्विषिर° [10] TBr 2, 7, 7, 1 क्रन्द्ये [11] Hier bricht Brl fol 92 ab, desgl T 7. [12] Für das folgende vgl TBr 2, 7, 7, 2 und 3 [13] Ch सम्राडसि [14] Ch त्वा आयु°

नियच्छामि पयो ऽसि तन्मे नियच्छ तत्ते नियच्छाम्यायुरसि तन्मे नियच्छ तत्ते नियच्छामि ॥

वर्चस्वदस्तु मे मुखं वर्चस्वच्छिरो[1] अस्तु मे ।
वर्चस्वान्विश्वतः प्रत्यङ् वर्चसा संपिपृग्धि मा ॥
ओजस्वदस्तु मे मुखमोजस्वच्छिरो[2] अस्तु मे ।
ओजस्वान्विश्वतः प्रत्यङ्ङोजसा संपिपृग्धि मा ॥
पयस्वदस्तु मे मुखं पयस्वच्छिरो[3] अस्तु मे ।
पयस्वान्विश्वतः प्रत्यङ् पयसा संपिपृग्धि मा ॥
आयुष्मदस्तु मे मुखमायुष्मच्छिरो[3] अस्तु मे ।
आयुष्मान्विश्वतः प्रत्यङ्ङायुषा संपिपृग्धि मा ॥

इदमहं गायत्रेण छन्दसा त्रिवृता स्तोमेन रथंतरेण साम्नाग्निना देवतया तेजस्ते वर्च आददे ऽसा इदमहं त्रैष्टुभेन छन्दसा पञ्चदशेन[4] स्तोमेन बृहता साम्नेन्द्रेण देवतयौजस्ते क्षत्रमाददे ऽसा इदमहं जागतेन छन्दसा सप्तदशेन[5] स्तोमेन वैरूपेण साम्ना विश्वैर्देवैर्देवतया प्रजां ते पुष्टिमाददे ऽसा इदमहमानुष्टुभेन छन्दसैकविंशेन स्तोमेन वैराजेन साम्ना प्रजापतिना देवतयायुस्ते दीर्घायुत्वमाददे ऽसौ ॥

इममग्न आयुषे वर्चसे कृधि तिग्ममोजो वरुण संशिशाधि ।
मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा[6] जरदष्टिर्यथासत् ॥
विश्वकर्मा विश्वदेवो विश्वजिद्विश्वदर्शतः[7] ।
तं त्वा घृतस्य धारया[8] श्रैष्ठ्याय समसूषत ॥
यतो वातो मनोजवा यतः क्षरन्ति सिन्धवः ।
तासां त्वा सर्वासां रुचाभिषिञ्चामि वर्चसा ॥

---

[1] Ch स्वच्छिरो; W 2 undeutlich; T 1 und Brl स्वच्छिरो [2] Ch स्वच्छिरो; W 2 स्वजिछरो [3] So T 1 und Brl; Ch स्वच्छिरो; W 2 च्छिरो [4] W 2 पञ्चदशेन [5] W 2 सप्तदशेन [6] So T 1 und Brl fol. 120; W 2 देवा; cf. oben Kāth. 11, 7; Māitr. S. 2, 3, 4; TBr. 2, 7, 7, 5. [7] Ch दर्शितः [8] Von hier ab der Text in W 2 nicht mehr vorhanden, weil abgebrochen.

अभि त्वा वर्चसासिचं यज्ञेन पयसा सह ।
यथासो[1] मित्रवर्धनस्तथा त्वा सविता करत् ॥
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्समुद्रव्यचसं[2] गिरः ।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥

अपां यो द्रवणे रसस्तेनाहमिमममुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रं तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चाम्यपां य ऊर्मौ रसस्तेनाहमिमममुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमोजसे क्षत्रायाभिषिञ्चाम्यपां यो मध्ये रसस्तेनाहमिमममुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रं प्रजायै पुष्ट्या अभिषिञ्चाम्यपां[3] या यज्ञिया तनूस्तयाहमिमममुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमायुषे दीर्घायुत्वायाभिषिञ्चामि ॥ १५ ॥ cf TBr 2, 7, 7

इति श्रीमद्यजुषि काठके चरकशाखायामोरिमिकायां चातुर्मास्यानि नाम षट्त्रिंशं स्थानकं संपूर्णम्[4] ॥

प्रजापतिः प्रजा असृजत ता अस्माद्व्याक्रामंस्ता अकामयतोप मावर्तेरन्निति स एतमोदनमपचत्सो ऽन्नमेव भूत्वैकधातिष्ठत्ता अन्यत्रान्नमवित्त्वा ताः प्रजापतिमेवैकधान्नाद्यायाभिसमावर्तन्त यावतीर्ह वै कियतीश्च प्रजा वाचं वदन्ति ता एनमेकधान्नाद्यायाभिसमावर्तन्ते य एतेनाभिषिच्यते स एष ओदनसवो[5] राडसि विराडसीत्येता-

[1] So T1 und Brl fol 120, in Ch यथासो, TBr 2, 7, 15, 4 यथासा [2] T1 und Brl fol 120 समुद्रव्यचसं, desgl. Ch, ohne Accent, aber vgl RV 1, 11, 1 [3] So corr T1 und Brl fol 120 पुष्ट्याभिषि॰, Ch पुष्ट्याभिषि॰ [4] So die Unterschrift des Capitels in Ch [5] *So zweifelnd corrigirt*, Ch ओदनसवो, cf die Unterschrift des Cap

नीव सर्वाणि भवन्ति सर्वाण्यन्नानि भवन्ति सर्वे पुरुषास्सर्वाण्येवान्नान्यवरुन्द्धे सर्वान्पुरुषान्हिरण्यं ब्रह्मणे[1] ददाति तेजस्तेन परिक्रीणाति तिसृधन्वं[2] राजन्यायौजस्तेन परिक्रीणात्यष्ट्रां वैश्याय पुष्टिं तेन परिक्रीणाति माषकमण्डलुं शूद्रायायुस्तेन परिक्रीणाति हिरण्यमाबध्नाति तदेवास्मिन्प्रतिष्ठापयति ॥ यदोदनं प्राश्नात्येतदेव सर्वमवरुध्य तदस्मिन्नेकधा दधाति रोहिण्यां क्रियते यद्ब्राह्मणा रोहिणी तस्माद्ब्रुवन्ति सूर्ये क्रियत एतद्वै प्रजायते रूपं यर्ह्येष उदेति सर्वा वा एतं प्रजाः प्रतिनन्दन्ति दिदृक्षेण्यो[3] ह दर्शनीयो भवत्यवेत्यो ऽवभृथा३ नावेत्या३[4] इति मीमांसन्ते यद्दर्भपिञ्जूलैः पावयति तदेवावैति तदु नावैत्युभयमेव करोति द्वाभ्यां पावयति द्वे सत्यं चानृतं च सत्येनैवास्यानृतं पावयति द्वौ प्राणश्चापानश्च त्रिभिः पावयति त्रिपत्या हि देवा अथो त्रयो हि प्राणाः प्राणो व्यानो ऽपानः पञ्चभिः पावयत्यपां वा एतदोषधीनां तेजो यद्दर्भा यद्दर्भपिञ्जूलैः पावयत्यपामेवैनमोषधीनां तेजसाभिषिञ्चति ॥ १ ॥ cf. TBr 2, 7, 9.

आग्नेयो ऽष्टाकपालस्सौम्यश्चरुस्सावित्रो[5] ऽष्टाकपालो बार्हस्पत्यश्चरुरग्नीषोमीय एकादशकपालस्सारस्वतश्चरुर्वारुणो यवमयो दशकपालो द्यावापृथिव्य एककपालो यदाग्नेय आग्नेयो हि ब्राह्मणो यस्सौम्यस्सौम्यो[6] हि ब्राह्मणो यत्सावित्रः[7] प्रसवायैव सावित्रो यद्बार्हस्पत्यो ब्रह्म वै बृहस्पतिरेतद्ब्राह्मणस्य वाक्पत्यं यदग्नीषोमीय आग्नेयो हि सौम्यो ब्राह्मणस्तौ[8] यदा संगच्छेते अथ वीर्यावान्भवति यत्सारस्वतो वाग्वै सरस्वत्येतद्ब्राह्मणस्य प्रत्यक्षं वाक्पत्यं[9] यद्वारुणो निर्वरुणत्वायैव[10] वारुणो यो ह्येव कश्च सन्सूयते स वारुणो यद् द्या-

---

[1] So corr. Ch ब्रह्मणो [2] So corr. Ch तिसृजधन्वी; TBr. 2, 7, 9, 2 = Corr. [3] So corr. Ch दिदृक्षिण्यो [4] So corr. Ch भवत्येयत्यो वभृथा ३ नावित्या ३; cf. TBr. 2, 7, 9, 5 भवेत्यो ऽवभृथां ३ ना ३ इति [5] So corr. Ch सौम्य° [6] So corr. Ch सौम्यास्सौ° [7] So corr. Ch सावित्राः [8] So corr. Ch ब्रह्मस्तौ [9] So corr. Ch वाक्पत्वं [10] So corr. Ch त्वायैव; cf. TBr. 2, 7, 3, 2.

वापृथिव्य इन्द्रो वै वृत्राय वज्रमुदयच्छत्त तं द्यावापृथिवी नान्वमन्येतां तमेतेन भागधेयेनान्वमन्येतां वज्रस्य वा एषो ऽनुमानो ऽनुमतवज्रस्सूयाता इति यदष्टौ हवींष्यष्टाक्षरा गायत्री ब्रह्म गायत्री ब्रह्मणा सूयाता इति कृष्णाजिने ऽध्यभिषिच्यत[1] ऋक्सामयोर्वा एतद्रूपं यत्कृष्णाजिनमृक्सामयोरेवाध्यभिषिच्यते हिरण्येन घृतमुत्पुनाति तेजस एव रुचे यद्घृतेनाध्यभिषिच्यते तेन ह श्रैष्ठ्यं प्राप्नोति ॥ २ ॥ cf TBr 2,7,3

आग्नेयो ऽष्टाकपालः पौष्णश्चरुस्सावित्रो ऽष्टाकपालो वैश्वदेवश्चरुस्त्वाष्ट्रो ऽष्टाकपालो वारुणो यवमयो दशकपालो मारुतस्सप्तकपालो मारुती पृश्निर्वशा यदाग्नेय आग्नेया एवाग्नेयो ऽग्निमुखा ह्युद्धियत्पौष्णः पुष्टिर्वै पूषा पुष्टिर्वैश्यस्य यत्सावित्रः प्रसवायैव सावित्रो यद्वैश्वदेवो वैश्वदेवो हि वैश्यो यत्त्वाष्ट्रस्त्वष्टा हि रूपाणि विकरोति यद्वारुणो निर्वरुणत्वायैव वारुणो यो ह्येव कश्च सन्सूयते स वारुणो यन्मारुतो मारुतो हि वैश्यो यत्सप्त हवींषि सप्त हि मरुतो ऽथैषा मारुती पृश्निर्वशा तस्या आमये समवत्तं भवत्यथाभिषिच्यते विड्वै मरुतो विश एव मध्यतो ऽभिषिच्यते तस्मादेष विशः प्रियो विशो हि मध्यतो ऽभिषिच्यत ऋषभचर्मे[2] ऽध्यभिषिच्यते स हि प्रजनयिता प्रजननाय दध्नाभिषिच्यते मृदु दधि मृदुमेवैनं करोति ॥ 3 ॥
cf TBr 2,7 2

नराशंसस्य महिमानमेषामुपस्तोषाम[4] यजतस्य यज्ञैः ।
ये सुक्रतवश्शुचयो धियंधास्स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या ॥

यो वै सोमेन यजते स देवसवो यः पशुना यजते स देवसवो य इष्ट्या यजते स मनुष्यसव एतं वै पृथी देवा अन्वमन्यन्त तेनैनमभ्यषिञ्चन्सो ऽप्यारण्यानां पशूनामसूयत यावतीर्ह वै कियतीश्च प्रजा वाचं वदन्ति तासां सर्वासां सूयते य एतेनाभिषिच्यते निहुत्यैवैतद्-

---

[1] So corr mit Caland, Ch ऽभिषि°, ebenso Zeile 5 [2] So corr Ch यश्यो cf aber oben 37, 2 und TBr 2 7, 2, 2 a A [3] Dasselbe TBr 2, 7, 2 2
[4] So corr Ch स्तोषाम, cf RV 7, 2, 2, Maitr ▮ 4, 13, 3, TBr 3, 6, 3 1

भिषिच्यते[1] नाराशंस्यर्चा मनुष्या हि नराशंसो यत्किंच राजसूये ऽनुत्तरवेदिकं[2] तदत्र सर्वं क्रियते ऽथैष मारुत एकविंशतिकपालस्तस्याग्नये समवत्तं भवत्यथाभिषिच्यते त्रिवं सप्त सप्त मरुतो विशमरुतो विश एव मध्यतो ऽभिषिच्यते तस्मादेष विशः प्रियो विशो हि मध्यतो ऽभिषिच्यते ॥ ४ ॥ cf. TBr. 2, 7, 5.

सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः[3] ।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व ॥

न वै सोमेन सोमस्य सवो ऽस्त्यभिषिक्तो हि सोमो घ्नन्ति हि सोमं न हि हतस्सूयते सौम्या[4] त्रिष्टुभाभिषिच्यते सा हि सोमसवस्सौम्यां सूतवशायामध्यभिषिच्यते सा हि रेतोधा रेतस्सोमो यत्किंच राजसूये ऽन्यत्स्तोमेभ्यस्तदत्र सर्वं क्रियते ऽथैष मारुत एकविंशतिकपालस्तस्याग्नये समवत्तं भवत्यथाभिषिच्यते त्रिवं सप्त सप्त मरुतो विशमरुतो विश एव मध्यतो ऽभिषिच्यते तस्मादेष विशः प्रियो विशो हि मध्यतो ऽभिषिच्यते ॥ ५ ॥ cf. TBr. 2, 7, 4.

यद्वै राजसूयं स वरुणसवो यद्वाजपेयं स सम्राट्सवः प्रजापतिस्साम्राज्यं परमेष्ठी स्वाराज्यं गौरिव स एष गोसवो यथेव ह गौरेवमिव भवति य एतेनाभिषिच्यते प्रतिदुहाभिषिच्यते तद्धि स्वाराज्यं बृहत्साम तद्धि स्वाराज्यमयुतं दक्षिणा तद्धि स्वाराज्यं पवमाने कण्वरथंतरं प्रोहन्ति[5] दक्षिणत आहवनीयस्यानुद्धते ऽभिषिच्यत इयं वै गौरस्या एवानन्तर्हितो[6] ऽभिषिच्यते षट्त्रिंशस्स्तोमो[7] भवति पशुस्तोमो वा एष तेन गोसवः ॥ ६ ॥ cf TBr. 2, 7, 6.

त्रिवृत्स्तोमो ब्रह्मवर्चसं वै त्रिवृद्ब्रह्मवर्चसेनैवाभिषिच्यते[8] रथंतरं

---

[1] cf. TBr. 2. 7. 5. 2 निवृत्य यायेत [2] So corr. mit Caland; Ch नोतर॰ cf. TBr. 2, 7. 5, 2 यत्किञ्च राजसूयमनुत्तरवेदीकं [3] Die Sylbe ऽ fehlt in Ch; cf. RV 1, 91, 18. [4] So corr. Ch सोम्या [5] So Ch, resp. प्रोहंति; TBr. 2, 7, 6, 1 hat कण्वरथंतरं भवति [6] So corr. mit Caland; Ch एवानन्त॰ [7] So corr. Ch स्तोमो [8] So corr. Ch सेवा॰

साम ब्रह्मवर्चसं वै रथंतरं ब्रह्मवर्चसेनाभिषिच्यते ऽग्निष्टोमस्तोमो[1] ब्रह्मवर्चसं वा अग्निष्टोमो ब्रह्मवर्चसेनैवाभिषिच्यते प्रवर्ग्यः प्रवृज्यते ब्रह्मवर्चसं वै प्रवर्ग्यो ब्रह्मवर्चसेनैवाभिषिच्यते परिस्रजी होतारुणो मिर्मिरस्त्रिशुक्रिय एतद्वै ब्रह्मवर्चसस्य रूपं रूपेणैव ब्रह्मवर्चसमवरुन्द्ध एकं वा एतत्सवनं यदेकस्तोम. एकं छन्द एकादशैकादशानुसवनं[2] दद्यात्सवनानां व्यावृत्त्यै त्रयस्त्रिंशत्संपद्यन्ते त्रयस्त्रिंशद्देवता देवता एवावरुन्द्धे ऽश्वं चतुस्त्रिंशं ददाति प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशः प्रजापतिमेवाप्नोति बृहस्पतये वै देवा न श्रदद्धत तमेतेन प्रजापतिरयाजयत्ततो ऽस्मै श्रदद्धत स एष बृहस्पतिसवो ब्रह्मवर्चसकाम एतेन यजेत ब्रह्मवर्चसी भवति तस्यैषैव नियतिः[3] प्रजास्सर्वा ब्राह्मणीर्ब्रह्मवर्चसिनीर्भवन्ति[4] ॥ ७ ॥cf TBr 2 7, 1

पञ्चदशस्तोम ओजो वै वीर्यं पञ्चदश[5] ओजसैव वीर्येणाभिषिच्यते बृहत्सामौजो वै वीर्यं बृहदोजसैव वीर्येणाभिषिच्यत उक्थ्यस्तोम[6] ओजो वै वीर्यमुक्थान्योजसैव वीर्येणाभिषिच्यत[7] ऐन्द्रं स्तोत्रं च शस्त्रं च त्रैष्टुभाः पवमाना ओजो वै वीर्यं त्रिष्टुबोजसैव वीर्येणाभिषिच्यत इन्द्रं वै सर्वा मृधस्सर्वा नाष्ट्रास्सर्वाणि रक्षांस्यजिघांसंस्तमेतेन प्रजापतिरयाजयत्स सर्वा मृधस्सर्वा नाष्ट्रास्सर्वाणि[8] रक्षांस्यतरदिन्द्रो यजमानो यदेतेन यजते सर्वा एव मृधस्सर्वा नाष्ट्रास्सर्वाणि रक्षांसि तरति स एष इन्द्रसवः ॥ ८[9] ॥

सावीर्हि[10] देव प्रथमाय[11] पित्रे वर्ष्माणमस्मै वरिमाणमस्मै ।

---

[1] So Ch स्तोमो cf TBr 2, 7, 1 1 अग्निष्टोम सोमो भवति [2] So meine Correctur, Ch एकादशैकादशान्यवश्रुनन्दद्या°, cf TBr 2 7, 1, 3 [3] So zweifelnd corr Ch नित्य [4] So Ch ब्राह्मणीर्ब्रह्म° [5] Von पञ्चदश bis zum folgenden पर्ये am Rande eingeschaltet, offenbar zuerst versehentlich ausgelassen [6] So corr Ch zuerst उत्तरस्तोम geschrieben, dann am Rande corrigirt in उत्तया° [7] So corr Ch श्यते [8] Das ganze Stück von रक्षांस्यजिघांसं bis सर्वाणि folgt in Ch hier nochmals, unzweifelhafte Dittographie [9] So corr Ch schreibt ५ [10] Dies Capitel auch in den accentuirten Handschriften T 1 Brl fol 116 119 und W 2 vorhanden [11] TBr 2, 7, 15 1 प्रथमाय

अथास्मभ्यं सवितर्वार्याणि दिवो दिव[1] आसुवा भूरि पश्वः ॥
भूतो भूतेषु चरति प्रविष्टः स भूतानामधिपतिर्बभूव ।
तस्य मृत्यौ चरति[2] राजसूयं स राजा राज्यमनुमन्यतामिदम् ॥
येभिः शिल्पैः[3] पप्रथानामदृंहद्येभिर्द्यामभ्यपिंशत्प्रजापतिः[4] ।
येभिर्वाचं विश्वरूपेभिर्व्ययैस्तेनेममग्न[5] इह वर्चसा समङ्ग्धि[6] ॥
येभिरादित्यस्तपति प्र केतुभिर्येभिस्सूर्यो ददृशे चित्रभानुः ।
येभिर्वाचं पुष्कलेभिरव्ययैस्तेनेममग्न[7] इह वर्चसा समङ्ग्धि[8] ॥
आयं भातु शवसा पञ्च कृष्टीरिन्द्र[9] इव ज्येष्ठो[10] भवतु प्रजानाम् ।
अस्मिन्नस्तु पुष्कलं चित्रभान्वायं पृणातु[11] रजसा विमानम् ॥
यत्ते शिल्पं कश्यप[12] रोचनावदिन्द्रियावत्पुष्कलं चित्रभानु[13] ।
यस्मिन्सूर्या अर्पिताः सप्त साकं तस्मिन्राजानमधि विश्रयेमम् ॥
व्याघ्रो वैयाघ्रे[14] अधि विक्रमस्व दिशो महीः ।
विशस्त्वा सर्वा[15] वाञ्छन्त्वापो दिव्याः पयस्वतीः ॥
या आपो दिव्याः पयसा संबभूवुर्या अन्तरिक्षा[16] उत पार्थिवासः ।
तासां त्वा सर्वासां रुचाभिषिञ्चामि वर्चसा ॥
अभि त्वा वर्चसासिचं[17] यज्ञेन पयसा सह ।
यथासो[18] मित्रवर्धनस्तथा त्वा सविता करत् ॥

---

[1] Brl fol 118 दिवि दिव [2] Brl 118 und W 2 मत्युश्चरति, TBr 2, 7, 15, 2 मत्यौ [3] Ch शल्पै [4] So T 1, Brl 118 पप्रथानाम°, desgl Ch, ohne Accent, W 2 पप्रथानम° [5] Brl 118 und W 2 व्ययैस्ते°, TBr 2, 7, 15 2 विश्वरूपैं समव्ययत् und सेन, Brl मम ohne Accent [6] T 1 Brl 118 und W 2, in Ch समदृधि [7] T 1 und Brl 118 यैस्ते°, W 2 यस्ते, Ch यस्ते, TBr 2 7, 15, 2 पुष्कलेभिरव्ययत् und सेन, Brl 118 मम ohne Accent. [8] T 1, Brl 118 und W 2 समङ्ग्ध, Ch समदिध [9] W 2 कृष्टी°, TBr 2, 7, 15, 3 कृष्णी mit Var कृष्टी [10] So betont Brl 118, in T 1 und W 2 Lücke [11] W 2 पृणातु oder पृणान्तु, cf TBr 2, 7, 15, 3 पृणातु [12] Brl 118 कश्यपो [13] W 2 पुष्कल चित्रभानु° [14] So T 1 und Brl 118; in W 2 व्याघ्रो वैयाघ्रे, Ch व्याघ्र वैयाघ्रे, TBr 2, 7, 15, 3 व्याघ्रो वैयाघ्रो धि [15] So corr. Mss सर्व [16] W 2 रिक्षे, cf TBr. 2, 7, 15, 4 अन्तरिक्ष [17] In Ch und W 2 fehlt सिच, vgl aber auch TBr. 2, 7, 15, 4 [18] Vgl TBr 2, 7, 15, 4 यथासा राष्ट्रवर्धनः

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्समुद्रव्यचसं[1] गिरः ।
रथीतमं रथीनां[2] वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥
अभि प्रेहि[3] वीरयस्वोग्रश्चेत्ता[4] सपत्नहा ।
आतिष्ठ मित्रवर्धनस्तुभ्यं देवा अधिब्रुवन्[5] ॥
आतिष्ठ वृत्रहन्रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी ।
अर्वाचीनं[6] सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ॥
आतिष्ठन्तं[7] परि विश्वे अभूषञ्छ्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः ।
महत्तदस्यासुरस्य नामा विश्वरूपो[8] अमृतानि तस्थौ ॥
अनु त्वेन्द्रो[9] मदत्वनु बृहस्पतिरनु सोमो अन्वग्निरावीत् ।
अनु त्वा विश्वे अवन्तु देवास्सप्त राजानो य उदाभिषिक्ताः[10] ॥
अनु त्वा मित्रावरुणा इहावतामनु द्यावापृथिवी ओषधीभिः ।
सूर्यो ऽहोभिरनु त्वावतु चन्द्रमा नक्षत्रैरनु त्वावीत्[11] ॥
द्यौश्च त्वा पृथिवी च प्रचेतसा यज्ञो बृहद्दक्षिणा त्वा पिपर्तु ।
अनु स्वधा चिकिते[12] सोमो अग्निरनु त्वावतु सविता सवेन ॥
एना व्याघ्रं परिषस्वजानं[13] सिंहं हिन्वन्ति महते धनाय ।
समृज्यन्ते द्वीपिनमप्स्वन्तररुपं[14] नं सुभ्वृत्तस्थिवांसम्[15] ॥ ॥ ९ ॥
cf TBr 2 7 15 und 16, 2 7 8

बोधश्च[16] मा प्रतीबोधश्च पुरस्ताद्गोपायतामस्वप्नश्च मानवद्राणश्च[17]

---

[1] T1 und Brl 119 समुद्रव्यचस, vgl Kaṭh 18 3 36, 15, RV 1, 11, 1, TBr 2, 7, 15, 5 [2] W 2 रथीनां ebenso TBr 2, 7, 15 5 [3] Brl 119 अभिप्रेहि TBr 2, 7, 8 1 अभि प्रेहि [4] So Ch, ohne Accent, T1, Brl 119 und W 2 श्चेत्ता, aber TBr 2 7, 16 1 श्चेत्ता [5] Brl wohl अधिब्रुवन् was TBr 2, 7, 16, 1 [6] W 2 अर्वाचीन cf RV 1, 84, 3 [7] So T1 und Brl 119, in W 2 आतिष्ठं, aber vgl RV 3, 38, 4 [8] W 2 रूपो [9] Brl त्विन्द्रो vgl aber TBr 2, 7, 8, 1 a F [10] So T1 und Brl 119 in Ch य उदाभिषक्ता, W 2 यवोदाभिषिक्ता, vgl TBr 2, 7, 8 2 य उतार्भिषिक्ता [11] TBr 2 7, 8 2 त्वावतु [12] W 2 चिकेते, TBr 2, 7, 8, 2 चिकित्रै [13] Vgl TBr 2, 7, 8, 2 परिषस्वजाना [14] Ch द्वीपेन [15] W 2 अप्स्व सुभ्वृत्त॰, T1 अप्स्व स्थास्त, Brl 119 अप्स्व स्थाभृत्त, Ch अप्स्व सत्यस्त॰, TBr 2, 7, 16 4 समुद्र सुधन्तस्थिवांसं [16] Dies Capitel beruht wieder bloß auf Ch, für den Anfang vgl AV 8, 1, 13 [17] So corr Ch मानवद्राणश्च

दक्षिणतो गोपायतां गोपायमानश्च मा रक्षमाणश्च पश्चाद्गोपायतां जागृविश्चारुन्धती चोत्तराद्गोपायताम् ॥

अनमित्रं नो अधरागनमित्रमुदक्कृधि[1] ।
इन्द्रानमित्रं नः[2] पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि ॥

अनमित्रैरहोभिस्सचीमहि विश्वे देवा अनमित्रा न उपसस्सन्तु निम्रुचः ॥ याष्षडुर्वीः पञ्च प्रदिशस्ता नः[3] पान्तु मित्रधा नो मित्रे दधाता अभयं नो अस्तु ॥

ये रात्रीमनुतिष्ठथ ये च भूतेषु जागृथ ।
पशून्ये सर्वान्रक्षथ[4] ते न आत्मसु[5] जागृत ॥

बोध प्रतीबोधास्वप्नानवद्राण गोपायमान रक्षमाण[6] जागृवे ऽरुन्धति ये देवास्तनूपास्स्थ ते म इह तन्वं पात बोध प्रतीबोधेत्यसौ वा आदित्यो बोधो ऽग्निः प्रतीबोधो[7] ऽस्वप्नानवद्राणेति चन्द्रमा वा अस्वप्नो यः[8] पवते सो ऽनवद्राणो गोपायमान रक्षमाणेत्यहर्वै गोपायमानो रात्री रक्षमाणा जागृवे ऽरुन्धतीति यज्ञो वै जागृविर्दक्षिणारुन्धत्येते[9] वै देवा राष्ट्रभृतस्तानेवेह आत्मनो गोपीथाय ॥ १० ॥

ये[10] राष्ट्रभृतो ये राष्ट्रस्यानुभर्तारस्तेभ्यो राष्ट्रीयः[11] परिदेय इमे वाव ते प्राणास्तेभ्य एवैनं परिददाति तेषामेताः पत्न्यस्तानेता अनु ताभ्यो ऽध्यपि कार्यं ताभ्य एवैतत्क्रियते ता होता[12] अनु पुरोधाकामः कुर्वीत ब्रह्म चैवं क्षत्रं[13] च सयुजौ करोति यदि ब्राह्मणमभिचरेत्स न इदं ब्रह्म पात्विति ब्रूयाद्ब्राह्मणमपि ब्रह्मणि वै क्षत्रं प्रतिष्ठितं ब्रह्मण[14] एवं ब्राह्मणमन्तरेति ताजक्प्रधन्वत्यपरुरुत्स्यमानः कुर्वीत संग्रामे कु-

---

[1] So corr. Ch मुदक्कृधि [2] So corr. Ch इन्द्रानमित्राचः, cf. AV 6, 40, 3. [3] So corr. Ch न पांतु [4] So corr. Ch रक्षथ, cf. AV 19, 48, 5. [5] So corr. Ch आत्मस्व, cf. AV 19, 48, 5. [6] So corr. Ch रक्षमान [7] So corr. Ch स्वन्नो धस्वप्ना॰ [8] So corr. Ch यश्चः [9] So corr. Ch आदित्यो द॰ [10] Dies Capitel auch in T1 vorhanden und darnach accentuirt [11] So T1; Ch राष्ट्रियः aber vgl. weiter unten, desgl. Maitr S. 2, 1, 12. [12] So T1, Ch तास्रेता [13] So T1, Ch क्षत्रम् च [14] So T1, Ch ब्रह्म एव

वीति ये राष्ट्रभृतो[1] ये राष्ट्रस्यानुभर्तारस्तानेवोपासरते ऽस्मै राष्ट्रमनुबिभ्रति य एषां लोकानां द्वन्द्वं राष्ट्रभृतो[2] वेद नास्य राष्ट्रं व्यथते ॥ अग्निश्चास्या[3] मनश्च वायुश्चान्तरिक्षस्य यज्ञश्च सूर्यश्च दिवश्चन्द्रमाश्च रथस्तस्मथस्तं हि भयादपवहति त्रिषप्ताः कवचिनस्त्रिषप्ता निषङ्गिणस्त्रिषप्ता आयुधिनस्तेभ्यो राष्ट्रीयः परिदेय इमे वाव ते प्राणास्तेभ्य एवैनं परिददात्यभितो वा अग्निष्टोमं देवासुरा यत्ता आसन्नग्निष्टोमे देवा उक्थेष्वसुरास्ते[4] देवा यदोक्थान्यागच्छन्यदोक्थान्यभ्यजयन्नथैन्द्रो[5] ऽब्रवीत्कश्चाहं चेदमाहरिष्याव इत्यहं चेत्यब्रवीद्वरुणस्तं वरुणो ऽन्वतिष्ठतेन्द्र आहरत्सो ऽब्रवीत्कश्चाहं चेदमाहरिष्याव इत्यहं चेत्यब्रवीद्बृहस्पतिस्तं[6] बृहस्पतिरन्वतिष्ठतेन्द्र आहरत्सो ऽब्रवीत्कश्चाहं चेदमाहरिष्याव इत्यहं चेत्यब्रवीद्विष्णुस्तं विष्णुरन्वतिष्ठतेन्द्र आहरदेताभिर्वै[7] देवताभिस्सायुज्येन देवा[8] असुराणां राष्ट्रमाददतैताभिरेव देवताभिस्सायुज्येन भ्रातृव्याद्राष्ट्रमादाय तद्राष्ट्रं कृत्वा ये राष्ट्रभृतो ये राष्ट्रस्यानुभर्तारस्तेभ्य एनत्संप्रयच्छत्येतद्विभृतितन्मा[9] रिषदित्यसौ वा आदित्यो राष्ट्रमृतवो राष्ट्रभृतस्तेभ्य एवैनत्संप्रयच्छत्येतद्विभृतितन्मा[10] रिषदिति य एष सप्तमः प्रजापतिरेवैष यन्मध्ये जुहुयाद्व्यवधून्वीतैनं[11] परोगव्यूति होतव्यस्तथा ह्येनं न व्यवधूनुत ऊर्ध्वस्तिष्ठञ्जुहोत्यूर्ध्वो हि तिष्ठन्वीर्यावत्तरः पूर्णया स्रुचा जुहोति पूर्णः प्रजापतिः प्रजापतिमेवाप्नोति ॥ ११ ॥

देवाश्च[12] वा असुराश्च समावदेव यज्ञे ऽकुर्वत यदेव देवा अकुर्वत तदसुरा अकुर्वत ते देवा एतान्राष्ट्रभृतो ऽपश्यंस्तेषामग्निं चौषधीश्च

---

[1] राष्ट्रभृतो in T1 ohne Accent, der Accent ergänzt [2] राष्ट्रभृतो in T1 ohne Accent, der Accent ergänzt. [3] So T1, in Ch ग्निश्चास्या [4] So T1, in Ch उक्थेष्व° [5] So T1, in Ch यदोक्थान्यागच्छन्यदोक्थान्य° [6] T1 °द्बृह°, Ch पतिस्स्य [7] T1 हरत् ॥ एता° [8] Ch दिवा [9] So T1, Ch विभृते° [10] Die ganze Stelle von रिषदित्यसौ bis hierher folgt in Ch nochmals (Dittographie), T1 = Text [11] So corr Ch व्यवधूर्वीत, T1 व्यवधून्वीतैनम्परो° [12] Dies Capitel wiederum nur nach Ch, ebenso die folgenden.

प्रथमेनावृञ्जत सूर्यं च मनांसि च द्वितीयेन चन्द्रमसं च नक्षत्राणि च तृतीयेन यज्ञं च दक्षिणां च चतुर्थेन ते ऽसुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्रा यत्किंचाकुर्वत तां कृत्यामेवाकुर्वत तस्मान्नादक्षिणं गृहे हविष्कुर्वीत यत्कुरुते कृत्यां कुरुते प्रजापतिं चर्कसामानि च पञ्चमेन वायुमप ओषधीरूर्जं षष्ठेनैतावद्वावास्ति[1] यावद्देवास्ति तदेषामेतैरवृञ्जत य एष सप्तथः प्रजापतिरेवैष तेनैनान्प्राणुदन्त ततो देवा अभवन्परासुरा अभवन्नेतैर्यजेत भ्रातृव्यवानेतावद्वावास्ति यावदेवास्ति तदेतैर्भ्रातृव्यस्य वृङ्क्ते य एष सप्तथः प्रजापतिरेवैष तेनैनं प्रणुदते भवत्यात्मना परास्य भ्रातृव्यो भवत्येतैर्याजयेद्राजानं[2] संग्रामे संयत्त एतावद्वावास्ति यावदेवास्ति तदेषामेतैर्वृङ्क्ते य एष सप्तथः प्रजापतिरेवैष तेनैनान्प्रणुदते जित्यै जयत्येवैतैर्याजयेद्यद्राष्ट्रं[3] शिथिलमिवावहतं स्यात्तेषां यावन्तो रथास्स्युस्तान्सर्वान्योजयित्वा यश्श्रेष्ठस्स्यात्तस्य दक्षिणं रथचक्रं प्रवृह्य नाड्यां[4] जुहुयाद्वीर्यं वै रथो वीर्येणैवैषां राष्ट्रं विसंश्यन्ति रथचक्रं विगृह्णन्ति वज्रो वै रथो वज्रेणैवैषां[5] पाप्मानं विगृह्णन्ति यदि क्लृप्ताहुतिरत्येति कल्पत एभ्यो यस्य नाड्यां जुहोति स दक्षिणा समृद्धै ॥ १२ ॥ cf. TS 3, 4, 8.

को ऽसि कतमो ऽसि को नामासि कस्मै त्वा कतमस्मै त्वा काय त्वा कामस्य त्वासन्नसा अपिदधामि स त्वं नो देव गायत्रेण छन्दसाहे परिपाहि मृडो ऽसि मृडस्ते द्विपदे चतुष्पद आदित्यो ऽसि वृष्णो अश्वस्य रेतो देवानां यातुरसि यातुर्मे ऽस्यसुमद्धि तं जहि[6] स त्वं नो देव त्रैष्टुभेन छन्दसा रात्र्यै परिपाहि मृणो ऽसि मृणामुष्य द्विपदश्चतुष्पदस्स्कम्भो ऽसि वरुणस्य राज्ञो वरुणस्य पाशस्तो ऽमुमहे[7] बधान श्लेष्को ऽसि निर्ऋत्याः पाशस्तो ऽमुं रात्र्यै बधानाग्नये वीतमन्यवे स्वाहा॥

---

[1] So corr. Ch वास्ति [2] So corr. Ch भवत्येतैर्या° [3] So corr. Ch जयत्यैवैतै°
[4] Vgl. TS 3, 4, 8, 3. [5] So corr. Ch यज्रेनै° [6] Vgl. dazu unten Cap. 14 dasselbe. [7] So corr. Ch ऽमुमहे; doch vgl. das Folgende.

न्यो[1] नानुपश्येत्तदेतान्निदधीत भ्रातृव्यस्याननुकशात्यै भवत्यात्मना परास्य भ्रातृव्यो भवति पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहेति चय इमे लोका एभ्य एवैनं लोकेभ्यः परिददाति कामाय स्वाहेत्यायुर्वै परमः काम आयुरेव तेन स्पृणोति स्वभाय स्वाहेति या[2] एवैनं स्वपन्तं नाष्ट्रा[3] दिप्सन्ति स्वप्न[4] एनं ताभ्यः पात्यंहसे स्वाहा रात्र्यै स्वाहेति द्वौ वा ऋतू अहश्च रात्री च ताभ्यामेवैनं परिददाति सप्तैता आहुतीर्जुहोति सप्त प्राणास्तानेवास्मिन्दधाति तानस्मिन्नधि वियातयति तानस्मादनपगान्करोति ॥ घृतेनाश्मानमनक्त्येष ह्येतर्ह्येतस्यात्मा तेजो घृतं यावानेवास्यात्मा तं तेजसानक्ति सर्वतो ऽनक्ति सर्वत एवैनं तेजसा समर्धयति तृप्रस्त्वं तृप्रो[5] ऽहमिति प्राणानेवास्यैतन्महिम्नो व्याचष्टे प्राणा हि महिमानो द्यौर्मे पिता पृथिवी मे माता सूर्यो मे चक्षुर्वातो मे प्राण इत्येताभ्य एव देवताभ्य आत्मानं परिददात्यस्तृतो[6] नामाहमस्मि स इदं द्यावापृथिव्योरात्मानं[7] परिदद इति द्यावापृथिव्योरेवात्मानं परिदत्ते[8] तयोर्मध्ये[9] तयोः पराक्रम इति यो वा अनयोः पराक्रमते न स[10] व्यथते ऽनयोरेव पराक्रान्त[11] गोपीथाय पिपृतं मा मां मा[12] हिंसिष्टमित्यात्मनो ऽहिंसायै पाहि द्विषः पाहि रिपः[13] पाह्यदेव्या अभिशस्त्या इत्याशिषमेवाशास्ते ॥ सर्वतो ऽश्मानं परिहरत्येष ह्येतं[14] सर्वतः प्रतीयात्तं[15] लोष्टमुद्रजत्येतावान्ह्यात्मा बाहुमात्रमवटं खनत्येतावान्हि पुरुषस्तमवधायाथाश्मानमध्य[16] हिरण्यमस्त्या एवैनमुत्तरार्धे निदधात्यनिखातो भवति नाभिं प्रति निखनति नाभिर्वै प्राणान्दाधार ये चोर्ध्वा ये चावाञ्चः प्राणानां[17] धृत्यै हिर-

---

[1] Brl यशान्यै नान्वयशे· [2] So Ch, nur ohne Accent, T1 und Brl य [3] So corr. Ch स्वपन्तनाप्द्रा, T1 und Brl स्वपन्तनाद्रा [4] Ch स्वप्ना [5] Accent corrigut, T1 तृप्तो य·, Brl तृप्तो य [6] Brl दधात्य· [7] So T1 und Brl, Ch थ्योनात्मान [8] Brl परिधत्ते [9] मध्ये ohne Accent in T1 und Brl [10] Brl स व्ययते [11] Brl पराक्रमेत्त [12] Brl पिपृतंमामा मा [13] Ch रिप्य [14] So T1 und Brl, Ch होते [15] So T1 und Brl, auch Ch, ohne Accent, यातीयात [16] So T1 und Brl, Ch यदाया· [17] So T1 und Brl, Ch प्राणान्धृत्यै

एयेन सैंस्पर्शयत्यमृतं वै हिरण्यममृतेनैवैनं संदधात्युद्धांचमुन्नयन्नीयांसमित्येतानि वा अस्य निखनेत्तान्येवोद्धरत्यात्ममात्री[1] वेदिर्भवत्यात्ममात्री हि वर्म यन्नात्ममात्री स्यान्नात्मने क्रियेतैतावती[2] पृथिवी यावती वेदिरस्या एवैतदन्तेषु पुरो ऽधित्त देवपुरा एवाकृतायो एता एव देवता एतासां दिशां परस्या अकृत गोपीथाय ॥ १६ ॥

ऋषयो वा इन्द्रं प्रत्यक्षं नापश्यंस्तं वसिष्ठ एव प्रत्यक्षमपश्यत्सो ऽबिभेदितरेभ्यो मर्षिभ्यः प्रवक्ष्यतीति सो ऽब्रवीद्ब्राह्मणं ते वक्ष्यामि यथा त्वत्पुरोहिताः प्रजाः प्रजनिष्यन्ते ऽथ मेतरेभ्य ऋषिभ्यो मा प्रवोच इति तस्मा एतान्स्तोमभागानब्रवीत्ततो वसिष्ठपुरोहिताः प्रजाः प्राजायन्त स्तोमो वा एतेषां भागस्तत्स्तोमभागानां स्तोमभागत्वं रश्मिरसि क्षयाय त्वा क्षयं जिन्वेति क्षयो वै देवा देवेभ्य एव यज्ञं प्राह प्रेतिरसि धर्मणे त्वा धर्मं जिन्वेति धर्मो मनुष्या मनुष्येभ्य एव यज्ञं प्राहान्वितिरसि[3] दिवे त्वा दिवं जिन्व संधिरस्यन्तरिक्षाय त्वान्तरिक्षं जिन्व प्रतिधिरसि पृथिव्यै त्वा पृथिवीं जिन्वेति त्रय इमे लोका एभ्य एव लोकेभ्यो यज्ञं प्राह विष्टम्भो ऽसि वृष्ट्यै त्वा वृष्टिं जिन्वेति वृष्टिमेवावरुन्द्धे प्रवास्यनुवासीति मिथुनमेव करोत्युशिगसि वसुभ्यस्त्वा वसूञ्जिन्व[4] प्रकेतो ऽसि रुद्रेभ्यस्त्वा रुद्राञ्जिन्व[5] सुदितिरस्यादित्येभ्यस्त्वादित्याञ्जिन्वेत्यष्टौ[6] वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्या वाग्द्वात्रिंशी स्वरस्त्रयस्त्रिंशस्त्रयस्त्रिंशद्देवता देवताभ्य एव यज्ञं प्राहौजो[7] ऽसि पितृभ्यस्त्वा पितॄञ्जिन्वेति देवानेव पितॄननुसंतनोति तन्तुरसि प्रजाभ्यस्त्वा प्रजा जिन्वेति प्रजा एव पशूननुसंतनोति पृतनाषाडसि पशुभ्यस्त्वा पशूञ्जिन्वेति प्रजा एव पशूननुसंतनोति[8]

---

[1] Ch निखनेतन्ये [2] So T1 und Br1 Ch क्रियतेता° [3] So corr Ch प्राहा न्वितिरसि [4] Ch वसू जिन्व [5] Ch रुद्रा जिन्व erste Hand रुद्र [6] So corr Ch सुदितिरस्यदित्येभ्यस्त्वादित्य जि° [7] So corr Ch प्राहोजा [8] So corr und umgestellt mit Caland, Ch तनु प्रतानायडसि पशुभ्यस्त्वा पशूञ्जिन्वेति प्रजा एव पशूननुसंतनोति प्रजाभ्यस्त्वा प्रजा जिन्वेति प्रजा एव पशूननुसतोति ॥ cf Kāth 17, 7 Gop Br 2 2 13

रेवदस्योषधीभ्यस्त्वौषधीर्जिन्वेत्योषधीष्वेव पशून्प्रतिष्ठापयत्यभिजिदसि युक्तग्रावेन्द्राय त्वेन्द्रं जिन्वेति वज्रो वै षोडशी व्यावृत्तो ऽन्यैर्वज्रस्तस्मादेषो ऽन्यैर्व्यावृत्तो ऽधिपतिरसि प्राणाय त्वा प्राणं जिन्वेति प्राणमेवावरुन्द्धे धरुणो ऽस्यपानाय त्वापानं जिन्वेत्यपानमेवावरुन्द्धे संसर्पो ऽसि चक्षुषे त्वा चक्षुर्जिन्वेति चक्षुरेवावरुन्द्धे वयोधा असि श्रोत्राय त्वा श्रोत्रं जिन्वेति श्रोत्रमेवावरुन्द्धे ॥ एतद्वै पुरुषमकल्पातः प्राणानुपैति प्रजापतिमेव त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा संवृदसि संवृते त्वा प्रवृदसि प्रवृते त्वानूवृदस्यनूवृते त्वेति मिथुनमेव करोति संरोहो ऽसि विरोहो ऽसि प्ररोहो ऽस्यनूरोहो[1] ऽसीति प्रजापतिरेव वसुको ऽसि वस्यष्टिरसि वेषश्रीरसीति प्रतिष्ठितिरेव देवस्य सवितुः प्रसवे बृहस्पतये स्तुतेति यद्धवै सविता देवेभ्यः प्रासुवत्तेनार्ध्नुवन्सवितृप्रसूता[2] एव स्तुवन्त्यृध्नुवन्ति[3] यस्यैवं विदुषो यस्यैवं विद्वान्स्तोमभागैर्ब्रह्मा भवति वसीयान्भवति ॥ १७ ॥

cf oben 17, 7, Gop Br 2, 2 13 und 14, TS 3 5 2

स्वाद्वीं त्वा स्वादुना तीव्रां तीव्रेणामृताममृतेन[4] मधुमतीं मधुमता सृजामि सं सोमेन सोमो[5] ऽस्यश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे[6] पच्यस्व ॥

परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।
दधन्वान्यो नर्यो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥[7]
वायुः पूतः पुनातु ते ॥
ब्रह्म क्षत्रं पवते तेज इन्द्रियं सुरया सोमस्सुत[8] आसुतो मदाय ।
शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि रसेनान्नं यजमानाय धेहि ॥

---

[1] So corr Ch स्यनूरुहो [2] So corr Ch नार्ध्नुवन्त्स° [3] Ch ऋत्यृध्नु° [4] So corr Ch तीव्रा तीव्रेणामृतममृतेन, cf oben 12 9 a A, Mâitr S 2 3, 8 a A [5] So corr Ch सोम स्यश्वि°, cf oben 12, 9 a A, Mâitr S 2, 3, 8, 3, 11, 7 [6] So corr Ch सुत्राम्णो [7] Vgl RV 9, 107, 1, Mâitr S 3 11, 7 [8] So corr Ch सुता, cf. Mâitr S 3, 11 7

कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुत भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः ॥[1]

उपयामगृहीतो ऽस्यश्विभ्यां त्वा जुष्टं गृह्णामि सरस्वत्या इन्द्राय सुत्राम्ण एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा ॥

नाना हि वां देवकृतं सदस्कृतं मा संसृक्षाथां परमे व्योमन् ।
सुरा त्वमसि शुष्मिणी सोम एष मा मा हिंसीस्स्वं योनिमाविशन् ॥[2]

उपयामगृहीतो ऽस्याश्विनं तेजस्सारस्वतं वीर्यमैन्द्रं बलमेष ते योनिर्मोदाय त्वानन्दाय त्वा महसे त्वा ॥

या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं[3] च रक्षति ।
श्येनं पतत्रिणं सिंहं सोमं[4] पात्वंहसः ॥

संपृचस्स्थ[5] सं मा भद्रेण पृङ्क्त विपृचस्स्थ वि मा पाप्मना पृङ्क्त ॥ १८ ॥ cf. oben 12, 9; Maitr. S. 2, 3, 8; 3, 11, 7.

इति श्रीमद्यजुषि काठके चरकशाखायामोरिमिकायां सचा नाम सप्तत्रिंशं[6] स्थानकं संपूर्णम् ॥[7]

---

[1] Vgl RV 10, 131, 2, Mâitr. S 1, 11, 4 [2] Vgl Mâitr. S. 2, 3, 8. [3] So corr. Ch एकां, cf Mâitr. S 3, 11, 7 [4] So Ch; cf Mâitr S 3, 11, 7. [5] So corr. Ch संपृजास्स्थ [6] So corr. Ch सप्तत्रिंशे [7] So die Unterschrift des Capitels in Ch

सोमो[1] राजामृतं सुतं ऋजीषेणाजहान्मृत्युम्।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु॥

सोममद्भ्यो व्यपिबच्छन्दसा[2] हंसः शुचिषत्।
ऋतेन[3] सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु॥

अद्भ्यः क्षीरं व्यपिबत्क्रुङ्ङाङ्गिरसो[4] धिया।
ऋतेन[5] सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु॥

अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्[6]।
ऋतेन[7] सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु॥

रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम्।
गर्भो जरायुणावृत उल्बं जहाति जन्मना।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु॥

वेदेन रूपे व्यपिबत्सुतासुतौ[8] प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु॥

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते[9] प्रजापतिः।

---

[1] Dies Capitel und der Anfang des folgenden nach T1 und Brl accentuirt auch in W1 vorhanden [2] व्यपिब ohne Accent in T1 und Brl, der Accent ergänzt, cf. den dritten Vers [3] In T1 und Brl hier nur ऋतेन, das Weitere des Verses ist offenbar zu ergänzen [4] Der Accent ergänzt, T1 व्यपिबत्कुङ्गिरसो, Brl व्यपिबत्कुङ्गिरसो, Ch क्रुङ्° [5] In T1 und Brl nur ऋतेन, das Weitere des Verses zu ergänzen [6] In T1 und Brl hier व्यपिबत् richtig accentuirt. [7] In T1 und Brl nur ऋतेन, so auch in den folgenden Versen [8] Accent ergänzt, in T1 und Brl व्यपिबत् ohne Accent. [9] Accent ergänzt, in T1 und Brl व्याकरोत् ohne Accent

अथग्रहामनृते ऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु ॥
दृष्ट्वा परिस्रुतो रसं शुक्रेण शुक्रं व्यपिबत्पयस्सोमं प्रजापतिः ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु[1] ॥ ॥ १ ॥

cf. Mâitr. S. 3, 11, 6; TBr. 2, 6, 2; VS 19, 72—79.

सुरावन्तं[2] बर्हिषदं सुवीरं यज्ञं हिन्वन्ति महिषा नमोभिः ।
दधानास्सोमं दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं[3] यजमानास्स्वर्काः ॥
यस्ते रसस्संभृत ओषधीषु सोमस्य शुष्मस्सुरया सुतस्य ।
तेन जिन्व यजमानं मदेन[4] सरस्वतीमश्विना इन्द्रमग्निम् ॥
यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय ।
इमं तं शुक्रं[5] मधुमन्तमिन्दुं[6] सोमं राजानमिह भक्षयामि ॥
यदत्र रिप्तं रसिनस्सुतस्य यदिन्द्रो अपिबच्छचीभिः ।
अहं तदस्य मनसा शिवेन सोमं राजानमिह भक्षयामि ॥[7]

पितृभ्यस्स्वधायिभ्यस्स्वधा नमः पितामहेभ्यस्स्वधायिभ्यस्स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यस्स्वधायिभ्यस्स्वधा नमो ऽक्षन्पितरो ऽमीमदन्त पितरो ऽतीतृपन्त पितरः पितरश्शुन्धध्वम् ॥
पुनन्तु[8] मा पितरस्सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः ।
पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा ॥

---

[1] Dieser Halbvers nur in W1 vollständig, T1 und Brl haben nur ऋतेन; Ch liest ऋतेन सत्यमिन्द्रियमिदं पयो मतं मधु [2] Der Anfang des Capitels in T1 und Brl vorhanden; darnach accentuirt. [3] So corr., nach Anleitung von Mâitr. S. 3, 11, 7; cf. auch den folgenden Vers; Ms मदेमेन्द्रं, Ch so ohne Acc. [4] Ch यजमानस्मदेन; W1 यजमानं मदेम; T1 und Brl यजमानं मदेम [5] Brl इमंन्ते शुक्रं; T1 ते शुक्रं; Accent corrigirt. [6] So corr.; Mss. मिन्द्रं, resp. Ch ohne Acc. [7] Bis hierher nach T1 und Brl accentuirt; T1 geht dann weiter auf Kâth. 13, 16 über; auch Brl bricht hier ab. [8] Von hier ab die Accente nach T7 fol. 33 gesetzt, collationirt mit Brl fol. 91.

पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः ।
पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥
अग्न आयूंषि पवसे ॥[1]
पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि[2] मा ॥
पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् ।
अग्ने क्रत्वा क्रतूंरनु ॥
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा ।
ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥
पवमानस्स्वर्जनः पवित्रेण विचर्षणिः[3] ।
यः पोता स[4] पुनातु मा ॥
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च ।
मां पुनीहि विश्वतः ॥
वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्या इमास्तन्वो वीतपृष्ठाः ।
तया मदन्तस्सधमाद्येषु[5] वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥[6]
ये समानास्समनसः[7] पितरो यमराज्ये ।
तेषां लोकस्स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ॥
ये समानास्समनसो[7] जीवा जीवेषु मामकाः ।
तेषां श्रीर्मयि कल्पतामस्मिंल्लोके शतं समाः ॥
द्वे सृती[8] अशृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम् ।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च ॥

---

[1] In T7 und Brl fol 91 ist dieser Vers vollständig gegeben [2] So T7, in Brl fol 91 पुनीहि ohne Accent [3] So T7 und Brl, in Ch पवित्रे विचर्षणि [4] So Brl, in T7 स॰, ohne Accent. [5] So corr Ch मदन्तस्सदमाद्येषु, T7 मदन्ता सदमाद्येषु, Brl fol 91 मदन्त सदमाद्येषु [6] Hier bricht T7 ab, desgleichen Brl fol 91, daher das Weitere ohne Accent nur nach Ch [7] So corr Ch समानास्सम॰ [8] So corr Ch सृती

इदं हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरं सर्वगणं स्वस्तये ।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसन्यभयसनि लोकसनि ।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त ॥ ॥ २ ॥

cf. Mâitr. S. 3, 11, 7 and 10.

सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति ।
अश्विना यज्ञं सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यम्[1] ॥
तदस्य रूपममृतं शचीभिस्तिस्रो दधुर्देवताः संरराणाः[2] ।
लोमानि शष्पैर्बहुधा[3] न तोक्मभिस्त्वगस्य मांसमभवन्न लाजाः ॥
तदश्विना भिषजा रुद्रवर्तनी सरस्वती वयति पेशो अन्तरम्[4] ।
अस्थि मज्जानं मासरैः कारोतरेण[5] दधतो गवां त्वचि ॥
सरस्वती मनसा पेशलं वसु नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपुः ।
रसं परिस्रुता न रोहितं नग्नहुर्धीरस्तसरं[6] न वेम ॥
पयसा शुक्रममृतं जनित्रं सुरया मूत्राज्जनयन्त रेतः ।
अपामतिं दुर्मतिं बाधमाना ऊवध्यं वातं सब्वं[7] तदारात् ॥
इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन सत्यं पुरोडाशेन सविता जजान ।
यकृत्क्लोमानं वरुणो भिषज्यन्मतस्ने वायव्यैर्न मिनाति पित्तम् ॥
आन्त्राणि स्थाली मधु पिन्वमाना गुदाः[8] पात्राणि सुदुघा न धेनुः ।
श्येनस्य पत्रं न प्लीहा शचीभिरासन्दी[9] नाभिरुदरं न माता ॥
कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्ने योन्यां गर्भो अन्तः ।
प्लाशिर्व्यक्तः शतधार उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः ॥
मुखं सदस्य शिर इत्सतेन जिह्वा पवित्रमश्विनासन्सरस्वती ।
चप्यं न[10] पायुर्भिषगस्य वालो वस्तिर्न[11] शेपो हरसा तरस्वी ॥

---

[1] So Ch; in Mâitr. S. 3, 11, 9 भिषज्यन् [2] Mâitr. S. 3, 11, 9 दधुः [3] So corr. Ch शष्पैर्ब॰ [4] So corr. Ch अन्तरः; cf. Mâitr. S 3, 11, 9 — Corr. [5] So Ch; Mâitr. S. 3, 11, 9 कारो॰ [6] Ch नग्नहु धीर; besser Mâitr. S. 3, 11, 9 नग्नहुर्धी॰ [7] So corr. Ch सब्यं, cf. Mâitr. S. 3, 11, 9. [8] So corr. Ch गुदा [9] So corr. Ch सन्दी; cf. Mâitr. S. 3, 11, 9. [10] So corr. Ch चपम [11] So corr. Ch वस्ति

अश्विभ्यां चक्षुरमृतं ग्रहाभ्यां छागेन तेजो हविषा शृतेन ।
पक्ष्माणि गोधूमैः कुवलैरुतानि पेशो न शुक्रमसितं वसाते ॥
अविर्न मेषो नसि[1] वीर्याय प्राणस्य पन्था अमृतो ग्रहाभ्याम् ।
सरस्वत्युपवाकैर्व्यानं नस्यानि बर्हिर्बदरैर्जजान ॥
इन्द्रस्य रूपमृषभो बलाय कर्णाभ्यां श्रोत्रममृतं ग्रहाभ्याम् ।
यवा न बर्हिर्भ्रुवि केसराणि कर्कन्धु जज्ञे[2] मधु सारघं मुखात् ॥
आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम मुखे श्मश्रूणि[3] न व्याघ्रलोम[4] ।
केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखा सिंहस्य लोम त्विषिरिन्द्रियाणि ॥
अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात्सरस्वती ।
इन्द्रस्य रूपं शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधाना ॥
सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति ।
अपां रसेन वरुणेन साम्नेन्द्रं श्रियै जनयन्नप्सु राजा ॥
तेजः[5] पशूनां हविरिन्द्रियावत्परिस्रुता पयसा सारघं मधु ।
अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा[6] सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोम इन्दुः ॥
॥ ३ ॥ cf Maitr S 3, 11, 9 TBr 2, 6 4, VS 19, 80 flg

क्षत्रस्य नाभिरसि क्षत्रस्य योनिरसि स्योनासि सुषदासि स्योनामासीद सुषदामासीद मा त्वा हिंसीन्मा[7] मा हिंसीः ॥
निषसाद[8] धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा ।
साम्राज्याय सुक्रतुः ॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां सरस्वत्या भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामि देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो

[1] So corr Ch नस्ति, cf Maitr S 3, 11, 9 [2] So corr Ch जज्ञो [3] So corr Ch श्मश्रुणि [4] So corr Ch व्याघ्रम erste Hand व्याघ्रम् [5] So corr Ch तेजा· [6] So corr Ch सुग्धभिषजा [7] So corr Ch हिंसीमां [8] Von hier ab accentuirt nach T1 und Bri fol 120 121

हस्ताभ्यामिन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसे ऽभिषिञ्चामि को ऽसि कौ नामासि कस्मै त्वा काय त्वा सुश्लोका[1]३ सुमङ्गला३[2] सत्यराजा३न्[3] ॥
शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि[4] ।
राजा मे प्राणो अमृतं सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्[5] ॥
जिह्वा मे भद्रं वाङ्[6] महो मनो मन्युस्स्वराड् भामः ।
मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः[7] ॥
बाहू मे बलमिन्द्रियं हस्तौ मे कर्म वीर्यम् ।
आत्मा क्षत्रमुरो मम ॥
पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरमंसौ ग्रीवाश्च श्रोण्यौ ।
ऊरू अरत्नी जानुनी विशो मे ऽङ्गानि सर्वतः ॥
नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मे ऽपचितिर्भसत्[8] ।
आनन्दनन्दा आण्डौ[9] मे भगस्सौभाग्यं पसः ॥
जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मो ऽसि विशि राजा प्रतिष्ठितः[10] ।
प्रति क्षत्रे प्रतितिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रतितिष्ठामि गोषु ॥
प्रत्यङ्गेषु प्रतितिष्ठाम्यात्मन्प्रति प्राणेषु प्रतितिष्ठामि पुष्टे ।
प्रति द्यावापृथिव्योः प्रतितिष्ठामि यज्ञे ॥
त्रयो देवा एकादश त्रयस्त्रिंशास्सुराधसः ।
बृहस्पतिप्रसूता देवस्य सवितुस्सवे ॥
देवा देवैरवन्तु मा प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयास्सत्येन[11]

---

[1] Accent corr. T 1 und Brl सुश्लोका३; cf. VS 20, 4. [2] So Ch, ohne Accent; T 1 und Brl सुमङ्गला३ [3] So Ch, ohne Accent; T 1 सत्यराजा३न्; Brl सत्यराजान्, hier hört der Text von T 1 und Brl 121 auf. [4] So corr. Ch श्मश्रुणि [5] sic Ch [6] So corr. Ch वां महो, cf. MS 3, 11, 8; VS 20, 6. [7] So corr. Ch महः; cf. MS 3, 11, 8; VS 20, 6. [8] So corr. Ch विज्ञानमायुर्मे ऽपचितेर्भ°; MS 3, 11, 8 चित्तं° पायुर्मे ऽपचिति°; desgl. VS 20, 9. [9] So Ch; in MS 3, 11, 8 आण्डौ; desgl. VS 20, 9. [10] So corr. Ch ष्ठितः [11] So corr. Ch सौम्या तृतीये°

सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजूंषि सामभिस्सामान्यृग्भिर्ऋचो याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्कारा आहुतिभिराहुतयो मे कामान्समर्धयन्तु भूस्स्वाहा ॥

लोमानि प्रयतिर्मम त्वङ् म आनतिरागतिः ।
मांसं म उपनतिर्वस्वस्थि मज्जा म आनतिः ॥ ॥ ४ ॥

cf Mâitr S 3 11 8, TBr 2 6 5, VS 20 1—13

यद्देवा[1] देवहेडनं देवासश्चकृमा[2] वयम् ।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः ॥
यदि दिवा यदि नक्तमेनांसि चकृमा वयम् ।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः ॥
यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनांसि[3] चकृमा वयम् ।
सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः ॥
यद्ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये ।
यच्छूद्रे यदर्य एनश्चकृमा वयम् ।
यदेकस्याधि धर्मणि तस्यावयजनमसि ॥

यदापो अघ्न्या वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्चावभृथ निचुङ्कुण[4] निचेरुरसि निचुङ्कुणो ऽव देवैर्देवकृतमेनो ऽयाडव[5] मर्त्यैर्मर्त्यकृतमुरोरा नो देव रिषस्पाहि[6] ॥

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तस्सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ॥

सुमित्रा ण आप ओषधयो भवन्तु दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुर्यो ऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥

द्रुपदादिवेन्मुमुचानस्स्विन्नस्स्नात्वी मलादिव ।

---

[1] Die ersten drei Verse accentuirt nach T 1 und T 7, Weiteres fehlt dort Auch in W 1 finden sich diese drei Verse doch ohne Accente [2] Ch देवासा च॰ [3] T 7 स्वप्नमेनांसि, desgl W 1, ohne Accent, dagegen T 1 स्वप्न एनांसि [4] So corr Ch निचकुण, vgl das Folgende [5] So corr Ch ऽयाडय [6] So corr Ch रिषस्पाहि

पूतं पवित्रेणेवाज्यमापश्शुन्धन्तु मैनसः ॥
उद्वयं तमसस्परि पश्यन्तो ज्योतिरुत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥
प्रत्यस्तो वरुणस्य पाशः प्रतियुतो वरुणस्य पाशः ॥ एधो ऽस्येधिषीमहि समिदसि[1] ॥ तेजो ऽसि तेजो मयि धेहि ॥
अपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगन्महि ।
पयस्वानग्न आगमं तं मा संसृज वर्चसा ॥
समाववर्ति पृथिवी समुषास्समु सूर्यः ।
वैश्वानरज्योतिर्भूयासं विभुं कामं व्यश्नवै ॥
भूस्स्वाहा ॥ ५ ॥ cf. Maitr. S. 3, 11, 10; 1, 3, 39, TS 1, 4, 45, VS 20, 14—23.
समिद्ध इन्द्र उषसामनीके पुरोरुचा[2] पूर्वकृद्वावृधानः ।
त्रिभिर्देवैस्त्रिंशता वज्रबाहुर्जघान वृत्रं वि दुरो ववार ॥
नराशंसः प्रति शूरो मिमानस्तनूनपात्प्रति यज्ञस्य धाम ।
गोभिर्वपावान्मधुना समञ्जन्हिरण्यैश्चन्द्री[3] यजतु[4] प्रचेताः ॥
इडितो देवैर्हरिवाँ अभिष्टिराजुह्वानो हविषा शर्धमानः ।
पुरंदरो गोत्रभिद्वज्रबाहुरायातु यज्ञमुप नो जुषाणः ॥
जुषाणो बर्हिर्हरिवान्न इन्द्रः प्राचीनं सीदत्प्रदिशा पृथिव्याः ।
उरुप्रथाः प्रथमानं स्योनमादित्यैरक्तं वसुभिस्सजोषाः ॥
इन्द्रं[5] दुरः कवष्यो धावमाना वृषाणं यन्तु[6] जनयस्सुपत्नीः ।
द्वारो देवीरभितो विश्रयन्तां सुवीरा वीरं प्रथमाना महोभिः[7] ॥
उषासानक्ता बृहती[8] बृहन्तं पयस्वती सुदुघे शूरमिन्द्रम् ।
पेशस्वती तन्तुना संव्ययन्ती देवानां देवं यजतस्सुरुक्मे ॥

---

[1] Vgl. TS 1, 4, 45, 3; VS 20, 23 [2] So corr. Ch परोरुचा [3] So corr. Ch समञ्जन्हि° [4] MS 3, 11, 1 यजति, desgl. VS 20, 37. [5] So corr. Ch इंद्र [6] MS 3, 11, 1 यन्ति, VS 20, 40 यन्तु [7] So corr. Ch मयोभिः [8] बृहती fehlt in Ch und ist von mir ergänzt; cf MS 3, 11, 1, VS 20, 41.

दैव्या मिमाना मनसा पुरुत्रा होतारा[1] इन्द्रं प्रथमा सुवाचा ।
मूर्धन्यज्ञस्य मधुना दधाना प्राचीनं ज्योतिर्हविषा वृधातः ॥
तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमाना इन्द्रं जुषाणा वृषणं न पत्नीः ।
अच्छिन्नं तन्तुं पयसा सरस्वतीडा देवी भारती विश्वतूर्तिः[2] ॥
त्वष्टा दधदिन्द्राय शुष्ममपाको ऽचिष्टुर्यशसे पुरूणि ।
वृषा यजन्वृषणं भूरिरेता मूर्धन्यज्ञस्य समनक्तु देवान् ॥
वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्त्मन्या समञ्जञ्छमिता[3] न देवः ।
इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानस्स्वदाति[4] यज्ञं मधुना घृतेन ॥
स्तोकानामिन्दुं प्रति शूर इन्द्रो वृषायमाणो[5] वृषभस्तुराषाट् ।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्मूर्धन्यज्ञस्य[6] जुषतां स्वाहा ॥ ॥ ६ ॥
cf Maitr S 3 11, 1, VS 20, 36—46, TBr 2 6, 8

आ चर्षणिप्रा वृषभो जनानां राजा कृष्टीनां पुरुहुत इन्द्रः ।
स्तुतश्श्रवस्यन्नवसोप मद्रिग्युक्ता[7] हरी वृषणा यात्स्वर्वाङ्[8] ॥
विवेष यन्मा धिषणा जजान स्तवै पुरा पार्यादिन्द्रमह्नः[9] ।
अंहसो यत्र पीपरद्यथा नो नावेव यान्तमुभये हवन्ते ॥
तं सध्रीचीरूतयो[10] वृष्ण्यानि पौंस्यानि[11] नियुतस्सश्चुरिन्द्रम्[12] ।
समुद्रं न सिन्धव उक्थशुष्मा[13] उरुव्यचसं गिर आविशन्ति ॥
सत्यमित्तन्न त्वावाँ अन्यो अस्तीन्द्र देवो न मर्त्यो ज्यायान् ।
अहन्नहिं परिशयानमर्णो ऽवासृजो अपो अच्छा समुद्रम् ॥[14]

---

[1] So corr Ch होतार [2] So corr Ch विश्वतूर्ति [3] So corr Ch स्त्मन्या समञ्जञ्छमिता, cf VS 20 45 [4] So auch VS 20, 45, dagegen MS 3, 11, 1 स्वदातु [5] So corr Ch वृषायजमानो, MS 3 11, 1 and VS 20, 46 = Corr [6] So corr Ch हव्यमुदंन्मू°, cf MS 3, 11, 1 a E [7] So corr Ch यत्रास मद्रिम्युक्ता, cf MS 4, 14, 18, RV 1, 177, 1 [8] So corr Ch र्वाट MS 4, 12, 3 = Corr, RV 3, 32 14 स्वार्ङ [9] So corr Ch पार्यदि°, cf MS 4 12 3 RV 3, 32, 14 [10] So corr Ch रूतयो cf RV 6 36, 3, MS 4 14 19 (die Samh Mss hier = Kāth !) [11] So corr Ch पौस्यानि [12] So corr Ch सध्रु° [13] So corr Ch उक्तशुष्मा [14] RV 6, 30 4, MS 4, 14, 18

प्र ससाहिषे पुरुहूत शत्रूञ्ज्येष्ठस्ते शुष्म इह रातिरस्तु ।
इन्द्राभर दक्षिणेना वसूनि पतिस्सिन्धूनामसि रेवतीनाम् ॥[1]
स शेवृधमधिधा द्युम्नमस्मे महि क्षत्रं जनाषाडिन्द्र तव्यम् ।
रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन्राये च नस्स्वपत्या इषे धाः ॥[2]
॥ ७ ॥ cf. Maitr. S. 4, 14, 18; 4, 12, 3; TBr. 2, 8, 9.

समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो घर्मो विराट् सुतः ।
दुहे धेनुस्सरस्वती सोमं शुक्रमिहेन्द्रियम् ॥
तनूपा भिषजा सुते ऽश्विनोभा सरस्वती[3] ।
मध्वा रजांसीन्द्रियमिन्द्राय पथिभिर्वहान्[4] ॥
इन्द्रायेन्दुं सरस्वती नराशंसेन नग्नहुम्[5] ।
अधातामश्विना मधु भेषजं भिषजा सुते ॥
आजुह्वाना सरस्वतीन्द्रायेन्द्रियाणि वीर्यम् ।
इडाभिरश्विना इषं समूर्जं सं रयिं दधुः ॥
अश्विना नमुचेस्सुतं सोमं शुक्रं परिस्रुता ।
सरस्वती तमाभरद्बर्हिषेन्द्राय पातवे ॥
कवष्यो न व्यचस्वतीरश्विभ्यां न दुरो दिशः ।
इन्द्रो न रोदसी दुघे[6] दुहे कामान्सरस्वती ॥
उषासा नक्तमश्विना दिवेन्द्रं सायमिन्द्रियैः ।
संजानाने सुपेशसा समञ्जाते सरस्वत्या ॥
पातं नो अश्विना दिवा पाहि नक्तं सरस्वति[7] ।
दैव्या होतारा भिषजा पातमिन्द्रं सचा सुते ॥

---

[1] RV 10, 180, 1, MS 4, 12, 3 [2] RV 1, 54, 11, MS 4, 14, 18. [3] So corr. Ch स्सर॰ [4] So auch VS 20, 56; dagegen MS 3, 11, 3 वह [5] So corr. Ch नग्नहु॰, MS 3, 11, 3 und VS 20, 57 = Corr [6] Fur दुघे haben MS 3, 11, 3 und VS 20, 60 ऊर्मे, aber VS 21, 34 auch दुघे [7] So corr. Ch सरस्वतो, cf MS 3, 11, [illegible]; VS 20, 62.

तिस्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना भारतीडा[1] ।
तीव्रं परिस्रुता सोममिन्द्रायासुषवुर्मदम्[2] ॥
अश्विना भेषजं मधु भेषजं नस्सरस्वती ।[3]
गोभिर्नं सोमममश्विना मासरेण परिस्रुतम्[4] ।
समधातां सरस्वत्या स्वाहेन्द्रे सुतं मधु ॥ ॥ ८ ॥[5]

cf Maitr S 3, 11, 3, VS 20, 65—66, TBr 2, 6, 12

अश्विना हविरिन्द्रियं नमुचेर्धिया सरस्वती ।
आ शुक्रमासुराद्वसु[6] मघमिन्द्राय[7] जभ्रिरे ॥
यमश्विना सरस्वती हविषेन्द्रमवर्धयन् ।
स बिभेद बलं[8] मघं[9] नमुचा आसुरे सचा ॥
तमिन्द्रं पशवस्सचाश्विनोभा सरस्वती ।
दधाना अभ्यनूषत हविषा यज्ञ इन्द्रियम् ॥
य इन्द्र इन्द्रियं दधुस्सविता वरुणो भगः ।
स सुत्रामा हविष्पतिर्यजमानाय सश्चत ॥
सविता वरुणो दधद्यजमानाय दाशुषे ।
आदत्त नमुचेर्वसु सुत्रामा बलमिन्द्रियम् ॥
वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं भगेन सविता श्रियम् ।
सुत्रामा यशसा बलं दधाना यज्ञमाशत ॥
अश्विना गोभिरिन्द्रियमश्वेभिर्वीर्यं बलम् ।
हविषेन्द्रं सरस्वती यजमानमवर्धयन्[10] ॥

---

[1] So corr Ch त्रीड [2] So corr Ch वासुषवमे°, VS 20, 63 य सुषुवुर्म°, MS 3, 11, 3 वासुषुवुर्म°, aber Padap. richtiger इन्द्राय । सुषुवु । [3] Die zweite Hälfte dieses Verses fehlt in Ch [4] So Ch, in MS 3, 11, 3 und VS 20, 66 परिस्रुता [5] Die Bezeichnung für den Abschluß von Cap 8 fehlt in Ch, ich habe denselben gesetzt nach Analogie der Theilung von MS 3, 11, 3 und 3, 11, 4, welch letzteres Capitel ebenfalls mit अश्विना हविरिन्द्रिय beginnt [6] So corr Ch मासुराद्वसु, cf MS 3, 11, 4 und VS 26, 67 — Corr [7] Auch VS 20, 67 मघ°, dagegen MS 3, 11, 4 मद्य° [8] So Ch, auch MS 3, 11, 4 nach allen Mss बल, dagegen VS 20, 68 वल [9] Ch मघव°, VS 20, 68 मघं, dagegen MS 3, 11, 4 मद्य [10] So corr Ch वर्धयन्, cf aber MS 3, 11, 4 und VS 20, 73 — Corr

ता नासत्या सुपेशसा हिरण्यवर्तनी नरा ।
सरस्वती हविष्मतीन्द्र[1] कर्मसु नो ऽवत ॥
ता भिषजा सुकर्मणा सा[2] सुदुघा सरस्वती ।
स वृत्रहा शतक्रतुरिन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥
युवं[3] सुराममश्विना नमुचा आसुरे सचा ।
विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ॥[4]
पुत्रमिव पितरा अश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दंसनाभिः ।
यत्सुरामं व्यपिबश्शचीभिस्सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ॥
यस्मिन्नश्वास ऋषभास उक्षणो[5] वशा मेषा अवसृष्टा[6] आहुताः ।
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे[7] हृदा मतिं जनय[8] चारुमग्नये ॥
अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्वीव सोमः ।
वाजसनिं रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम् ॥ ॥ ९ ॥
cf Maitr [redacted] 3 11, 4 VS 20, 67—79, TBr 2 6 13
समिद्धो अग्निस्समिधा सुषमिद्धो वरेण्यः ।
गायत्री छन्द इन्द्रियं त्र्यविर्गौर्वयो दधुः ॥
तनूनपाच्छुचिव्रतस्तनूपाश्च[9] सरस्वती[10] ।
उष्णिहा छन्द इन्द्रियं दित्यवाड् गौर्वयो दधुः ॥
इडाभिरग्निरीड्यस्सोमो देवो अमर्त्यः ।
अनुष्टुप्छन्द इन्द्रियं पञ्चाविर्गौर्वयो दधुः ॥
सुबर्हिरग्निः पूषण्वां स्तीर्णबर्हिरमर्त्यः ।
बृहती छन्द इन्द्रियं त्रिवत्सो गौर्वयो[11] दधुः ॥

---

[1] So VS 20, 74 तीन्द्र, dagegen MS 3 11, 4 तीन्द्र [2] So corr Ch सु [3] So corr Ch युवं [4] Vgl RV 10 131, 4, auch MS [redacted] 11, 4 und VS 20, 76 [5] So corr Ch भाम तवाणो [6] So Ch, cf dagegen MS 3, 11, 4 a E und VS 20 78 [7] So corr Ch वेदसे, cf MS 3 11, 4, VS 20 78 [8] So auch VS 20 78, dagegen MS 3, 11, 4 a E जनये [9] So corr Ch पाछुचि°, wie VS 21, 13 schreibt, während MS च्छुचि° bietet Im Kath aber pflegt aus त्+श ein च्छ zu werden [10] So corr Ch स्वती [11] So corr Ch वोर्वं°

त्वा वैश्वानराय त्रैष्टुभेन छन्दसाहरुपदधे[1] देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे
ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामग्नये त्वा वैश्वानरायानुष्टुभेन छन्द-
सा रात्रीमुपदधे[2] ॥
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवस्समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः ।
घृतेन ते तन्वं वर्धयामि सत्यास्सन्तु यजमानस्य कामाः ॥[3]
अग्निर्होता नो अध्वरे वाजी सन्परिणीयते ।
देवो देवेषु यज्ञियः ॥[4]
परि त्रिविष्ट्यध्वरं यात्यग्नी रथीरिव ।
आ देवेषु प्रयो दधत् ॥
परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।
दधद्रत्नानि दाशुषे ॥
परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि ।
धृषद्वर्णं दिवे दिवे[5] हन्तारं भङ्गुरावताम्[6] ॥
परि प्रागाद्देवो[7] अग्नी रक्षोहामीवचातनः ।
सेधन्विश्वा अप द्विषो दहन्रक्षांसि विश्वहा ॥
चितस्स्थ परिचित ऊर्ध्वश्रितश्श्रयध्वम् ।
प्रजामस्मै रयिमस्मै नियच्छत ॥ ॥ १२ ॥
व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्म सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।
पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा मा वस्सुस्रोच्चमसो[8] दृंहता तम् ॥
अजीजनन्नमृतं[9] मर्त्यासो ऽस्रेमाणं तरणिं वीडुजम्भम् ।
दश स्वसारो अग्रुवस्समीचीः पुमांसं जातमभिसंरभन्ताम्[10] ॥

---

[1] Accent corr T1 und Brl छन्दसाहरुपदधे W1 छन्दसाहरुपदधे [2] T1 रात्रि मुपदधे, Brl fol 51 रात्रिमुपदधे [3] Vgl TS 4 2 3, 4 5 2, 2 5 [4] Vgl RV 4 15, 1 flg MS 4 13, 4, TBr 3 6 4, 1 [5] Accent corr T1 und Brl दिवे दिवे, cf RV 10, 67, 22 [6] Ch रायताम् T1 und Brl रायतम्, cf RV 10 67, 22 [7] Brl fol 51 द्देवो, desgleichen W1, ohne Accent [8] So corr Ch hier wieder das einzige Ms liest वासुपोच्चमसो, aber vgl RV 10 101 5 [9] So corr Ch अजीजनयमत, vgl RV 3, 29, 13 [10] So Ch RV 3, 29 13 रभन्ते

साकं हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता क्रतुनाजनि ।
विद्वाँ अस्य व्रता ध्रुवा वया इवानुरोहति[1] ॥
अपास्मदेतु[2] निर्ऋतिर्नेहास्या अपि किं चन ।
अगोता नाष्ट्री[3] पाप्मानि सर्वं तदपहन्महे ॥
अपास्य नैर्ऋतान्पाशान्मृत्योरेकशतं च ये ।
अपास्य ये[4] सिनाः पाशा मृत्योरेकशतं सुवे[5] ॥
ये ते पाशा एकशतं मृत्यो मर्त्याय हन्तवे ।
तांस्ते[6] यज्ञस्य मायया सर्वानवयजामहे ॥
देवीमहं निर्ऋतिं[7] बाधमानः पितेव पुत्रं दसये[8] वचोभिः ।
यां जायमानस्य जायमानस्य[9] शिरो देवी प्रति सूरिर्विचष्टे ॥[10]
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शं योरभिस्रवन्तु नः ॥[11]
ऊर्जं बिभ्रद्वसुवनिस्सुमेधा गृहाणां[12] मोदमाना सुवर्चाः ।
अघोरेण चक्षुषाहं शिवेन गृहाणां[13] पश्यन्वय उत्तिरामि ॥
गृहाणामायुः[14] प्र वयं तिराम गृहा अस्माकं प्रतिरन्त्वायुः ।
येन देवा ज्योतिषोर्ध्वा उदायन्येनादित्या वसवो येन रुद्राः ।
येनाङ्गिरसो महिमानमानशुस्तेनैतु यजमानस्स्वस्ति ॥
स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी ।
यच्छा नश्शर्म[15] सप्रथाः[16] ॥

---

[1] So Ch; RV 2, 5, 4 रोहते [2] Von hier ab wiederum ein Stück in T 1 vorhanden; darnach accentuirt [3] So meine Correctur, Ch ग्नोत्वात्वाष्ट्रं, T 1 ग्नोतानाष्ट्रां [4] Accent von mir gesetzt; in T 1 ये ohne Accent [5] So T 1 सिनाः etc.; in Ch सिनाय्याशा मृत्युनेकशतं सुवे [6] So T 1, in Ch तैस्ते [7] Ch निर्ऋतिं [8] So Ch, ohne Accent, T 1 पुत्रान्दस, aber TS 4, 2, 5, 4 पुत्रं दसये [9] Accent corrigirt. In T 1 auch das 2 जायमानस्य accentuirt; in Ch ist dasselbe durchstrichen, erscheint also del. [10] Hier bricht T 1 ab. [11] Vgl. AV 1, 6, 1. [12] So corr. Ch गृहानान् ॥ मो° [13] So corr. Ch गृहाणां [14] So corr. Ch गृहानामायुः [15] So corr. Ch न शर्म, aber cf. RV 1, 22, 15; MS 4, 12, 2. [16] So Ch; RV 1, 22, 15 सप्रथः; desgl. MS 4, 12, 2.

वाक्ता समुद्र[1] उपदधातु प्रजावनिं रायस्पोषवनिं मह्यं वाजिनाय महो ध्रुवा सलिलासि ज्योतिष्मती सा स्वर्गं लोकं प्रजानीहि प्रजापतिः प्रजापतौ सादयतु तयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद ॥ १३ ॥

उदस्याश्वजिद्गोजिदश्वजिद्धिरण्यजित्सूनृतया[2] परीवृतः ।
एतचक्रेण[3] सविता रथेनोर्जो भागं पृथिवीमेत्यामृणन्[4] ॥
सं वरत्रा दधातन[5] निराहावं[6] कृणोतन ।
सिञ्चामहा अवतं वयमुद्रिणं विश्वाहादस्तमक्षितम् ॥
ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतस्सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठास्सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥
अनाप्ता यो वः प्रथमो यस्यां कर्माणि कुर्वते ।
वीरान्नो अत्र मा दभन्तद्[8] एतत्पुरो[9] दधे ॥
पर्यू षु प्रधन्व[10] वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तरध्या[11] ऋणया न ईयसे ॥
सहस्रधारे ऽव ते समस्वरन्दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः ।
तस्य स्पशो न निमिषन्ति भूर्णयः पदे पदे[12] पाशिनस्सन्ति सेतवः ॥[13]

मलिम्लुचो नामासि त्रयोदशो मास[14] इन्द्रस्य शर्मासीन्द्रस्य वर्मासीन्द्रस्य वरूथमसि तं त्वा प्रपद्ये सगुस्साश्वस्सपुरुषः[15] ॥ सह यन्मे ऽस्ति तेन स मे शर्म च वर्म च भव गायत्रीं त्रिष्टुभं जगतीमभिः प्रविशामि

---

[1] So corr Ch समुद्रा [2] Dies Capitel accentuirt nach T1, Brl fol 117 und W ? [3] W 2 एतचाक्रेण MS 2, 7, 12 एकचक्रेण [4] Brl त्यापृणत्, W ■ पृणन्, cf MS 2 7 12 पृथिव्या यात्यापृणन [5] So T1 und Brl fol 117, desgl Ch, ohne Accent W 2 स वर्त्रं दधातन TS 4, 2 5, 5 सं वरत्रा द [6] So T1, Brl und W ? resp निराहावद्भु-, Ch निरहाव TS 4, 2 5, 5 निराहावान W ? मास-, desgl Ch, ohne Acc vgl Kâth 16, 15 20 5, MS 2 7, 15, TS 4, 2, 8 2 [8] T1 मा दभन्त- Brl मा दभन्त- W 2 मा दभन्त-, Ch मदभैस्तद्वा cf AV 4 7, 7 [9] W 2 एतं पुरोदधे, cf AV 4, 7, 7 [10] So T1 Brl, W 2, in Ch प्रधनु cf RV 9, 110, 1 [11] T1 तरध्या, cf RV 9, 110, 1 [12] So T1 und Brl, in W 2 पदे पदे [13] Vgl zu dem ganzen Verse RV 9, 74 6 [14] So T1 und Brl, in Ch त्रयोदश मास, W ? त्रयोदश मासा [15] So T1 und Brl, desgl Ch ohne Accent, in W ■ सगोपाश्वसपुरुष

त्रिष्टुभं[1] त्वचं प्रविशामि जगतीं मांसेन प्रविशाम्यनुष्टुभमस्थ्नां प्रविशामि पङ्क्तिं मज्ज्ञां[2] प्रविशामि ॥
ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं यदुग्रं विश्वे देवा नातिविध्यन्ति शूराः ।
तन्नस्त्रायतां तन्वः सर्वतो महदायुष्मन्तो जरामुपगच्छेम जीवाः ॥ ॥ १४ ॥

इति श्रीमद्यजुषि काठके चरकशाखायामोरिमिकायां सौत्रामणीनामाष्टाचिंशं स्थानकं संपूर्णम् ॥[3]

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं[4] महि जातं ते अर्वन् ॥
अभ्यस्थाद्विश्वाः[5] पृतना अरातीस्तदग्निराह तदु सोम आह ।
बृहस्पतिः सविन्द्रस्तदाह पूषा माधात्सुकृतस्य लोके ॥
आस्थादुदस्थादजनिष्ट विप्रो व्यास्थन्मृधो अशिशीत बाहू ।
समपृक्षि ज्योतिषा सूर्यस्य परा बाधस्व निर्ऋतिं पराचैः[6] ॥
प्रजापतिस्त्वा सादयतु ॥
दिवो मूर्धासि पृथिव्या नाभिरूर्गपामोषधीनाम्[7] ।
विश्वायुः शर्म सप्रथा नमस्पथे वयस्त्वस्सदः[8] ॥

---

[1] So T1 und Brl, in W2 त्रैष्टुभ, desgl Ch, ohne Accent [2] T1 und Brl मज्ञा, W2 मज्ज, Ch मज्ञा [3] So die Unterschrift des Capitels in Ch [4] So corr Ch उपस्तुत्य, vgl RV 1, 163, 1, in Kāṭh selbst nur noch die Anfangsworte des Verses an zwei Stellen (40, 6, 5, 6, 3) [5] So corr Ch भ्यस्था°, cf TS 4, 2, 8, 1, MS 1, 5, 3, 1, 6, 2 [6] Ch निर्ऋतिम्म, kein Parallelvers [7] So corr Ch नाभिरूर्ग° [8] Vgl Kāṭh 18, 15, wo der Vers anders abschließt, cf auch MS 2, 12, 3, VS 18, 54

प्राचीनमूर्ध्वमधरागपागुदग्देवाः[1] पान्तु[2] यजमानममृतमृतात्[3] ।
तेन ब्रह्मणा तेन च्छन्दसा तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद ॥
आपो रेवतीः क्षयथा हि वस्वः क्रतुं च भद्रं बिभृथामृतं च ।
रायश्च स्थ स्वपत्यस्य पत्नीस्सरस्वती तद्गृणते वयो धात् ॥

अर्थेतस्स्थान्वगतो[4] ऽपेर्वस्तेजसा देवताभिर्गृह्णामि शर्म च स्थ वर्म च स्थ देवस्य वस्सवितुः प्रसवे मधुमतीस्सादयामि ज्योतिषे वां शुक्रास्स्थ वीर्यावतीरिन्द्रस्य व इन्द्रियावतो देवताभिर्गृह्णाम्यमृतं च स्थ सत्यं च स्थ देवस्य वस्सवितुः प्रसवे मधुमतीस्सादयामि चक्षुषे वां मन्द्रास्स्थाभिभुवो[5] विश्वेषां वो[6] देवानां देवताभ्यो गृह्णामि रक्षोघ्नीश्च स्थारातिघ्नीश्च[7] स्थ देवस्य वस्सवितुः प्रसवे मधुमतीस्सादयामि रेतसे वामधिपतिरस्यूर्जस्वानादित्यानां वो देवानां देवताभिर्गृह्णामि सपत्नघ्नीश्च स्थाभिमातिघ्नीश्च स्थ देवस्य वस्सवितुः प्रसवे मधुमतीस्सादयामि प्रजाभ्यो वां व्रजक्षितस्स्थोर्ध्वेष्यितो बृहस्पतेर्वो ब्रह्मणा देवताभिर्गृह्णामि वसु च स्थ वामं च स्थ देवस्य वस्सवितुः प्रसवे मधुमतीस्सादयामि तेजसे वां क्षत्रभृतस्स्थौजस्विनीर्मित्रावरुणयोर्वां देवयोर्देवताभिर्गृह्णामि भूतं च स्थ भव्यं च स्थ देवस्य वस्सवितुः प्रसवे मधुमतीस्सादयामि वर्चसे वां दिवि श्रयस्वान्तरिक्षमापृण पृथिव्यां कल्पस्व ॥ १ ॥

यददस्संप्रयतीरहा अनदता[8] हते ।
तस्मादा नद्यो[9] नाम स्थ ता वो नामानि सिन्धवः ॥
यत्प्रेषिता वरुणेनाच्छीभं[10] समवल्गत ।
तदिन्द्र आप्नोद्यतीर्वस्तस्मादापो अनुष्ठन ॥

---

[1] So corr Ch मूर्धम॰ [2] So corr Ch पातु [3] So Ch, kein Parallelvers [4] Ch अर्थेतस्थान्वगतो vgl TS 1, 6, 11, 1 [5] So corr Ch घृतपे धास्म॰ भूधो [6] Dies वो fehlt in Ch und ist von mir ergänzt [7] So corr Ch स्थराति॰ [8] So corr Ch अनदहता aber cf MS 2, 13, 1, TS 5, 6, 1, 2, AV 3, 13, 1 [9] Ch schreibt zwei Mal nach einander नद्यो नद्यो [10] Ch यद्येनाच्छीभं, vgl AV 3, 13, 2, anders MS 2, 13, 1, TS 5, 6, 1, 2

अपकामं स्यन्दमाना अवीवरत[1] वो हिकम्[2]।
इन्द्रो वश्शक्तिभिर्देवीस्तस्माद्वार्नाम[3] वः प्रियम्॥
एको देवो अप्यतिष्ठत्स्यन्दमाना उपेत्य।
उदानिषुर्महीरिति तस्मादुदकमुच्यते॥[4]
आपो देवीर्घृतमिदाप आसन्नग्नीषोमौ बिभ्रत्याप इत्ताः।
तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम[5] आ मा प्राणेन सह वर्चसागन्॥
तपो योनिरसि प्राजापत्यं विश्वाभिस्त्वा धीभिरुपदधामि॥[7]
ये यज्ञं समगृभ्णन्देवा देवेभ्यस्परि।
तान्गायत्री नयतु प्रजानती स्वर्गे लोके अमृतं दुहाना॥
ये ज्योतींषि संदधति स्वरारोहन्तो अमृतस्य लोकम्।
ते यन्तु प्रजानन्तो यज्ञं दधानास्सुकृतस्य लोकम्॥
यः पन्था विततो देवयानश्छन्दोभिर्विगृहीत एति।
तेनातिष्ठ दिवमन्तरिक्षं यज्ञं गृहीत्वा सुकृतस्य लोकम्॥
ये पशवो मेध्यासो यज्ञस्य योनिमभिसंबभूवुः।
तान्दद्मो कवयो विपश्चितो यज्ञं दुहानास्सुकृतस्य लोके॥
यो यज्ञस्सहस्रधारो द्यावापृथिव्योरधि निर्मितः।
तेनैतु यजमानस्स्वस्त्या दिवो ऽधि पृष्ठमस्थात्॥
आयवे स्वाहायुष्कृते[8] स्वाहायोः पत्मने स्वाहा विष्णवे स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा॥
अद्भ्यस्संभृतः पृथिव्या रसो विश्वकर्मणस्समवर्ततावि।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवमाजानमग्रे॥[9]

---

[1] So corr. Ch अवीरवत, vgl. AV 3, 13, 3; MS 2, 13, 1, TS 5, 6, 1, 3. [2] Vgl. TS 5, 6, 1, 3. [3] So corr. Ch देवों तस्माद्वाराम [4] Vgl. AV 3, 13, 4, MS 2, 13, 1. [5] So corr. Ch मधुपेचा°; vgl. oben 35, 3; MS 2, 13, 1; AV 3, 13, 5; TS 5, 6, 1, 3. [6] So corr. Ch प्राप्तः; aber vgl. oben 35, 3; MS 2, 13, 1; AV 3, 13, 5; TS 5, 6, 1, 3. [7] Vgl. MS 2, 13, 2 [8] So corr. Ch स्याहायुष्टते [9] Vgl. MS 2, 7, 15; VS 31, 17; TAr. 3, 13; 10, 1, 3.

त्रिवृत्ते अग्ने शिरस्तन्मे अग्ने शिरः पञ्चदशौ ते अग्ने[1] बाहू तौ मे अग्ने[2] बाहू सप्तदशस्ते अग्न आत्मा स मे अग्न आत्मैकविंशौ ते अग्न ऊरू तौ मे अग्न ऊरू त्रिणवौ ते अग्ने अष्ठीवन्तौ तौ[3] मे अग्ने[4] अष्ठीवन्तौ त्रयस्त्रिंशं ते अग्ने प्रतिष्ठानं तन्मे अग्ने प्रतिष्ठानं त्रिवृत्ते अग्ने शिरस्तेन माभिपाहि पञ्चदशौ ते अग्ने बाहू ताभ्यां माभिपाहि सप्तदशस्ते अग्न आत्मा तेन माभिपाह्येकविंशौ ते अग्न ऊरू ताभ्यां माभिपाहि त्रिणवौ ते अग्ने अष्ठीवन्तौ ताभ्यां माभिपाहि त्रयस्त्रिंशं ते अग्ने प्रतिष्ठानं तेन माभिपाहि ॥ २ ॥

cf AV 8, 13, MS 2 13 1 und 2, TS 5, 6 1

प्रजापतिस्त्वा[5] सादयतु पृथिव्याः पृष्ठे ज्योतिष्मतीं व्यचस्वतीं प्रथस्वतीं प्रथो ऽसि पृथिव्यसि भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिवीं मा हिंसीर्विश्वस्मै प्राणाय व्यानायापानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्रायाग्निष्ट्वाभिपातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शंतमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद ॥

चित्तिं जुहोमि मनसा यथा देवा इहागमन् ।
वीतिहोत्रा ऋतावृधः ॥[6]
समुद्रस्य वयुनस्य पत्मञ्जुहोमि[7] विश्वकर्मणे ।
विश्वाहादाभ्यं हविः ॥

स्वाहोदग्रा[8] नामास्यनेन विशा वसवो रक्षितारो ऽसिरधि वियत्तो अस्यां तां[9] त्वा प्रपद्ये सा मे शर्म च वर्म च भव तया देवत-

---

[1] So corr Ch अग्नी [2] So corr Ch अग्नी [3] Dies तौ fehlt in Ch und ist von mir eingeschaltet. [4] So corr Ch अग्नी [5] Vgl MS 4 9, 16, VS 13, 17, TS 4 4, 6, 4, 4, 3, 3 [6] Vgl MS 2, 10 [illegible], TS 5 5, 1 3, VS 17, 78 [7] Ch schreibt पत्मन ॥ जुहोमि, im Folgenden dagegen fehlen die Versabtheilungen und sind daher von mir gesetzt vgl MS 2, 10 6 a E, TS 5, [illegible], 4, 3, VS 17, 78 [8] Vgl MS 2, 8, 14, TS 4, 4, 5 [9] So corr Ch ता

याङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद ज्योतिरसि[1] ज्योतिर्मे यच्छ पृथिवीं दृंह पृथिव्या मा पाहि तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद भूरसि भुवनस्य रेत इष्टका स्वर्गो लोको मनसा त्वान्वारोहामि सूरसि स्वरसीष्टका स्वर्गे लोके वाचा त्वान्वारोहामि[2] यास्ते अग्न आर्द्रा[3] योनयो याः कुलायिनीर्ये ते अग्न इन्दवो या उ नाभयो यास्ते अग्ने तन्व ऊर्जो नाम ताभिस्त्वमुभयीभिस्संविदानास्स्वयंचित्वानास्तन्वो[4] निषीद ॥
मधु वाता[5] ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नस्सन्त्वोषधीः ॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः ।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥[6]
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः ।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥
संसर्पन्तीस्समुद्रान्स्वर्गानपां[7] पतिर्वृषभ[8] इष्टकानाम् ।
तत्र गच्छ यत्र पूर्वे परेताः[9] पुरीषं वसानस्सुकृतस्य[10] लोकम् ॥
अपां गम्भीरं गच्छ मा त्वा सूर्यः परिताप्सीन्माग्निर्वैश्वानरः[11] ।
अनु त्वा दिव्या वृष्टिस्सचतामच्छिद्राः[12] प्रजा अभिविपश्य ॥
मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् ।
पिपृतां नो भरीमभिः ॥[13]
स्यूता देवेभिरमृतेनागादुखा स्वसारमधि वेदिमस्थात्[14] ।

---

[1] So corr Ch ज्यो॰ [2] So corr Ch हामि [3] So corr Ch आन्द्रा [4] So corr Ch स्वयंचित्वानास॰ [5] So corr Ch वात, aber vgl RV 1, 90, 6, MS 2, 7, 16, TS 4, 2, 9, 3, VS 13, 27 [6] Vgl RV 1, 90, 7, zum folgenden Verse RV 1, 90, 8 [7] Ch ससर्पन्तीन्समु॰ aber W 2 ससर्पन्तीस्समुद्रा॰, vgl MS 2, 7, 16, VS 13, 31 Dieser und die beiden folgenden Verse in W 2 vorhanden, doch mit so lückenhafter Accentuation, daß ich auf deren Wiedergabe verzichtet habe [8] W 2 पति वृषभ [9] W 2 परेता [10] W 2 नास्तु॰, cf aber MS 2, 7, 16 [11] So corr Ch त्वा सूर्य परेताप्सी॰, W 2 त्वा सूर्यपरितास्पी॰, vgl VS 13, 30 [12] Ch सचतापच्छि॰ [13] Vgl RV 1, 22, 13, MS 2, 7, 16 [14] So corr Ch वेदि॰, vgl MS 2, 7, 16

सत्यं पूर्वैर्ऋषिभिश्चाकॢपानो ऽग्निः प्रविष्टो इह तद्दधातु ॥
पृथिवि पृथिव्यां सीद माता मातरि माता स्योना स्योनायाम् ॥
क्रतुं देवानाममृतत्वमीमहे[1] ऽग्निं सधस्थे सदनेष्वच्युतम् ।
वैश्वानरं ब्रह्मणा विश्वव्यचसं स्तोमस्य धामन्निदधे पुरीष्यम् ॥
न्यधुर्मायया कवयो वयोधसमग्निं सधस्थे सदनेषु सुक्रतुम् ।
वैश्वानरं ब्रह्मणा विश्वव्यचसं स्तोमस्य धामन्न्यधां पुरीष्यम् ॥[2]
समिध्यमानं समिधा समिन्धते ऽग्निं सधस्थे सदनेष्वद्भुतम् ।
वैश्वानरं ब्रह्मणा विश्वव्यचसं स्तोमस्य धामन्पवमानमाभृतम् ॥
समास्त्वाग्ने ॥ ३ ॥ cf MS 2, 7, 16, 2, 8, 14, 2, 10, 6, 4, 9, 16 etc.

विश्वकर्मा[3] दिशां पतिः प्रजापतिस्स नः पशून्पातु स मां पातु तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद प्रजापतिर्दिशां पतिः प्रजापतिस्स नः पशून्पातु स मां पातु[4] तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद रुद्रो दिशां पतिर्वरुणो दिशां पतिरग्निर्दिशां पतिः प्रजापतिस्स नः पशून्पातु स मां पातु तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद ॥ मा छन्दस्तत्पृथिव्यग्निर्देवता[5] प्रमा छन्दस्तदन्तरिक्षं[6] वातो देवता प्रतिमा छन्दस्तद्[7] द्यौस्सूर्यो देवतास्रीवयश्छन्दस्तद्दिशस्सोमो[8] देवता विराट् छन्दस्तद्वाग्वरुणो देवता गायत्री छन्दस्तदजा[9] बृहस्पतिर्देवता त्रिष्टुप्छन्दस्तद्धिरण्यमिन्द्रो देवता जगती छन्दस्तद्गौः[10] प्रजापतिर्देवतानुष्टुप्छन्दस्तदायुर्मित्रो देवतोष्णिहा छन्दस्तच्चक्षुः[11] पूषा देवता बृहती[12]

---

[1] *So corr* Ch क्रतुर्देवानाममृतत्वमी°, vgl MS 2, 7, 16 [2] Vgl MS 2, 7, 16
[3] Dies Capitel accentuirt nach T1, T3 und Brl fol 72 73 [4] स मा पातु fehlt in Ch, die Worte finden sich aber in den accentuirten Mss, desgl in W 1β, wo dies Textstück ebenfalls vorliegt doch ohne Accente [5] T1, T3 und Brl schreiben मा छ॰ [6] T1, T3 und Brl प्रमा छ॰ [7] T1, T3 und Brl प्रतिमा छ॰ [8] W 1β स्रीवयश्छ॰ सोमदेवता [9] Ch गायत्रीश्छ॰, T1, T3 und Brl गायत्री छ॰ [10] Ch जगतीश्छ॰, T1, T3 und Brl जगती छ॰ [11] T1, T3 und Brl ष्णिहा छ॰ [12] T1 T3 und Brl बृहती छं॰

छन्दस्संवृष्टिः पर्जन्यो देवता पङ्क्तिश्छन्दस्संदंश्वः परमेष्ठी देवता तेन ब्रह्मणा तेन च्छन्दसा तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवासीदत[1] ॥ ४ ॥

cf. TS 4, 3, 6; MS 2, 13, 14.

ऋतसदसि सत्यसदसि तेजस्सदसि वर्चस्सदसि यशस्सदसि गृणानासि धामासि धाम्ने त्वा धामभ्यस्त्वा धामसु[2] सीद सनिरसि सन्यै त्वा सनेयं विज्ञिरसि वित्त्यै त्वा विदेयं कर्मासि कर्मणे त्वा क्रियासं शक्तिरसि शक्त्यै त्वा शकेयं भूतिरसि भूत्यै त्वा भूयासं गूर्दो ऽसि गूर्दाय त्वा गूर्देभ्यस्त्वा गूर्दे सीद क्षत्रं पाहि क्षत्रं पिन्व क्षत्रं जिन्व क्षत्रं यच्छ क्षत्रमसि क्षत्राय त्वा क्षत्रेभ्यस्त्वा क्षत्रे सीद विश्वेषु त्वा पार्थिवेषु सादयामि विश्वेषु त्वान्तरिक्षेषु सादयामि विश्वेषु त्वा दिव्येषु सादयामि विश्वासु त्वाप्सु सादयामि विश्वासु त्वौषधिषु सादयामि विश्वेषु त्वा वनस्पतिषु सादयामि विश्वासु त्वा दिक्षु सादयामि विश्वासु त्वा प्रदिक्षु सादयामि ॥ दिवि सीद स्वर्जिदसि पृतनाजिदसि भूरिजिदस्यभिजिदसि विश्वजिदसि सर्वजिदसि सत्राजिदसि धनजिदसि भ्राडसि विभ्राडसि प्रभ्राडसि सपत्नहनं त्वा वज्रं सादयामि रक्षोहनं त्वा वज्रं सादयामि पिशाचहनं त्वा वज्रं सादयामि यातुधानहनं त्वा वज्रं सादयाम्यरातिहनं त्वा वज्रं सादयाम्यभिमातिहनं त्वा वज्रं सादयामि शत्रुहणमसि शत्रुहणं[3] भ्रातृव्यहणमसुरहणं त्वैन्द्रं वज्रं सादयामि ॥ ५ ॥

उद्वदस्युदितिरस्युद्यत्यस्याक्रममाणास्याक्रामन्त्यस्याक्रान्तिरसि संक्रममाणासि[4] संक्रामन्त्यसि संक्रान्तिरसि स्वर्गोसि स्वरसीषि सीदोर्जि सीद भगे सीद द्रविणे सीद सुभूते सीद पृथिव्या यज्ञिये सीद विष्णोः पदे सीदेडायाः पदे सीद घृतवति सीद पिन्वमाने सीद संव-

---

[1] So T3 und Bel ganz deutlich; in T1 wohl ebenso, doch nicht ganz deutlich; in Ch ध्रुवा सीदत; vgl. unten 39, 11 s. E. [2] So corr. Ch धामासु
[3] So corr. Ch शत्रुहणमसि चत्रुहणं [4] So corr. Ch संक्रमाणा

त्सरे सीद परिवत्सरे सीदेदावत्सरे सीदानुवत्सरे सीदोद्वत्सरे सीदैकस्यां सीद दशसु सीद शते सीद सहस्रे सीदायुते सीद प्रयुते सीद नियुते सीदार्बुदे[1] सीद न्यर्बुदे[2] सीद बद्वे सीद समुद्रे सीद मध्ये सीदान्ते सीद परार्धे सीद ॥ पिन्वमानासि पिन्वमानाय त्वा पिन्वमानेभ्यस्त्वा पिन्वमाने सीदर्तमस्यृताय[3] त्वर्तेभ्यस्त्वर्ते[4] सीद सत्यमसि सत्याय त्वा सत्येभ्यस्त्वा सत्ये सीद संधिरसि संधये त्वा संधिभ्यस्त्वा संधिषु सीद सँक्षिदसि सँक्षिदे त्वा सँक्षिद्भ्यस्त्वा सँक्षित्सु सीद संपदसि संपदे त्वा संपद्भ्यस्त्वा संपत्सु सीद ॥ ६ ॥

प्राची दिग्गायत्री छन्दो रथन्तरँ सामाग्निर्देवता वसन्त ऋतुस्त्रिवृत्स्तोमः पञ्चदशवर्तनिस्त्र्यविर्वयः कृतमयानां पुरोवातो वातस्सानग ऋषिर्दक्षिणा दिक् त्रिष्टुप्छन्दो बृहत्सामेन्द्रो देवता ग्रीष्म ऋतुः पञ्चदशस्स्तोमस्सप्तदशवर्तनिर्दित्यवाड्वयस्त्रेतायानां[5] दक्षिणाद्वातो वातः प्रत्न ऋषिः प्रतीची दिग्जगती छन्दो वैरूपँ साम मरुतो देवता वर्षा ऋतुस्सप्तदशस्स्तोम एकविंशवर्तनिस्त्रिवत्सो वयो द्वापरो ऽयानां[6] पश्चाद्वातो वातस्सनातन ऋषिरुदीची दिगनुष्टुप्छन्दो वैराजँ साम विश्वे देवा देवता शरदृतुरेकविंशस्स्तोमस्त्रिणववर्तनिस्तुर्यवाड्वय आस्कन्दो ऽयानामुत्तराद्वातो वातः पुराण ऋषिरूर्ध्वा[7] दिक् पङ्क्तिश्छन्दश्शाक्वरं रैवतँ साम मित्रावरुणौ देवता हेमन्तशिशिरा ऋतू त्रिणवस्स्तोमस्त्रयस्त्रिंशवर्तनिः[8] पष्ठवाड्वयो ऽभिभूरयानां विष्वग्वातो[9] वातस्सुपर्ण ऋषिः पितरः पितामहाः परे ऽवरेभ्यस्ते नः पान्तु ते नो ऽवन्त्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्यां[10] देवहूत्यां तेन ब्रह्मणा तेन च्छन्दसा तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवास्सीदत[11] ॥ ७ ॥ cf MS 2, 7, 20, TS 4 3, 3

---

[1] So corr Ch र्बुधे [2] So corr Ch न्यर्बुधे [3] So corr Ch सीर्दतम° [4] So corr Ch त्वर्तेभ्य° [5] Ch यानान्दक्षि° [6] So corr Ch यद्धापरो यान [7] So corr Ch ऋषिरुध्वा [8] So corr Ch त्रिवय° [9] So corr Ch विष्वग्वातो [10] So corr Ch पुरोधया° [11] So corr Ch वा द्रुवासीदत vgl 39, 4 a E, 39, 13 a E

आयुषः प्राणं संतनु प्राणाद्व्यानं संतनु व्यानादपानं संतन्वपानाच्चक्षुस्संतनु[1] चक्षुषश्श्रोत्रं संतनु श्रोत्राद्वाचं संतनु वाच आत्मानं संतन्वात्मनः पृथिवीं[2] संतनु पृथिव्या अन्तरिक्षं संतन्वन्तरिक्षाद्दिवं संतनु दिवस्स्वस्संतनु पृथिवी वशाग्निर्वत्सो गर्भो वनस्पतयो जरायु अग्निर्वत्सो ऽग्निहोत्रं पीयूषो ऽन्तरिक्षं वशा धाता गर्भो रुद्रा जरायु वायुर्वत्सो घर्मः पीयूषो द्यौर्वशा स्तनयित्नुर्गर्भो नक्षत्राणि जरायु सूर्यो वत्सो वृष्टिः पीयूष ऋग्वशा बृहद्रथन्तरे गर्भः प्रैषनिविदो जरायु यज्ञो वत्सो दक्षिणा पीयूषो विड्वशा राजन्यो गर्भः पशवो जरायु राजा वत्सो बलिः पीयूषः ॥ ८ ॥ cf TBr. 1, 5, 7.

भूमस्कृदसि वरिवस्कृदसि प्राच्यस्यूर्ध्वास्यन्तरिक्षमसि तेजोदां त्वा[3] तेजसि सादयामि वर्चोदां त्वा[4] वर्चसि सादयामि पयोदां त्वा पयसि सादयामि यशोदां त्वा यशसि सादयामि द्रविणोदां त्वा द्रविणे सादयामि पृथिव्यास्त्वा द्रविणे सादयाम्यन्तरिक्षस्य त्वा द्रविणे सादयामि दिवस्त्वा द्रविणे सादयामि दिशां त्वा द्रविणे सादयामि द्रविणोदां त्वा द्रविणे सादयाम्यप्सुषदसि वयस्सदसि श्येनसदसि गृध्रसदसि[5] सुपर्णसदसि ॥

या देव्यसीष्टक आयुर्दा उपशीवरी[6] ।
सा मामुपशेष्व[7] जायेव पतिमित्सदा ॥

या देव्यसीष्टके प्राणदा व्यानदा अपानदाश्चक्षुर्दाश्श्रोत्रदा वाग्दा आत्मदाः पृथिविदा अन्तरिक्षदा द्यौर्दास्स्वर्दाः[8] कुमारीदाः प्रफर्वीदाः प्रथमौपशदा युवतिदा उपशीवरी ॥ सा[9] मामुपशेष्व जायेव पतिमित्सदा ॥ ९ ॥ cf. MS 2, 13, 18 und 16; TS 4, 4, 7 and 6

---

[1] So corr. Ch °नाश्च° [2] So corr. Ch पृथिवीं [3] So corr. Ch तेजोदस्त्वा
[4] So corr. Ch वर्चोदस्त्वा [5] So corr. Ch गृद्ध्र° [6] So corr. Ch तपशीवरी
[7] So corr. Ch °शेषु [8] So corr. Ch सुर्दाः [9] So corr. Ch सा।

इयमेव सा या प्रथमा व्यौच्छत्सावास्वन्तश्चरति[1] प्रविष्टा ।
वधूर्मिमाय नवगञ्जनित्री[2] त्रय एनां महिमानस्सचन्ते ॥
छन्दस्वती उषसौ पेपिशाने समानं योनिमनुसंचरेते[3] ।
सूर्यपत्नी विचरतः प्रजानती केतुमती अजरे भूरिरेतसा ॥
ऋतस्य पन्थामनु तिस्र आगुस्त्रयो घर्मासो अनु रेतसागुः ।
प्रजामेका रक्षत्यूर्जमेका व्रतमेका रक्षति देवयूनाम् ॥[4]
चतुष्टोमम्दधाद्या तुरीया यज्ञस्य पक्षा ऋषयो भवन्ती ।
गायत्री त्रिष्टुब्जगती विराडर्कं युञ्जानास्स्वराभरन्निदम्[5] ॥
पञ्चभिर्धाता विदधा इदं यत्तासां स्वसृरजनन्पञ्च[6] पञ्च ।
तासामु यन्ति प्रयवेण पञ्च नाना रूपाणि क्रतवो वसानाः[7] ॥
पञ्च[8] व्युष्टीरनु पञ्च दोहा गां पञ्चनाम्नीमृतवो ऽनु पञ्च ।
पञ्च दिशः पञ्चदशेन क्लृप्तास्समानमूर्ध्नीरभि लोकमेकम् ॥
ज्योतिष्मती प्रतिमुञ्चते नभ उषा देवी सूर्यस्य[9] व्रतेन ।
विपश्यन्ति पशवो[10] जायमाना नानारूपा मातुरस्या उपस्थे ॥
त्रिंशत्स्वसार उपयन्ति निष्कृतं समानं केतुं प्रतिमुञ्चमानाः ।
ऋतूंस्तन्वते[11] कवयः प्रजानतीर्मध्येछन्दसः[12] परियन्ति भास्वतीः ॥

---

[1] So Ch, in MS 2, 13, 10 haben wir मास्वन्तश्चरति, AV 8, 9, 11 व्यौच्छदास्वित रासु चरति, TS 4, 3, 11, 1 व्यौच्छदन्तरस्यां चरति, keine dieser Lesungen liegt die von Ch so nahe, daß die Correctur evident wäre, vielleicht ist सा तास्व° zu lesen? oder doch nach MS zu corrigiren? [2] So corr Ch ज्जनित्रे, aber vgl MS 2, 13, 10, TS 4, 3, 11, 1, AV 8, 9, 11. [3] So corr Ch सचरते, MS 2, 13, 10 und AV 8, 9, 12 = Corr, TS 4, 3, 11, 1 सचरन्ती, auch so ließe sich Ch leicht corrigiren [4] Vgl MS 2, 13, 10, TS 4, 3, 11, 1, AV 8, 9, 13 [5] So corr Ch ड्कं य्युञ्जानास्स्व°, vgl MS 2, 13, 10, TS 4, 3, 11, 2, AV 8, 9, 14 [6] So corr Ch स्वसृर°, cf TS 4, 3, 11, 2, anders MS 2, 13, 10 [7] So corr. Ch वसान, cf MS 2, 13, 10, TS 4, 3, 11, 2 [8] Hier beginnt ein Fragment in W 2, einige Verse mit unvollkommener Accentuation, auf deren Wiedergabe ich verzichtet habe, cf oben 26, 11, MS 2, 13, 10, TS 4, 3, 11, 4, AV 8, 4, 15 [9] So W 2, in Ch देवीस्सूर्यस्य, cf MS 2, 13, 10, TS 4, 3, 11, 3. [10] W 2 प्रथमो [11] So W 2 in Ch स्तन्यते, vgl MS 2, 13, 10, TS 4, 3, 11, 3 [12] So Ch, in W 2 मध्यच्छ°

शुक्रपभा नभसा ज्योतिषागाद्विश्वरूपा शबलग्निकेतुः[1]।
समानमर्थं स्वपस्यमाना[2] बिभ्रती जरामजर[3] उष आगाः ॥
ऋतूनां पत्नी प्रथमेयमागादह्नां नेत्री जनित्री[4] प्रजानाम्।
एका सती बहुधोषो[5] व्युच्छाजीर्णा त्वं जरय सर्वमन्यत् ॥
ऋतस्य धाम प्रथमा व्युष्यपामेका[6] महिमानं बिभर्त्ति।
सूर्यस्यैका चरति निष्कृतानि घर्मस्यैका सवितैकां नियच्छते[7] ॥
एकाष्टका तपसा तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम्।
तेन दस्यून्व्यसहन्त देवा हन्तासुराणामभवच्छचीभिः ॥[8]
अनानुजामनुजां मामकर्त[9] सत्यं वदन्त्यनुयच्छ एतत्।
भूयासमस्य सुमतौ यथा यूयमन्या वो[10] अन्यामति मा प्रयुक्त[11] ॥
अभून्नु नस्सुमतौ विश्ववेदा आष्ट[12] प्रतिष्ठामविदन्नु[13] गाधम्।
भूयासमस्य सुमतौ यथा यूयमन्या वो[14] अन्यामति मा प्रयुक्त ॥
प्रथमा ह व्युवास[15] सा धेनुरभवद्यमे।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां[16] समाम् ॥ ॥ १० ॥[17]

cf Maitr S 2 13, 10, TS 4 3 11, AV 8 9, 11—16

अग्निनर्तांपाद्[18] क्रत्वा शचीपतिस्सौहार्द्येन[19] स्वर्गो यज्ञेन मघवान्मन्युना वृत्रहा वृषभेन त्वष्टा वषट्कारेणार्धभाक् पृथिव्या तृणीको[20] ऽन्नेन गयस्फान्ना तनूमानृग्भिरन्नादस्तपसानाधृष्टस्सूर्येण विराडृतुभिः प्राभ-

[1] So Ch in W 2 Lücke vgl TS 4, 3 11 5 शबलीर॰ [2] So corr Ch स्वसस्यमाना W 2 नमहस्वपस्यमाना vgl TS 4 3 11, 5 [3] So corr Ch स्वरामजरा॰ W 2 जराम उष [4] So corr Ch जनित्रे vgl MS 2 13 10 TS 4, 3 11, 5 [5] So corr Ch धोषु [6] So corr Ch व्युषु॰ vgl MS 2 13, 10, TS 4, 3 11, 5 [7] Ch कारिय॰ [8] Vgl TS 4, 3 11, 3 [9] So corr Ch मामकत, W 2 मामकन्त, vgl TS 4, 3, 11, 3 [10] So W 2, in Ch वो [11] W 2 मा प्रयुक्त [12] So corr nach Anleitung von TS 4, 3, 11, 4 Ch schreibt आष्टा [13] So corr Ch मविदे नु, W 2 hier nicht mehr vorhanden, TS 4, 3, 11, 4 मविदद्धि [14] So corr Ch नो [15] So corr Ch व्युवास vgl MS 2 13, 10 a E, TS 4, 3, 11, 5 [16] Ch मुत्तरामुत्तरा [17] So corr Ch ॥ ११ ॥ [18] So corr Ch अग्निमतापाद [19] So corr Ch सौहार्म्येन, aber cf TS 4, 4, 8 [20] So Ch

वत्संवत्सरेण पर्यभवदभीषाद्[1] चाभीषाह्यश्चाभिवयाश्चोर्ध्ववयाश्च सवयाश्च बृहद्वयाश्च सासह्वांश्च सहीयांश्च सहमानश्च सहस्वांश्चाभि त्वा शूर नोनुमस्त्वामिद्धि हवामहे ॥ ११ ॥ cf TS 4 4 8

कया[2] नश्चित्र आभुवदूती[3] सदावृधस्सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ॥
कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः ।
दृढा चिदारुजे[4] वसु ॥
अभी षु णस्सखीनामविता जरितॄणाम् ।
शतं भवास्यूतिभिः[5] ॥
इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः[6] ।
जघान नवतीर्नव ॥
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम् ।
अविन्दच्छर्यणावति[7] ॥
अत्राह गोरमन्वत[8] नाम त्वष्टुरपीच्यम्[9] ।
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे ।
स वृषा वृषभो भुवत् ॥
इन्द्रस्स दामने कृत ओजिष्ठस्स बले वृधी[10] ।
द्युम्नी शुक्ली[11] स सोम्यः[12] ॥

---

[1] So corr Ch द्भीषाच्चाभीषाह्यश्चा॰ [2] Der Anfang des Cap accentuirt nach Brl fol 175 [3] Ch भाभुव॰, cf RV 4 31, 1 [4] So corr Ch रुजे, cf RV 4, 31, 2 MS 2 13 9 [5] Brl भवस्यू॰ hier bricht Brl ab [6] So corr Ch प्रतिस्कुत॰, cf RV 1, 84 13, MS 2, 13, 6 [7] Vgl MS 2 13, 6, dagegen RV 1, 84, 14 शर्युण॰ [8] So corr Ch मन्त॰, cf RV 1, 84 15, MS 2, 13 6 [9] So corr Ch पीच्यम, s RV 1 84 15 [10] sic Ch in Abweichung von allen andern Texten RV 8 82 8, MS 2 13, 6 u s w Dort findet sich dafür हित [11] So Ch, wahrend die andern Texte श्लोकी lesen RV 8, 82, 8 u s w [12] So corr Ch स भास्य

गिरा वज्रो न संभृतस्सबलो अनपच्युतः[1]।
ववक्ष उग्रो अस्तृतः ॥
इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः।
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥
इन्द्र इद्धर्योस्सचा संमिश्ल आ वचोयुजा।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥
इन्द्र वाजेषु नो वह[2] सहस्रप्रधनेषु च।
उग्र[3] उग्राभिरूतिभिः ॥
अभि त्वा शूर नोनुमो ऽदुग्धा इव धेनवः।
ईशानमस्य जगतस्स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः।
ईशानमिन्द्र तस्थुषः ॥[4]
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो[5] न जातो न जनिष्यते।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो[6] गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥
त्वामिद्धि हवामहे साता[7] वाजस्य कारवः।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः।
त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महस्स्तवानो अद्रिवः।
महस्स्तवानो अद्रिवो गामश्वं रथ्यमिन्द्र संकिर सत्रा वाजं न जिग्युषे ॥[8]
यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे[9]।
प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम्।

---

[1] So corr. Ch °पच्युतः; vgl. RV 8, 82, 9; MS 2, 13, 6 u. s. w. [2] So Ch; in RV 1, 7, 4 अव; desgl. MS 2, 13, 6 u. s. w. [3] So corr. Ch उग्रा [4] So corr. Ch ईशानमिन्द्र तस्थुषो न त्वावाँ etc., vgl. RV 7, 32, 22; MS 2, 13, 9 u. s. w. [5] So corr. Ch पार्थिवः न etc.; vgl. RV 7, 32, 23; MS 2, 13, 9. [6] So corr. Ch न जनिष्यते स्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनः गव्य° vgl. RV 7, 32, 23; MS 2, 13, 9. [7] So corr. Ch साता; vgl. RV 6, 46, 1; MS 2, 13, 9. [8] Vgl. RV 6, 46, 2; MS 2, 13, 9. [9] So Ch; dagegen दक्षसे in RV 6, 48, 1; MS 2, 13, 9 u. s. w.

वत्संवत्सरेण पर्यभवदभीषाट्[1] चाभीषाहश्चाभिवयाश्चोर्ध्ववयाश्च स-वयाश्च बृहद्वयाश्च सासह्निश्च सहीयांश्च सहमानश्च सहस्वांश्चाभि त्वा शूर नोनुमस्त्वामिद्धि हवामहे ॥ ११ ॥ cf TS 4 4 8

कया[2] नश्चित्र आभुवदूती[3] सदावृधस्सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ॥
कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धस[4] ।
दृढा चिदारुजे[5] वसु ॥
अभी षु णस्सखीनामविता जरितॄणाम् ।
शतं भवास्यूतिभि.[5] ॥
इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः[6] ।
जघान नवतीर्नव ॥
इच्छन्नश्वस्य यच्छिर[7] पर्वतेष्वपश्रितम् ।
अविन्दच्छर्यणावति[8] ॥
अत्राह गोरमन्वत[9] नाम त्वष्टुरपीच्यम्[9] ।
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे ।
स वृषा वृषभो भुवत् ॥
इन्द्रस्स दामने कृत ओजिष्ठस्स यले वृधी[10] ।
द्युम्नी शुक्ली[11] स सोम्य[12] ॥

---

[1] So corr Ch दभीषाच्चाभीषाहाश्चा [2] Der Anfang des Cap accentuirt nach Brl fol 175 [3] Ch आभुव॰ cf RV 4 31 1 [4] So corr Ch बन्धे cf RV 4 31, 2 MS 2 13 9 [5] Brl मत्सद॰ hier bricht Brl ab [6] So corr Ch प्रतिष्कत cf RV 1, 84 13, MS 2, 13 6 [7] Vgl MS 2 13 6, dagegen RV 1, 84 14 सहिद [8] So corr Ch ॰॰र , cf RV 1, 84 15, MS 2, 13 6 [9] So corr Ch पीच्यम् s RV 1 84 15 [10] sic Ch in Abweichung von allen andern Texten RV 8 82 6, MS 2 13 6 u s w Dort findet sich dafür हित [11] So Ch während die andern Texte श्लोकी lesen, RV 8, 82 8 u. s w [12] So corr Ch स सोम्य॰

गिरा वज्रो न संभृतस्सबलो अनपच्युतः[1]।
ववक्ष उग्रो अस्तृतः ॥
इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः।
इन्द्रं वाणीरनूषत ॥
इन्द्र इद्धर्योस्सचा संमिश्ल आ वचोयुजा।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥
इन्द्र वाजेषु नो वह[2] सहस्रप्रधनेषु च।
उग्र[3] उग्राभिरूतिभिः ॥
अभि त्वा शूर नोनुमो ऽदुग्धा इव धेनवः।
ईशानमस्य जगतस्स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः।
ईशानमिन्द्र तस्थुषः ॥[4]
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो[5] न जातो न जनिष्यते।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो[6] गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥
त्वामिद्धि हवामहे साता[7] वाजस्य कारवः।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः।
त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महस्स्तवानो अद्रिवः।
महस्स्तवानो अद्रिवो गामश्वं रथ्यमिन्द्र संकिर सत्रा वाजं न जि-
ग्युषे ॥[8]
यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च चक्षसे[9]।
प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम्।

---

[1] So corr. Ch °पच्यतः; vgl RV 8, 82, 9; MS 2, 13, 6 u. s. w. [2] So Ch; in RV 1, 7, 4 अव; desgl. MS 2, 13, 6 u. s. w. [3] So corr. Ch उग्रा [4] So corr. Ch ईशानमिन्द्र तस्थुषो न त्वावाँ etc.; vgl. RV 7, 32, 22; MS 2, 13, 9 u. s. w. [5] So corr. Ch पार्थिवः न etc.; vgl. RV 7, 32, 23; MS 2, 13, 9. [6] So corr. Ch न जनिष्यते स्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनः गव्य° vgl. RV 7, 32, 23; MS 2, 13, 9. [7] So corr. Ch साता, vgl. RV 6, 46, 1; MS 2, 13, 9. [8] Vgl. RV 6, 46, 2; MS 2, 13, 9. [9] So Ch; dagegen दक्षसे in RV 6, 48, 1; MS 2, 13, 9 u. s. w.

प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥
ऊर्जो नपात्[1] स हिनायमस्मयुर्दाशेम[2] हव्यदातये दाशेम हव्यदातये ।
भुवद्वाजेष्ववितां[3] भुवद्वृध[4] उत त्राता तनूनाम् ॥ ॥ १२ ॥

cf. Maitr. S. 2, 13, 9 und 6 etc.

अग्ने[5] देवाँ इहावह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे ।
असि होता न ईड्यः ॥
अगन्म महो[6] नमसा यविष्ठं[7] यो दीदाय समिद्धस्स्वे दुरोणे ।
चित्रभानुं[8] रोदसी अन्तरुर्वी[9] स्वाहुतं[10] विश्वतः प्रत्यञ्चम् ॥
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्निं होतारं परिभूतमं मतिम्[11] ।
त्वामग्नेस्य[12] हविषस्समानमित्त्वां महो वृणते नान्यं त्वत्[13] ॥
मनुष्वत्त्वा[14] निधीमहि मनुष्वत्समिधीमहि ।
अग्ने मनुष्वदङ्गिरो देवान्देवयते यज ॥
अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः ।
अग्नी[15] राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यमिषं स्तोतृभ्य[16] आभर ॥

अग्निर्देवता कृत्तिका नक्षत्रं प्रजापतिर्देवता रोहिणी नक्षत्रं मरुतो देवतेन्वका नक्षत्रं रुद्रो देवता बाहुर्नक्षत्रमदितिर्देवता पुनर्वसु नक्षत्रं बृहस्पतिर्देवता तिष्यो नक्षत्रं सर्पा देवताश्रेषा नक्षत्रं पितरो देवता मघा नक्षत्रं भगो देवता फल्गुनीर्नक्षत्रमर्यमा[17] देवतोत्तराः

---

[1] So corr. Ch शंसिषमूर्जो नपात   [2] So corr. Ch स्मयुः ॥ दाशेम; vgl. RV 6, 48, 2; MS 2, 13, 9.   [3] So corr. Ch दुवेष्व   [4] So corr. Ch वृधः   [5] Dies Capitel auch in T1 und Brl fol. 126 vorhanden; darnach accentuirt.   [6] So die Mss.; dagegen RV 7, 12, 1 महो; desgl. MS 2, 13, 5; TBr. 3, 11, 6, 3.   [7] So T1; in Ch यविष्ठ; Brl यविष्ठं   [8] Ch चित्रं भानु   [9] Brl fol. 126 अन्तरोर्वी   [10] Accent in diesem Worte ergänzt; T1 und Brl स्वाहुतं ohne Accent.   [11] So T1 und Brl; Ch मिर्होतारं परिभूतम्मतिम   [12] So T1 und Brl; in Ch त्वामग्नेस्य; cf. TBr. 3, 11, 6, 3; RV 10, 91, 8 anders   [13] So T1 und Brl; in Ch त्वा महो वृणते नान्यत्वत   [14] So T1 und Brl; in Brl मनुष्वत्त्वा; cf. RV 5, 21, 1; TBr. 3, 11, 6, 3   [15] So T1 und Brl, Ch अग्निर्राये; vgl. RV 5, 6, 3; TBr. 3, 11, 6, 4.   [16] Ch स्तोतृभ्य   [17] So Brl; in Ch फल्गुनीर्न॰; T1 wohl नी न॰

फल्गुनीनक्षत्रं[1] सविता देवता हस्तौ[2] नक्षत्रं त्वष्टा देवता चित्रा नक्षत्रं वायुर्देवता निष्ट्या नक्षत्रमिन्द्राग्नी देवता विशाखे[3] नक्षत्रं मित्रो देवतानूराधा नक्षत्रमिन्द्रो देवता ज्येष्ठा नक्षत्रं निर्ऋतिर्देवता मूलं नक्षत्रमापो देवताषाढा नक्षत्रं विश्वे देवा देवतोत्तरा[4] अषाढा नक्षत्रं विष्णुर्देवताश्वत्यौ नक्षत्रं वसवो देवता श्रविष्ठा नक्षत्रं वरुणो देवता शतभिषङ् नक्षत्रमज एकपाद्देवता प्रोष्ठपदा नक्षत्रमहिर्बुध्न्यो देवतोत्तरे प्रोष्ठपदा नक्षत्रं पूषा देवता रेवती नक्षत्रमश्विनौ देवताश्वयुजौ नक्षत्रं यमो देवतापभरणीर्नक्षत्रमयं रुचस्य प्रजापतेस्सोमस्य धातुर्भूयासं[5] प्रजनिषीय तेन ब्रह्मणा तेन च्छन्दसा तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवासीदत[6] ॥ १३ ॥

cf. TBr. 3, 11, 6, 3 und 4; Maitr. S. 2, 13, 20

अग्निर्मूर्धायमग्निस्त्वामग्ने पुष्करादधि ॥

हुवे वस्सुद्योत्मानं सुवृक्तिं विशामग्निमतिथिं सुप्रयसम्[7] ।
मित्र इव यो दिधिषाय्यो भूद्देव आदेवे जने जातवेदाः ॥
पुरो वो मन्द्रं दिव्यं सुवृक्तिं प्रयति यज्ञे अग्निमध्वरे दधिध्वम् ।
पुर उक्थेभिस्स[8] हि नो विभावा स्वध्वरा करति जातवेदाः ॥
का त आकूतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शंतमा[9] का मनीषा ।
को वा यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम[10] ॥
जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निस्सुदक्षस्सुविताय नव्यसे ।
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्विभाति भरतेभ्यश्शुचिः[11] ॥

---

[1] So Brl; in T1 तत्र फल्गुनी न°, in Ch तत्र फल्गुनीन° [2] So die Mss., wenn nicht vielleicht T1 doch हस्तौ bietet; in MS 2, 13, 20 हस्तो, Caland corr. हस्तो [3] So T1 und Brl, in Ch विशाखा, aber auch MS 2, 13, 20 विशाखे [4] So T1 und Brl; in Ch विश्वे देवी उत्तरा [5] So T1 und Brl, in Ch धातु भू° [6] So T1; desgl. Ch, ohne Accent; in Brl ध्रुवां सीदत [7] So corr. Ch सुप्रयासम्, aber vgl. RV 2, 4, 1. [8] So corr. Ch उक्थेभि°; vgl. RV 6, 10, 1 [9] So corr. Ch शतमा; vgl. RV 1, 76, 1. [10] Erste Hand in Ch दशेम [11] So corr. Ch भरतेभ्यश्शु°; vgl. RV 5, 11, 1; MS 2, 13, 7; TS 4, 4, 1, 2; VS 15, 27.

त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं[1] वने वने ।
स जायसे मथ्यमानस्सहो महत्त्वामाहुस्सहसस्पुत्रमङ्गिरः[2] ॥
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समीधिरे ।
इन्द्रेण देवैस्सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः ॥[3]
त्वामग्ने हविष्मन्तो देवं मर्तास ईडते ।
मन्ये त्वा जातवेदसं स हव्या वक्ष्यानुषक्[4] ॥
त्वां चित्रश्रवस्तम हवन्ते विक्षु जन्तवः ।
शोचिष्केशं पुरुप्रियाग्ने हव्याय वोढवे ॥
यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो ।
महिषीव त्वद्रयिस्त्वद्वाजा[5] उदीरते ॥
आ ते अग्न इधीमहि ॥
आ ते अग्न ऋचा हविश्शुक्रस्य शोचिषस्पते ।
सुश्चन्द्र[6] दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आभर ॥
अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः ।
अस्तमर्वन्त आशवो ऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आभर ॥
॥ १४ ॥ cf. Maitr S 2 13 7, TS 4 4 4, VS 15 20 flg
अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम् ॥
तमग्निमस्ते वसवो[7] न्यृण्वन्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित् ।
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः[8] ॥
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नो ऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ ।

[1] So corr Ch वान vgl RV 5 11, 6, MS 2, 13, 7, TS 4 4, 4 3, VS 15, 28
[2] So corr Ch स जायते मथ्यमानस्सहो महात्त्वामाहुस्सहस पु°, vgl RV 5, 11, 6, MS 2, 13, 7 u s w
[3] Vgl RV 5 11, 2
[4] So corr Ch स हव्या वक्षानुषक्, vgl RV 5, 9, 1
[5] So corr Ch त्वद्रयिस्त्वद्वाजा, vgl RV 5, 6 4
[6] So corr Ch सुश्चद्र, vgl RV 5, 6, 5
[7] So corr Ch वसवो वसो, vgl RV 7, 1, 2
[8] So corr Ch दम आस नित्य, vgl RV 7, 1, 2

त्वाँ शश्वन्त उपयन्ति वाजाः ॥
एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमाहुवे ।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥[1]
अग्न आयाह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे ॥
उदस्य शोचिरस्थादाजुह्वानस्य[2] मीढुषः ।
उद्धूमासो अरुषासो दिविस्पृशस्समग्निमिन्धते नरः ॥
अग्ने वाजस्य गोमत ईशानस्सहसो यहो ।
अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः ॥[3]
स इधानो[4] वसुष्कविरग्निरीडेन्यो[5] गिरा ।
रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि ॥
क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः ।
स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति ॥[6]
भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिस्सुभग भद्रो अध्वरः ।
भद्रा उत प्रशस्तयः ॥[7]
यस्समिधा य आहुत्या[8] यो वेदेन ददाश मर्तो अग्नये[9] ।
यो नमसा स्वध्वरः ॥
तदग्ने[10] द्युम्नमाभर यत्सासाहत्सदने कंचिदत्रिणम् ।
मन्युं जनस्य दूढ्यः ॥

---

[1] Vgl. RV 7, 16, 1; MS 2, 13, 8; TS 4, 4, 4, 4; VS 15, 32. [2] So corr. Ch शुचिर॰; vgl. RV 7, 16, 3; TS 4, 4, 4, 5. [3] Vgl. RV 1, 79, 4; MS 2, 13, 8; TS 4, 4, 4, 5; VS 15, 35. [4] So corr. Ch एधानो; vgl. RV 1, 79, 5; MS 2, 13, 8; TS 4, 4, 4, 5; VS 15, 36. [5] So corr. Ch रेडेन्यो; vgl. RV 1, 79, 5; MS 2, 13, 8 u. s. w. [6] Vgl. RV 1, 79, 6; MS 2, 13, 8; TS 4, 4, 4, 5; VS 15, 37. [7] Vgl. RV 8, 19, 19; MS 4, 12, 5; VS 15, 38. [8] So Ch; vgl. RV 8, 19, 5 आहुती [9] So corr. Ch अग्नयो; vgl. RV 8, 19, 5. [10] So corr. Ch वदग्ने; vgl. RV 8, 19, 15; in Ch öfters व für त gesetzt.

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं[1] सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् ।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या[2] कृपा ।
घृतस्य विभ्राष्टिमनुवष्टि शोचिषाजुह्वानस्य[3] सर्पिषः ॥
यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां विप्र मन्मभिर्विप्रेभिश्शुक्र मन्मभिः[4] ।
परिज्मानमिव[5] द्यां होतारं चर्षणीनाम् ।
शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विशः प्रावन्तु[6] जूतये विशः ॥
एवेन सद्यः[7] पर्येषि[8] पार्थिवं मुहुर्गीरेतो[9] वृषभः कनिक्रदद्दधद्रेतः कनिक्रदत् ।
शतं चक्षाणो[10] अक्षभिर्देवो वनेषु तुर्वणिः ।
सदो दधान उपरेषु सानुष्वग्निः[11] परेषु सानुषु ॥
अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाट् स सुमद्रथः[12] ।
अग्निश्शुक्रेण शोचिषा बृहत्सूर्यो अरोचत ॥
मन्मृभ्राण्यप द्विषो[13] दहन्रक्षांसि विश्वहा ।
अग्निर्विश्वस्य राजति ।[14] अग्निर्विश्वं विराजति ।
अग्निस्सर्वं विराजति ॥ ॥ १५ ॥
cf Maitr S 2, 13 8, TS 4 4 4, VS 15 32 flg

इति श्रीमद्यजुषि काठके चरकशाखायामोरिमिकायां यदक्रन्दो नामैकोनचत्वारिंशं स्थानकं संपूर्णम् ॥[15]

---

[1] So corr Ch वसु [2] So corr Ch देवाच्या [3] So corr Ch जुह्वान स°, vgl RV 1, 127, 1, MS 2, 13 8, TS 4 4, 4, 8, VS 15, 47 [4] So corr Ch मन्मभिर्विप्रभिश्शुक्रमन्मभि , vgl RV 1, 127, 2 [5] So corr Ch परिज्मान, vgl RV 1, 127, 2 [6] So corr Ch विशःप्रावन्तु, vgl RV 1, 127, 2 [7] So corr Ch सद्य , vgl RV 1, 128, 3 [8] So Ch, RV 1, 128 3 पर्येति [9] So Ch, vgl RV 1, 128, 3 [10] So corr Ch चक्षो, vgl RV 1, 128 [illegible] [11] So corr Ch सानु [12] So corr Ch किति हव्यवाद् समुद्रथ , vgl RV Vāl 6, 5 [13] So corr Ch मन्मान्यप द्विष , vgl RV 8, 43 26 [14] So corr In Ch राजति अ° [15] So die Unterschrift des Capitels in Ch

हिरण्यगर्भस्समवर्तताग्रे[1] भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
यः प्राणतो निमिषतश्च[2] राजा पतिर्विश्वस्य जगतो बभूव ।
ईशे यो अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
य ओजोदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च[3] दृढा येन स्वस्स्तभितं[4] येन नाकम् ।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
यं इमे द्यावापृथिवी तस्तभाने अधारयद्रोदसी[5] रेजमाने ।
यस्मिन्नधि विततस्सूर[6] एति कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
यस्येमे विश्वे गिरयो महित्वा समुद्रं यस्य रसया सहाहुः[7] ।
दिशो यस्य प्रदिशः पञ्च देवीः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
आपो ह यन्महतीर्विश्वमायन्गर्भं[8] दधाना जनयन्तीरग्निम् ।
ततो देवानां निरवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिर्धाता दधातु सुमनस्यमानः ।
संवत्सरं ऋतुभिश्चाकॢपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु[9] ॥ ॥ १ ॥

cf Maitr. [illegible] 2, 13 23, TS 4, 1 8 3 flg, RV 10, 121 usw

प्राणापानाभ्यां त्वा सयुजा युजा युनज्म्यभ्याघाराभ्यां त्वा सयुजा युजा युनज्मीन्द्राग्निभ्यां त्वा सयुजा युजा युनज्मि छन्दोभिस्त्वा स्तोमेभिस्त्वोक्थेभिस्त्वा[10] तेजसे त्वा वर्चसे त्वा रय्यै[11] त्वा पोषाय त्वा सजातानां मध्यमेष्ठ्याय मया त्वा सयुजा युजा युनज्मि ॥

---

[1] Dies Capitel in Brl fol 95 und 96 vollstandig vorhanden, größtentheils auch in T 5, ein kleines Fragment in T 6 Nach diesen Mss accentuirt [2] Ch निमेष° [3] Das च fehlt in Ch und T 5 [4] Brl und T 5 स्वस्तभितं [5] Ch रोदसे [6] Hier kleine Lücke in T 5, gerade dies Stück im Fragment von T 1 vorhanden [7] So Accent corrigirt, Mss सहाहुः [8] Ch मायर्गर्भं [9] So Accent corrigirt, Brl und T 5 पुष्टिपति° [10] So corr Ch स्त्वोक्तेभि° [11] So corr Ch राये

त्वामग्ने वृषभं चेकितानं[1] पुनर्युवानं जनयन्नुपागाम्।
अस्थूरि[2] णो गार्हपत्यानि सन्तु तिग्मेन नो ब्रह्मणा सँशिशाधि ॥
संवत्सरस्य प्रतिमां ये त्वा रात्र्युपासते।
तेषामायुष्मती प्रजां रायस्पोषेण सँसृज ॥[3] ॥ २ ॥
यो अप्स्वन्तरग्निर्यो वृत्रे यः पुरुषे यो[4] अश्मनि।
य आविवेश भुवनानि विश्वा तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥
पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां[5] पृष्टो विश्वा ओषधीराविवेश।
वैश्वानरस्सहसा पृष्टो अग्निस्स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ॥
यस्सोमे अन्तर्यो गोष्वन्तर्वयांसि[6] य आविवेश यो मृगेषु।
य आविवेश द्विपदो यश्चतुष्पदस्तेभ्यो[7] अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥

विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे ज्योतिष्मतीमन्तरिक्षं यच्छान्तरिक्षं दृँहान्तरिक्षं मा हिँसीर्विश्वस्मै प्राणाय व्यानायापानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय वायुष्ट्वाभिपातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शंतमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीदान्तरिक्षमधिद्यौर्ब्रह्मणा विष्टं रुद्रा रक्षितारो वायुरधिनियन्तो अस्यां तां त्वा[8] प्रपद्ये सा मे शर्म च वर्म च भव तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद तेजो ऽसि तेजो मे यच्छान्तरिक्षं दृँहान्तरिक्षं मा पाहि तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद ॥

हुतादमग्निं[9] यमु काममाहुर्यं दातारं प्रतिग्रहीतारमाहुः।
यं जोहवीमि[10] पृतनासु सासहिं तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥

---

[1] So Ch; besser TS 5, 7, 2, 1 वृषभं चे°; *so vielleicht zu corrigiren*; vgl. zu dem Verse auch RV *6, 15, 19 (2. Hälfte)* [2] So corr. Ch यस्तुरिं; vgl RV 6, 15, 19; TS 5, 7, 2, 1. [3] Vgl. TS 5, 7, 2, 1. [4] So corr. Ch ये; vgl. MS 2, 13, 13. [5] So corr Ch पृथिव्यास्पृष्टो, vgl. oben 4, 16; MS 2, 13, 11; RV 1, 98, 2. [6] So corr. Ch गेष्व°, vgl. MS 2, 13, 13; AV 3, 21, 2. [7] So corr. Ch यश्चतु°; vgl MS 2, 13, 13; AV 3, 21, 2 [8] Erste Hand in Ch त्वत्वा; dann corr. in सत्वा; vgl. TS 4, 4, 5, 1 und 2. [9] Ch यो हुताद°; das यो ist von mir gestrichen; vgl MS 2, 13, 13 विश्वादम° [10] So corr. Ch मामु यं जोहवीमि, vgl. MS 2, 13, 13 a E.

येनेन्द्रस्य रथं संबभूवुर्वैश्वानर उत विश्वदाव्यः ।
धीरो यग्माक्रः परिभूरदाभ्यस्तेभ्यो[1] अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥

वेदिरसि सुधां मे धेहि वरुणस्य कुक्षी स्थो मा मा संताप्तं तास्पर्शोरिष्टनेमे ऽभि मा सच स्वस्त्या छर्दिषा शंतमेन नमो ऽग्नेर्वैश्वानरस्य हरसे नमश्शरवे त्रायमाण त्रायस्व नो हन्तरधि नो ब्रूहि ॥

वर्च आधायि मे तनूस्सह ओजो महद्बलम् ।
त्रयस्त्रिंशद्वीर्याणि तान्यग्निः प्रददातु मे ॥
आ मा वर्चो ऽग्निना दत्तमेतु महि राधस्सह ओजो महद्बलम् ।
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय प्रतिगृह्णामि महत इन्द्रियाय ॥

अम्बे दुधाये कहाये[2] किंशिलाये चन्याये कस्य या त इषुर्युवा नाम तस्यै ते विधेम तया नः पाहि तस्यै ते स्वाहा ॥ ३ ॥

cf. Maitr. S. 2, 13, 13; TS 4, 4, 5; 5, 5, 9, 1.

रोहितेषु त्वा जीमूतेषु सादयाम्यरुणेषु त्वा[3] जीमूतेषु सादयामि कृष्णेषु त्वा नीलेषु त्वासितेषु त्वा जीमूतेषु सादयाम्यम्बा नामासि दुला नामासि नितत्नी नामासि चुपुणीका नामास्यभ्रयन्ती नामासि मेघयन्ती नामासि वर्षयन्ती नामासि ज्योतिष्मतीं त्वा सादयामि ज्योतिष्कृतं त्वा सादयामि ज्योतिर्विदं[4] त्वा सादयामि ज्वलन्तीं त्वा सादयामि दीप्यमानां[5] त्वा सादयामि मल्मलाभवन्तीं[6] त्वा सादयामि रोचमानां[7] त्वा सादयामि बृहज्ज्योतिषं[8] त्वा सादयामि भास्वतीं त्वा सादयामि बोधयन्तीं त्वा सादयामि जाग्रतीं त्वा सादयाम्यजस्रां त्वा सादयामि प्रसवाय त्वोपयामाय त्वा काटाक्षाय[9] त्वा-

---

[1] So corr. Ch यग्माक्रः परिभूरिदाभ्य°, vgl MS 2, 13, 13. [2] So Ch, vgl. in TS 5, 5, 9, 1 महा [3] Dies त्वा fehlt in Ch und ist von mir ergänzt. [4] So corr. Ch र्विदि [5] So corr. Ch दीप्यमानं [6] So corr Ch erste Hand मन्मला°, dann मन्मला°, vgl. TS 1, 4, 34, Naigh. 1, 17. [7] So corr. Ch रोचमानं [8] So corr. Ch तिषं [9] In Ch erste Hand कटाक्षाय, dann corr. in काटाक्षाय

र्णवाय त्वा सिन्धवे त्वा समुद्राय त्वा सरसे त्वा विश्वव्यचसे त्वा धर्णसाय त्वा द्रविणाय त्वा सुभूताय त्वान्तरिक्षाय त्वा ॥ ४ ॥

cf Mâitr S 2, 13, 19, TS 1, 4, 34, 4, 4, 5, 1, TÂr 3, 19

द्यौरपराजितामृतेन नष्टादित्या[1] रक्षितारस्सूर्यो ऽधिविपत्तो अस्यां तां त्वा प्रपद्ये सा मे शर्म च वर्म च भव तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा[2] सीद् स्वरसि स्वर्मे यच्छ दिवं दृंह दिवो मा पाहि तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद् परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवः पृष्ठे ज्योतिष्मतीं व्यचस्वतीं प्रथस्वतीं भास्वतीं[3] रश्मिवतीमा या द्यां भास्या पृथिवीमुर्वन्तरिक्षं दिवं यच्छ दिवं दृंह दिवं मा हिंसीर्विश्वस्मै प्राणाय व्यानायापानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय सूर्यस्त्वाभिपातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शंतमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद ॥

उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।
वैश्वानरज्येष्ठेभ्यस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् ॥[4]

प्राणो ऽसि व्यानो ऽस्यपानो ऽसि श्रोत्रमसि चक्षुर्नाम तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवा सीद ॥

यत्ते ऽचितं यदु चितं[5] ते अग्ने यदूनं यद्वात्रातिरिक्तम् ।
विश्वे देवा अङ्गिरसश्चिनवन्नादित्यास्ते चितिमापूरयन्तु ॥
यास्ते अग्ने समिधो यानि धाम या जिह्वा जातवेदो यो अर्चिः ।
ये[6] ते अग्ने मेडवो[7] य इन्दवस्तेभिरात्मानं चिनुहि प्रजानन् ॥
चित्तिमचित्तिं[8] चिनवो विविद्वान्पृष्ठेव वीता वृजिना च मर्तान् ।
राये च नस्स्वपत्याय[9] देव दितिं च रास्वादितिमुरुष्य ॥

---

[1] So Ch! Vgl TS 4, 4, 5 2 विष्टो darnach wohl zu corrigiren [2] So corr Ch ध्रुव तयाङ्गिर॰ [3] So corr Ch तो भास्वतो [4] Vgl oben 7, 16, RV 8, 43, 11, MS 2, 13, 13 a E, TS 1, 3, 14, 7, AV 3, 21, 6, 20, 1, 3 [5] Vgl TBr 3, 11, 6, 1 [6] So corr Ch यो, vgl TS 5, 5, 4, 4 [7] So Ch, vgl मेडयो TS 5, 5, 4, 4 [8] So corr Ch चित्तिमचित्ति॰, vgl RV 4, 2, 11, TS 5, 5, 4, 4 [9] So corr Ch सुपत्याय vgl RV 4, 2, 11, TS 5, 5, 4, 4

वयमग्ने[1] धनवन्तस्स्यामालं यज्ञायोत[2] दक्षिणायै ।
ग्रावा वदेदभि[3] सोमस्यांशुमिन्द्र[4] शिक्षेमेन्दुना सुतेन ॥
रायस्पोषं नो धेहि जातवेद ऊर्जो भागं मधुमत्सूनृतावत् ।
दधाम यज्ञं सुनवाम सोमं यज्ञेन त्वामुपशिक्षेम शक्र ॥
ईशानं त्वा शुश्रुमा वयं धनानां धनपते ।
गोमदग्ने अश्ववद्भूरि पुष्टं हिरण्यवदन्नवद्धेहि मह्यम् ॥
दुहां ते द्यौः पृथिवी पयो जगतस्त्वा सोदको विसर्पतु ।
प्रजापतिनात्मानमाप्रीणे ऽरिक्तो म आत्मा ॥
यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु ।
यो रुद्रो विश्वा भुवनाविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः[5] ॥

॥ ५ ॥ cf. TS 4, 4, 5 und 6, weiteres aus den Anmerkungen

पिता मातरिश्वाच्छिद्रा पदा धादच्छिद्रोशिजः कवयः पदानुतक्षिषुस्सोमो[6] विश्वविन्नेता नेषद्बृहस्पतिरुक्थामदानि[7] शंसिषत् ॥

यदक्रन्दः ॥

यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एनं प्रथमो अध्यतिष्ठत् ।
गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट[8] ॥
असि[9] यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन ।
असि सोमेन समया विपृक्त[10] आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥
त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तस्समुद्रे ।

---

[1] Von hier an bis zum Schluß des Capitels in Brl fol 105 und T1 (Nr 2a) vorhanden und darnach accentuirt [2] Ch स्यामम यज्ञायोत [3] So Brl fol 105 und T1, in Ch ग्रावावादेद॰ [4] So Brl und T1, in Ch मिन्द्रे [5] So corr mit Caland, Brl, T1 und auch T6, wo der Vers 13b sich findet, देवा, desgl Ch, ohne Accent [6] So Calands Correctur, Ch विश्वविद्यत्सोमो, TS 5, 6, 86 पदानुतक्ष॰ सोमो [7] So corr Ch रुक्थामदानि, vgl TS 5, 6, 8, 6 [8] So corr Ch निरतिष्ठ, vgl RV 1, 163, 2, TS 4, 6, 7, 1 [9] So corr Ch अस्य, vgl. RV 1, 163, 3, TS 4, 6, 7, 1. [10] So corr Ch विपृक्त, vgl RV 1, 163, 3, TS 4, 6, 7, 1.

उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रा[1] त आहुः परमं जनित्रम् ॥
इमा ते वाजिन्नवमार्जनानीमा शफानां[2] सवितुर्निधाना[3] ।
अत्रा ते भद्रा वृषणा[4] अपश्यमृतस्य या अभिरक्षन्ति गोपाः ॥

संवत्सरो ऽसि परिवत्सरो ऽसीदावत्सरो[5] ऽस्यनुवत्सरो ऽस्युद्वत्सरो ऽसि देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामिन्द्रवन्तं त्वा सादयामि धामच्छदसि स्वे योनौ सीद स्वे पृथिव्या योनौ सीदर्तवस्ते[6] कल्पन्तां मासास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तामहोरात्राणि ते कल्पन्तामङ्गानि ते कल्पन्तां पर्ूंषि ते कल्पन्तां शरीराणि ते कल्पन्तामेत्या प्रेत्या सं चा च प्र च सारयाग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरिन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्रः सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः ॥

इमं स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने[7] सरिरस्य मध्ये ।
उत्सं जुषस्व मधुमन्तमूर्मिं समुद्रियं सदनमाविशस्व ॥ ॥ ६ ॥
cf TS 5 6, 8, 6, 4 6 7, 5, 5, 10, 6, RV 1, 163, 2—5

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपांशुना सममृतत्वमानट्[8] ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥
वयं नाम प्रब्रवाम[9] घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः ।
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं[10] चतुःशृङ्गो ऽवमीद्गौर[11] एतत् ॥
चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति[12] महो देवो मर्त्याँ आविवेश ॥

---

[1] So corr Ch वरुणश्छन्त्स्य° vgl aber RV 1, 163, 4 TS 4, 6 7, 2, VS 29, 15 [2] So corr Ch शफानां, vgl RV 1, 163, 5, TS 4, 6, 7, 2, VS 29 16 [3] So Ch[1] vgl RV 1, 163, 5 सनितुर्नि°, desgl TS 4, 6, 7, 2, VS 29, 16 [4] So Ch, vgl RV 1, 163, 5 रशना, desgl TS 4, 6, 7, 2, VS 29, 16 [5] So corr Ch परिवत्सर सीदव° [6] So corr Ch सीदतव° [7] So auch VS 17, 87, dagegen TS 5, 5, 10, 6 प्रप्यातमग्ने [8] So corr Ch मानाद्, vgl RV 4, 58, 1, MS 1, 6 2 [9] So corr Ch प्रवदाम, vgl RV 4, 58, 2 प्रब्रवामा, auch MS 1, 6 2 [10] So corr Ch शृणुवच्छस्य°, vgl RV 4, 58, 2, MS 1, 6, 2 [11] So corr Ch वमीद्गौर, vgl RV 4, 58, 2 [12] So corr Ch रोरवीति, vgl RV 4 58, 3, MS 1, 6, 2

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं[1] गवि[2] देवासो घृतमन्वविन्दन् ।
इन्द्र एकं सूर एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः ॥
एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे[3] ।
घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ॥
सम्यक्स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।
एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः ॥
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥
अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यस्स्मयमानासो[4] अग्निम् ।
घृतस्य धारास्समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥
कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि ।
यत्र सोमस्सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते ॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥
धामन्ते विश्वं भुवनमधिश्रितमन्तस्समुद्रे हृद्यन्तरायुषि ।
अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् ॥
॥ ७ ॥ cf RV 4 58

पितुं[6] नु[7] स्तोषं महो धर्माणं तविषीम् ।
यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥
स्वादो पितो मधो[8] पितो वयं त्वा ववृमहे[9] ।
अस्माकमविता भव ॥

---

[1] So corr Ch पणिभि॰, vgl RV 4, 58 4 [2] So corr Ch गवे vgl RV 4, 58 4 [3] So corr Ch नवचक्षि vgl RV 4 58 5 [4] So corr Ch कल्याण्यस्मय॰, vgl RV 4 58 8 [5] Dies Capitel in T1 und Brl vorhanden, darnach accentuirt vgl RV 1, 187, 1 Die Mss T1 und Brl haben hier fast durchweg die richtigen Lesarten während Ch vielfach abweicht [6] Ch पितुं T1 पितुं [7] Ch एन [8] So T1 und Brl, in Ch मधु, vgl RV 1, 187, 2 [9] So T1 und Brl, in Ch ववृद्महे Sgl RV 1, 187, 2

उप नः पितवाचर[1] शिवश्शिवाभिरूतिभिः[2] ।
मयोभूरद्विपेण्यस्सखा[3] सुशेवो अद्वयाः[4] ॥
तव त्यै[5] पितो रसा रजांस्यनु विष्ठिताः ।
दिवि वाता इव श्रिताः[6] ॥
तव त्ये[7] पितो ददतस्तव स्वादिष्ठ ते पितो ।
प्र स्वाद्मानो रसानां तुविग्रीवा इवेरते ॥
त्वे पितो महानां देवानां मनो हितम् ।
अकारि चारु केतुना तवाहिमवसावधीत्[8] ॥
यददः पितो अजगन्विवस्व पर्वतानाम् ।
अत्रा चिन्नो मधो पितोऽरं भक्षाय गम्याः ।
यदपामोषधीनां परिंशमारिशामहे ।
वातापे पीव इद्भव ॥[9]
यत्ते सोम गवाशिरो[10] यवाशिरो भजामहे ।
वातापे पीव इद्भव ॥
करम्भ ओषधे भव पीवो वृक्क उदारथिः ।
वातापे पीव इद्भव ॥
तं त्वा[11] वयं पितो वचोभिर्गावो न[12] हव्या सुषूदिम ।
देवेभ्यस्त्वा सधमादमस्मभ्यं[13] त्वा सधमादम्[14] ॥ ॥ ८ ॥ cf RV 1, 187
महमामो मधुमदेरयन्त[15] महा ज्योतिरभरत्सूर्यस्तत् ।

---

[1] So T1 und Brl, in Ch पित वाचर, vgl RV 1, 187, 3 [2] Ch शिवा ऊतिभि vgl RV 1, 187, 3 [3] Accent corr, T1 und Brl मयोभू°, vgl. RV 1, 187, 3 [4] Ch अद्वय, vgl RV 1, 187, 3 [5] So T1 und Brl, in Ch ते, vgl RV 1, 187, 4 [6] So T1 und Brl, in Ch वात इवाश्रिता., vgl RV 1, 187, 4 [7] So T1 und Brl, in Ch ते, vgl RV 1, 187, 5 [8] So T1, in Brl तवाहम°, Ch तवहि°, vgl RV 1, 187, [illegible] [9] In Ch folgt auf diesen Vers der 10 Vers करम्भ ओषधो (sic), in T1 und Brl steht derselbe an der richtigen Stelle [10] So T1 und Brl, in Ch गवाशिरो, vgl RV 1, 187, 9 [11] Ch त्वया [12] So T1 und Brl in Ch नो [13] Ch सदमा° [14] Ch सदमा° [15] Vgl AV 6, 61, 1 देरयन्ता

मां देवा[1] अनु विश्वे तपोजा मह्यं देवस्सविता[2] व्यचो धात्[3] ॥
अहमस्तभ्नां पृथिवीमुत द्यामहमृतूँरजनि[4] सप्त साकम् ।
अहं वाचं परि[5] सर्वां बभूव य इन्द्राग्नी असनँ सखायौ ॥
अहं द्यावापृथिवी आबभूवाहं विश्वा ओषधीस्सप्त सिन्धून् ।
मह्यं विशस्सम्नमन्त दैवीरहमुपश्यतहभ्यो[6] बभूव ॥
राये[7] जातस्संहसे वृद्धः क्षत्राणां क्षत्रभृत्तमो वयोधाः ।
महान्महित्वा संस्तभ्नै क्षत्रै राष्ट्रे च जागृहि ॥
नव कृत्व इन्द्रो राजा सविता त्वाभिषिञ्चतु ।
मित्रो वायुर्बृहस्पतिर्धाता क्षत्रं दधातु ते ॥

अदितिस्त्वा सुष्वतु[8] राजन्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते राज्याय महते जानराज्याय महते विश्वस्य भुवनस्याधिपत्याय संमास्त्वाभे देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां सरस्वत्या वाचा यन्तुर्यन्त्रेणममुमामुष्यायणममुष्याः पुत्रमसौ साम्राज्येनाभिषिञ्चामीन्द्रस्य साम्राज्येनाभिषिञ्चामि[10] ॥ ९ ॥

cf AV 6, 61, 1—3

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ।
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम ॥[11]
मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः ।
ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु मह्यं वातः पवते[12] कामे अस्मिन् ॥

---

[1] Ch माम्देवा, aber vgl AV 6, 61, 1   [2] So corr Ch सविथा, AV 6, 61, 1 = Corr   [3] So corr Ch भात AV 6 61, 1 = Corr   [4] So corr Ch ऋतूंर॰, vgl AV 6, 61, 2   [5] *So corr Ch वाचस्परि*   [6] *So mein Correcturversuch* Ch मुपस्मतह्भ्यो, *mit* स्मतह्भ्य weiß ich nichts anzufangen, ist vielleicht मतह्भ्य möglich und मुपस्मतह्भ्यो zu lesen?   [7] Von hier ab in T 1 und Brl fol 121 vorhanden, bis zum Ende des Capitels, darnach accentuirt   [8] So T 1 und Brl, wohl in सुषेतु zu corr, oder nach Caland सुवतु, Ch undeutlich, etwa स्वपुतु   [9] Ch येणामुमामु॰   [10] So der Text in Brl, in Ch schließt derselbe mit पुत्रमसौ साम्राज्येनाभिषिञ्चामि, desgl in T 1, accentuirt   [11] Vgl RV 10, 128, 1, AV 5, 3, 1, TS 4, 3, 14, 1, MS 1, 4, 1.   [12] So Ch, vgl RV 10, 128, 2 पवतां, desgl AV 5, 3, 3, TS 4, 7, 14, 1

मयि देवा द्रविणमायजन्तां ममाशीरस्तु मम[1] देवहूतिः ।
दैव्या होतारो वनिषन्त[2] एतदरिष्टास्स्याम तन्वा सुवीराः ॥
मह्यं यजन्तां मम यानीष्टाकूतिस्सत्या[3] मनसो मे अस्तु ।
एनो मा निगां कतमच्चनाहं[4] विश्वे देवा अनुतिष्ठन्तु मेह ॥
अग्निर्मन्युं[5] प्रतिनुदन्पुरस्तादद्ब्धो गोपः परिपातु विश्वतः ।
अपाञ्चो यन्तु निर्ऋथं[6] पुनस्ते ऽमीषां[7] चित्तं प्रबुधा विनश्यतु ॥
धाता धातॄणां भुवनस्य यस्पतिर्देवं सवितारमभिमातिषाहम् ।
इमं यज्ञं बृहस्पते ऽश्विनोभेन्द्रावत[8] काव्यैर्दंसनाभिः ॥
वयीष्वद्भुर्वीरह तास्कृणोत विश्वे देवा इह वीरयध्वम् ।
मा हास्महि[9] प्रजया मा तनूभिर्मा रधाम[10] द्विषते सोम राजन् ॥
उरुव्यचा नो महिषश्शर्म यंसदस्मिन्हवे पुरुहूतः पुरुक्षुः ।
स नः प्रजायै हर्यश्व मृडेन्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः ॥[11]
तिस्रो देवीर्महि[12] नश्शर्म यच्छत प्रजायै नस्तन्वे यच्च[13] पुष्टम् ।
मा नो वधीदभिभा मो[14] अशस्तिर्मा नो वृधग्वृजना[15] द्वेष्या या ॥
ये नस्सपत्ना अप ते[16] भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामवबाधामहे तान् ।
आदित्या रुद्रा उपरिस्पृशं मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन् ॥

---

[1] Vgl RV 10 128, 3 मह्यं मयि, desgl AV 5, 3 5, TS 4 7, 14, 1 [2] Ch यनिषन्न सत॰, vgl AV 5 3, 5 सनिषन्त सत॰, RV 10, 128, 3 यजुषन्त पूर्वे, TS 4, 7, 14, 1, 2 सनिषन्त पूर्वे [3] So corr übereinstimmend mit AV 5, 3, 4, Ch ममया नेष्टाकूति॰, vgl RV 10, 128, 4 मम यानि हव्याकूति॰, desgl TS 4 7, 14, 2 [4] So corr Ch कतमच्च॰ [5] So auch TS 4, 7, 14, 2, dagegen RV 10, 128, 6 धीमे मन्यु desgl AV 5 3, 2 [6] So corr Ch निनृथ, andere RV und TS निगुत AV निवृत्ता, vgl aber RV 7, 104, 14 [7] So corr Ch सेषा, vgl RV 10, 128, 6, AV 5, 3 2, TS 4, 7, 14 3 [8] So corr Ch बृहस्पतो श्विनोभेन्द्रायत vgl RV 10, 128, 7, TS 4, 7, 14, 3 [9] So corr Ch महान्महि aber vgl RV 10, 128, 5, AV 5, 3, 7, TS 4, 7, 14, 2 [10] So corr Ch तनूभिर्मरधाम, erste Hand मंरधाम, vgl RV 10 128 5 AV 5, 3, 7, TS 4, 7, 12, 2 [11] Vgl RV 10, 128, 8, AV 5 3, 8, TS 4 7, 14, 3 4 [12] So corr Ch देवीर्महि [13] So corr Ch यच्च, vgl AV 5 3, 7 [14] So corr Ch वधीदभिभा सो, vgl AV 5, 3, 6 विददभिर्मा मो [15] So Ch, in AV 5 3, 6 विदद्वृजिना [16] So corr Ch येन सपत्ना नपतेभं॰, vgl RV 10, 128, 9, AV 5 3 10

अर्वाञ्चमिन्द्रममुतो हवामहे यो गोजिद्धनजिदश्वजिद्यः ।
इमं नो यज्ञं विहवे जुषस्वेह कृण्मो हरिवो मेदिनं त्वा ॥[1] ॥ १० ॥

cf RV 10, 128, TS 4 7, 14, AV 5, 3

तव[2] श्रिये व्यजिहीत[3] पर्वतो गवां गोत्रमुदसृजो यदङ्गिरः[4] ।
इन्द्रेण युजा तमसा परीवृतं[5] बृहस्पते निरपामौब्जो[6] अर्णवम् ॥
बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवसर्तप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि[7] चित्रम् ॥
बृहस्पतिस्समजयद्वसूनि महो व्रजान्गोमतो देव एषः ।
अपस्सिषासन्त्स्वरप्रतीतो[8] बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमर्कैः[9] ॥
यमो दाधार[10] पृथिवीं यमो द्यामुत सूर्यम् ।
यमाय सर्वमित्तस्थे[11] यत्प्राणद्वायुरक्षितम् ॥
यथा पञ्च यथा षड्यथा पञ्चदशर्षयः ।
यमं यो विद्यात्स ब्रूयाद्यथैकर्षिर्विजानते ॥[12]
त्रिकद्रुकेभिः पतति षडुर्वीरेकमिद्बृहत् ।
गायत्री त्रिष्टुप्छन्दांसि सर्वा ता यम आहिता ॥[13]
मृडा[14] नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।
यच्छं च योश्च[15] मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु ॥

---

[1] Vgl TS 4 7, 14, 4 AV 5 3 11, (RVkh 10, 128, 1) [2] Dies Cap in Brl fol 10 17 vorhanden, darnach accentuirt auch in W 1 und G vorhanden [3] Accent ergänzt, Brl व्यजिहीत ohne Accent [4] Brl यद॰ [5] So Ch, ohne Accent Brl und G परिवृत, desgl W 1 ohne Accent, vgl RV 2 23, 18 [6] Ch पमोब्जो [7] Ch देहि, vgl oben 4, [illegible] auch RV 2, 23 15, MS 4, 14 1, TS 1, 8 22, 3, VS 26, 3 [8] So Brl und W 1 Ch सुरप्रतीत, G स्वरप्रतीतो, vgl oben 4, 16, RV 6, 73 3, TS 2, 3, 2, 8 [9] Accent corr, Brl हन्त्यमि॰, aber vgl oben 4 16, RV 6 73, 3 [10] So Brl, G und W 1, auch T 6 (wo dieser Vers ebenfalls fol 11ᵃ vorhanden) Ch दधार, vgl aber auch TAr 6, 5, [illegible] दाधार [11] T 6 सर्वमित्तस्थे [12] Accent des schließenden Verbums ergänzt, Brl विजानते ohne Accent, vgl aber TAr 6, , 2 [13] Vgl RV 10, 14, 16 u s w [14] Dieser und die folgenden beiden Verse auch in Brl fol 102 103 enthalten [15] Ch यच्छ च यच्च योच्च, vgl RV 1, 114, 2, TS 4, 5, 10, 2

अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीढ्वः[1]।
सुम्नायन्निद्विशो[2] अस्माकमाचरारिष्टवीरा जुहवाम[3] ते हविः ॥
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधमङ्कुं[4] कविमवसे निह्वयामहे।
आरे अस्मद्दैव्यं[5] हेडो अस्यतु सुमतिमिद्वयमस्या[6] वृणीमहे ॥
अव ते हेडो वरुण[7] नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः।
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेतो[8] राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि ॥
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥[9]
इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय।
त्वामवस्युराचके ॥[10]
तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस[11] मा न आयुः प्रमोषीः ॥ ॥ ११ ॥

cf RV 2, 23 16. 15, 6, 73, 3, TAr 6, 5, 2, RV 10 14, 16, 1, 114, 2—4, 1, 24, 14. 15 11, 1, 25 19

हव्यं प्रीणीहि हव्यं श्रीणीहि हव्यं श्रपय ॥ हव्यं पच हव्यमसि हव्याय त्वा हव्यवाडसि हव्ये सीद ॥

स्वयं कृण्वानः सुगमप्रयावं तिग्मशृङ्गो वृषभः शोशुचानः।
प्रत्नं सधस्थमनुपश्यमान आ तन्तुमग्निर्दिव्यं[12] ततान[13] ॥

---

[1] Ch मीढ्व [2] So corr Ch, W 1 und G ॰द्विषो, Brl यद्द्विषो und Brl fol 102 यन्निद्विषो, vgl RV 1, 114, 3 [3] Brl जुहुयाम [4] So Brl an beiden Stellen desgl Ch ohne Accent, W 1 यज्ञसाधनमङ्कुं॰ (?), desgl G, mit Accenten, dagegen RV 1, 114, 4 वङ्कुं [5] So Brl an beiden Stellen, und G, desgl W 1, nur ohne Accent, in Ch आरे अस्मदसति हेडो, vgl RV 1, 114, 4 [6] Ch सुमतिमिद्वय॰ [7] So Brl, W 1 und G, in Ch वरुणो, vgl RV 1, 24, 14 [8] So die Mss, ebenso TS 1, 5, 11, 2, desgl der Padap zu RV 1, 24, 14 und MS 4, 10, 4 प्रचेत, dagegen Samh Text RV 1, 24, 14 प्रचेता, desgl MS 4, 14, 17, 4, 10, 4 [9] Dieser Vers findet sich so, d h vollstandig gegeben, in Brl und G, desgl W 1, ohne Accent In Ch dagegen nur der Anfang उदुत्तमम् ॥ vgl RV 1, 24, 15 [10] Dieser Vers findet sich so an dieser Stelle in Brl und G, desgl in W 1, ohne Accent. In Ch fehlt derselbe ganz Vgl RV 1, 25, 19 [11] Brl श्रुश्रम [12] So corr Ch निर्दिव्य, vgl MS 2, 13, 22 a A, TBr 2, 4, 2, 5 [13] So corr Ch ततानि, vgl MS 2, 13 22 a A, TBr 2, 4, 2, 5

त्वं नस्तन्तुरुत सेतुरग्ने त्वं पन्था भवसि देवयानः ।
त्वयाग्ने पृष्ठं वयमारुहेमाथा देवैः सधमाद[1] मदेम ॥
अतिसर्गं ददतो मानवाय स्वर्गं पन्थामनुपश्यमानाः[2] ।
अनुपन्त मरुतो यज्ञमेतं वृष्टिद्यावानममृतं स्वर्विदम् ॥
आवर्तमानो भुवनस्य मध्ये प्रजा विकृण्वञ्जनयन्विरूपम्[3] ।
संवत्सरः परमेष्ठी धृतव्रतो यज्ञं नः पातु रजसः परस्मात् ॥
प्रजां पिपर्तु परिवत्सरो नो धाता दधातु सुमनस्यमानः ।
बह्वीस्साकं बहुधा विश्वरूपा एकव्रता मामभिसंविशन्तु ॥ ॥ १२ ॥
cf Maitr S 2, 13, 22, TBr 2 4 2, 5 6

यदाकूतात्समसुस्रोद्धृदो[4] वा मनसस्संभृतं चक्षुषो वा ।
तमनुप्रेहि सुकृतस्य लोकं यत्रर्षयो जग्मुः प्रथमाः पुराणाः ॥
एतं[5] सधस्थाः परि वो ददामि यमावहाच्छेवधिं[6] जातवेदाः ।
अन्वागन्ता यजमानस्स्वस्ति तं स्म जानीत परमे व्योमन् ॥
एतं जानीत परमे व्योमन्नग्ने सधस्था[7] विद लोकमस्य ।
यदागच्छात्पथिभिर्देवयानैरिष्टापूर्ते कृणुतादाविरस्मै ॥
इमं स्तनमिष्टो यज्ञः ॥
येन सहस्रं वहसि येनाग्ने सर्ववेदसम्[8] ।
तेनेमं यज्ञं नो वह स्वर्देवेषु गन्तवे ॥
येनाग्ने सुकृतः पथा मधोर्धारा व्यानशुः ।
तेनेमं यज्ञं नो[9] नय[10] स्वर्देवेषु गन्तवे ॥

---

[1] So corr Ch सदमाद vgl MS 2, 13, 22, TBr 2, 4 2 6 [2] So corr Ch मान , vgl MS 2, 13, 22 [3] Etwas anders MS 2, 13, 22 [4] So corr Ch समसुसुपद्रो, vgl TS 5 7 7, 1 [5] So corr Ch एतो, vgl TS 5, 7, 7, 1 [6] So corr Ch च्छेवधि [7] So corr Ch सधस्थात्, vgl TS 5, 7, 7, 1, vgl auch den vorausgehenden Vers [8] So corr Ch सर्वेदसम्, vgl oben 18, 18, TS 5, 7, 7, 3, MS 2 12, 4, VS 15 55, 18, 62 [9] So corr Ch यज्ञं, vgl TS 5, 7, 7, 3 — Corr [10] So Ch, vgl TS 5, 7, 7, 3 auch hier वह

येनाग्ने दक्षिणावन्तं यज्ञं वहन्त्यृत्विजः ।
तेनेमं यज्ञं नो वह स्वर्देवेषु गन्तवे ॥[1]
प्रस्तरेण परिधिना स्रुचा वेद्या च बर्हिषा ।
ऋचेमं यज्ञं नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे ॥[2]
यत्र धारा मधुमतीस्सदा स्यन्दन्ते अक्षिताः ।
तदग्निर्वैश्वकर्मणस्स्वर्देवेषु नो दधत् ॥
अपूपकूला नद्यस्सदा स्यन्दन्ते[3] अक्षिताः ।
तदग्निर्वैश्वकर्मणस्स्वर्देवेषु नो दधात् ॥
उपक्षरन्ति मधुनो घृतस्य कुल्याः पूर्णास्सदमक्षीयमाणाः ।
तदग्निर्वैश्वकर्मणस्स्वर्देवेषु नो दधत् ॥
यास्ते अग्ने या वो देवाः ॥
रोचय मा ब्राह्मणेष्वथो राजसु रोचय ।
रोचय मा विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम् ॥
स्वर्णघर्मस्स्वाहा स्वर्णशुक्रस्स्वाहा स्वर्णसूर्यस्स्वाहा स्वर्णार्कस्स्वाहा स्वर्णाग्निस्स्वाहा ॥ ॥ १३ ॥ cf TS 5, 7, 7
ईडे[4] अग्निं विपश्चितं गिरा यज्ञस्य साधनम् ।
श्रुष्टीवानं धितावानम् ॥[5]
अग्ने शकेम[6] ते वयं यमं देवस्य वाजिनः ।
अति द्वेषांसि तरेम ॥
पृथुपाजा अमर्त्यो घृतनिर्णिक्स्वाहुतः ।
अग्निर्यज्ञस्य हव्यवाट् ॥[7]
तं सबाधो[8] यतस्रुच इत्था धिया यज्ञवन्तः ।

---

[1] Vgl TS 5, 7, 7 3 [2] Vgl TS 5 ~, 7, 2 [3] So corr Ch स्यन्दन्त, vgl den folgenden Vers, cf auch Ts 5 7, 7, 3 [4] Dies Capitel in T ι (Nr 11) und Brl fol 29 30 vorhanden, darnach accentuirt [5] Vgl. RV 3, 27, 2, MS 4, 11, 2 [6] शकेम in den Mss ohne Accent, vgl RV ▮ 27, 3 [7] Vgl RV 3, 27, 5 [8] Brl सुबाधो, vgl RV 3, 27, 6

आचक्रुरग्निमूतये ॥
नवं नु स्तोममग्नये दिवश्श्येनाय[1] जीजनम्[2] ।
वस्वः कुविद्वनाति नः ॥
स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे रयिर्वीरवतो यथा ।
अग्रे यज्ञस्य चेततः[3] ॥
उप त्वा रण्वसंदृशं प्रयस्वन्तस्सहस्कृत ।
अग्ने ससृज्महे[4] गिरः ॥
उप छायामिव घृणेरगन्म[5] शर्म ते वयम् ।
अग्ने हिरण्यसंदृशः ॥
अग्ने मृड महां असि य ईमा देवयुं जनम् ।
इयेथ बर्हिरासदम् ॥[6]
स मानुषीषु दूडभो[7] विक्षु प्रावीरमर्त्यः ।
दूतो विश्वेषां भुवत् ॥
और्वभृगुवच्छुचिमप्नवानवदाहुवे[8] ।
अग्निं समुद्रवाससम् ॥
आ सवं सवितुर्यथा भगस्येव भुजिं हुवे ।
अग्निं समुद्रवाससम् ॥[9]
हुवे वातस्वनं कविं पर्जन्यक्रन्द्यं सहः ।
अग्निं समुद्रवाससम् ॥[10]
उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः ।
वायोरनीके अस्थिरन् ॥[11]
यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसंदिनम् ।

---

[1] In den Mss श्येनाय ohne Accent, vgl RV 7, 15, 4 [2] Bzl जीजन, vgl RV 7, 15, 1 [3] Vgl RV 7, 15, 5 श्रोचतः [4] Ch समस्महे, vgl RV 6, 16, 37. [5] Ch घृणेर॰, vgl RV 6, 16, 38 [6] Vgl RV 4, 9, 1 [7] Ch दूरभो, vgl RV 4, 9, 2 [8] Bzl ॰वनवद्, vgl RV 8, 91, 4 [9] Vgl RV 8, 91, 6 [10] Vgl RV 8, 91, 5 [11] Vgl RV 8, 91, 13 [12] Vgl RV 8, 91, 14 तस्थावसंदिनम्, Ch तस्था असंदिनम्

आपश्चिद्दधा पदम् ॥
अग्निर्मूर्धा ॥
उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते[1] ।
तव ज्योतींष्यर्चयः ॥
ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वर्पतिः ।
स्तोता स्यां तव शर्मणि[2] ॥
त्वामग्ने मनीषिणस्त्वां हिन्वन्ति चित्तिभिः ।
त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥[3]
अदब्धस्य स्वधावतो दूतस्य रेभतस्सदा ।
अग्नेस्सख्यं वृणीमहे ॥[4]
अग्निश्शुचिव्रततमश्शुचिर्विप्रश्शुचिष्कविः ।
शुची रोचत आहुतः ॥[5] ॥ १४ ॥

cf RV 3, 27, 2—6, 7, 15, 4. 5, 6, 16, 37 38, 4 9, 1 2, 8, 91, 4—6 13 14 8, 44 17—21, MS 4, 11, 2

इत्येकोत्तरशतशाखाध्वर्युप्रभेदभिन्ने श्रीमद्यजुर्वेदे काठके चरकशाखायामोरिमिकायां हिरण्यगर्भं नाम चत्वारिंशं स्थानकं संपूर्णम् ॥ भद्रमस्तु संपूर्णा चेयमोरिमिका ॥ श्रीग्रन्थत्रये मध्यपठिताश्च याज्यानुवाक्याः संपूर्णाः ॥ अस्मिन्ग्रन्थत्रयाभ्यन्तरे याज्यानुवाक्या नाम चतुर्थो ग्रन्थः ॥[6]

---

[1] Ch ईहते, vgl RV 8, 44, 17 [2] W 1 शर्मणि, vgl RV 8, 44, 18 [3] Vgl RV 8, 44, 19 [4] RV 8, 44, 20 [5] RV 8, 44, 21. [6] So die Unterschrift dieses Capitels, resp Buches in Ch

अथाश्वमेधो नाम पञ्चमो ग्रन्थः ॥[1]

ये[2] ते पन्थानः सवितः[3] पूर्व्यासो ऽरेणवो वितता[4] अन्तरिक्षे ।
तेभिर्नो अद्य पथिभिस्सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव ॥

नमो ऽग्नये पृथिविक्षिते लोकस्पृते लोकमस्मै यजमानाय देहि नमो वायवे ऽन्तरिक्षक्षिते लोकस्पृते लोकमस्मै यजमानाय देहि नम आदित्याय दिविक्षिते लोकस्पृते लोकमस्मै यजमानाय देहि ॥ १ ॥ cf. TS 7, 5, 24.

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे ॥
इमामगृभ्णन्रशनामृतस्य पूर्व आयुषि विदथेषु कव्या ।
तया देवास्सुतमाबभूवुर्ऋतस्य सामन्सरमारपन्ती[5] ॥

अभिधा असि भुवनमसि ॥ यन्तासि धर्तासि सो ऽग्निं वैश्वानरं सप्रथसं[6] गच्छ स्वाहाकृतः पृथिव्यां स्वगा त्वा देवेभ्यस्स्वाहा त्वा प्रजापतये यन्ता राड्यन्तासि यमनो धर्तासि धरुणः कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा पृथिव्यै त्वान्तरिक्षाय त्वा दिवे त्वा सते त्वासते त्वाद्भ्यस्त्वौषधीभ्यस्त्वा[7] विश्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः ॥ २ ॥
cf. MS 3, 12, 1; TS 7, 1, 11, VS 22, 2—5.

---

[1] Es folgen hier in Ch noch die Worte ओं स्वस्त्यस्तु प्रजाभ्यः ॥ ओं नमो ब्रह्मणे ॥ ओं द्रष्टे नम इति पौराणमार्षं ॥ ओं ॥ [2] Dies Capitel auch in *Brl* fol. 229 vorhanden, darnach accentuirt [3] So auch TS 7, 5, 24; dagegen RV 1, 35, 11 पन्थाः, ebenso VS 34, 27. [4] So auch TS 7, 5, 24; dagegen RV 1, 35, 11 सुकृता, ebenso VS 34, 27. [5] So corr. Ch सामन्मर° [6] So corr. Ch सप्रथमं; vgl. MS 3, 12, 1; TS 7, 1, 11, 2; VS 22, 3 = Corr. [7] So corr. Ch स्त्योष°

विभुर्मात्रा प्रभुः पित्राश्वो[1] ऽसि हयो ऽसि मयो ऽस्यत्यो ऽसि नरो ऽस्यर्वासि सप्तिरसि वाज्यसि वृषासि नृमणा[2] असि ययुर्नामास्यादित्यानां पत्वान्वेह्यग्नये स्वाहा स्वाहेन्द्राग्निभ्यां स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यस्स्वाहा प्रजापतये स्वाहा सर्वाभ्यो देवताभ्य इह धृतिस्स्वाहेह विधृतिस्स्वाहेह रन्तिस्स्वाहेह रमतिस्स्वाहा भूरसि भुवे त्वा भव्याय त्वा भविष्यते त्वा विश्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यो देवा आशापाला एतं देवेभ्यो ऽश्वं मेधाय प्रोक्षितं गोपायत ॥ ३ ॥

cf MS 3 12, 4, TS 7, 1 12, 1, VS 22, 19

आयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहोद्द्रावाय स्वाहोद्द्रुताय[3] स्वाहा शूकाराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा पलायिताय स्वाहापलायिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा परावल्गते स्वाहा यते स्वाहा प्रयते स्वाहा ॥ ४ ॥ cf MS 3, 12, 3, TS 7, 1, 13, VS 22 7 8

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा वायवे स्वाहापां मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा ॥ ५ ॥

cf MS 3 12 2, TS 7, 1 14, VS 22, 6

पृथिव्यै[4] स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा चन्द्रमसे स्वाहा नक्षत्रेभ्यस्स्वाहा प्राच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै[5] दिशे स्वाहा दिग्भ्यस्स्वाहावान्तरदिशाभ्यस्स्वाहा समाभ्यस्स्वाहा शरद्भ्यस्स्वाहाहोरात्रेभ्यस्स्वाहार्धमासेभ्यस्स्वाहा मासेभ्यस्स्वाहर्तुभ्यस्स्वाहा[6] संवत्सराय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ६ ॥

cf MS 3 12, 7 8, TS 7, 1, 15, VS 22, 27 ff

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे

---

[1] So corr Ch पित्राश्वा, vgl MS 3, 12, 4, 7, 1, 12, 1, VS 22, 19 — Corr [2] So corr Ch नृमणा [3] So corr Ch स्वाहोद्द्रावाय स्वाहोद्द्रुताय [4] Vor पृथिव्यै steht in Ch noch द्वितीय यायु ॥ १० ॥ [5] So corr Ch र्ध्वायै [6] So corr Ch स्वाहार्तुभ्य॰

स्वाहा बृहस्पतये स्वाहापां मोदाय स्वाहा वायवे स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा ॥ ७ ॥
cf. MS 3, 12, 2. 5; TS 7, 1, 16; VS [illegible], 6. 27.

पृथिव्यै[1] स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहाग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सूर्याय स्वाहा चन्द्रमसे स्वाहाह्ने स्वाहा रात्र्यै स्वाहर्जवे[2] स्वाहा साधवे स्वाहा सुक्षित्यै स्वाहा क्षुधे स्वाहाशितिम्ने स्वाहा रोचाय[3] स्वाहा हिमाय स्वाहा शीताय स्वाहातपाय स्वाहारण्याय स्वाहा[4] स्वर्गाय स्वाहा लोकाय स्वाहा वृत्ताय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ८ ॥ cf. TS 7, 1, 17.

भुवो देवानां कर्मणापसर्तस्य[5] पथ्यासि वसुभिर्देवेभिर्देवतया गायत्रेण त्वा छन्दसा युनज्मि वसन्तेन त्वर्तूनां हविषा दीक्षयामि भुवो देवानां कर्मणापसर्तस्य[6] पथ्यासि रुद्रेभिर्देवेभिर्देवतया त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा युनज्मि ग्रीष्मेन त्वर्तूनां हविषा दीक्षयामि भुवो देवानां कर्मणापसर्तस्य[7] पथ्यास्यादित्येभिर्देवेभिर्देवतया जागतेन त्वा छन्दसा युनज्मि वर्षाभिस्त्वर्तूनां हविषा दीक्षयामि भुवो देवानां कर्मणापसर्तस्य पथ्यासि विश्वेभिर्देवेभिर्देवतयानुष्टुभेन त्वा छन्दसा युनज्मि शरदा त्वर्तूनां हविषा दीक्षयामि भुवो देवानां कर्मणापसर्तस्य पथ्यास्यङ्गिरोभिर्देवेभिर्देवतया पाङ्क्तेन त्वा छन्दसा युनज्मि हेमन्तशिशिराभ्यां त्वर्तूनां हविषा दीक्षयामि भुवो देवानां कर्मणापसर्तस्य पथ्यास्याहं दीक्षामरुहमृतस्य पत्नीं गायत्रेण च्छन्दसा ब्रह्मणा चर्तं सत्ये ऽधां सत्यमृते ऽधां सुत्रामाणं महीमू षु ॥ ९ ॥ cf. TS 7, 1, 18.

हिंकाराय स्वाहिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहावक्रन्दते स्वाहा प्रोथते

---

[1] Diesem Worte geht in Ch voraus मप्त वायु ॥ १० ॥; cf. oben und am Schluß des Capitels [2] So corr. Ch स्वाहार्जवे; cf. TS 7, 1, 17, 1. [3] So Ch! Wahrscheinlich mit TS 7, 1, 17, 1 zu corr. in रेकाय [4] So corr. mit Caland; Ch स्वाहारण्याय; wohl Dittographie. [5] So corr. Ch पसर्तस्ये; das र्त am Rande eingeschaltet; vgl. TS 7, 1, 18, 1. [6] So corr. Ch पसर्तस्य [7] So corr. Ch पसर्तस्ये; das र्त am Rande eingeschaltet.

स्वाहा प्रप्रोथते[1] स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा प्राणाय स्वाहा व्यानाय स्वाहापानाय स्वाहा संदीयमानाय स्वाहा संदिताय स्वाहा विचृत्यमानाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा पलायिष्यते स्वाहा पलायिताय स्वाहोपरंस्यते स्वाहोपरताय स्वाहा निवेक्ष्यते स्वाहा निविशमानाय स्वाहा निविष्टाय स्वाहा निपत्स्यते स्वाहा निषीदते स्वाहा निषण्णाय स्वाहासिष्यते स्वाहासीनाय स्वाहासिताय स्वाहा निपत्स्यते स्वाहा निपद्यमानाय स्वाहा निपन्नाय स्वाहा शयिष्यते स्वाहा शयानाय स्वाहा शयिताय स्वाहा संमीलिष्यते स्वाहा संमीलते[2] स्वाहा संमीलिताय स्वाहा स्वप्स्यते स्वाहा स्वपते स्वाहा सुप्ताय स्वाहा प्रभोत्स्यते स्वाहा प्रबुध्यमानाय स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा जागरिष्यते स्वाहा जाग्रते स्वाहा जागृताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय[3] स्वाहा शृण्वते स्वाहा श्रुताय स्वाहा वीक्षिष्यते स्वाहा वीक्षमाणाय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा संहास्यते स्वाहा संजिहानाय स्वाहोज्जिहानाय स्वाहा विवर्त्स्यते स्वाहा विवर्तमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहोत्थास्यते स्वाहोत्तिष्ठते स्वाहोत्थिताय स्वाहा विधविष्यते[4] स्वाहा विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहोत्क्रंस्यते[5] स्वाहोत्क्रामते स्वाहोत्क्रान्ताय स्वाहा चंक्रमिष्यते स्वाहा चंक्रम्यमाणाय[6] स्वाहा चंक्रमिताय स्वाहा कण्डूयिष्यते स्वाहा कण्डूयमानाय स्वाहा कण्डूयिताय स्वाहा निकषिष्यते स्वाहा निकषमाणाय[7] स्वाहा निकषिताय स्वाहा यदत्ति तस्मै स्वाहा यत्पिबति तस्मै स्वाहा यन्मेहति तस्मै स्वाहा यच्छकृत्करोति तस्मै स्वाहा रेतसे स्वाहा प्रजाभ्यस्वाहा प्रजननाय स्वाहा ॥ १० ॥ cf TS 7, 1, 19; MS 3, 12, 3; VS 22, 7. 8.

---

[1] So corr. Ch प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथते, TS 7, 1, 19, 1 = Corr.; vgl. auch MS 3, 12, 3 a A.; VS 22, 7. [2] So corr. Ch संमीलिते, vgl. TS 7, 1, 19, 2 = Corr.
[3] So corr. Ch शुश्रूयमानाय [4] So corr. Ch विधवेष्यते, TS 7, 1, 19, 3 = Corr.
[5] So corr Ch स्वाहोत्क्राम्यते, TS 7, 1, 19, 3 = Corr. [6] So corr. Ch चक्रम्यमानाय
[7] So corr Ch निकषमानाय

अग्नये स्वाहा वायवे स्वाहा सूर्याय स्वाहर्तमस्यृतस्यर्तमसि सत्यमसि सत्यस्य सत्यमस्यृतस्य पन्था असि देवानां छायामृतस्य नाम तत्सत्यं यत्त्वं प्रजापतिरसि ॥
अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभस्स्पर्धन्ते दिवस्सूर्येण विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयन्पशून्न गोपा इर्यः परिज्मा ॥ ॥ ११ ॥[1]
cf TS 7 1, 20

इति श्रीमद्यजुषि काठके चरकशाखायामश्वमेधनाम्नि पञ्चमे ग्रन्थे मन्त्रानुवचनं प्रथमं संपूर्णम् ॥[2]

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्यां स्वाहा त्रिभ्यस्स्वाहा चतुर्भ्यस्स्वाहा पञ्चभ्यस्स्वाहा षड्भ्यस्स्वाहा सप्तभ्यस्स्वाहाष्टाभ्यस्स्वाहा[3] नवभ्यस्स्वाहा दशभ्यस्स्वाहैकान्नविंशत्यै स्वाहा विंशत्यै स्वाहा नवविंशत्यै स्वाहा त्रिंशते स्वाहैकान्नचत्वारिंशते स्वाहा चत्वारिंशते स्वाहा नवचत्वारिंशते स्वाहा पञ्चाशते स्वाहैकान्नषष्ट्यै स्वाहा नवषष्ट्यै स्वाहा सप्तत्यै स्वाहैकान्नाशीत्यै स्वाहाशीत्यै स्वाहा नवाशीत्यै स्वाहा नवत्यै स्वाहैकान्नशताय स्वाहा शताय स्वाहा द्वाभ्यां शताभ्यां स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ १ ॥ cf TS 7, 2, 11, (MS 3 12, 15, VS 23, 39)

एकस्मै स्वाहा त्रिभ्यस्स्वाहा पञ्चभ्यस्स्वाहा सप्तभ्यस्स्वाहा नवभ्यस्स्वाहैकादशभ्यस्स्वाहैकान्नविंशत्यै स्वाहैकविंशत्यै स्वाहा नवविंशत्यै स्वाहैकत्रिंशते स्वाहैकान्नचत्वारिंशते स्वाहैकचत्वारिंशते

---

[1] Hier folgt in Ch noch एकस्मात् ॥ १६ ॥, vgl oben [2] So die Unterschrift des Capitels in Ch [3] Erste Hand in Ch ष्टाभ्य·

स्वाहा नवचत्वारिंशते स्वाहैकपञ्चाशते स्वाहैकान्नषष्ट्यै स्वाहैकषष्ट्यै स्वाहा नवषष्ट्यै स्वाहैकसप्तत्यै स्वाहैकान्नाशीत्यै स्वाहैकाशीत्यै स्वाहा नवाशीत्यै स्वाहैकनवत्यै स्वाहैकान्नशताय स्वाहा शताय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ २ ॥ cf. TS 7, 2 12

द्वाभ्यां स्वाहा चतुर्भ्यस्स्वाहा षड्भ्यस्स्वाहाष्टाभ्यस्स्वाहा दशभ्यस्स्वाहाष्टादशभ्यस्स्वाहा[1] विंशत्यै स्वाहा त्रिंशते स्वाहाष्टात्रिंशते स्वाहा चत्वारिंशते स्वाहाष्टाचत्वारिंशते स्वाहा पञ्चाशते स्वाहाष्टापञ्चाशते स्वाहा षष्ट्यै स्वाहाष्टाषष्ट्यै स्वाहा सप्तत्यै स्वाहाष्टासप्तत्यै स्वाहाशीत्यै स्वाहाष्टाशीत्यै स्वाहा नवत्यै स्वाहाष्टानवत्यै स्वाहा शताय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ३ ॥ cf TS 7 2 13

त्रिभ्यस्स्वाहा पञ्चभ्यस्स्वाहा यथा द्वितीय एवं चतुर्थो ऽन्यत्प्रभृते. ॥ ४ ॥ cf TS 7, 2 14

चतुर्भ्यस्स्वाहाष्टाभ्यस्स्वाहा द्वादशभ्यस्स्वाहा षोडशभ्यस्स्वाहा विंशत्यै स्वाहा चतुर्विंशत्यै स्वाहाष्टाविंशत्यै स्वाहा द्वात्रिंशते स्वाहा षट्त्रिंशते स्वाहा चत्वारिंशते स्वाहाष्टाचत्वारिंशते स्वाहा द्वापञ्चाशते स्वाहा षट्पञ्चाशते स्वाहा षष्ट्यै स्वाहा चतुष्षष्ट्यै स्वाहाष्टाषष्ट्यै स्वाहा द्वासप्तत्यै स्वाहा षट्सप्तत्यै स्वाहाशीत्यै स्वाहा चतुरशीत्यै स्वाहाष्टाशीत्यै स्वाहा द्वानवत्यै स्वाहा षण्णवत्यै[2] स्वाहा शताय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ५ ॥ cf TS 7 2 15

पञ्चभ्यस्स्वाहा दशभ्यस्स्वाहा पञ्चदशभ्यस्स्वाहा विंशत्यै स्वाहा पञ्चविंशत्यै स्वाहा त्रिंशते स्वाहा पञ्चत्रिंशते स्वाहा चत्वारिंशते स्वाहा पञ्चचत्वारिंशते स्वाहा पञ्चाशते स्वाहा पञ्चपञ्चाशते स्वाहा षष्ट्यै स्वाहा पञ्चषष्ट्यै स्वाहा सप्तत्यै स्वाहाशीत्यै स्वाहा पञ्चाशीत्यै स्वाहा नवत्यै स्वाहा पञ्चनवत्यै स्वाहा शताय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ६ ॥ cf. TS 7, 2 16

---

[1] So corr Ch स्वाहाष्टादशदशभ्यस्स्वाहा [2] So corr Ch षण्नवत्यै

दशभ्यस्स्वाहा विंशत्यै स्वाहा त्रिंशते स्वाहा चत्वारिंशते स्वाहा पञ्चाशते स्वाहा षष्ट्यै स्वाहा सप्तत्यै स्वाहाशीत्यै स्वाहा नवत्यै स्वाहा शताय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ७ ॥ cf. TS 7, 2, 17.

विंशत्यै स्वाहा चत्वारिंशते स्वाहा षष्ट्यै स्वाहाशीत्यै स्वाहा शताय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ [illegible] ॥ cf. TS 7, 2, 18.

पञ्चाशते स्वाहा शताय स्वाहा द्वाभ्यां शताभ्यां स्वाहा त्रिभ्यश्चतुर्भ्यः पञ्चभ्यष्षड्भ्यस्सप्तभ्यो ऽष्टाभ्यो[1] नवभ्यश्शतेभ्यस्स्वाहा सहस्राय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ९ ॥ cf. TS 7, 2, 19.

शताय स्वाहा सहस्राय स्वाहायुताय स्वाहा प्रयुताय स्वाहा नियुताय स्वाहार्बुदाय[2] स्वाहा न्यर्बुदाय[3] स्वाहा बद्वाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा मध्याय स्वाहान्ताय स्वाहा परार्धाय स्वाहायसे स्वाहा व्युष्ट्यै स्वाहोदेष्यते स्वाहोद्यते स्वाहोदिताय स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा लोकाय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ १० ॥ cf. TS 7, 2, 20.

इति गणानुवचनं द्वितीयम् ॥[4]

अर्वाङ् यज्ञस्संक्रामत्वमुष्मादधि[5] मामभि ।
ऋषीणां यः पुरोहितः ॥
निर्देवं[6] निर्वीर्यं कृत्वा विष्कन्धं[7] तस्मिन्हीयतां यो ऽस्मान्द्वेष्टि ।
शरीरं यज्ञशमलं[8] कुसीदं तस्मिन्सीदतु[9] यो ऽस्मान्द्वेष्टि ॥

---

[1] Ch द्वाभ्यो; cf. oben. [2] So corr. Ch र्बुदाय [3] So corr. Ch न्यर्बुदाय
[4] So die Unterschrift des Capitels [illegible] Ch. [5] So corr. Ch संक्रामत्यमुष्मा°; vgl. TS 7, 3, 11, 1. [6] So corr. Ch निन्द्रियवि°; vgl. TS 7, 3, 11, 1. [7] So corr. Ch विस्कंधं, vgl. TS 7, 3, 11, 1. [8] So corr. Ch यज्ञमपले; vgl. TS 7, 3, 11, 1.
[9] So corr. Ch सीदन्तः vgl. TS 7, 3, 11, 1.

यज्ञ यज्ञस्य यत्तेजस्तेन संक्राम मामभि ।
ब्राह्मणानृत्विजो[1] देवान्यज्ञस्य तपसा ते ऽसा अहमाहुवे ॥
इष्टेन पक्वमुप ते हुवे ऽसा अहम् ।
सं ते वृञ्जे सुकृतं[2] सं प्रजां पशून् ॥[3]
प्रैषान्सामिधेनीराघारा[4] आज्यभागा आश्रुतं प्रत्याश्रुतमाशृणामि ते ।
प्रयाजानुयाजान्स्विष्टकृतमिडामाशिष[5] आवृञ्जे स्वः ॥
अग्निनेन्द्रेण[6] सोमेन सरस्वत्या विष्णुना देवताभिः ।
याज्यानुवाक्याभ्यामुप ते हुवे ऽसा अहं यज्ञमाददे[7] ते वषट्कृतम् ॥
स्तुतं शस्त्रं प्रतिगरं ग्रहमिडामाशिष आवृञ्जे स्वः ।[8]
पत्नीसंयाजानुप[9] ते हुवे ऽसा अहं समिष्टयजुराददे[10] तव ॥
पशून्सुतं[11] पुरोडाशान्सवनान्योत यज्ञम् ।
देवान्सेन्द्रानुप ते हुवे ऽसा अहमग्निमुखान्सोमवतो ये च विश्वे ॥
॥ १ ॥ cf. TS 7, 3, 11.

भूतं[12] भव्यं भविष्यद्वषट् स्वाहा नम ऋक्साम यजुर्वषट् स्वाहा नमो गायत्री त्रिष्टुब्जगती वषट् स्वाहा नमः पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्वषट् स्वाहा नमो ऽन्नं कृषिर्वृष्टिर्वषट्[13] स्वाहा नमः पिता पुत्रः पौत्रो[14] वषट् स्वाहा नमः प्राणो[15] व्यानो ऽपानो वषट् स्वाहा नमो भूर्भुवस्स्वर्वषट् स्वाहा नमः ॥ २ ॥ cf. TS 7, 3, 12.

आ मे गृहा भवन्त्वा प्रजा म आ मा यज्ञो विशतु वीर्यावान् ।
आपो देवीर्यज्ञिया माविशन्तु सहस्रस्य मा भूमा मा प्रहासीत् ॥

---

[1] So corr. Ch ब्राह्मणा ऋत्विजो, vgl TS 7, 3, 11, 1. [2] So corr. Ch सुकृतो, vgl. TS 7, 3, 11, 2. [3] Das Zeichen ॥ fehlt in Ch; von mir gesetzt. Vgl. TS 7, 3, 11, 2. [4] So corr. Ch राघारा, vgl TS 7, 3, 11, 2. [5] So corr. Ch याजान्स्विष्टकृत°; vgl TS 7, 3, 11, 2. [6] So corr Ch द्रेन [7] So corr. Ch माददः; vgl. TS 7, 3, 11, 2. [8] Das Zeichen । fehlt in Ch. [9] So corr. Ch संयाज्या°, vgl. TS 7, 3, 11, 3 [10] So corr. Ch राददते; vgl. TS 7, 3, 11, 3 [11] So corr. Ch पशून्सुतस्पु°; vgl. TS 7, 3, 11, 3 [12] Dies Capitel in T 6 fol. 7b vorhanden; darnach accentuirt. [13] Ch न कर्षिवृ° [14] Accent corr.; T 6 पौत्रौ; vgl TS 7, 3, 12. [15] Ch प्राणो, in T 6 प्राणो ohne Accent; daher dieser ergänzt.

आ मे मह्य[1] भवन्त्वा पुरोरुक्स्तुतशस्त्रे[2] माविशतां समीची[3]।
आदित्या रुद्रा वसवो मे सदस्यास्सहसस्य मा भूमा मा प्रहासीत् ॥
आ माग्निष्टोमो विशतूक्थ्यश्चातिरात्रो मा विशत्वापिशर्वरः।
तिरोअह्न्या मा सुहुता[4] आविशन्तु सहसस्य[5] मा भूमा मा प्रहासीत् ॥
॥ ३ ॥ cf. TS 7, 3, 13.

अग्निना तपो ऽन्वाभवद्वाचा ब्रह्म मणिना रूपाणि हिरण्येन वर्णो ऽद्भिः पृथिवीं वायुनान्तरिक्षं सूर्येण दिवं चन्द्रमसा नक्षत्राणि यमेन पितृन्राज्ञा मनुष्यान्फलेन नाद्यानजगरेण[6] सर्पान्व्याघ्रेणारण्या-न्पशूञ्छ्येनेन पतत्रिणो व्रीहिनान्नानि यवेनौषधीरुदुम्बरेणोर्जं न्यग्रोधेन वनस्पतीन्वृष्णाश्वान्वृषभेण[7] गा वृष्णिनावीर्बस्तेनाजा गायत्र्या छन्दांसि त्रिवृता स्तोमान्रथन्तरेण सामानि ब्राह्मणेन वाचम् ॥ ४ ॥
cf. TS 7, 3, 14.

स्वाहाधिमाधीताय स्वाहा स्वाहाधीतं[8] मनसे स्वाहा स्वाहा मनः प्रजापतये स्वाहा काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहादित्यै स्वाहादित्यै मह्यै स्वाहादित्यै सुमृडीकायै स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे नरंधिषाय स्वाहा त्वष्ट्रे[9] स्वाहा त्वष्ट्रे[10] तुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रे[11] पुरुरूपाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निखुर्यपाय स्वाहा विष्णवे निभूयपाय स्वाहा विश्वो देवस्य नेतुः ॥ ५ ॥
cf. TS 7, 3, 15

दद्भ्यस्स्वाहा हनुभ्यां स्वाहोष्ठाभ्यां स्वाहा नासिकाभ्यां स्वाहा मुखाय स्वाहा चक्षुर्भ्यां स्वाहा श्रोत्राभ्यां स्वाहा पार इक्षवो ऽवा-

---

[1] In Ch, wie es scheint मह्ह (so erste Hand) in मह्य corr. [2] So corr. Ch पुरोरुक्तु°, vgl. TS 7, 3, 13. — Corr. [3] So corr. Ch समीची, vgl. TS 7, 3, 13. [4] So corr. Ch तिरोअह्ना मा सुयता, vgl. TS 7, 3, 13 [5] So corr. Ch सहस्यस्य, vgl. TS 7, 3, 13 [6] So corr. Ch नाद्यान्, in TS 7, 3, 14 नाद्यान् [7] So corr. Ch व्याघ्रवृषभेन, übrigens läge es wohl ebenso nah, mit TS 7, 3, 15 व्याघ्रवृषभेण zu lesen [8] So corr. Ch स्वाहाधितं, vgl. TS 7, 3, 15 [9] So corr. Ch त्वाष्ट्रे [10] So corr. Ch त्वाष्ट्रे [11] So corr. Ch त्वाष्ट्र

रीयेभ्यः[1] पक्ष्मभ्यस्स्वाहावार इक्षवः पारीयेभ्यः[2] पक्ष्मभ्यस्स्वाहा शीर्ष्णे स्वाहा भ्रूभ्यां स्वाहा ललाटाय स्वाहा मूर्ध्ने स्वाहा मस्तिष्काय स्वाहा केशेभ्यस्स्वाहा वहाय स्वाहा ग्रीवाभ्यस्स्वाहा स्कन्धेभ्यस्स्वाहा[3] कीकसाभ्यस्स्वाहा पृष्टिभ्यस्स्वाहा पाजस्याय[4] स्वाहा पार्श्वाभ्यां स्वाहांसाभ्यां स्वाहा दोषभ्यां[5] स्वाहा बाहुभ्यां स्वाहा जङ्घाभ्यां स्वाहा श्रोणिभ्यां स्वाहोरुभ्यां स्वाहाष्ठीवद्भ्यां स्वाहा जङ्घाभ्यां स्वाहा भसदे स्वाहा शिखण्डेभ्यस्स्वाहा वालधानाय स्वाहाण्डाभ्यां स्वाहा शेपाय स्वाहा रेतसे स्वाहा प्रजाभ्यस्स्वाहा प्रजननाय स्वाहा पद्भ्यस्स्वाहा शफेभ्यस्स्वाहा लोमभ्यस्स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा मांसाय स्वाहा[6] स्नावभ्यस्स्वाहास्थिभ्यस्स्वाहा[7] मज्जभ्यस्स्वाहाङ्गेभ्यस्स्वाहात्मने स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ६ ॥ cf TS 7 3 16

अञ्ज्येताय स्वाहाञ्जिसक्थाय स्वाहा शितिपदे स्वाहा शितिककुदे स्वाहा शितिरन्ध्राय स्वाहा शितिपृष्ठाय स्वाहा शित्यंसाय स्वाहा पुष्पकर्णाय स्वाहा शित्योष्ठाय स्वाहा शितिभ्रवे स्वाहा शितिभसदे स्वाहा श्वेतानूकाशाय स्वाहाञ्जये स्वाहा ललामाय स्वाहासितज्ञवे[8] स्वाहा कृष्णैताय स्वाहा रोहितैताय[9] स्वाहारुणैताय स्वाहेदृशाय स्वाहा कीदृशाय स्वाहा तादृशाय स्वाहा सदृशाय स्वाहा विसदृशाय स्वाहा सुसदृशाय स्वाहा रूपाय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ७ ॥ cf TS 7,3 17

कृष्णाय स्वाहा श्वेताय स्वाहा पिशङ्गाय[10] स्वाहा सारङ्गाय स्वाहारुणाय स्वाहा गौराय स्वाहा बभ्रवे स्वाहा नकुलाय स्वाहा गो-

---

[1] So Ch in TS 7, 16, 1 अवार्येभ्य [2] So Ch in TS 7, 16, 1 पार्येभ्य
[3] So corr Ch स्कन्धेभ्य [4] So corr Ch पाजस्य (erste Hand vielleicht पाजस्याय), cf TS 7, 3, 16 1 [5] Erste Hand in Ch दोषाभ्यां [6] Dies स्वाहा fehlt in Ch und ist von mir ergänzt [7] So corr Ch स्नावभ्यस्स्वाहा [8] So corr Ch स्वाहासितज्ञवे, vgl TS 7, 3, 17 [9] So corr Ch रोहितैताय, vgl TS 7, 3, 17
[10] So corr Ch पिशङ्गाय

णाय स्वाहा रोहिताय स्वाहा श्यावाय स्वाहा श्यामाय स्वाहा पालवाय[1] स्वाहा सुरूपाय स्वाहा सरूपाय स्वाहा विरूपाय स्वाहानुरूपाय स्वाहा प्रतिरूपाय स्वाहा शबलाय स्वाहा कमलाय स्वाहा पृश्नये स्वाहा पृश्निसक्थाय[2] स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ८ ॥
cf. TS 7, 3, 18.

ओषधीभ्यस्स्वाहा मूलेभ्यस्स्वाहा तूलेभ्यस्स्वाहा पर्वभ्यस्स्वाहा वल्शेभ्यस्स्वाहा पुष्पेभ्यस्स्वाहा फलेभ्यस्स्वाहा गृहीतेभ्यस्स्वाहागृहीतेभ्यस्स्वाहावपन्नेभ्यस्स्वाहा शयानेभ्यस्स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ९ ॥
cf. TS 7, 3, 19.

वनस्पतिभ्यस्स्वाहा मूलेभ्यस्स्वाहा तूलेभ्यस्स्वाहा स्कन्धेभ्यस्स्वाहा[3] शाखाभ्यस्स्वाहा पर्णेभ्यस्स्वाहा पुष्पेभ्यस्स्वाहा फलेभ्यस्स्वाहा गृहीतेभ्यस्स्वाहागृहीतेभ्यस्स्वाहावपन्नेभ्यस्स्वाहा शयानेभ्यस्स्वाहा शिष्टाय स्वाहा परिशिष्टाय स्वाहातिशिष्टाय स्वाहा संशिष्टाय स्वाहोच्छिष्टाय[4] स्वाहा[5] रिक्ताय स्वाहारिक्ताय स्वाहा प्ररिक्ताय स्वाहा संरिक्ताय स्वाहोद्रिक्ताय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ १० ॥ cf. TS 7, 3, 20.

इत्यनुवचनं तृतीयम् ॥[6]

मेषस्त्वा पचतैरवतु लोहितग्रीवश्छागैश्शल्मलिर्वृद्ध्या पर्णो ब्रह्मणा प्लक्षो मेधेन न्यग्रोधश्चमसैरुदुम्बर ऊर्जा गायत्री छन्दोभिस्त्रिवृ-

[1] So Ch; in TS 7, 3, 18 पाकल्माय. — [2] So corr. Ch सक्ताय. — [3] So corr. Ch स्कन्देभ्य·; vgl. oben 5, 3, 6; TS 7, 3, 20 schreibt hier स्कन्धोभ्यः. — [4] Ch होछि°. — [5] Dies स्वाहा fehlt in Ch und ist von mir ergänzt. — [6] So die Unterschrift des Capitels in Ch.

स्तोमैरवन्तीस्थावन्तीस्त्वावन्तु प्रियं त्वा प्रियाणां वर्षिष्ठमाप्यानां[1] गणानां त्वा गणपतिं हवामहे वसो मम प्रियाणां[2] त्वा प्रियपतिं हवामहे वसो मम निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम ॥ १ ॥ cf. TS 7, 4, 12.

कूप्याभ्यस्स्वाहा कुल्याभ्यस्स्वाहा स्थाल्याभ्यस्स्वाहावट्याभ्यस्स्वाहा खल्याभ्यस्स्वाहा[3] हृद्याभ्यस्स्वाहा[4] सूद्याभ्यस्स्वाहा पल्वल्याभ्यस्स्वाहा[5] वैशन्तीभ्यस्स्वाहा सरस्याभ्यस्स्वाहा वर्षाभ्यस्स्वाहावर्षाभ्यस्स्वाहा प्रुष्टाभ्यस्स्वाहा[6] ह्रादुनिभ्यस्स्वाहा स्थावराभ्यस्स्वाहा स्यन्दमानाभ्यस्स्वाहा नादेयीभ्यस्स्वाहा सैन्धवीभ्यस्स्वाहा समुद्रियाभ्यस्स्वाहा सर्वाभ्यस्स्वाहा ॥ २ ॥ cf. TS 7, 4, 13.

अद्भ्यस्स्वाहा वहन्तीभ्यस्स्वाहा समुद्रं वहन्तीभ्यस्स्वाहा समन्तं वहन्तीभ्यस्स्वाहोग्रं वहन्तीभ्यस्स्वाहा भीमं वहन्तीभ्यस्स्वाहा शीभं वहन्तीभ्यस्स्वाहा शीघ्रं वहन्तीभ्यस्स्वाहाम्भोभ्यस्स्वाहा नभोभ्यस्स्वाहा महोभ्यस्स्वाहा ॥ ३ ॥ cf. TS 7, 4, 14.

यो अर्वन्तं जिघांसति तमभ्यमीति[7] वरुणः ।
परो मर्तः[8] परश्वा ॥
अहं च त्वं च वृत्रहन्संसनुयाव वरीष्वा[9] ।
अरातीवा चिदद्रिवोऽनु नौ शूर मंसते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥

---

[1] So corr. Ch वर्षिष्ठाप्यानां; vgl. TS 7, 4, 12. [2] So corr. Ch प्रियानां [3] So Ch; besser wohl mit TS 7, 4, 13 खन्याभ्यः zu lesen [4] So corr. mit Caland; Ch ह्रद्याभ्यः [5] So corr. Ch पल्वलाभ्यः [6] So corr. Ch प्रष्टाभ्यस्स्वाहा; vgl. Pâ. 3, 1, 17, Vârtt. 1 प्रुष्टा, प्रुष्टायते; TS 7, 4, 13 पृष्वाभ्यः [7] So corr. Ch तमभ्ये मीति; vgl. MS 3, 12, 1 a. E.; TS 7, 4, 15 [8] So corr. Ch मंतः [9] So gewiß richtig Ch, वरीषु von वरी, das als Bezeichnung für Flüsse Naigh. 1, 13 angeführt wird, doch bisher noch nicht belegt war, auch in Böhtlingks zweitem WB. nicht; vgl. beide Petersburger Wörterbücher s. v. वरी, resp. वरी fem. plur. „Flüsse". Vgl. den Vers RV 8, 51, 11 und TS 7, 4, 15 mit andrem Schluß des Avasâna

अभि क्रत्वेन्द्र[1] भूरध ज्मन्न ते विव्यङ् महिमानं रजांसि।
स्वेना हि वृत्रं शवसा जघन्थ न शत्रुरन्तं विविदद्युधा[2] ते॥ ॥ ४ ॥
cf TS 7, 4, 15

नमो राज्ञे नमो वरुणाय नमो ऽश्वाय नमः प्रजापतये नमो ऽधिपतये ऽधिपतिरस्यधिपतिं मा कुर्वधिपतिरहं प्रजानां भूयासं मां[3] धेहि मयि धेह्युपाकृताय स्वाहालब्धाय स्वाहा हुताय स्वाहा ॥ ५ ॥
cf TS 7, 4, 16

मयोभूर्वातो[4] अभिवात्वुस्रा[5] ऊर्जस्वतीरोषधीराविशन्ताम्।
पीवस्वतीर्जीवधन्याः पिबन्त्ववसाय पद्वते रुद्र नो मृड॥
यास्सरूपा विरूपा एकरूपा[6] यासामग्निरिष्ट्या नामानि वेद।
या अङ्गिरसस्तपसेह चक्रुस्ताभ्यः पर्जन्य महि शर्म यच्छ॥
या देवेषु तन्वमैरयन्त यासां सोमो विश्वा रूपाणि वेद।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः प्रजावतीरिन्द्र गोष्ठे रिरीहि[7]॥
प्रजापतिर्मह्यमेता रराणो विश्वैर्देवैर्यज्ञियैस्संविदानः।
बह्वीर्भवन्तीरुप[8] नो गोष्ठमाकुस्तासां वयं प्रजया संसदेम॥

इह धृतिस्स्वाहेह विधृतिस्स्वाहेह रन्तिस्स्वाहेह रमतिस्स्वाहा महीमू[9] षु सुत्रामाणम् ॥ ६ ॥ cf TS 7, 4 17, RV 10 169

कस्स्विदेकाकी[10] चरति क उ स्विज्जायते पुनः।
किं स्विद्धिमस्य भेषजं किं स्विदावपनं महत्॥
सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्॥

---

[1] So corr Ch क्रत्वेंद्र, vgl RV 7, 21 6, TS 7 4 15 [2] So corr Ch शत्रुरंतर्यविवद vgl RV 7, 21, 6 TS 7 4 15 [3] So corr Ch भूयासमस्मा, vgl TS 7, 4, 16 [4] Dies Capitel auch in W 1९ vorhanden [5] Ch घात्युस्रा, vgl RV 10, 169, 1, TS 7, 4, 17 [6] Ch एकारूपा, vgl RV 10, 169 2, TS 7, 4, 17 [7] So W 1९, in Ch रिरीह, vgl RV 10, 169, 3 [8] So W 1९, in Ch भवंतुरूप, vgl RV 10, 169, 4 [9] Ch मयोमू [10] Auch dies Capitel in W 1९ vorhanden

का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः कि[1] स्विदासीद्बृहद्वयः[2]।
का स्विदासीत्पिलिप्पिला[3] का स्विदासीत्पिशङ्गिला ॥
द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्व आसीद्बृहद्वयः[4]।
अविरासीत्पिलिप्पिला[5] रात्रिरासीत्पिशङ्गिला[6] ॥
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि त्वा भुवनस्य नाभिम्।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम ॥
वेदिमाहुः परमन्तं पृथिव्या यज्ञमाहुर्भुवनस्य नाभिम्।
सोममाहुर्वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मैव वाचः परमं व्योम ॥ ॥ ७ ॥[7]

cf TS 7, 4 18, MS 3, 12 19, RV 1, 164 34 35, VS 23, 9—12 61 62

अम्बे अम्बाल्यम्बिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकस्सुभगे काम्पीलवासिनि ॥

स्वर्गे लोके संप्रोर्णुवाथामाहमजानि[8] गर्भधमा त्वमजासि गर्भधं तौ सह चतुरः पदस्संप्रसारयावहै वृषा वां रेतोधा रेतो दधातूत्सक्थ्योर्गृदं[10] धेह्यञ्जिमुदञ्जिमन्वज ॥

यस्स्त्रीणां जीवभोजनो य आसां चिलधावनः।
प्रियस्स्त्रीणामपीच्यो[11] य आसां कृष्णे लक्ष्मणि सर्दिगृदिं[12] परावधीत् ॥[13]

अम्बे अम्बाल्यम्बिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः[14] ॥
ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रयताद्वेणुभारं गिरा इव[15]।

---

[1] So W १८, in Ch कु [2] So W १८ in Ch द्वय [3] So W १८, in Ch पिलपिला [4] Ch श्वयासी° [5] So W १८, in Ch पिलपिला [6] So W १८, in Ch रात्रीरा° [7] In Ch fehlt hier die Zahl, resp die Bezeichnung des Capitelabschlusses der jedoch durch W १८ wie auch durch TS feststeht. [8] So Ch und W १८ °मजानि [9] W १८ अहमजानि गर्भधमात्वमजानि गर्भधन्तौ [10] Ch मत्वा° [11] Ch मपेच्यो W १८ मपोच्यो oder मपोच्यो [12] Ch सन्दि° [13] Die Versabtheilungen fehlen hier in Ch und sind von mir gesetzt [14] Ch ससस्त्य° [15] W १८ द्वेणु भार गिरो इव

अधास्या मध्यमेधतां शीते वाते पुनन्निव[1] ॥
अश्व इत्युक्तम् ॥
यद्धरिणो यवमत्ति[2] न पुष्टं पशु मन्यते ।
शूद्रा यदर्यजारा[3] न पोषाय धनायति ॥[4]
अश्व इत्युक्तम् ॥
इयं यका शकुन्तिकाहलमिति[5] वञ्चति ।
आहतं गभे पसो निजल्गलीति[6] धानिका ॥
अश्व इत्युक्तम् ॥
माता च ते पिता च ते ऽग्रं वृक्षस्य रोहतः ।
प्रसुलामीति ते पिता गभे मुष्टिमतंसयत्[7] ॥
दधिक्राव्णो[8] अकारिषमापो हि ष्ठेति तिस्रः ॥ ८ ॥
cf. TS 7, 4, 19, MS 3, 12, 20; 3, 13, 1; VS 23, 19—32

भूर्भुवस्स्वर्वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा रुद्रास्त्वाञ्जन्तु त्रैष्टु-भेन छन्दसादित्यास्त्वाञ्जन्तु जागतेन छन्दसा ॥
यद्वातो अपो अगमदिन्द्रस्य तन्वं प्रियाम्[9] ।
एतं स्तोतरेतेन पथा पुनरश्वमावर्तयासि[10] नः ॥

लाजी३ञ्छाचीऽ३न्यशो[11] ममा३[12] यव्यायै गव्याया एतद्देवा अन्न-मत्तैतदन्नमद्धि प्रजापते ॥
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः ।
रोचन्ते रोचना दिवि ॥

---

[1] So W 1 ζ, in Ch मध्यमेधतां शिते यातो पुनन्निव [2] So W 1 ζ, in Ch ययत्ति [3] Ch यदर्यजाना [4] In W 1 ζ kommt dieser Vers erst nach dem folgenden. [5] So corr. Mss. शकुन्तिका° [6] So corr. Ch und W 1 ζ जूति [7] W 1 ζ पुष्टिम° [8] In W 1 ζ ist dieser Vers (RV 4, 39, 6) vollständig gegeben und dann erst folgt das Weitere wie in Ch [9] So corr. Ch प्रियाम् [10] So corr. Ch श्वसावर्तयासि, vgl. TS 7, 4, 20; MS 3, 12, 16, VS 23, 7. [11] So corr. Ch श्चातीन्यशो, vgl. TS 7, 4, 20, MS 3, 12, 19. [12] Die ३ von mir ergänzt; vgl. TS 7, 4, 20.

युञ्जन्त्यस्य काम्या[1] हरी विपक्षसा रथे।
शोणा धृष्णू[2] नृवाहसा ॥
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः ॥ ॥ ९ ॥
cf TS 7 4 20 MS 3 12 18 19 VS 23 5–8, RV 1 6 1–3

प्राणाय स्वाहा व्यानाय स्वाहापानाय स्वाहा स्नावभ्यस्स्वाहा संतानेभ्यस्स्वाहा परिसतानेभ्यस्स्वाहा पर्वभ्यस्स्वाहा सधानेभ्यस्स्वाहा शरीरेभ्यस्स्वाहा यज्ञाय स्वाहा दक्षिणायै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा लोकाय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ १० ॥ cf TS 7 4 21

इति मेधानुवचनं चतुर्थम् ॥[3]

सिताय स्वाहासिताय स्वाहाभिहिताय स्वाहानभिहिताय स्वाहा युक्ताय स्वाहायुक्ताय स्वाहायुक्ताय स्वाहोद्युक्ताय स्वाहा विमुक्ताय स्वाहा प्रमुक्ताय स्वाहा वञ्चते स्वाहा परिवञ्चते स्वाहा संवञ्चते स्वाहानुवञ्चते स्वाहोद्वञ्चते स्वाहा यते स्वाहा धावते स्वाहा तिष्ठते स्वाहोपरताय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ १ ॥ cf TS 7 4 22

पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा संश्लोष्यते[4] स्वाहा सम्प्लवमानाय स्वाहा सम्प्लुताय स्वाहा मेघायिष्यते स्वाहा मेघायते स्वाहा मेघायिताय स्वाहा मेघिताय स्वाहा मेघाय स्वाहा नीहाराय स्वाहा निहाकायै स्वाहा प्रासचाय स्वाहा प्रचलाकायै[5] स्वाहा वि-

---

[1] So corr Ch काम्य [2] So corr Ch धृष्णु [3] So die Unterschrift des Capitels in Ch [4] So corr Ch संप्लोषते vgl TS 7 5 11 1 — Corr [5] So corr Ch प्रचलाकाये vgl TS 7 5 11, 1

द्योतिष्यते स्वाहा विद्योतमानाय स्वाहा संविद्योतमानाय स्वाहा स्तनयिष्यते स्वाहा स्तनयते स्वाहोर्यै[1] स्तनयते स्वाहा वर्षिष्यते स्वाहा वर्षते स्वाहाभिवर्षते स्वाहा परिवर्षते स्वाहा संवर्षते स्वाहानुवर्षते स्वाहा प्रोषिष्यते स्वाहा प्रुष्णते स्वाहा परिप्रुष्णते स्वाहा शीकायिष्यते स्वाहा शीकायते स्वाहा शीतिकाय स्वाहोद्ग्रहीष्यते स्वाहोद्गृह्णते स्वाहोद्गृहीताय स्वाहा विप्लोष्यते स्वाहा विप्लवमानाय स्वाहा विप्लुताय स्वाहातप्स्यते स्वाहातपते स्वाहोग्रमातपते[2] स्वाहर्ग्भ्यस्स्वाहा[3] यजुर्भ्यस्स्वाहा सामभ्यस्स्वाहाङ्गिरोभ्यस्स्वाहा वेदेभ्यस्स्वाहा गाथाभ्यस्स्वाहा नाराशंसीभ्यस्स्वाहा रैभीभ्यस्स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ २ ॥ cf TS 7, 5 11

दत्वते स्वाहादन्तकाय स्वाहा प्राणिने स्वाहाप्राणकाय स्वाहा[4] नासिकावते स्वाहानासिकाय स्वाहा मुखवते स्वाहामुखकाय स्वाहाक्षण्वते स्वाहानक्षकाय स्वाहा कर्णवते स्वाहाकर्णकाय स्वाहा शीर्षण्वते स्वाहाशीर्षकाय स्वाहा पाद्वते स्वाहापादकाय स्वाहा प्राणते स्वाहाप्राणते स्वाहा वदते स्वाहावदते स्वाहा पश्यते स्वाहापश्यते स्वाहा शृण्वते स्वाहाशृण्वते स्वाहा मनस्विने स्वाहामनस्काय स्वाहा रेतस्विने स्वाहारेतस्काय स्वाहा प्रजाभ्यस्स्वाहाप्रजननाय स्वाहा लोमवते स्वाहालोमकाय स्वाहा त्वचे स्वाहात्वक्काय स्वाहा चर्मवते स्वाहाचर्मकाय स्वाहा लोहितवते स्वाहालोहिताय स्वाहा मांसन्वते[5] स्वाहामांसकाय स्वाहा स्नावभ्यस्स्वाहास्नावकाय[6] स्वाहास्थन्वते स्वाहानस्थकाय स्वाहा मज्जन्वते स्वाहामज्जकाय स्वाहाङ्गवते स्वाहानङ्गकाय स्वाहात्मन्वते स्वाहानात्मकाय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ३ ॥ cf TS 7, 5, 12.

---

[1] So corr Ch स्वाहोर्यां, vgl TS 7, 5, 11, 1 [2] So corr Ch स्वाहा उप्स्यते स्वाहा उपते स्वाहोग्मा उपते; vgl TS 7, 5, 11, 2 = Corr. [3] So corr. Ch स्वाहोभ्य॰, vgl TS 7, 5, 11, 2. [4] Dies स्वाहा fehlt in Ch und ist von mir ergänzt [5] So Ch, ebenso auch TS 7, 5, 12, 2 [6] So corr Ch स्नावत्यस्वा॰

अग्निः पशुरासीत्तेनायजत स एतं लोकमजयद्यस्मिन्नग्निस्स ते लोकस्तं जेष्यस्यथावजिघ्र[1] वायुः पशुरासीत्तेनायजत स एतं लोकमजयद्यस्मिन्वायुस्स ते लोकस्तं जेष्यस्यथावजिघ्रादित्यः पशुरासीत्तेनायजत स एतं लोकमजयद्यस्मिन्नादित्यस्स ते लोकस्तं जेष्यस्यथावजिघ्र ॥ ४ ॥ cf TS 5, 7, 26, VS 23, 17

द्यौस्ते पृष्ठं पृथिवी सधस्थमात्मान्तरिक्षं समुद्रो[2] योनिस्सूर्यस्ते चक्षुर्वातः प्राणश्चन्द्रमाश्श्रोत्रं दिशः[3] पादा अवान्तरदिशाः पशवो नक्षत्राणि रूपं मासाश्चार्धमासाश्च पर्व्वण्यृतवो[4] ऽङ्गानि संवत्सरो महिमा ॥ ५ ॥[5] cf TS 5, 7, 25

आयासाय स्वाहावयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहा प्रयासाय[6] स्वाहा संयासाय स्वाहोद्यासाय[7] स्वाहा शोकाय स्वाहा शुचे स्वाहा शुचये स्वाहा तपसे स्वाहा तपत्यै स्वाहा क्षुधे स्वाहा भ्रूणहत्यायै स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ६ ॥[8] cf TS 1, 4, 35, VS 39, 11 12

जुम्बकाय स्वाहावभृथाय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ७ ॥[9]

मृत्यवे स्वाहावभृथाय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ ८ ॥[10]

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्तु विष्णुस्त्वा युनक्त्वस्य यज्ञस्यर्द्ध्यै मह्यं संनत्या अमुष्मै कामायायुषे त्वा प्राणाय त्वा व्यानाय त्वापानाय त्वा व्युष्ट्यै त्वा रय्यै त्वा राधसे त्वा पोषाय त्वा घोषाय त्वाराद्घोषाय त्वा प्रच्युत्यै[11] त्वा कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा विमुञ्चतु विष्णुस्त्वा विमुञ्चत्वस्य यज्ञस्यर्द्ध्यै[12] मह्यं संनत्या अमुष्मै कामायायुषे त्वा प्राणाय त्वा

---

[1] So corr Ch स्यथावजित [2] So corr Ch समुद्र, vgl TS 5, 7, 25 [3] So corr Ch दिशा [4] Ch मरुतो [5] Die Zahl corrigirt, Ch setzt hier irriger weise ७ woraus im Folgenden noch einige Fehler hervorgehen, die erst mit Cap 9 ein Ende haben [6] So corr Ch स्वाहावयावयासाय [7] So corr Ch स्वाहोद्वासाय, vgl TS 1, 4 35 [8] Die Zahl corr Ch hat hier ॥ [illegible] ॥ [9] Die Zahl corr Ch hat hier ॥ ६ ॥ [10] Die Zahl corr Ch hat hier [illegible] १० ॥ [11] So corr Ch प्रच्युत्यै, erste Hand प्रच्यै, vgl TS 7, 5, 13 [12] So corr यज्ञस्यर्धे

व्यानाय त्वापानाय त्वा व्युष्ट्यै त्वा रय्यै त्वा राधसे त्वा घोषाय त्वा घोषाय त्वाराद्घोषाय त्वा प्रतिष्ठित्यै त्वा ॥ ९ ॥
cf. TS 7, 5, 13; (VS 1, 6; 2, 23).

अग्नये गायत्राय त्रिवृते राथन्तराय[1] वासन्तायाष्टाकपाल इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय बार्हताय ग्रैष्मायैकादशकपालो विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यस्सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो वार्षिकेभ्यो द्वादशकपालो मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभाभ्यामेकविंशाभ्यां[2] वैराजाभ्यां शारदाभ्यां पयस्या बृहस्पतये पाङ्क्ताय त्रिणवाय शाक्वराय हैमन्तिकाय चरुस्सवित्र[3] आतिच्छन्दसाय त्रयस्त्रिंशाय[4] रैवताय शैशिराय द्वादशकपालो ऽदित्यै विष्णुपत्न्यै चरुरग्नये वैश्वानराय द्वादशकपालो ऽनुमत्यै चरुः काय एककपालः ॥ १० ॥ cf. TS 7, 5, 14

हिरण्यगर्भस्समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

उपयामगृहीतो ऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णामि तस्य ते द्यौर्महिमा नक्षत्राणि रूपमादित्यस्ते तेजस्तस्मै त्वा महिम्ने प्रजापतये स्वाहा ॥ ११ ॥ cf TS 7, 5, 16, MS 3, 12, 16.

अया विष्ठा जनयन्कर्वराणि स हि घृणिरुरुर्वराय गातुः ।
स प्रत्युदैद्धरुणं[5] मध्वो अग्रं स्वा यत्तनू[6] तन्वमैरयत ॥

उपयामगृहीतो ऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णामि तस्य ते ऽन्तरिक्षं महिमापो वयांसि रूपं वायुष्टे तेजस्तस्मै त्वा महिम्ने प्रजापतये स्वाहा ॥ १२ ॥ cf. TS 1, 7, 12, 2

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
ईशे यो अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

---

[1] So cor. Ch रथ° [2] So corr. Ch मनुष्टु° [3] So corr. Ch सवित्र [4] Ch त्रिपस्त्रि° [5] Ch प्रत्युदैद्धरुणा; vgl. den Vers oben 9, 6 und 14, 3; anders TS 1, 7, 12, 2 und MS 1, 10, 3. [6] So nach 9, 6 und 14, 3 offenbar die Kâthaka Form dieses Verses; Ch liest hier स्वार्यत्तनू तन्वमै°

उपयामगृहीतो ऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णामि तस्य ते पृथिवी महिमौषधयो वनस्पतयो रूपमग्निस्ते तेजस्तस्मै त्वा महिम्ने प्रजापतये स्वाहा ॥ १३ ॥ cf TS 7, 5 [illegible] 17, MS 3, 12, 17

आ[1] ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामास्मिन्राष्ट्रे[2] राजन्य इषव्यः शूरो महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिर्जिष्णू रथेष्ठाः पुरंधिर्योषा सभेयो युवास्य[3] यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवतीर्न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ १४ ॥ cf TS 7, [illegible] 18, MS [illegible] 12, 6, VS 22, 22

आक्रान्वाजी[4] पृथिवीमग्निं युजमकृत वाज्यर्वाक्रान्वाज्यन्तरिक्षं वायुं युजमकृत वाज्यर्वा द्यां वाज्याक्रंस्त सूर्यं युजमकृत वाज्यर्वाग्निष्टे वाजिन्युङ्ङनु त्वारभे स्वस्ति मा संपारय वायुष्टे वाजिन्युङ्ङनु त्वारभे स्वस्ति मा संपारयादित्यस्ते वाजिन्युङ्ङनु त्वारभे स्वस्ति मा संपारय प्राणधृगसि प्राणं मे दृंह व्यानधृगसि व्यानं मे दृंहापानधृगस्यपानं मे दृंह चक्षुरसि चक्षुर्मे धेहि श्रोत्रमसि श्रोत्रं मयि[5] धेह्यायुरस्यायुर्मे धेहि सर्वमायुर्गेषम् ॥ १५ ॥ cf TS 7, 5 19

क्रमैरत्यक्रमीद्वाजी विश्वैर्देवैर्यज्ञियैः संविदानः स नो नय सुकृतस्य लोकं तस्य ते वयं स्वधया मदेम ॥ १६ ॥ cf TS 5 7, 24

अग्नि बीजं वर्षा पर्जन्यः पन्था[6] सस्यं सुपिप्पला ओषधयस्त्वधिचरणेयं सूपसदनो ऽग्निस्त्वध्यक्षमन्तरिक्षं सूपवाः[7] पवमानस्सूप-

---

[1] Dies Capitel auch in Tö fol 8ᵃ und Brl fol 7 vorhanden, darnach accentuirt [2] So corr die Mss जायतामस्मि°, resp Ch so ohne Accent, vgl TS 7, 5 18 [3] So die Accentuation in Brl, in Tö युवास्य, vgl TS 7, 5, 18
[4] Ch आक्रा न्वाजी [5] Man erwartet entweder hier मे oder vorher श्रत्रमयि und nachher आयुर्मयि wie in TS 7, 5, 19, 2, das Letztere dürfte das Richtige sein
[6] So Ch[1] vgl TS 7, 5 20 पन्था [7] So Ch, in TS 7, 5, 20 सुपाव

स्थाना द्यौरग्निश्चमसौ तपन्यथापूर्वमहोरात्रे पञ्चदशिनो ऽर्धमासास्त्रिंशिनो[1] मासाः कॢप्ता ऋतवश्शान्तस्संवत्सरः ॥ १७ ॥
cf TS 7, 5, 20

आग्नेयो ऽष्टाकपालस्सौम्यश्चरुस्सावित्रो ऽष्टाकपालस्सारस्वतश्चरुः पौष्णश्चरू रौद्रो गावीधुकश्चरुरग्नये वैश्वानराय द्वादशकपालो मृगाखरे यदि नागच्छेदग्नये ऽंहोमुचे[2] ऽष्टाकपालस्सौर्यं पयो वायव्य आज्यभागः ॥ १८ ॥ cf TS 7, 5, 21.

अग्नये ऽंहोमुचे ऽष्टाकपाल इन्द्रायांहोमुच एकादशकपालो वायोसावित्र आगोमुग्भ्यां चरुर्मित्रावरुणाभ्यामागोमुग्भ्यां पयस्याश्विभ्यामागोमुग्भ्यां धाना मरुद्भ्य एनोमुग्भ्यस्सप्तकपालो विश्वेभ्यो देवेभ्य एनोमुग्भ्यो द्वादशकपालो ऽनुमत्यै चरुरग्नये वैश्वानराय द्वादशकपालो द्यावापृथिवीभ्यामंहोमुग्भ्यां द्विकपालः ॥ १९ ॥
cf TS 7, 5, 22, MS 3, 15, 11

अग्नये[3] संनमत्पृथिव्यै संनमद्यथाग्निः[4] पृथिव्या समनमदेवं मह्यं भद्रास्संनतयस्संनमन्तु[5] वायवे[6] संनमदन्तरिक्षाय संनमद्यथा वायुरन्तरिक्षेण समनमदेवं मह्यं भद्रास्संनतयस्संनमन्तु सूर्याय संनमद्दिवे संनमद्यथा सूर्यो दिवा समनमदेवं मह्यं भद्रास्संनतयस्संनमन्तु[7] वरुणाय संनमदद्भ्यस्संनमद्यथा वरुणो ऽद्भिस्समनमदेवं[8] मह्यं भद्रास्संनतयस्संनमन्तु साम्ने संनमदृचे संनमद्यथा सामर्चा[9] समनमदेवं मह्यं भद्रास्संनतयस्संनमन्तु ब्रह्मणे संनमत्क्षत्राय संनमद्यथा ब्रह्म क्षत्रेण समनमदेवं मह्यं भद्रास्संनतयस्संनमन्तु राज्ञे संनमद्विशे संनमद्यथा राजा विशा समनमदेवं मह्यं भद्रास्संनत-

---

[1] Ch त्रिंशिनो, vgl TS 7, 5, 20 [2] Das ˜ in Ch nicht vorhanden, von mir ergänzt. [3] Dies Cap. auch in Brl vorhanden und darnach accentuirt [4] Ch समनम° [5] Brl भद्र°, Ch सद° [6] So Brl, in Ch वायु स° [7] Ch मन्तया [8] Accent corrigirt, Brl समनमदेव [9] Accent corrigirt, Brl सामर्चा, vgl TS 7, 5, 23, 2.

यस्सँनमन्तु रथाय संनमदश्वेभ्यस्संनमद्यथा[1] रथो ऽश्वैस्समंनमदेवँ मह्यं भद्रास्सँनतयस्सँनमन्तु[2] ॥ २० ॥ cf TS 7, 5, 23

समिद्दिशां कया नः ॥

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून् ।
आसन्निषून्हृत्स्वसो मयोभून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात् ॥ ॥ २१ ॥
cf MS 3, 16, 4 u E, RV 1, 84, 16, TS 4, 2, 11, 3 u s w

इति मितानुवचनं पञ्चमम् ॥[3]

जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे ।
अनाविद्धया तन्वा जय त्वं स त्वा वर्मणो महिमा[4] पिपर्तु ॥
धन्वना गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्रास्समदो जयेम ।
धनुश्शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः[5] प्रदिशो जयेम ॥
वक्ष्यन्तीवेदागनीगन्ति कर्णं प्रियं सखायं परिषस्वजाना[6] ।
योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वञ्ज्या इयं समने पारयन्ती ॥
ते आचरन्ती समनेव योषा[7] मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे ।
अप शत्रून्विध्यतां[8] संविदाने आर्त्नी इमे विस्फुरन्ती[9] अमित्रान् ॥
बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा[10] कृणोति समनावगत्य[11] ।
इषुधिस्सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे[12] निनद्धो जयति प्रसूतः ॥

---

[1] Accent corrigirt, Brl ह्यश्वेभ्य [2] Ch नतया॰ [3] So die Unterschrift des Capitels in Ch [4] So corr Ch वर्मणो महिमा, vgl RV 6, 75, 1. [5] So corr Ch धन्वन सर्व [6] So corr Ch परिषस्वजाना, vgl RV 6, 75, 3, MS 3, 16, 3, TS 4 6 6, 1, VS 29, 40 [7] So corr Ch येषा [8] So corr Ch शत्रु॰ [9] So auch MS 3 16 3 [10] So corr Ch श्चिश्चा [11] So corr Ch ग्रकना॰ [12] So corr Ch पृष्टे, vgl RV 6 75, 5 u s w

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः ।
अभीशूनां महिमानं पनायत[1] मनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः ॥
तीव्रान्घोषान्कृण्वते[2] वृषपाणयो ऽश्वा रथेभिस्सह वाजयन्तः ।
अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूँरनपव्ययन्तः[3] ॥
रथवाहनं[4] हविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म ।
तत्रा रथमुप शग्मं सदेम विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः ॥
स्वादुषंसदः पितरो वयोधाः कृच्छ्रेश्रितश्शक्तीवन्तो गभीराः ।
चित्रसेना इषुबला अमृध्रास्सतोवीरा उरवो व्रातसाहाः ॥
ब्राह्मणासः पितरस्सोम्यासश्शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा ।
पूषा नः पातु दुरिताहतावृधो रक्षा माकिर्नो[5] अघशंस ईशत[6] ॥
सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिस्संनद्धा पतति प्रसूता ।
यत्रा नरस्सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवश्शर्म यंसन् ॥
वृजीते[7] परिवृङ्ग्धि[8] नो ऽश्मा भवतु नस्तनूः ।
सोमो अधिब्रवीतु[9] नो ऽदितिश्शर्म यच्छतु ॥
अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांसं[10] परिपातु विश्वतः ॥
आजङ्घन्ति सान्वेषां[11] जघनाँ उपजिघ्नते[12] ।
अश्वाजनि प्रचेतसो ऽश्वान्समत्सु चोदय ॥
वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणस्सुवीरः ।
गोभिस्संनद्धो असि वीडयस्वास्थाता[13] ते जयतु जेत्वानि ॥

---

[1] So corr. Ch अभीशूणाम्महिमानमनायत, vgl. RV 6, 75, 6 [2] So corr. Ch कृणुते; vgl. RV 6, 75, 7 u. s. w. [3] Ch शत्रूँर [4] So corr. Ch रथवाहनंदं; vgl. RV 6, 75, 8 u. s. w. [5] So corr. Ch माकिवो; vgl. RV 6, 75, 10. [6] So corr. Ch ईंषत [7] So Ch! Wahrscheinlich doch wohl fehlerhaft für ऋजीते, wie nach RV 6, 75, 12; TS 4, 6, 6; VS 29, 49 zu erwarten [8] Ch undeutlich, etwa परिवृद्धि; vgl. RV 6, 75, 12. [9] So corr. Ch ब्रवीत [10] So corr. Ch पुमांसः, vgl. RV 6, 75, 14. [11] So corr. Ch सान्वेषां, vgl. RV 6, 75, 13. [12] So corr. Ch जिघ्नत [13] Ch स्थातां, vgl. RV 6, 47, 26.

दिवः पृथिव्याः पर्योज उद्भृतं वनस्पतिभ्यः पर्याभृतं सहः ।
अपामोज्मानं परि गोभिरावृतमिन्द्रस्य वज्रं[1] हविषा रथं यज ॥
इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः ।
सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय ॥
उपश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं[2] जगत् ।
स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अपसेध शत्रून् ॥
आक्रन्दय बलमोजो न आधा निष्टनिहि दुरिता बाधमानः ।
अपप्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व ॥
आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति ।
समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरोऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु ॥ ॥ १ ॥

cf TS 4, 6, 6, MS 3, 16, 3, VS 29 38–57, RV 6, 75, 1–14, 6, 47, 26–31

समिद्धो अञ्जन्कृदरं[3] मतीनां घृतमग्ने मधुमत्पिन्वमानः ।
वाजी वहन्वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमा सधस्थम् ॥
घृतेनाञ्जन्सं पथो देवयानान्प्रजानन्वाज्यप्येतु[4] देवान् ।
अनु त्वा सप्ते प्रदिशस्सचन्तां स्वधामस्मै यजमानाय धेहि ॥
ईड्यश्चासि[5] वन्द्यश्च वाजिन्नाशुश्चासि मेध्यश्च सप्ते ।
अग्निष्ट्वा देवैर्वसुभिस्सजोषाः प्रीतं वह्निं वहतु जातवेदाः ॥
स्तीर्णं बर्हिस्सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु[6] प्रथमानं पृथिव्याम् ।
देवेभिरक्तमदितिस्सजोषास्स्योनं कृण्वाना[7] सुविते दधातु[8] ॥
एता उ[9] वसुभगा विश्ववारा वि पक्षोभिश्श्रयमाणा[10] उदातैः ।

---

[1] So corr Ch वज्रो, vgl RV 6, 47, 27, MS 3, 16, 3, TS 4 6, 6, 6, VS 29, 53
[2] So corr Ch विष्ठिता, vgl RV 6 47, [illegible], MS 3 16, 3 u s w
[3] Ch कृदर
[4] So corr Ch वाज्यप्येतु, vgl MS 3, 16, 2, TS 5, 1, 11, 1, VS 29, 2
[5] So corr Ch श्चासि, vgl MS 3 16, 2, TS 5, 1, 11, 1, VS 29, 3
[6] So corr Ch पृथुम', vgl MS 3, 16, 2, TS 5, 1, 11, 2, VS 29, 4
[7] So corr Ch कृण्वान
[8] So corr Ch दधात
[9] So corr Ch एवा तवस्सु', vgl MS 3 16, 2, TS 5, 1, 11, 2, VS 29, 5
[10] So corr Ch श्रियमाणा

ऋष्वास्सतीः कवयश्शुम्भमाना[1] द्वारो देवीस्सुप्रयाणा[2] भवन्तु ॥
अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभिसंविदाने ।
उषासा वाँ सुहिरण्ये सुशिल्पे ऋतस्य योना इह सादयामि[3] ॥
प्रथमा वाँ सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा ।
अपिप्रयं चोदना वां[4] मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता ॥
आदित्यैर्नो भारती वष्टु यज्ञं सरस्वती सह[5] रुद्रैर्न आवीत् ।
इडोपहूता वसुभिस्सजोषा यज्ञं नो देवीरमृतेषु धत्त ॥
त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरर्वा जायत आशुरश्वः ।
त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान बहोः कर्तारमिह यक्षि होतः ॥
अश्वो घृतेन त्मन्या समक्त उप देवाँ ऋतुशः पाथ एतु ।
वनस्पतिर्देवलोकं[6] प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत् ॥
प्रजापतेस्तपसा वावृधानस्सद्यो जातो ममिषे[7] यज्ञमग्ने ।
स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा याहि सख्या[8] हविरदन्तु देवाः ॥ ॥ २ ॥
cf. MS 3, 16, 2; TS 5, 1, 11; VS 29, 1—11.

यदक्रन्दः ॥

आत्मानं ते मनसारादजानामवो दिवा पतयन्तं पतङ्गम् ।
शिरो अपश्यं[9] पथिभिस्सुगेभिररेणुभिर्जेहमानं[10] पतत्रि ॥
अत्रा ते रूपमुत्तममपश्यं[11] जिगीषमाणमिष[12] आ पदे गोः ।
यदा ते मर्तो अनु भोगमानडादिद्ग्रसिष्ठ ओषधीरजीगः ॥

---

[1] So Ch; vgl v. l. in TS 5, 1, 11, 2 neben ऋश्वः, was auch MS 3, 16, 2; VS 29, 5. [2] So Ch; dagegen सुप्रायणा in MS 3, 16, 2; TS 5, 1, 11, 2, VS 29, 5 [3] So corr mit Caland, Ch मायपामि, dagegen सादयामि in MS 3, 16, 2; TS 5, 1, 11, 3, VS 29, 6 [4] So corr. Ch चोदनानामिम°; vgl. MS 3, 16, 2; TS 5, 1, 11, 3; VS 29, 7 [5] So corr Ch सहु; vgl. MS 3, 16, 2; TS 5, 1, 11, 3; VS 29, 8. [6] *So corr.* Ch लोकः, vgl MS 3, 16, 2, TS 5, 1, 11, 4, VS 29, 10. [7] So Ch; vgl. dagegen दधिषे in MS 3, 16, 2; TS 5, 1, 11, 4; VS 29, 11. [8] So Ch; dagegen साध्या MS 3, 16, 2; TS 5, 1, 11, 4; VS 29, 11. [9] So corr. Ch अपश्यस्पथि°, vgl. RV 1, 163, 6; TS 4, 6, 7, 3; VS 29, 17. [10] *So corr* Ch रेणुभि; vgl. RV 1, 163, 6. [11] So corr. Ch तममपश्यं; vgl RV 1, 163, 7; TS 4, 6, 7, 3; VS 29, 18. [12] So corr. Ch माण°

अनु त्वा रथो अनु मर्यो अर्वन्ननु गावो ऽनु भगः कनीनाम् ।
अनु व्रातासस्तव[1] सख्यमीयुरनु देवा ममिरे वीर्यं ते ॥
हिरण्यशृङ्गो ऽयो अस्य पादा मनोजवा अवर इन्द्र आसीत् ।
देवा इदस्य हविरद्यमायन्यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत् ॥
ईर्मान्तासस्सिलिकमध्यमासस्सं[2] शूरणासो दिव्यासो अत्याः ।
हंसा इव श्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः ॥
तव शरीरं पतयिष्णवर्वन्तव[3] चित्तं वात इव ध्रजीमान्[4] ।
तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति ॥
उप प्रागाच्छसनं[5] वाज्यर्वा देवद्रीचा मनसा दीध्यानः ।
अजः पुरो नीयते नाभिरस्यानु पश्चात्कवयो यन्ति रेभाः ॥
उप प्रागात्परमं यत्सधस्थमर्वाँ[6] अच्छा पितरं मातरं च ।
अद्या देवाञ्जुष्टतमो हि गम्या अथाशास्ते[7] दाशुषे वार्याणि ॥ ॥ 3 ॥
cf. RV 1, 163, 1. 6—13, TS 4, 6, 7, VS 29, 17—24

मा नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतः परिख्यन् ।
यद्वाजिनो देवजातस्य सप्तेः प्रवक्ष्यामो विदथे वार्याणि ॥
यन्निर्णिजा रेक्णसा प्रावृतस्य रातिं गृभीतां मुखतो नयन्ति ।
सुप्राङजो मेम्यद्विश्वरूप[8] इन्द्रापूष्णोः प्रियमप्येतु[9] पाथः ॥
एष छागः[10] पुरो अश्वेन वाजिना पूष्णो भागो नीयते विश्वदेवः[11] ।
अभिप्रियं यत्पुरोडाशमर्वता त्वष्टेदेनं सौश्रवसाय जिन्वति ॥

---

[1] So corr. Ch व्रातास°, vgl. RV 1, 163, 5; TS 4, 6, 7, 3; VS 29, 16. [2] So corr. Ch सामस्सिलिकमध्यमासस्से, vgl. RV 1, 163, 10, TS 4, 6, 7, 4; VS 29, 21. [3] So corr. Ch शरीरमपतयिष्ण°, vgl. RV 1, 163, 11, TS 4, 6, 7, 4, VS 29, 22 [4] So Ch, desgl. TS 4, 6, 7, 4 und VS 29, 22, dagegen ध्रजीमान् RV 1, 163, 11. [5] So corr. Ch प्रागाच्छसन, vgl. RV 1, 163, 12; TS 4, 6, 7, 5, VS 29, 23 [6] So corr. Ch यत्सधस्थमर्वा, vgl. RV 163, 13; TS 4, 6, 7, 5; VS 29, 24 [7] So corr. Ch अथासते, vgl. RV 1, 163, 13, TS 4, 6, 7, 5; VS 29, 24 [8] So corr. Ch मेम्य°, vgl. RV 1, 162, 2; MS 3, 16, 1, TS 4, 6, 8, 1, VS 25, 25. [9] So auch MS 3, 16, 1; in RV 1, 162, 2 अप्येति, desgl. TS 4, 6, 8, 1, VS 25, 25 [10] Ch च्छागः [11] So Ch; wohl in विश्वदेव्यः zu corr. mit RV 1, 162, 3; MS 3, 16, 1; TS 4, 6, 8, 1; VS 25, 26

यद्धविष्यमृतुशो देवयानं त्रिर्मानुषाः पर्यश्वं नयन्ति ।
तत्रा पूष्णः प्रथमो भाग एति यज्ञं देवेभ्यः[1] परिवेदयन्नजः ॥
होताध्वर्युरावया[2] अग्निमिन्धो[3] ग्रावग्राभ उत शंस्ता सुविप्रः ।
तेन यज्ञेन स्वरंकृतेन स्विष्टेन वक्षणा आपृणध्वम् ॥
यूपव्रस्का उत ये यूपवाहाश्चषालं ये अश्वयूपाय तक्षति ।
ये चार्वते पचनं संभरन्त्युतो तेषामभिगूर्तिर्न[4] इन्वतु ॥
उप प्रागात्सुमन्मे ऽधायि मन्म देवानामाशा उप वीतपृष्ठः ।
अन्वेनं विप्रा ऋषयो मदन्तु[5] देवानां पुष्टे चकृमा सुबन्धुम् ॥
यद्वाजिनो दाम संदानमर्वतो या शीर्षण्या रशना रज्जुरस्य ।
यद्वा घास्य प्रभृतमास्ये तृणं सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥
यदश्वस्य क्रविषो मक्षिकाश यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति ।
यद्धस्तयोश्शमितुर्यन्नखेषु[6] सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥
यदूवध्यमुदरस्यापवाति[7] य आमस्य क्रविषो गन्धो अस्ति ।
सुकृता तच्छमितारः कृण्वन्तूत[8] मेधं शृतपाकं पचन्तु ॥
यन्नीक्षणं मांस्पचन्या[9] उखाया या पात्राणि यूष्ण आसेचनानि ।
ऊष्मण्यापिधाना चरूणामङ्काः सूनाः परिभूषन्त्यश्वम् ॥ ॥ ४ ॥

cf RV 1, 162, 1—10 13, MS 3, 16, 1, TS 4, 6, 8 9, VS 25, 24—33 36

यत्ते गात्रादग्निना पच्यमानादभि शूलं निहतस्यावधावति ।
मा तद्भूम्यामाश्रिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु ॥

---

[1] So corr Ch देवेभ्य vgl RV 1 162 4 u s w [2] So corr Ch रावया, vgl RV 1, 162, 5, MS 3, 16 1, TS 4, 6 8, 2, VS 25, 28 [3] So corr Ch मिद्धो, vgl RV 1, 162, 5 u s w [4] So corr Ch र्तिंच, vgl RV 1, 162, 6, MS 3, 16, 1, TS 4 6, 8, 2, VS 25 29 [5] So Ch, vgl dagegen मदन्ति in RV 1, 162, 7, MS 3, 16, 1, TS 4, 6 8, 3, VS 29, 30 [6] So corr Ch शमितर्य॰ vgl RV 1, 162, 9 u s w [7] So corr Ch यदूयसंमुद॰, vgl RV 1, 162, 10, TS 4, 6, 8, 4, VS 25, 33 [8] So corr Ch तक्षमिताद कृपवतुत, vgl RV 1, 162, 10, TS 4, 6, 8, 4, VS 25, 33 [9] So corr Ch मांपच॰, vgl RV 1, 162, 13, MS 3, 16, 1; TS 4, 6, 9, 1, VS 25, 36

ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वं य ईमाहूस्सुरभिर्निर्हरेति ।
ये चार्वतो मांसभिक्षामुपासत उतो तेषामभिगूर्तिर्न[1] इन्वतु ॥
मा त्वाग्निर्ध्वनयेद्धूमगन्धिर्मोखा[2] भ्राजन्त्यभिविक्त जघ्रिः[3] ।
इष्टं वीतमभिगूर्तं वषट्कृतं तं देवासः प्रतिगृभ्णन्त्यश्वम् ॥
निक्रमणं निषदनं विवर्तनं यच्च पड्वीशमर्वतः[4] ।
यच्च पपौ यच्च[5] घासिं जघास सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥
यत्ते सादे महसा शूकृतस्य पार्ष्ण्या वा कशया वा[6] तुतोद ।
स्रुचेव ता हविषो अध्वरेषु सर्वा ता ते ब्रह्मणा सूदयामि ॥
यदश्वाय वास उपस्तृणन्त्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मै ।
संदानमर्वन्तं पड्वीशं प्रिया देवेष्वायामयन्ति ॥
चतुस्त्रिंशद्वाजिनो देवबन्धोर्वङ्क्रीरश्वस्य स्वधितिस्समेति ।
अच्छिद्रा[7] गात्रा वयुना कृणोत परुष्परुरनुघुष्या[8] विशस्त ॥
एकस्त्वष्टुरश्वस्य[9] विशस्ता द्वा यन्तारा[10] भवतस्तथर्तुः ।
या ते गात्राणामृतुथा कृणोमि ता ता[11] पिण्डानां प्रजुहोम्यग्नौ ॥
मा त्वा तपत्प्रिय आत्मापियन्तं मा[12] स्वधितिस्तन्व आतिष्ठिपत्ते ।
मा ते गृध्नुरविशस्तातिहाय च्छिद्रा गात्राण्यसिना मिथू कः ॥
न वा उ एतन्म्रियसे[13] न रिष्यसि देवाँ इदेषि पथिभिस्सुगेभिः ।

---

[1] So corr. Ch गूर्तिर, vgl. RV 1, 162, 12 [2] Ch ध्वनयेद्धूमग°, erste Hand ध्वनयेत्; vgl. RV 1, 162, 15 ध्वनयीद्धू°; ebenso VS 25, 37 in MS 3, 16, 1 u. E. schwanken die Mss; TS 4, 6, 9, 2 ध्वनयिद्धू° [3] So corr. Ch जघ्रः, vgl. RV 1, 162, 15; MS 3, 16, 1 u. E; TS 4, 6, 9, 2. [4] So corr. Ch यच्च पड्वीय°; vgl. RV 1, 162, 14; MS 3, 16, 1; TS 4, 6, 9, 1; VS 25, 38 [5] So corr. Ch यच्च पपौ यच्च; vgl. RV 1, 162, 14; MS 3, 16, 1; TS 4, 6, 9, 1, VS 25, 38. [6] Dies वा fehlt in Ch und ist von mir ergänzt; vgl RV 1, 162, 17; TS 4, 6, 9, 3; VS 25, 40. [7] So corr. Ch अच्छिद्र; vgl RV 1, 162, 18; TS 4, 6, 9, 3; VS 25, 41. [8] So corr. Ch रुघ्य°; vgl. RV 1, 162, 18; TS 4, 6, 9, 3, VS 25, 41. [9] RV 162, 19 und die andern Texte त्वष्टुरश्वस्या [10] So corr. Ch युन्तारा; vgl. RV 1, 162, 19 u. s. w. [11] So corr. Ch ताता; vgl RV 1, 162, 19 u. s. w. [12] So corr. Ch सा; vgl RV 1, 162, 20 [13] So corr. Ch वै एतन्म्रियसे; vgl. RV 1, 162, 21; MS 1, 2, 15; TS 4, 6, 8, 4; VS 25, 44.

हरी ते युञ्जा पृषती अभूतामुपास्थाद्वाजी धुरि रासभस्य ॥
सुगव्यं[1] नो वाजी स्वश्व्यं पुंसः पुत्रौ उत विश्वपुषं रयिम् ।
अनागास्त्वं[2] नो अदितिः कृणोतु क्षत्रं नो अश्वो वनते[3] हविष्मान् ॥
॥ ५ ॥ cf RV 1, 162, 11—22, MS 3, 16 1, TS 4 6 8 4, 4, 6 9, 1 flg, VS 25, 34 35 37—45

इति जीमूतानुवचनं पञ्चम् ॥[4]

इन्द्राय राज्ञे सूकरो वरुणाय राज्ञे कृष्णो यमाय राज्ञ[5] ऋश्य ऋषभाय राज्ञे गवयश्शार्दूलाय राज्ञे गौरः पुरुषराजाय मर्कटः क्षिप्रश्येनस्य[6] वर्तिका नीलङ्गोः[7] कृमिस्सोमाय राज्ञे कुलुङ्गस्सिन्धोश्शिशुमारो[8] हिमवतो हस्ती ॥ १ ॥ cf TS 5 5 11, MS 3, 14 11, VS 24 30

मयुः प्राजापत्य ऊलो हलिक्ष्णो वृषदंशस्ते धातुस्सरस्वत्यै शारिश्श्येता पुरुषवाक्सरस्वते शुकश्श्येतः पुरुषवागारण्यो ऽजो नकुलश्शका ते पौष्णा[9] वाचे क्रौञ्चः ॥ २ ॥
cf TS 5 5 12 MS 3 14 12—14 VS 24 31—33

अपां नप्त्रे झषो[10] नाक्रो मकरः पुलीरयस्ते[11] कूवरस्य[12] वाचे पैङ्ग-

---

[1] So corr Ch सुगव्यक्षो vgl RV 1 162 22 TS 4 6 9 4 VS 25 45 [2] So corr Ch अनागस्त्वको vgl RV 1 162 22, TS 4 6 9 4 VS 25 45 [3] So Ch, dagegen वनता RV 1 162 22 TS 4, 6 9 4, VS 25 45 [4] So die Unterschrift des Capitels in Ch [5] So corr Ch राजे vgl TS 5 5 11 [6] So corr Ch क्षिप्र श्येनस्य [7] So corr Ch नीलङ्गो [8] So Ch für शिशुमारो [9] So corr Ch पौष्णो [10] Erste Hand क्षपो [11] So Ch, vgl MS 3, 14 16 und 3 14 16 पुलीकय, VS 24 25 कुलीपय, TS 5 5 13 कुलीकय [12] So Ch, wohl in कूपारस्य zu corr, vgl Pet WB कूपार „Meer", AK 1 2 3 1 Sch — कूपार — अकूपार, bisher noch unbelegt auch in Böhtlingks kürzerem WB mit dem Stern versehen, TS 5, 5 13 MS 3, 14 16 und VS 24 35 lesen ते अकूपारस्य

राज्ञो[1] भगाय कुषीतक आती वाहसो दर्विदा ते वायव्या दिग्भ्यश्चक्रवाकः[2] ॥ ३ ॥
cf TS 5, 5, 13, MS 3, 14, 2 3 15. 16, VS 24, 34 35

बलायाजगर आखुस्सृजया शयाण्डकास्ते[3] मैत्रा[4] मृत्यवे ऽसितो मन्यवे स्वजः[5] कौम्भीनसः पुष्करसादो लोहिताहिस्ते त्वाष्ट्राः[6] प्रतिश्रुत्कायै वाहसः ॥ ४ ॥ cf. TS 5, 5, 14, MS 3, 14, 14, VS 24, 33

पुरुषमृगश्चन्द्रमसे गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनामेण्यह्ने कृष्णो रात्र्यै पिगः[7] क्ष्विङ्का[8] नीलशीर्ष्णी ते ऽर्यम्णो धातुः कक्कटः[9] ॥ ५ ॥ cf TS 5, 5, 15, MS 3, 14, 16 17, VS 24, 35 36

सौरी बलाकर्श्यो[10] मयूरश्श्येनस्ते गन्धर्वाणां वसूनां कपिञ्जलो रुद्राणां तित्तिरी रोहित्कुण्डृणाची[11] गोलत्तिका ता अप्सरसामरण्याय सृमरः ॥ ६ ॥ cf TS 5, 5, 16; MS 3, 14, 18, VS 24, 37.

पृषतो वैश्वदेवो पित्वो[12] न्यङ्कुः कशस्ते ऽनुमत्या अन्यवापो ऽर्धमासानां[13] मासां कश्यपः कुवयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते सिनीवाल्यै बृहस्पतये शित्पुटः[14] ॥ ७ ॥ cf TS 5, 5, 17, MS 3, 14, 20, VS 24, 39

शका भौमी पाङ्क्तः[15] कशो मन्थीलवस्ते पितृणामृतूनां जहका संवत्सराय लोपा कपोत उलूकश्शशस्ते[16] नैर्ऋताः[17] कृकवाकुस्साविचः ॥ ८ ॥ cf TS 5, 5, 18, MS 3, 14, 19, VS 24, 26 38

---

[1] Erste Hand in Ch पेगराज्ञो [2] So corr. Ch श्चक्रवाक, vgl TS 5, 5, 13, VS 24, 32 [3] So corr Ch शयायडकास्ते [4] So corr Ch मैत्र्या [5] So corr Ch सज ; vgl TS 5, 5, 14 स्वज' [6] So corr. Ch त्वाष्ट्र' [7] So Ch, für पिक: TS 5, 5, 15; VS 24, 39, MS 3, 14, 20 [8] In Ch undeutlich, vielleicht क्ष्विटका [9] Erste Hand in Ch कक्कुथ., vgl VS 24, 32 कक्कटः, TS 5, 5, 15 कत्कटः [10] So corr Ch बिलाकार्श्यो, vgl TS 5, 5, 16. [11] So corr. Ch कुण्डृणाचा, vgl TS 5, 5, 16, MS 3, 14, 18, VS 24, 37. [12] So Ch (viell पित्वो), vgl. TS 5, 5, 17 पित्वो, VS 24, 32 पित्वो [13] So corr Ch र्धमासा [14] So Ch; vgl TS 5, 5, 17 शित्पुटः, v. l शित्पुट [15] So corr. Ch पात्र, vgl TS 5, 5, 18, MS 3, 14, 7, VS 24, 26, in mehreren Mss der TS पात्र v. l [16] So corr Ch उलूकश्शस्ते [17] So corr Ch नैनृता

रुरू रौद्रः कृकिलासश्शकुनि[1] पिप्पका ते शरव्यायै[2] हरिणो मारुतो ब्रह्मणे शार्गस्तरक्षुः कृष्णश्श्वा चतुरक्षो[3] गर्दभस्त इतरजनानामग्नये धूङ्क्षा[4] ॥ ९ ॥ cf TS 5 5 19 MS 3 14 20 21 VS 24 39 40

अलज आन्तरिक्ष[5] उद्रो मद्गुः प्लवस्ते ऽपामदित्यै[6] हंससाचिरिन्द्राण्यै कीर्शा[7] गृध्रश्शितिकक्षी वार्ध्रीणसस्ते[8] ऽदित्या द्यावापृथिव्या[9] श्वावित् ॥ १० ॥ cf TS 5 5 20 (MS 3 14 16 20), (VS 24 34 39)

सुपर्णः पार्जन्यो[10] हंसो वृको वृषदंशस्त ऐन्द्रा अपामुद्रो ऽर्यम्णो लोपाशस्सिंहो नकुलो व्याघ्रस्ते महेन्द्राय कामाय परस्वान् ॥ ११ ॥
cf TS 5 5 21 (VS 24 34—37)

इतीन्द्रानुवचनं सप्तमम् ॥[11]

आग्नेयः कृष्णग्रीवस्सारस्वती[12] मेषी बभ्रुस्सौम्यः पौष्णश्श्यामश्शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यश्शिल्पो वैश्वदेव ऐन्द्रो ऽरुणो मारुतः कल्माष ऐन्द्राग्नस्संहितो ऽधोरामस्सावित्रो वारुणः पेत्वः[13] ॥ १ ॥
cf TS 5 5 22 MS 3 13 2 VS 29 58

अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्या[14] आग्नेयौ कृष्णग्रीवौ त्वाष्ट्रौ

---

[1] So Ch vgl कृकुलास = कृकलास Sch zu Ah 2 5 12 Pet WB s v [2] So corr Ch शरव्याये [3] So corr Ch चतुरक्षा vgl TS 5 5 19 [4] Ch धूचा [5] So corr Ch आन्त° [6] So corr Ch पामुदित्यै vgl TS 5 5 20 [7] So Ch in TS 5 5 20 कीर्शा [8] So corr Ch वार्ध्रीणस° [9] So corr Ch पृथिव्या [10] So corr Ch पर्जन्यो vgl TS 5 5 21 [11] So die Unterschrift des Capitels in Ch [12] So corr Ch कृष्णग्री° [13] So corr Ch पोत्व [14] So corr Ch पत्य

लोमशसक्थौ[1] शितिपृष्ठौ बार्हस्पत्यौ धात्रे पृषोदरस्सौर्यो[2] वलक्षः[3] पेत्वः ॥ २ ॥ cf. TS 5, 5, 23; MS 3, 13, 2, VS 24, 1.

अग्नये ऽनीकवते रोहिताञ्जिरनड्वानधोरामौ सावित्रौ पौष्णौ रजतनाभी वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ[4] मारुतः कल्माष आग्नेयः कृष्णो ऽजस्सारस्वती मेषी वारुणः कृष्ण एकशितिपात्पेत्वः ॥ ३ ॥
cf. TS 5, 5, 24, VS 29, 59.

इति पेत्वानुवचनमष्टमम्[5] ॥

रोहितो धूम्रलोहितः कर्कन्धुरोहितस्ते प्राजापत्या बभ्रुररुणबभ्रुश्शुकबभ्रुस्ते रौद्राश्श्येतश्श्येताक्षश्श्येतग्रीवस्ते पितृदेवत्यास्तिस्रः[6] कृष्णा वशा वारुण्यस्तिस्रश्श्वेता[7] वशास्सौर्यो मैत्राबार्हस्पत्या धूम्रललामास्तूपराः[8] ॥ १ ॥ cf. TS 5, 6, 11; (MS 3, 13, 3); (VS 24, 2).

पृश्निस्तिरश्चीनपृश्निरूर्ध्वपृश्निस्ते मारुताः फल्गुर्लोहितोर्णी बलक्षी[9] तास्सारस्वत्यः पृषती क्षुद्रपृषती स्थूलपृषती ता वैश्वदेव्यस्तिस्रश्श्यामा वशाः पौष्ण्यस्तिस्रो[10] रोहिण्यो[11] वशा मैत्र्य ऐन्द्राबार्हस्पत्या अरुणललामास्तूपराः ॥ २ ॥ cf. TS 5, 6, 12, MS 3, 13, 5 3; VS 24, 4, 2.

शितिबाहुरन्यतश्शितिबाहुस्समन्तशितिबाहुस्त ऐन्द्रवायवाश्शि-

---

[1] So corr Ch सक्तौ [2] So corr Ch पृषोदर°, vgl. TS 5, 5, 23 पृषोदर, und auch Ch liest weiter unten 5, 9, 4 पृषोदरः [3] Ch वलक्षः [4] So corr Ch रूपरौ, vgl. TS 5, 5, 24, VS 29, 59 [5] Ch पेत्वानु [6] So corr. Ch देवत्यस्ति°; vgl TS 5, 6, 11. [7] So corr. Ch वारुण्यास्ति°; vgl TS 5, 6, 11. [8] So corr. Ch मस्तू°; vgl TS 5, 6, 12 [9] So corr. Ch बलक्षोर्णी°, vgl. TS 5, 6, 12, MS 3, 13, 5. [10] So corr. Ch पाष्ण्य°, vgl. TS 5, 6, 12. [11] So corr Ch रोहिण्यो, vgl TS 5, 6, 12 रोहिण्योः°

तिरश्चो[1] ऽन्यतश्शितिरन्ध्रस्समन्तशितिरन्ध्रस्ते मैत्रावरुणाश्शुङ्गवालस्सर्वशुङ्गवालो मणिवालस्त आश्विनास्तिस्रश्शित्या[2] वशा वैश्वदेव्यस्तिस्रश्श्येनीः परमेष्ठिने सौमापौष्णाश्श्यामललामास्तूपराः ॥ ३ ॥
cf TS 5, 6 13, (MS 3, 13, 6), (VS 24 5)

उन्नत ऋषभो वामनस्त ऐन्द्रावरुणाश्शितिककुच्छितिपृष्ठश्शितिभसत्[3] ऐन्द्राबार्हस्पत्याश्शितिपाच्छित्योष्ठश्शितिभ्रूस्त[4] ऐन्द्रावैष्णवास्तिस्रस्सिध्मा वशा वैश्वकर्मण्यस्तिस्रो धात्रे पृषोदराः पौष्णाश्श्येतललामास्तूपराः[5] ॥ ४ ॥ cf TS 5 6 14, (MS 3 16, 7 8), (VS 24 6 7)

कर्णास्त्रयो यामास्सौम्यास्त्रयश्शितिङ्गा अग्नये यविष्ठाय त्रयो नकुलास्तिस्रो रोहिण्यस्त्र्यव्यस्ता[6] वसूनां तिस्रो ऽरुणा दित्यौह्यस्ता रुद्राणां सौमेन्द्रा बभ्रुललामास्तूपराः ॥ ५ ॥ cf TS 5, 6, 15

शुण्ठास्त्रयो वैष्णवा अधीलोधकर्णास्त्रयो विष्णव उरुक्रमाय लप्सुदिनस्त्रयो विष्णव उरुगायाय पञ्चाव्यस्तिस्र आदित्यानां त्रिवत्सास्तिस्रो ऽङ्गिरसामामैन्द्राः कृष्णललामास्तूपराः ॥ ६ ॥
cf TS 5 6 16

इन्द्राय राज्ञे त्रयश्शितिपृष्ठा इन्द्रायाधिराजाय त्रयश्शितिककुद इन्द्राय स्वराज्ञे त्रयश्शितिभसदस्तिस्रस्तुर्यौह्यस्साध्यानां तिस्रः पष्ठौह्यो विश्वेषां देवानामैन्द्रावैष्णवा[7] गौरललामास्तूपराः ॥ ७ ॥
cf TS 5 6 17

अदित्यै त्रयो रोहितैता इन्द्राण्यै त्रयः कृष्णैताः कुह्वै[8] त्रयो ऽरुणैतास्तिस्रो धेनवो राकायै त्रयो[9] ऽनड्वाहस्सिनीवाल्या आग्नावैष्णवा रोहितललामास्तूपराः ॥ ८ ॥ cf TS 5 6, 18

सौम्यास्त्रयः पिशङ्गास्सोमाय[10] राज्ञे त्रयस्सारङ्गाः पार्जन्या नभो-

---

[1] So corr Ch याचश॰ [2] So corr Ch त्या श्वि॰ [3] So corr Ch ककुच्छिति॰ भसत्तु [4] So corr Ch पाच्छित्याष्ठश्रि॰ [5] So corr Ch श्वेतानलामा॰ [6] So corr Ch रोहिण्यास्त्रि॰, cf oben 5, 9, 2, TS 5 6, 15 [7] So corr Ch विष्णाया [8] So corr Ch कुह्वै [9] Dies त्रयो ist von mir ergänzt, Ch राकायै ऽनड्वाह, vgl TS 5, 6, 18 [10] Ch पिशंगा

रूपास्तिस्रो ऽजा मल्हा इन्द्राण्यै तिस्रो मेष्य[1] आदित्या द्यावापृथिव्या मालङ्गास्तूपराः ॥ ९ ॥ cf. TS 5, 6, 19.

वारुणास्त्रयः कृष्णललामा वरुणाय राज्ञे त्रयो लोहितललामा वरुणाय रिशादसे[2] त्रयो ऽरुणललामाश्शिल्पास्त्रयो वैश्वदेवास्त्रयः पृश्नयस्सर्वदेवत्या ऐन्द्रासौरास्श्यामललामास्तूपराः ॥ १० ॥ cf. TS 5, 6, 20.

इति रोहितानुवचनं नवमम् ॥[3]

सोमाय स्वराजे ऽनोवाहा अनड्वाहा इन्द्राग्निभ्यामोजोदाभ्यामोष्टारा इन्द्राग्निभ्यां बलदाभ्यां सीरवाहा अवी द्वे धेनू भौमी दिग्भ्यो वडवे द्वे धेनू भौमी वैराजे[4] पुरुषी द्वे धेनू भौमी वायव आरोहणवाहा अनड्वाहौ[5] वारुणी[6] कृष्णे वशे आराड्यौ[7] दिव्या ऋषभौ परिमरौ[8] ॥ १ ॥ cf. TS 5, 6, 21.

एकादश प्रातर्गव्याः पशव आलभ्यन्ते छगलः कल्मापः किकिदिवीविदीगयस्तौ[9] त्वाष्ट्रौ सौरीनैव श्वेता वशा अनूबन्ध्या भवन्त्याग्नेय ऐन्द्राग्न आश्विनस्ते विशालयूप आलभ्यन्ते ॥ २ ॥ cf. TS 5, 6, 22

पिशङ्गास्त्रयो वासन्तास्सारङ्गास्त्रयो ग्रैष्माः पृषन्तस्त्रयो वार्षिकाः

---

[1] So corr. Ch मेष [2] So corr. Ch रिदसे; vgl. TS 5, 6, 20. [3] So die Unterschrift des Capitels in Ch [4] So Ch; wohl entweder in वैराजौ oder in विराजे zu corrigiren; TS 5, 6, 21 liest वैराजौ [5] So corr. Ch अनु [6] So corr. Ch वारुणे, vgl. TS 5, 6, 21. [7] So corr. Ch अराड्यौ, vgl. TS 5, 6, 21. [8] So corr. Ch परिमरो, vgl. TS 5, 6, 21. [9] So Ch; da hier nur zwei Thiere für Tvashtar gezählt werden — der Bock und der Vogel — habe ich das seltsame Compositum stehen lassen; vgl. dagegen TS 5, 6, 22.

पृश्नयस्त्रयश्शारदाः पृश्निसक्थास्त्रयो[1] हैमन्तिका अवलिप्तास्त्रयश्शैशिरास्संवत्सराय निवक्षसः ॥ ३ ॥ cf TS 5, 6, 23

वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान्वर्षाभ्यस्तित्तिरीञ्छरदे[2] वर्तिका[3] हेमन्ताय[4] ककाराञ्छिशिराय[5] विकरान्[6] ॥ ४ ॥ cf MS 3, 14, 1, VS 24, 20

गायत्री[7] त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह ।
बृहत्युष्णिहा[8] ककुप्सूचीभिश्शिम्यन्तु त्वा ॥
द्विपदा या चतुष्पदा त्रिपदा या च षट्पदा ।
सच्छन्दा या च विच्छन्दास्सूचीभिश्शिम्यन्तु[9] त्वा ॥
महानाम्नी रेवत्यो विश्वा आशाः प्रसूवरीः[10] ।
मेघ्या विद्युतो वाचस्सूचीभिश्शिम्यन्तु त्वा ॥
रजता हरिणीस्सीसा युजो युज्यन्ते कर्मभिः ।
अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सूचीभिश्शिम्यन्तु त्वा ॥
नारीस्ते पत्नयो लोम विचिन्वन्तु मनीषया ।
देवानां पत्नीर्दिशस्सूचीभिश्शिम्यन्तु त्वा ॥
कुविदङ्ग ॥ ५ ॥ cf TS 5, 2, 11, MS 3, 12, 21, VS 23, 33—38
कस्त्वा[11] छ्यति[12] कस्त्वा विशास्ति कस्ते गात्राणि शिम्यति ।
क उ ते शमिता कविः ॥
ऋतवस्त ऋतुथा परुश्शमितारो[13] विशासतु ।
संवत्सरस्य धायसा शिमिभिश्शिम्यन्तु त्वा ॥

---

[1] So corr Ch सक्या° [2] Ch रीञ्छरदे [3] So corr Ch वंतिका [4] So corr Ch हिमन्ताय [5] So Ch, resp ककाराञ्छि°, vgl ककरान् MS 3, 14, 1, VS 24, 20 [6] So Ch, vgl VS 24, 20 विककरान् [7] Dies Cap in Brl fol 174 175 vorhanden, darnach accentuirt [8] Die drei ersten Sylben in Brl abgebrochen, der erste Accent ergänzt [9] Brl शिमिभिश्शि° [10] Accent corrigirt, Brl आशा प्रसूवरी [11] Auch dies Cap in Brl fol 175 vorhanden, darnach accentuirt [12] Ch छ्यति oder छ्यति, vgl TS 5, 2, 12, 1, VS 23, 39 [13] So Brl, in Ch परु°

दैव्या[1] अध्वर्यवस्त्वा छ्यन्तु[2] वि च शासतु ।
गात्राणि पर्वशश्शिमाः[3] कृण्वन्तु शिम्यन्तः ॥
अर्धमासाः परूंषि ते मासाश्छ्यन्तु[4] शिम्यन्तः ।
अहोरात्राणि मरुतो विलिष्टं सूदयन्तु ते ॥
पृथिवी तेऽन्तरिक्षेण वायुश्छिद्रं भिषज्यतु ।
द्यौस्ते नक्षत्रैस्सह रूपं कृणोतु साध्या[5] ॥
शं ते परेभ्यो गात्रेभ्यश्शमस्त्ववरेभ्यः ।
शमस्थभ्यो मज्जभ्यश्शमु ते तन्वे भुवत् ॥ ॥ ६ ॥

cf TS 5, 2, 12, VS 23, 39—44

इति सोमानुवचनं दशमम् ॥[6]

अग्नये[7] नमो गायत्र्यै नमस्त्रिवृते नमो रथन्तराय नमो वसन्ताय नमः प्राच्यै दिशे नमः प्राणाय नमो वसुभ्यो नमः ॥ १ ॥

इन्द्राय नमस्त्रिष्टुभे नमः पञ्चदशाय नमो बृहते नमो ग्रीष्माय नमो दक्षिणायै दिशे नमो व्यानाय नमो रुद्रेभ्यो नमः ॥ २ ॥

मरुद्भ्यो नमो जगत्यै नमस्सप्तदशाय नमो वैरूपाय नमो वर्षाभ्यो नमः प्रतीच्यै दिशे नमोऽपानाय नम आदित्येभ्यो नमः ॥ ३ ॥

विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमोऽनुष्टुभे नम एकविंशाय नमो वैराजाय नमश्शरदे नम उदीच्यै दिशे नमस्समानाय नमश्चन्द्रमसे नमः ॥ ४ ॥

---

[1] Ch देव्या [2] So Brl, in Ch छ्यतु [3] So Brl; in Ch शिमा [4] Ch छ्यतु [5] Vgl TS 5, 2, 12, 2 und VS 23, 43 साधुया [6] So die Unterschrift des Capitels in Ch [7] Kāth 5, 11, 1—6 auch in T1 vorhanden und darnach accentuirt

मित्रावरुणाभ्यां नमः[1] पङ्क्त्यै नमस्त्रिणवत्रयस्त्रिंशाभ्यो नमश्शाक्वररैवताभ्यां[2] नमो हेमन्तशिशिराभ्यां नम ऊर्ध्वायै दिशे नम उदानाय नमो विष्णवे नमः ॥ ५ ॥

पृथिव्यै नमो ऽग्नये नमो भूताय नमश्चक्षुषे नमो ऽन्तरिक्षाय नमो वायवे नमो भव्याय नमश्श्रोत्राय नमो दिवे नमस्सूर्याय नमो भविष्यते नमो मनसे नमः ॥ ६ ॥

इति नमस्कारवचनमेकादशम् ॥[3]

अलिवन्दाय[4] स्वाहा बलिवन्दाय स्वाहा सर्वस्मै स्वाहा ॥ १ ॥

इत्यलिवन्दानुवचनं द्वादशम् ॥[5]

शादं दद्भिरवकान्दन्तमूलैस्तेगान्दंष्ट्राभ्यां मण्डूकाञ्जम्भैरादकां[6] खादेनोर्जं संसीदेनारण्यं जाम्बीलेन मृदं बर्स्वैश्शर्कराभिरवकामवका-

---

[1] Hier folgt in Ch शाक्वररैवताभ्यां नमो, ein offenbarer Fehler, der in T1 sich nicht findet, wo diese Worte nur ein Mal und zwar an der richtigen Stelle stehen [2] T1 शक्वर° [3] So die Unterschrift des Capitels in Ch [4] Auch dies kurze Capitel in T1 vorhanden und darnach accentuirt [5] So die Unterschrift des Capitels in Ch [6] Ch रादकाम्बा°, vgl 5, 7, 11

भिश्शर्कैरामुत्सादेन[1] जिह्वामवक्रन्देन तालुं सरस्वतीं जिह्वाग्रेण ॥ १ ॥ cf TS 5, 7, 11; MS 3, 15, 1; VS 25, 1.

वाजं हनुभ्यामप आस्येनादित्याञ्छ्मश्रुभिरुपयाममधरोष्ठेन[2] सदुत्तरेणान्तरेणानूकाशं[3] प्रकाशं प्रकाशेन बाह्यं स्तनयित्नुं निर्बाधेन सूर्याग्नी चक्षुर्भ्यां विद्युतं कनीनिकाभ्यामशनिं मस्तिष्केण बलं मज्जभिः ॥ २ ॥ cf TS 5, 7, 12; MS 3, 15, 1.2, VS 25, 1.

कूर्मांञ्छफैरच्छलाभिः[4] कपिञ्जलान्साम कुष्ठिकाभिर्जवं जङ्घाभिरगदं जानुभ्यां वीर्यं गुहाभ्यां[5] भयं प्रचलाभ्यां गुहोपपक्षाभ्यामश्विना अंसाभ्यामदितिं शीर्ष्णा निर्ऋतिं[6] निर्जाल्मकशीर्ष्णा ॥ ३ ॥
cf. TS 5, 7, 13; MS 3, 15, 3; VS 25, 3.

योक्त्रं गृध्राभिर्युगमानतेन चित्तं मन्याभिस्संघोषान्प्राणैः[7] प्रकाशेन त्वचं पराकाशेनान्तरां[8] मशकान्केशैरिन्द्रं[9] स्वपसा वहेन[10] बृहस्पतिं शकुनिसादेन रथमुष्णिहाभिः ॥ ४ ॥ cf TS 5, 7, 14.

मित्रावरुणौ श्रोणिभ्यामिन्द्राग्नी शिखण्डाभ्यामिन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्यामिन्द्राविष्णू अष्ठीवद्भ्यां सवितारं[11] पुच्छेन गन्धर्वाञ्छेपेनाप्सरसो मुष्काभ्यां पवमानं पायुना पवित्रं पोत्राभ्यामाक्रमणं स्थूराभ्यां प्रतिक्रमणं गृष्ठाभ्याम्[12] ॥ ५ ॥ cf. TS 5, 7, 15.

इन्द्रस्य क्रोडो[13] ऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवो जीमूतान्हृदयौपशाभ्यामन्तरिक्षं[14] पुलितता नभ उदर्येणेन्द्राणी[15] प्लीहा[16] वल्मीकान्क्लोम्ना गिरीन्प्लाशिभिस्समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ॥ ६ ॥
cf. TS 5, 7, 16, MS 3, 15, 7, VS 25, 8.

---

[1] So corr. Ch श्म्हैः [2] Ch ष्ठां श्मश्रु॰ [3] So corr. Ch सदुत्तरेण; vgl. TS 5, 7, 12, 1; MS 3, 15, 2. [4] Ch कूर्मां छफैरच्छरा॰; vgl TS 5, 7, 13; MS 3, 15, 3; VS 25, 3 [5] So Ch, vgl. TS 5, 7, 13 कुष्ठाभ्या [6] So corr. Ch निर्ऋतिर्नि॰ [7] So corr Ch चित्तमन्याभिस्सगोषान्प्रा॰; vgl. TS 5, 7, 14 चित्तमन्याभिः संक्रोशान् [8] So corr. Ch पाकाशे॰; vgl TS 5, 7, 14. [9] So corr. Ch न्द्रस्वपस्यका॰; vgl. TS 5, 7, 24. [10] So corr. Ch वह्नेन; vgl. TS 5, 7, 14. [11] So corr Ch सवितारं; vgl. TS 5, 7, 15. [12] So Ch; vgl कुष्ठाभ्यां TS 5, 7, 15; MS 3, 15, 6 a. E; VS 25, 6 [13] So corr. Ch क्रोडो, vgl. TS 5, 7, 16; MS 3, 15, 7, VS 25, 8. [illegible] So corr. Ch जीमूतान्हृदयौप॰; vgl. TS 5, 7, [illegible]; MS 3, 15, 7; VS 25, 8. [15] So corr. Ch ऐन्द्राणी, vgl. TS 5, 7, 16. [16] So corr. Ch प्लीहा

पूष्णो वनिष्ठुरन्धाहेस्स्थूरगुदा[1] सर्पान्गुदाभिर्व्हुतून्पृष्टिभिर्दिवं[2] पृष्ठेन वसूनां प्रथमा[3] कीकसा रुद्राणां द्वितीयादित्यानां तृतीयाङ्गिरसां चतुर्थी साध्यानां पञ्चमी विश्वेषां देवानां षष्ठी ॥ ७ ॥
cf TS 5, 7, 17, MS 3, 15, 9, VS 25, 7

ओजो ग्रीवाभिर्निर्ऋतिमस्थभिरिन्द्रं स्वपसा वहेन रुद्रस्य विचलस्स्कन्धो ऽहोरात्रयोर्द्वितीयो ऽर्धमासानां तृतीयो मासश्चतुर्थ ऋतूनां पञ्चमस्संवत्सरस्य षष्ठः ॥ ८ ॥ cf TS 5, 7, 18

आनन्दनन्दथुभ्यां कामं प्रत्यासाभ्यां भयं शितीमध्या[4] प्रशिषं प्रशासाभ्यां सूर्याचन्द्रमसौ वृक्काभ्यां श्यामशबलौ मतस्नाभ्यां व्युष्टिं रूपेण निमुक्तिमरूपेण[6] ॥ ९ ॥ cf TS 5, 7, 19

अहर्मांसेन रात्रीं पीवसापो यूषेण घृतं रसेन श्यां वसया दूषीकाभिर्ह्रदुनिमश्रुभिः पृष्वां दिवं रूपेण नक्षत्राणि प्रतिरूपेण पृथिवीं चर्मणा कवीं[5] छव्योपाकृताय स्वाहालब्धाय स्वाहा हुताय स्वाहा ॥ १० ॥ cf TS 5, 7, 20

अग्नेः पक्षतिस्सरस्वत्या निपक्षतिस्सोमस्य तृतीयापां चतुर्थ्योषधीनां पञ्चमी रुद्रस्य षष्ठी मरुतां सप्तमी बृहस्पतेरष्टमी मित्रस्य नवमी वरुणस्य दशमीन्द्रस्यैकादशी विश्वेषां देवानां द्वादशी द्यावापृथिव्योः पार्श्वं यमस्य पाटोरः[7] ॥ ११ ॥
cf TS 5, 7, 21, MS 3 15 4, VS 25, 4

वायोः पक्षतिस्सरस्वतो निपक्षतिश्चन्द्रमसस्तृतीया नक्षत्राणां चतुर्थी सवितुः पञ्चमी संवत्सरस्य षष्ठी सर्पाणां[8] सप्तम्यर्यम्णो ऽष्टमी धातुर्नवमी त्वष्टुर्दशमीन्द्राण्या एकादश्यदित्या द्वादशी द्यावापृथिव्योः पार्श्वं यम्याः पाटोरः[9] ॥ १२ ॥ cf TS 5, 7, 22, MS 3, 15, 5, VS 25 5

---

[1] So corr Ch ॰धाहेस्थुरगुदा, vgl TS 5, 7, 17, MS 3, 15, 9, VS 25, 7 [2] So corr Ch भद्दि॰ [3] So corr Ch पृष्ठमा [4] So Ch, vgl शितीमध्या TS 5, 7, 19 [5] So Ch, vgl TS 5, 7, 20 कव्ये छ॰ [6] So corr Ch निमुक्ति॰, vgl TS 5, 7, 19 [7] So Ch, vgl पाटूरः TS 5, 7, 21 [8] So corr Ch सप्तानां, vgl TS 5, 7, 22, MS 3, 15, 5, VS 25, 5 [9] So corr nach dem vorigen Capitel, Ch पटेर, vgl TS 5, 7, 22 पाटूरः

पन्थामनुवृग्भ्यां संततिं स्नावन्याभ्यां शुकान्पित्तेन हरिमाणं यक्ना हलिक्ष्णान्पापवातेन कूश्माञ्छकभिश्शवर्तानूवध्येन शुनो विशसनेन सर्पाँल्लोहितगन्धेन वयांसि पक्वगन्धेन पिपीलिकाः प्रशादेन ॥ १३ ॥ cf. TS 5, 7, 23

इति शादानुवचनं त्रयोदशम् ॥[1]

इत्येकोत्तरशताध्वर्युशाखाप्रभेदभिन्ने श्रीमद्यजुर्वेदकाठके चरकशाखायामश्वमेधो नाम पञ्चमो ग्रन्थः संपूर्णः ॥ ओं संपूर्णा चरकशाखा ॥ ओं नमो ब्रह्मणे ॥ भद्रम् ॥ शिवम् ॥ शुभमस्तु ॥ ॥ ॥ ओं शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥ ओं नमो ब्रह्मणे ॥[2]

---

[1] So die Unterschrift des Capitels in Ch [2] So die Unterschrift dieses Buches und damit des ganzen Textes in Ch

VERZEICHNISS

DER VERS- UND CAPITELANFÄNGE DES KÂṬHAKAM

yat te kruddhah parovapa 8 14
yat te gatrad agnina 5, 6, 5
yat te 'citam yad u citam 40 5
yat te nama suhavam 13 16, (22 14 a E, 22 15)
yat te pavitram arcishi 32 2
yat te manyuparoptasya 8 14
yat te çilpam kaçyapa rocanavat 37 9
yat te sade mahasa çûkrtasya 5 6 5
yat te soma gavâçirah 40 8 a E
yat prthivya anamrtam 7 12 a E
yat preshita varunena 39 2
yatra kvaca te mano s yatro kvaca etc
yatra dhara madhumatih 40 13
yatra vettha vanaspate 35 19 a E
yatrapah pracir abhavannijat 25, 3
yatro kvaca te manah 20 14
yath adityam adityah 10 12 a E
yatha no aditih karat 23 12
yatha pance yatha shat 40 11
yatharûpam agneç cetavyah 22, 8
yatha vai punarvidheya evam 22, 2
yatha vai ratha ekakam 34, 17
yatha ha tyad vasavah 2 15, (9 19)
yad akrandah prathamam jayamanah 30, 1, (40 6 5, 6, 3)
yad agne kani kani ca 16 7 (19 10)
yad atty upajihvika 16 7
yad atra riptam rasinah 38 2
yad atra çishtam rasinah 17 19
yad adah pito ajagan 40 8
yad adas samprayatir 39 2
yad adya tva prayati yajne 4 12
yad antarikshasm prthivim uta dyam 9 6 a E
yad antarikshasya yad divah 7 12 a E
yad apam oshadhinam 40 8
yad ayatam vahatum sûryaya 22 15
yad avavrshtena johavîti 35, 19
yad [illegible] antarikshac chakunih 35 4
yad avantarikshac chvapatu mukhena 35 4
yad açvasya kravishah 5 6 4
yad açvasya vasa upastrnanti 5 6 5
yad asya pare rajasah 16, 12, (20 2)
yad ahnam vajayann imu 16 13
yad âkûtat 40, 13
yad akshitipady abhut 13, 10
yadi kamayeta yajamanad ayajam anam 37, 6
yadi jagrad yadi svapne 38 5
yad idam abhind isati 22 15
yadi divi yadi naktam 38 5
yad indro anayad ritah 29 11
yadi manyeta purvo mitike ntah 22, 10
yadi som u saesutam vyutam 31, 4
yadidam divo yadi va prthivyaç 1 7 12
yad indhyam adarayapav ti 5 6 4
yad oshadhayas samagmata 16 13
yad gam dadaty ayus tena 28, 5
yad grame yad aranye 9 4 38 5 (der Schluß verschieden)
yad deva devahelanam 39, 5
yad dyava indra te çatam 12 15
yad dhanvad yatam atu 5 4 8
yad dhavishyam rtuço devay anam 5 6 4
yady akrstam upaharayuh 34, 3
yady ukhye bhriyamane 22, 12
yad vai me vyutam 8, 2
yad vajino dama samdanam 5 6 4
yad vato apo agamat 5 4 9
yad vanishtham tal agnaye 39 14
yad vo vayam praminama vratani 35 9 (6 10 a E)
yad vai r pristyas ca varunasavah 37, 6
yantra dacam kshatram idam 22 14
yan nirniya reknasa pravrtasya 5 6 4
yan nikshanam mamspacanya ukhayah 5 6 4 a E
yan me agne asya yajnasya rishyat [illegible] 14
yan me manasaç chidram 34 19 (35 2)
yan me mano yamam gatam 29 2
yam te devi nirrtir ababandha 16 12, (20 2)

yam tvā devāpiḥ 2 15
yam tvā tyaw svadhitiḥ 3 2
yamam gāya bhangaçravaḥ 38 12
yam agne prtsu martyam 3 9
yam açvinā namucer āsurād adhi 38 2
yam açvinā sarasvatī 38 9
yamena dattam trita enam āyunak 40 [illegible]
yamo dādhāra pṛthivīm 40 11
yam paridhim paryadhatthāḥ 1, 13
yāḥ dhishnyā upadhīyante 22, 11
yas tastambha sahasā vi jmo antān 9 19
yas te adya kṛṇavat 16 9, (35, 8 u. E)
yas te apsu mahimā 7 13 a E
yas te drapsas skandati 35 8
yas te drapso madhumān 35 8
yas te rasas sambhṛta oshadhishu 38, 2
yas tvā svaçvas suhiraṇya agne 6 11
yasminn açvāsa ṛshabhāsa ukshaṇaḥ [illegible] 9
yasmāi tvam sukṛte jātavedaḥ 10 12
yasmāi putrāso aditeḥ 7 2 (MS 1, 5 4 te hi putrāso aditeḥ)
yasya kurmo gṛhe haviḥ 18 3
yasya tridhātv avṛtam 40 14
yasya droṇakalaçe upadasyati 35, [illegible]
yasyā prayāṇam anv anya id yayuḥ 15 11
yasya vratam upatishṭhante 19, 14 u. E
yasyedam prāṇan nimishat 22 15
yasyeme viçve girayo mahitvā 40 1
yas samgrāmam jayati 22 15
yas samidhā ya āhutyā 39 15
yas some antar yo goshv antaḥ 40 3
yā āgneyīr gāyatrīḥ 21, 4
yā āpo divyāḥ payasā sambabhūvuḥ 37 9
yā oshadhayaḥ prathamajāḥ 16, 13
yā oshadhīḥ pūrvajātāḥ 13 16
yāḥ phalinīr yā aphalāḥ 16 13
yām vā avidvān adhvaryuḥ 20, 6
yā te ishuç çivatamā 17, 11 a E
yā te dhāmāni (20, 15), cf die folgenden Verse
yā te dhāmāni divi yā pṛthivyām 13 15
yā te dhāmāni paramāṇi yāvamā 18 2
yā te dhāmāni havishā yajanti 11 13
yā te rudra çivā tanūḥ 17, 11, 17, 16
yā te hetir mīḍhushṭama 17, 11
yā deveshu tanvam airayanta 5 4 6
yā devy ashṭakāsy āpas tām 35 12
yā devy asishṭakā urvaḍāḥ 39 [illegible]
yām iraḥa uçato deva devān 4 12
yām gharme kapālām 1, 7 a. E, (31 6)
yān vā asurā devebhyaḥ 17, 16
yām ishum giriçanta 17, 11
yā rājanye dundubhāv āyatāyām 36 15
yā vāç çarma çaçamānāya [illegible] 17 a E, (21 13)
yā vaw santi purushebhaḥ 4 15
yā vām kaçā madhumatī 4 2
yāvān purusha ūrdhvaḥ babhūvuḥ 20, 3
yā vām mitrāvaruṇā sahasyāujasyā 11, 11
yā vo devās sūrye rucaḥ 16 16 (40 13 u. E)
yā vyāghram vishūcikobhāu 37 18 a E
yā çatena pratanoshi 16 16
yāç cedam upaçṛṇvanti 16 13
yā çyetākshī kṛshṇavālā 24 1
yā sawskṛtiḥ prathamā 4 4
yāḥ subāhus svaṅguriḥ 13 16
yās tā ātasthur ātmānam 16 13
yās tisraḥ paramajāḥ 14 3
yās te agne (40 13 u. E) s die folgenden Versanfänge!
yās te agne samidho apsv antaḥ 35 4
yās te agne samidho yāni dhāma 40, 5
yās te agne sūrye rucaḥ 16 16
yās [illegible] rāke sumatayaḥ 13 16
yās te rātrayas savitar devayānīḥ 5 6
yās te çivā[illegible] tanvo jātavedaḥ 7, 13
yās te sahasrañ hetayaḥ 17, 16

———